वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

अंक संख्या 26

भारतीय रिज़र्व बैंक

दिसंबर 2022

© भारतीय रिज़र्व बैंक
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के उद्धरण की अनुमति है, बशर्ते स्रोत को दर्शाया जाए।

यह प्रकाशन इंटरनेट **http://www.rbi.org.in** पर भी उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के फीडबैक **fsu@rbi.org.in** को भेजें।

वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई 400001 द्वारा प्रकाशित तथा ऐक्मे पैक्स और प्रिंट(I)प्रा.लि., ए विंग, गाला नं.73, विरवानी इंड्रस्ट्रियल इस्टेट, गोरेगॉव ईस्ट, मुंबई – 400063 द्वारा अभिकल्पित एवं मुद्रित।

प्राक्कथन

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) का यह अंक बहुत ही महत्वपूर्ण समय पर आया है जब पिछले तीन वर्षों से पूरी दुनिया के लिए असाधारण आघातों का संचित प्रभाव अभी भी समस्त देशों में परिलक्षित हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्थाएं चुनौती का सामना कर रही है; दुनिया के अधिकांश हिस्सों में मौद्रिक सख्ती के कारण वित्तीय बाजार में उथल-पुथल है; खाद्य और ऊर्जा आपूर्ति और कीमतों पर दबाव है; कई उभरती बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर ऋण संकट मंडरा रहा है; और प्रत्येक अर्थव्यवस्था अनेक चुनौतियों के साथ संघर्ष कर रही हैं।

इस प्रकार के वैश्विक आघातों और चुनौतियों के बीच, भारतीय अर्थव्यवस्था समुत्थानशीलता का परिचय दे रही है। वित्तीय स्थिरता बनी हुई है। घरेलू वित्तीय बाजार स्थिर और पूरी तरह कार्यशील बने हुए हैं। बैंकिंग प्रणाली मजबूत हैऔर अच्छी तरह से पूंजीकृत है। गैर-बैंकिंग वित्तीय क्षेत्र ने भी इन चुनौतियों का अच्छी तरह से सामना किया है। एफएसआर के इस अंक में प्रस्तुत दबाव परीक्षण के परिणाम यह दर्शाते हैं कि बैंक इससे भी गंभीर तनाव की स्थिति, यदि ऐसी स्थिति आती है तो सामना करने के लिए सक्षम हैं, इसके अलावा, विपरीत वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद, भारत के बाह्य खाते अच्छी तरह से समर्थित हैं और व्यवहार्य बने हुए हैं।

इतना ही नहीं, जलवायु परिवर्तन का प्रबंधन, अप्रत्याशित और नए आघात यदि कोई हो से निपटना, हमारी वित्तीय प्रणाली के बफ़र्स को और मजबूत करना, फिनटेक नवाचारों का उपयोग करना और वित्तीय समावेशन को गहन करने जैसे प्रमुख मुद्दों के प्रति विनियामकों और नीति निर्माताओं से प्राथमिकता प्राप्त होते रहेगी।

2023 में, भारत अपनी जी 20 अध्यक्षता के भाग के रूप में विश्व मंच पर अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अच्छी तरह से तैयार है। एक समूह के रूप में जी 20 के लिए सबसे बड़ी चुनौती बहुपक्षवाद की प्रभावकारिता को पुनर्जीवित करना है।

घरेलू मोर्चे पर, जहां हम वैश्विक जोखिमों की अस्थिर करने वाली क्षमता को पहचानते हैं, वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबूत समष्टि आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों से शक्ति प्राप्त करते हैं। रिज़र्व बैंक और अन्य वित्तीय विनियामक भारतीय अर्थव्यवस्था के सर्वोत्तम हित में, आवश्यकता पड़ने पर, अपेक्षित हस्तक्षेपों से हमारी वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और सुदृढ़ता सुनिश्चित करने के लिए सतर्क और तत्पर हैं।

शक्तिकान्त दास
गवर्नर
29 दिसंबर, 2022

विषय-सूची

		पृष्ठ सं.
प्राक्कथन		
चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची		**i-iv**
विहगावलोकन		**1**
अध्याय I	**: समष्टि-वित्तीय जोखिम**	**3**
	वैश्विक पृष्ठभूमि	**5**
	समष्टि वित्तीय विकास एवं आउटलुक	5
	अन्य वैश्विक समष्टि वित्तीय जोखिम	8
	घरेलू समष्टि-वित्तीय जोखिम	**23**
	कॉर्पोरेट क्षेत्र	24
	मुद्रा बाजार, सरकारी प्रतिभूतियां और कॉरपोरेट बांड बाजार	26
	सरकारी वित्त	29
	बाह्य क्षेत्र की प्रगति और विदेशी मुद्रा बाजार	31
	इक्विटी बाजार	36
	म्यूचुअल फंड	39
	वैकल्पिक निवेश कोष	42
	केंद्रीय पक्षकार/प्रतिपक्ष (सीसीपी)	43
	बैंकिंग स्थिरता संकेतक	43
	बैंकिंग प्रणाली	44
	गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफसी)	49
	एमएसएमई क्षेत्र को ऋण प्रवाह	50
	सूक्ष्म वित्त क्षेत्र	54
	उपभोक्ता क्रेडिट	55
	आवास बाजार	56
	वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक	57
	प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	59
अध्याय II	**: वित्तीय संस्थान: सुदृढ़ता और आघात सहनीयता**	**63**
	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी)	**63**
	आस्ति गुणवत्ता	65
	क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता	66
	बड़े उधारकर्ताओं की ऋण गुणवत्ता	68
	पूंजी पर्याप्तता	69
	आय और लाभप्रदता	69
	आघातसहनीयता- समष्टि दबाव परीक्षण	72
	संवेदनशीलता विश्लेषण	75
	बॉटम-अप दबाव परीक्षण: व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो	82
	प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक	**83**
	दबाव परीक्षण	85
	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी)	**85**
	दबाव परीक्षण - ऋण जोखिम	87
	दबाव परीक्षण - चलनिधि जोखिम	87
	ब्याज दर जोखिम	88
	बीमा क्षेत्र	**88**
	म्यूचुअल फंड का दबाव परीक्षण	**88**
	दबाव परीक्षण विश्लेषण - समाशोधन निगम	**89**
	अंतर्संबंध	**90**
	वित्तीय प्रणाली नेटवर्क	90
	संक्रमण विश्लेषण	96

पृष्ठ सं.

अध्याय III : वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल		**99**
	वैश्विक विनियामकीय उपाय और आकलन	**99**
	बाजार और वित्तीय स्थिरता	99
	जलवायु संबंधी जोखिम और वित्तीय स्थिरता	100
	क्रिप्टो आस्तियां और वित्तीय स्थिरता	100
	वित्तीय नवाचार और वित्तीय स्थिरता	101
	साइबर जोखिम और वित्तीय स्थिरता	101
	घरेलू विनियामकीय गतिविधियां	**104**
	विनियामकों/प्राधिकारणों की पहल	**104**
	भारतीय रिजर्व बैंक (गैर-बचत विदेशी मुद्रा एक्सपोजर) निदेश, 2022	104
	एआरसी के लिए विनियामकीय ढांचे की समीक्षा	105
	विनियम समीक्षा प्राधिकरण 2.0	105
	शहरी सहकारी बैंकों के संबंध में किए गए विनियामकीय परिवर्तन	106
	ऋण आसूचना कंपनीयों (सीआईसी) द्वारा आंतरिक लोकपाल की नियुक्ति	106
	डिजिटल ऋण पर दिशानिर्देश	106
	विदेशी मुद्रा प्रवाह का उदारीकरण	107
	भारतीय रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता	107
	ऋण एक्सपोजर के हस्तांतरण और मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण पर मास्टर निर्देश (संशोधन)	108
	वित्तीय सेवाओं की आउटसोर्सिंग - वसूली एजेंटों को नियुक्त करने वाली विनियमित संस्थाओं की जिम्मेदारियां	108
	ऊपरी लेयर में एनबीएफसी की पहचान	108
	एनबीएफसी के लिए विनियामक ढांचा - खाता समूहक (संशोधन)	109
	डिजिटल रुपया (ई ₹) - थोक और खुदरा	109
	घर्षण रहित क्रेडिट की ओर - किसान क्रेडिट कार्ड के डिजिटलीकरण पर पायलट	109
	नियामक सैंडबॉक्स के लिए समर्थकारी ढांचा	110
	ग्राहक संरक्षण	110
	प्रवर्तन	110
	REITs और InvITs – निधि जुटाना तथा भावी परिदृश्य	111
	अन्य विकास	**111**
	जमा बीमा	111
	कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी)	112
	बीमा	113
	पेंशन निधि	114
अनुबंध : 1प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण		**116**
अनुबंध 2 : कार्यविधियाँ		**122**
अनुबंध 3: महत्वपूर्ण विनियामक उपाय		**139**
	भारतीय रिज़र्व बैंक	139
	भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड	145
	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण	146
	पेंशन निधि नियामक एवं विकास प्राधिकरण	147
	भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड	149
	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण	152

पृष्ठ सं.

बॉक्सों की सूची

अध्याय I

1.1 वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक 58
1.2 प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण और समष्टि वित्तीय रुख 60

अध्याय II

2.1 **गिल्ट मूल्यांकन और बैंक-लाभप्रदता** 71

अध्याय III

3.1 **साइबर सुरक्षा तैयारी को मजबूत करना** 102

चार्ट की सूची

अध्याय I

1.1 वैश्विक वृद्धि अनुमान 3
1.2 मुद्रास्फीति 3
1.3 2022 के झटकों का प्रभाव 4
1.4 वित्तीय स्थितियां 5
1.5 सरकारी बॉन्ड प्रतिफल में वृद्धि 5
1.6 इक्विटी बाजार में गिरावट 6
1.7 कॉरपोरेट बॉन्ड मार्केट 6
1.8 वित्तीय बाजार में अस्थिरता 7
1.9 एफएक्स-अंतर्निहित डॉलर फंडिंग स्प्रेड 7
1.10 यू.एस. लंबी अवधि की दरें 7
1.11 सामान्य सरकारी ऋण 8
1.12 सामान्य सरकारी संतुलन 9
1.13 2022 में ईएमई सामान्य सरकारी ऋण 9
1.14 वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण में वृद्धि 9
1.15 वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण तुलना 9
1.16 देश के अनुसार गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण, पहली तिमाही :2022 10
1.17 केंद्रीय बैंक दर वृद्धि (प्रतिशत) 10
1.18 1-वर्ष की अंतिम दर अपेक्षाएँ 11
1.19 फेडरल रिजर्व सिस्टम ओपन मार्केट अकाउंट (एसओएमए) - अनुमानित निवल आय 12
1.20 यूएसडी मूल्यवृद्धि 12
1.21 व्यापार की शर्तें और विनिमय दर मूल्यह्रास 13
1.22 नीति दर परिवर्तन और विनिमय दर मूल्यह्रास 13
1.23 वैश्विक लेनदेन और आस्तियों में यूएसडी की हिस्सेदारी 14
1.24 अमेरिकी डॉलर और तेल की कीमतें 14
1.25 घरेलू मुद्रा में तेल की कीमतों में वृद्धि* 14
1.26 उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं से पूंजी पलायन 15
1.27 बैंकों की लाभप्रदता और पूंजी 15

पृष्ठ सं.

1.28	आईएमएफ वैश्विक बैंक दबाव परीक्षण	16
1.29	शमन में वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह	17
1.30	सामंजस्य बिठाने में वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह	17
1.31	ईएसजी स्कोर (संभाव्यता) का सरल वितरण कार्य	17
1.32	जारी ईएसजी ऋण	18
1.33	गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता क्षेत्र की कुल निवल आस्ति और हिस्सेदारी, ति.1:2002 ति.1:2022 (ट्रिलियन यूएसडी; प्रतिशत)	18
1.34	ओईएफ मासिक निवल प्रवाह, ति.1:2002-ति.1:2022 (कुल निवल कमजोर आस्तियों का प्रतिशत)	19
1.35	चुनिंदा क्रिप्टो आस्तियों की दैनिक कीमतें	19
1.36	इक्विटी और मुद्रास्फीति के मुकाबले बिटकॉइन	20
1.37	वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला दबाव सूचकांक	21
1.38	पण्य कीमतें	21
1.39	ब्रेंट कीमत- हाजिर और वायदा	22
1.40	एफएओ खाद्य कीमत सूचकांक	22
1.41	एफएओ खाद्य कीमत सूचकांक	22
1.42	विभिन्न स्तरों के अंतर्गत सीबीडीसी की संख्या	23
1.43	सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की नाममात्र और सामान्य बिक्री वृद्धि	24
1.44	सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की परिचालन लाभ मार्जिन	25
1.45	सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियों का चुनिंदा अनुपात	25
1.46	सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की ऋण ऋण सेवाक्षमता	25
1.47	ओवरसीज पूंजी बाज़ार प्रस्ताव के माध्यम से भारतीय कारपोरेट द्वारा जुटाई गई राशि	26
1.48	भारत में पीई/ वीसी निवेश	26
1.49	कड़ी बाज़ार स्थितियाँ	26
1.50	बैंकिंग प्रणाली में कड़ी चलनिधि	27
1.51	प्रतिफल कर्व शिथिल होना	27
1.52	एएए – 3 वर्षीय कारपोरेट बांड प्रतिफल और स्प्रेड	28
1.53	सूचीबद्ध एनसीडीसी का स्प्रेड- प्राथमिक और द्वितीयक बाज़ार	28
1.54	प्राथमिक बाजार से संसाधन जुटाना और कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणी-वार जारीकर्ता	29
1.55	कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणी-वार सदस्य	29
1.56	मासिक जीएसटी संग्रह	30
1.57	सरकारी उधार और मोचन	30
1.58	पण्य निर्यात, आयात और व्यापार संतुलन	31
1.59	भारत का तेल आयात विधेयक	31
1.60	भारत का भुगतान संतुलन	32
1.61	संचयी एफडीआई और एफपीआई प्रवाह	32
1.62	भारत की विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियाँ दीर्घावधि प्रवृत्ति	33
1.63	विदेशी मुद्रा आस्तियों पर मूल्यांकन और प्रवाह ओं का हस्तक्षेप और प्रभाव	33
1.64	विदेशी कर्ज की मुद्रा संरचना	34

पृष्ठ सं.

1.65	प्रमुख मुद्राओं की तुलना में भारतीय रुपया में उतार-चढ़ाव	34
1.66	यूएसडी-आईएनआर दीर्घावधि प्रवृत्ति	35
1.67	विनिमय दर अस्थिरता	35
1.68	यूएसडी-आईएनआर अंतर्निहित अस्थिरता	35
1.69	फॉरवर्ड प्रीमिया कर्व	36
1.70	इक्विटी मार्केट मूवमेंट्स	36
1.71	मासिक एफपीआई प्रवाह	36
1.72	एफपीआई और डीआईआई प्रवाह – वित्तीय वर्ष 2022-23	37
1.73	एफपीआई और डीआईआई प्रवाह - वित्तीय 2018-19 से वित्तीय वर्ष 2022-23 तक	37
1.74	व्यक्तियों का निवल निवेश और निफ्टी 50 रिटर्न	37
1.75	डीमेट खातों और एसआईपी प्रवाह में प्रवृत्ति	38
1.76	इक्विटी बाजार मूल्यांकन संकेतक	38
1.77	योजना-वार म्यूचुअल फंड निवल अंतर्वाह	39
1.78	असीमित अवधि कर्ज योजना में एक दिवसीय म्यूच्युअल फंड का हिस्सा	40
1.79	म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना द्वारा चल आस्ति धारिता में हिस्सा	40
1.80	म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना द्वारा चल आस्ति धारिता में हिस्से का योजना-वार विश्लेषण	41
1.81	म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना का मासिक निवल प्रवाह	41
1.82	म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना की मासिक अस्थिरता	41
1.83	एआईएफ निधि संग्रहण	42
1.84	एआईएफ द्वारा लिखत वार निधियों का अभिनियोजन	42
1.85	बैंकिंग स्थिरता मैप	43
1.86	बैंकिंग स्थिरता संकेतक - वैयक्तिक जोखिम कारकों का योगदान	44
1.87	ऋण वृद्धि - एससीबी	44
1.88	ऋण वृद्धि – बैंक समूह वार	44
1.89	गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय बाध्यताधारी/उधारकर्ताओं के जोखिम वितरण	45
1.90	दीर्घावधि रेटिंग	45
1.91	ऋण जमाराशि अनुपात में वृद्धि	46
1.92	चलनिधि कवरेज अनुपात और इसके घटकों में उतार-चढ़ाव	46
1.93	भारत में घरेलू वित्तीय बचत	47
1.94	निवल नकद बहिर्वाह के अवयव - सभी एससीबी	47
1.95	रन-ऑफ कारक में संचलन	47
1.96	एचक्यूएलए और नकद बहिर्वाह – घटकों का हिस्सा	48
1.97	आस्ति गुणवत्ता और जोखिम भार	48
1.98	जीएनपीए में उतार-चढ़ाव	49
1.99	पूंजी पर्याप्तता	49
1.100	एमएसएमई क्षेत्र में ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष : प्रतिशत)	50
1.101	संवितरित ईसीएलजीएस गारंटी	51

पृष्ठ सं.

1.102	क्षेत्र वार ईसीएलजीएस गारंटी	51
1.103	बैंक समूह-वार ईसीएलजीएस गारंटी	52
1.104	उधारकर्ता श्रेणी वार ईसीएलजीएस गारंटी	52
1.105	राशि वार ईसीएलजीएस गारंटी	53
1.106	इकाई प्रकार – एनपीए वार	53
1.107	उधारकर्ता श्रेणी – एनपीए वार	53
1.108	एनपीए का हिस्सा ईसीएलजीएस क्षेत्र वार	54
1.109	सूक्ष्म वित्त खंड को उधार देना	54
1.110	सूक्षम वित्त खंड में दबाव	55
1.111	उत्पाद श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा	55
1.112	ऋणदाता श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा	55
1.113	जोखिम श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा	56
1.114	जोखिम टियर द्वारा उत्पत्ति	56
1.115	आवास कीमतों में उचार-चढ़ाव	57
1.116	आवास बिक्री, नई परियोजनाएं और अविक्रीत माल-सूची	57
अध्याय II		
2.1	एससीबी के जमा और ऋण प्रोफाइल	64
2.2	चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक	66
2.3	क्षेत्रगत आस्ति गुणवत्ता संकेतक	67
2.4	बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक	68
2.5	पूंजी पर्याप्तता	69
2.6	एससीबी के चुनिंदा कार्यनिष्पादन संकेतक	70
2.7	समष्टि परिदृश्य धारणा	73
2.8	सीआरएआर पूर्वानुमान	73
2.9	सीईटी 1 पूंजी अनुपात का पूर्वानुमान	74
2.10	एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का पूर्वानुमान	74
2.11	ऋण जोखिम- आघात और परिणाम	75
2.12	ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्स्पोज़र	76
2.13	ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्स्पोज़र	77
2.14	ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम	77
2.15	व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार	78
2.16	प्रतिफल वक्र और जून 2022 से सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन	79
2.17	एचटीएम पोर्टफोलियो – संरचना	80
2.18	एचटीएम पोर्टफोलियो- 30 सितंबर 2022 को अप्राप्त लाभ/हानि	80
2.19	इक्विटी कीमत जोखिम	81
2.20	चलनिधि जोखिम: आघात और परिणाम	82
2.21	कुल व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो का एमटीएम, चुनिंदा बैंक – सितंबर 2022	82
2.22	चुनिन्दा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघात का प्रभाव	83

पृष्ठ सं.

2.23	यूसीबी के ऋण पोर्टफोलियो और आस्ति गुणवत्ता संकेतक	83
2.24	यूसीबी का दबाव परीक्षण	85
2.25	एनबीएससी की क्षेत्रवार ऋण-संवृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)	85
2.26	एनबीएफ़सी का क्षेत्रवार जीएनपीए अनुपात	86
2.27	एनबीएफ़सी का क्षेत्रवार एनएनपीए अनुपात	86
2.28	पूंजी पर्याप्तता और लाभप्रदता	86
2.29	एनबीएफ़सी में ऋण जोखिम – प्रणाली-स्तर पर	87
2.30	एएमएफ़आई द्वारा निर्धारित सीमाओं पर एएमसी द्वारा सुस्थापित रेंज (अधिशेष (+)/चूक (-)) एलआर-आरएआर (प्रतिशत)	89
2.31	एएमएफ़आई द्वारा निर्धारित सीमाओं पर एएमसी द्वारा सुस्थापित रेंज (अधिशेष (+)/चूक (-)) एलआर-सीआरएआर (प्रतिशत)	89
2.32	वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर	91
2.33	वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लाट- सितंबर 2022	91
2.34	संस्थाओं की निवल प्राप्य राशियां (+) / देय राशियां (-)	91
2.35	अंतर-बैंक बाजार	92
2.36	अंतर-बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह – सितंबर 2022	92
2.37	निधि आधारित अंतर-बैंक बाज़ार की संरचना	92
2.38	भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी+एसएफबी + एसयूसीबी) – सितंबर 2022	93
2.39	बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी	94
2.40	वित्तीय प्रणाली से एएमसी-एमएफ को सकल प्राप्य राशि	94
2.41	वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों को सकल प्राप्तियां	95
2.42	वित्तीय प्रणाली को एनबीएफ़सी की सकल देयता	95
2.43	वित्तीय प्रणाली को एचएफ़सी की सकल देयता	96
2.44	वित्तीय प्रणाली को एआईएफसी की सकल देयता	96
2.45	समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता)	98

अध्याय III

3.1	एनपीएस और एपीवाई अंशदान-क्षेत्रवार	114
3.2	एनपीएस और एपीवाई एयूएम- क्षेत्रवार	115

सारणियों की सूची

अध्याय I

1.1	एसेट रिटर्न	6
1.2	**वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण पहली तिमाही :2022**	10
1.3	**प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी की कीमतें और सूचकांक**	19
1.4	ईसीएलजीएस उधारकर्ताओं का औसत टिकट आकार	29
1.5	राज्य के प्रमुख घाटा संकेतक	30
1.6	निवल पूंजी प्रवाह	33
1.7	ईसीबी ऋण	34

पृष्ठ सं.

1.8 घरेलू म्यूचुअल फंड उद्योगों के प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां 39
1.9 म्यूचुअल फंड द्वारा संसाधन जुटाने की प्रवृत्ति 39
1.10 थोक ऋण में वृद्धि 45
1.11 निधियों का समग्र संग्रहण 45
1.12 सभी एनबीएफसी श्रेणियों में आस्ति गुणवत्ता अनुपात 50
1.13 एमएसएमई पुनर्रचना योजना[41] 51
1.14 ईसीएलजीएस उधारकर्ताओं के औसत टिकट साइज 52
1.15 सभी उत्पाद श्रेणियों में समग्र उपभोक्ता क्रेडिट में चूक के स्तर 56

अध्याय II

2.1(ए) ऋण हिस्सेदारी और वृद्धि* - सितंबर 2022 65
2.1(बी) एससीबी द्वारा प्रदत्त नए ऋणों में वृद्धि : आर्थिक क्षेत्र, संगठन और खाता प्रकार * 65
2.2 प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट 78
2.3 एएफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण 78
2.4 अन्य परिचालन आय (ओओआई) – प्रतिभूति कारोबार में लाभ/(हानि) 79
2.5 एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि वार पीवी 01 वितरण 79
2.6 ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह – आघात और प्रभाव 80
2.7 जोखिम पर आय (ईएआर)- पारंपरिक अंतराल विश्लेषण (टीजीए) 81
2.8 इक्विटी का बाजार मूल्य (एमवीई) - अवधि अंतराल विश्लेषण (डीजीए) 81
2.9 एनबीएफ़सी की निधियों के स्रोत 86
2.10 एनबीएफ़सी में चलनिधि जोखिम 88
2.11 सभी बीमाकर्ताओं के लिए समेकित ऋण-शोधन क्षमता अनुपात 88
2.12 एक बड़े समाशोधन निगम में दबाव परीक्षण विश्लेषण पर आधारित कोर एसजीएफ़ की न्यूनतम आवश्यक आधारभूत निधि 90
2.13 बैंक की विफलता के कारण संक्रमण हानियां – सितंबर 2022 97
2.14 एनबीएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियां – सितंबर 2022 97
2.15 एचएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियां– सितंबर 2022 97

अध्याय III

3.1 आरबी- आईओएस 2021 के अंतर्गत प्राप्त शिकायतों का संवर्ग 110
3.2 आरईआईटी और आईएनवीआईटी द्वारा निधि संचलन 111
3.3 जमा बीमा प्रीमियम 111
3.4 जमा बीमा निधि(डीआईएफ) 112
3.5 कारपोरेट दिवालियापन विभेदन प्रक्रिया 112
3.6 30 सितंबर, 2022 तक सीआईआरपी चलनिधि के लिए समापन आदेश से समाप्त हो रहे है 113
3.7 30 सितंबर, 2022 तक हितधारक-वार शुरू किए गए सीआईआरपी के परिणाम 113
3.8 30 सितंबर 2022 को सीआईआरपी का क्षेत्रवार वितरण 114

चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची

एए	लेखा एग्रीगेटर
एई	उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ
एएफए	अधिप्रमाणन के अतिरिक्त कारक
एएफ़एस	बिक्री के लिए उपलब्ध
एआईडी	सभी निदेशों सहित
एआईएफ	वैकल्पिक निवेश निधि
एआईएफआई	अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाएं
एएमसी	आस्ति प्रबंध कंपनी
एएमएफआई	भारतीय पारस्परिक निधि संघ
एएमएल	घन-शोधन निवारण
एपीवाई	अटल पेंशन योजना
एआरसी	आस्ति पुनर्निर्माण कंपनी
एयूएम	प्रबंधनाधीन आस्तियां
बीईईआर	बॉन्ड-इक्विटी-अर्जित-आय अनुपात
बीआईएफआर	औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड
बीआई एस	अंतर्राष्ट्रीय निपटान बैंक
बीओई	बैंक ऑफ इंग्लैंड
बीओपी	भुगतान संतुलन
बीएसआई	बैंकिंग स्थिरता संकेतक
सीएडी	चालू खाता घाटा
सीएएसए	चालू खाता और बचत खाता
सीबीडीसी	केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी
सीसी	समाशोधन निगम
सीसीबी	पूंजी संरक्षण बफर
सीसीपी	केंद्रीय प्रतिपक्षकार
सीडी	जमा प्रमाणपत्र
सीडीएसएल	केंद्रीय निक्षेपागार सेवा लिमिटेड
सीईटी I	सामान्य इक्विटी टियर-1
सीएफटी	आतंकवाद वित्तपोषण का मुक़ाबला करना
सीआईसी	साख सूचना कंपनी
सीआईआर	साइबर घटना रिपोर्टिंग
सीआईआरपी	कार्पोरेट शोधन-अक्षमता समाधान प्रक्रिया
सीएम	समाशोधन सदस्य
सीपी	वाणिज्यिक पत्र
सीपीआई	उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
सीआरएआर	जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात
सीआरए	क्रेडिट रेटिंग एजेंसी
सीआरआईएलसी	केंद्रीय बृहत ऋण सूचना भंडार
सीवाई	कैलेंडर वर्ष
डीईएफआई	विकेंद्रीकृत वित्त
डीजीए	अवधि अंतराल विश्लेषण
डीआईसीजीसी	निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम
डीआईएफ	निक्षेप बीमा निधि
डीआईआई	घरेलू संस्थागत निवेशक
डीपीडी	दिनों के बाद बकाया
डीएलए	डिजिटल ऋण ऐप
ईएआर	जोखिम पर अर्जन
ईसीबी	बाह्य वाणिज्यिक उधार
ईसीएलजीएस	आपातकालीन ऋण लाइन गारंटी योजना
ईएमडीई	उभरती बाज़ार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ
ईएमई	उभरती बाज़ार अर्थव्यवस्थाएँ
ईएसजी	पर्यावरणीय, सामाजिक और अभिशासन
ईएसएमए	यूरोपियन प्रतिभूति और बाजार प्राधिकरण
एफएओ	खाद्य और कृषि संगठन
एफबीआईएल	फाइनेंशियल बेंचमार्क इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
एफ़बी	विदेशी बैंक

एफसीई	विदेशी मुद्रा एक्सपोजर
एफसीएनआर (बी)	विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक)
एफडीआई	विदेशी प्रत्यक्ष निवेश
एफआईआई	विदेशी संस्थागत निवेशक
एफआईपी	वित्तीय सूचना प्रदाता
एफआईआरई	घटना रिपोर्टिंग एक्सचेंज के लिए प्रारूप
एफएमआई	वित्तीय बाजार बुनियादी ढांचे
एफओएफ	फंड ऑफ फंड्स
एफपीआई	विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक
एफएसबी	वित्तीय स्थिरता बोर्ड
एफ़एसडीसी	वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद
एफएसडीसी-एससी	वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद की उप समिति
एफ़एसआर	वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट
एफएसएसआई	वित्तीय प्रणाली तनाव संकेतक
एफएसडब्ल्यूएम	आर्थिक रूप से मजबूत और अच्छी तरह से प्रबंधित
एफवाई	वित्तीय वर्ष
जीडीपी	सकल घरेलू उत्पाद
जीएफसी	वैश्विक वित्तीय संकट
जीएफडी	सकल राजकोषीय घाटा
जीआईएफटी	गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी
जीएनपीए	सकल अनर्जक आस्तियां
जीएसडीपी	सकल राज्य घरेलू उत्पाद
जीएसटी	वस्तु और सेवा कर
जीएसटीएन	वस्तु और सेवा कर नेटवर्क
एचएफसी	आवास वित्त कंपनियां
एचएफ़टी	ट्रेडिंग के लिए धारित
एचपीआई	आवास मूल्य सूचकांक
एचक्यूएलए	उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियां
एचटीएम	परिपक्वता तक धारित
आईबीसी	दिवाला और शोधन कोड
आईसीआर	ब्याज कवरेज अनुपात
आईए	अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी
आईएफ	इनोवेशन फैसिलिटेटर्स
आईएफआर	निवेश उतार-चढ़ाव आरक्षित निधि
आईएफएससी	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र
आईएफ़एससीए	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण
आईएम	प्रारंभिक मार्जिन
आईएमएफ़	अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष
आईएनवीआईटी	इंफ्रास्ट्रक्चर इंवेस्टमेंट ट्रस्ट
आईओ	आंतरिक लोकपाल
आईओआरएस	इंटर ऑपरेबल रेगुलेटरी सैंडबॉक्स
आईओएससीओ	अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन
आईआरबी	आंतरिक रेटिंग आधारित
आईआरडीएआई	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण
आईआरआरबीबी	बैंकिंग बही पर ब्याज दर जोखिम
जेपीवाई	जापानी येन
केवाईसी	अपने ग्राहक को जानिए
एलएबी	स्थानीय क्षेत्र बैंक
एलसीआर	चलनिधि कवरेज अनुपात
एलओएस	ऋण उत्पत्ती प्रणाली
एलएसपी	ऋण सेवा प्रदाता
एलटी	दीर्घावधि
एलटीवी	मूल्य के सापेक्ष ऋण
एमएचपी	न्यूनतम धारणअवधि
एमआरसी	न्यूनतम आवश्यक कॉर्पस
एमएसएमई	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
एमटीएम	बाजार भाव पर दर्शाना
एमवीई	इक्विटी का बाजार मूल्य
एनएबीएफआईडी	अवसंरचना और विकास के वित्तपोषण के लिए राष्ट्रीय बैंक
एनबीएफसी	गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी

एनबीएफसी-बीएल	एनबीएफसी-बेस लेयर
एनबीएफसी-एमएल	एनबीएफसी-मिडिल लेयर
एनएबीएफसी-टीएल	एनबीएफसी - टॉप लेयर
एनबीएफसी-यूएल	एनबीएफसी – अपर लेयर
एनबीएफआई	गैर बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थ
एनसीडी	गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर
एनसीजीटीसी	राष्ट्रीय ऋण गारंटी ट्रस्टी कंपनी लिमिटेड
एनसीएलटी	राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण
एनडीएसआई महत्वपूर्ण	जमा न लेने वाले प्रणालीगत रूप से
एनडीटीएल	निवल मांग और मीयादी देयताएं
एनआईआई	निवल ब्याज आय
एनआईएम	निवल ब्याज मार्जिन
एनएनपीए	निवल अनर्जक आस्तियां
एनओएफ	शुद्ध स्वामित्ववाली निधि
एनपीए	अनर्जक आस्तियां
एनपीएस	राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली
एनआरआई	अनिवासी भारतीय
एनएसडीएल लिमिटेड	नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी
एनएसई	राष्ट्रीय शेयर बाज़ार
एनएसओ	राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय
एनएसयूसीबी	गैर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक
ओईएफ	ओपेन इंडेड निवेश निधि
ओईसीडी	आर्थिक सहयोग और विकास संगठन
ओएफएस	बिक्री के लिए ऑफर
ओआईएस	ओवरनाइट इंडेक्स स्वैप
ओओआई	अन्य परिचालनगत आय
ओटीसी	काउंटर पर
पी2एम	व्यक्ति से व्यापारी
पी2पी	व्यक्ति-से-व्यक्ति

पीएटी	कर पश्चात लाभ
पीसीआर	प्रावधान कवरेज अनुपात
पीसीएम	पेशेवर समाशोधन सदस्य
पीड़ी	चूककर्ता की संभावना
पी/ई	मूल्य अर्जन
पीई	निजी इक्विटी
पीएफएमआई सिद्धांत	वित्तीय बाजार इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए
पीएफआरडीए प्राधिकरण	पेंशन निधि विनियामक और विकास
पीएलआई	प्रोडक्शन लिंक्ड इनवेस्टमेंट
पीएमआई	क्रय प्रबंधकों के सूचकांक
पीओएस	बिक्री केंद्र
पीएसबी	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
पीएसयू	सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम
पीवीबी	निजी क्षेत्र के बैंक
आरबी-आईओएस	रिज़र्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना
आरईआईटीएस	स्थावर संपदा निवेश न्यास
आरई	विनियमित संस्थाएं
आरओए	परिसंपत्तियों पर प्रतिलाभ
आरओई	इक्विटी पर प्रतिलाभ
आरआरए	विनियम समीक्षा प्राधिकरण
आरआरबी	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
आरएसए	संवेदनशील दर आस्तियां
आरएसएल	संवेदनशील दर देयताएँ
आर डब्ल्यूए	जोखिम भारित आस्तियां
एससीबी	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
एसडी	मानक विचलन
एसडीएल	राज्य विकास ऋण
सेबी	भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड
एसएफबी	लघु वित्त बैंक
एसजीएफ	निपटान गारंटी फंड

एसआईपी	सुनियोजित निवेश योजना
एसएलआर	सांविधिक चलनिधि अनुपात
एसएमए	विशेष उल्लेख खाता
एसपीडी	एकल प्राथमिक विक्रेता
एसआरएस	प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण
एसयूसीबी	अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक
टीएटी	टर्न अराउंड टाइम
टी – बिल	खज़ाना बिल
टीजीए	पारंपरिक अंतर विश्लेषण
टीपीआई	ट्रांसमिशन प्रोटेक्शन इंस्ट्रूमेंट
यूसीबी	शहरी सहकारी बैंक
यूएफसीई	अरक्षित विदेशी मुद्रा जोखिम
यूपीआई	एकीकृत भुगतान इंटरफेस
वीएआर	वेक्टर ऑटो रिग्रेशन
वीसी	उद्यम पूंजी
वीएम	परिवर्तनीय मार्जिन
डब्ल्यूबी	विश्व बैंक

विहगावलोकन

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट एक अर्ध-वार्षिक प्रकाशन है। यह रिपोर्ट वित्तीय क्षेत्र के सभी नियामकों के इनपुट के साथ, भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के प्रति जोखिमों के संबंध में वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद की उप-समिति के समग्र मूल्यांकन को दर्शाती है।

समष्टिगत वित्तीय जोखिम

वैश्विक अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर मंदी के जोखिम के साथ-साथ विषम परिस्थितियों का सामना कर रही है। कई प्रकार के आघातों की परस्पर क्रिया के परिणामस्वरूप वित्तीय स्थिति कठोर बन गई है और वित्तीय बाजारों में अस्थिरता अत्यधिक बढ़ गई है। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) के लिए चुनौतियां और भी विकट हैं क्योंकि वे वैश्विक स्पिलओवर(प्रभाव-विस्तार), ऋण की भंगुरता, मुद्रा की अस्थिरता और पूंजी के बहिर्वाह का सामना कर रही हैं।

घरेलू अर्थव्यवस्था और बाज़ार

भारतीय अर्थव्यवस्था अत्यधिक विपरीत वैश्विक परिस्थितियों का सामना कर रही है। फिर भी, सुदृढ़ समष्टि-आर्थिक आधारभूत सिद्धांतों और वित्तीय तथा गैर-वित्तीय क्षेत्र के बेहतर तुलनपत्र, उसे शक्ति और समुत्थानशीलता प्रदान कर रहे हैं और वित्तीय प्रणाली में स्थिरता उत्पन्न कर रहे हैं। मुद्रास्फीति, हालांकि बढ़ी हुई है, लेकिन मौद्रिक नीति की शुरुआत में ही अत्यधिक कार्रवाइयों और आपूर्ति पक्ष के हस्तक्षेपों की वजह से वह पीछे खिसक रही है।

वित्तीय क्षेत्र में, बैंक ऋण के लिए तीव्र मांग और निवेश चक्र में पुनरुद्धार के शुरुआती संकेतों को आस्तियों की गुणवत्ता में सुधार, लाभप्रदता में वापसी और पूंजी की लचीली स्थिति तथा चलनिधि बफ़र्स से फायदा पहुंच रहा है। ये सामर्थ्य, वित्तीय प्रणाली को बाहरी स्पिलओवर(प्रभाव-विस्तार) को सहने, वैश्विक वित्तीय स्थितियों को सख्त बनाने और वित्तीय बाजारों में उच्च अस्थिरता को नियंत्रित करने में मदद कर रही हैं।

वित्तीय संस्थाएं: सुदृढ़ता और समुत्थानशीलता

सितंबर 2022 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की पूंजी की स्थिति मजबूत बनी रही। एससीबी का पूंजी के प्रति जोखिम भारित आस्ति अनुपात(सीआरएआर) और कॉमन इक्विटी टियर 1 (सीईटी1) अनुपात क्रमशः 16.0 प्रतिशत और 13.0 प्रतिशत रहा। सितंबर 2022 में उनकी सकल गैर-निष्पादित आस्ति(जीएनपीए) अनुपात लगातार सात साल के निचले स्तर 5.0 प्रतिशत पर आ गया है, जबकि निवल गैर-निष्पादित आस्ति(एनएनपीए) का अनुपात घटकर दस साल के निचले स्तर पर कुल आस्तियों के 1.3 प्रतिशत पर आ गई है। प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) मार्च 2021 से लगातार बढ़कर 71.5 प्रतिशत हो गया है। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के कर पश्चात लाभ ने शुद्ध ब्याज आय में मजबूत वृद्धि और प्रावधानों में कमी के कारण 2022-23 की पहली छमाही में 40.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।

क्रेडिट जोखिम के लिए समष्टि-दबाव परीक्षण से पता चलता है कि एससीबी अच्छी तरह से पूंजीकृत हैं और सभी बैंक प्रतिकूल दबाव के परिदृश्यों में भी न्यूनतम पूंजी आवश्यकताओं का पालन करने में सक्षम होंगे।

सितंबर 2022 में शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) का सीआरएआर बढ़कर 16.1 प्रतिशत हो गया, जबकि एनबीएफसी का 27.4 प्रतिशत था। बीमा क्षेत्र का समेकित ऋण शोधन क्षमता अनुपात 150 प्रतिशत की न्यूनतम सीमा से ऊपर बना हुआ है।

नेटवर्क विश्लेषण से संकेत मिलता है कि वित्तीय प्रणाली के घटकों के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर स्थिर बने हुए हैं। भारतीय वित्तीय प्रणाली में सबसे बड़ा द्विपक्षीय एक्सपोजर एससीबी का बना हुआ है, जो सितंबर 2022 में महामारी-पूर्व के स्तर तक पहुंच गया है। एक अनुकूलित संक्रामकता विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकतम क्षमता वाले पांच बैंकों की विफलता के कारण होने वाले नुकसान की संक्रामकता से कोई अतिरिक्त बैंक विफल नहीं होंगे।

विनियामकीय पहल और वित्तीय क्षेत्र की अन्य प्रगति

विश्व स्तर पर, विवेकपूर्ण विनियमन का ध्यान, वित्तीय प्रणाली को अत्यधिक अनिश्चित आर्थिक वातावरण के बीच केंद्रीय बैंकों द्वारा एकसाथ की गई मौद्रिक सख्ती से पड़ने वाले प्रभावों से बचाने पर है। गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थों (एनबीएफआई) की

समुत्थानशीलता को बढ़ाना और जलवायु संबंधी वित्तीय जोखिमों का आकलन करना इसकी प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। घरेलू मोर्चे पर, वित्तीय प्रणाली की समुत्थानशीलता में सुधार लाने और एक अनुकूल क्रेडिट वातावरण को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया जाता है जो एक स्थायी आर्थिक सुधार का समर्थन करता है और वित्तीय स्थिरता को बनाए रखता है।

प्रणालीगत जोखिम का मूल्यांकन

रिज़र्व बैंक के नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) से ज्ञात होता है कि वैश्विक स्पिलओवर, वित्तीय बाजार और सामान्य जोखिम बढ़ गए हैं, जबकि मैक्रो-आर्थिक जोखिम कम हो गए हैं। संस्थागत जोखिमों में कोई बदलाव नहीं देखा गया है। यह बताया गया है कि वैश्विक, वित्तीय बाजार और सामान्य जोखिमों की वृद्धि में, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक सख्ती, वित्तीय स्थितियों का कड़ा होना, भू-राजनैतिक जोखिम, वैश्विक विकास की अनिश्चितता और निजी क्रिप्टोकरेंसी से बढ़ते जोखिम और जलवायु परिवर्तन का प्रमुख योगदान रहा है। अधिकांश उत्तरदाताओं ने भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए ऋण संभावनाओं में और सुधार देखा है और वे भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता के बारे में आश्वस्त हैं। लगभग नब्बे प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह अनुमान है कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में अगले एक वर्ष की समयावधि में सुधार होने अथवा अपरिवर्तित रहने की उम्मीद है।

अध्याय I

समष्टि आर्थिक जोखिम

आर्थिक, वित्तीय और राजनीतिक झटकों के बीच, वैश्विक समष्टि वित्तीय जोखिम बढ़ गए हैं और आउटलुक अत्यधिक अनिश्चित है। अंतरराष्ट्रीय स्पिलओवर और एक चुनौतीपूर्ण वैश्विक वातावरण के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था ठीक होने के पथ पर अग्रसर है। भारतीय वित्तीय प्रणाली में, स्वस्थ तुलन पत्र (बैलेंस शीट)होना ऋण प्रवाह को बेहतर बना रहा जिसके साथ लाभप्रदता में सुधार हो रहा है।

परिचय

1.1 वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के जून 2022 के अंक के जारी होने के बाद से, वैश्विक आर्थिक आउटलुक और खराब हो गया है। सभी देशों के केंद्रीय बैंक आक्रामक रूप से फ्रंट-लोडेड मौद्रिक नीति को कस रहें और हॉकिश रूप से आगे का मार्गदर्शन दे रहे हैं जिसके चलते वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम बढ़ गया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष सहित अंतरराष्ट्रीय संगठनों, विश्व बैंक (WB) और आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ने अपनी रेटिंग पिछले संशोधनों की तुलना में वैश्विक वृद्धि अनुमान को कम कर/घटा दी है (चार्ट 1.1)।

1.2 उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) और उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) दोनों के लिए वैश्विक वृद्धि दर 2.7 प्रतिशत तक गिरने की उम्मीद है जो 2023 के आउटलुक को और भी निराशाजनक बनाएगी। वर्ष 2021 के वैश्विक व्यापार के आकार/मात्रा (वॉल्यूम) भी 10.1 प्रतिशत से घटकर 2022 में 4.3 प्रतिशत होने की उम्मीद है, जिसका नुकसान ईएमडीई को होगा। 2022 में मुद्रास्फीति 8.8 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान लगाया गया है, जो हेडलाइन और कोर मुद्रास्फीति दोनों में एई और ईएमडीई के लक्ष्यों से काफी ऊपर रहेगा (चार्ट 1.2 ए और बी)।

चार्ट 1.1 वैश्विक वृद्धि अनुमान

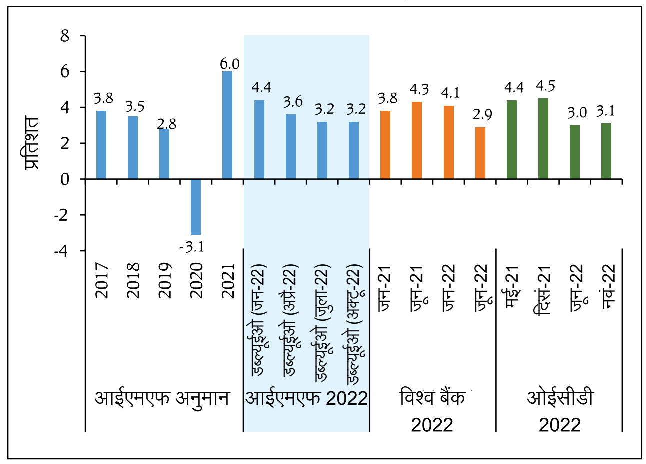

स्रोत: आईएमएफ, विश्व बैंक, ओईसीडी

चार्ट 1.2 : मुद्रास्फीति

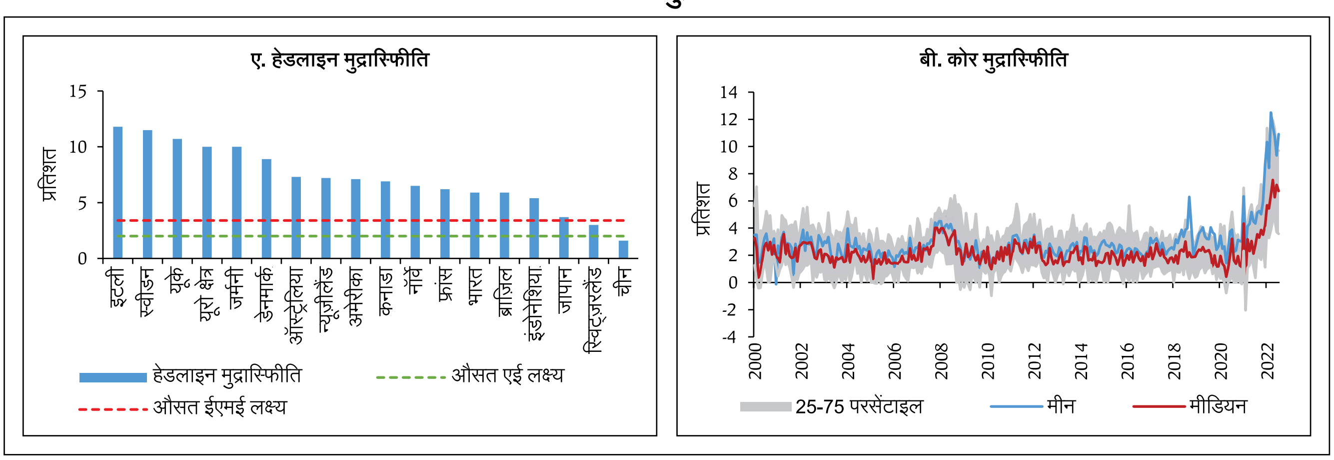

नोट: * 35 देश क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) पर विश्व के सकल घरेलू उत्पाद के 81 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं।
स्रोत: ब्लूमबर्ग और आईएमएफ

1.3 आउटलुक के आसपास अनिश्चितता असाधारण रूप से ऊंचे स्तर पर बनी हुई है। आईएमएफ के अनुसार, 2023 में वैश्विक वृद्धि का 25 प्रतिशत के 2.0 प्रतिशत तक गिरने की 25 प्रतिशत संभावना है।

1.4 ईएमडीई और विशेष रूप से सीमांत अर्थव्यवस्थाओं के लिए, सीमित नीतिगत दायरा और बढ़ते ऋण संकट के कारण बाह्य झटकों के प्रति भेद्यता, खाद्य और ऊर्जा की कीमतों के ऊंचे स्तर, प्रमुख खाद्य और ऊर्जा स्टेपल की कमी, विभिन्न कोरोनावायरस वेरिएंट के उद्भव विशेष रूप से उन देशों में जहां टीकाकरण की दरें कम थीं, मुद्रा मूल्यह्रास, और बढ़ती हुई उधार लेने की लागत की अवधि पूंजी के बहिर्वाह में वृद्धि के प्रबंधन में डरानेवाला/हतोत्साहितपूर्ण चुनौतियों के रूप में बदल गया। लगातार उत्पादन हानि और कम आर्थिक क्षमता के साथ इन झटकों के निशान लंबे समय तक रहने की संभावना है (चार्ट 1.3)।

1.5 भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि और सेवाओं के एक मजबूत पुनरुत्थान, स्थिर कॉर्पोरेट निष्पादन, बढ़ती इनपुट लागतों के बावजूद, व्यापार और उपभोक्ता आशावाद, और एक सुद्रढ़ वित्तीय प्रणाली होने के साथ महामारी की लहरों से बाधित होने के बाद इसमें सुधार हो रहा है। इस आंतरिक आघातसहनीयता ने अर्थव्यवस्था को असाधारण बाहरी झटको को सहने में, विशेष रूप से लंबे समय तक भू-राजनीतिक संघर्षों का सामना करने में मदद की है। फिर भी, यह शक्तिशाली वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील बना हुआ है, जो घरेलू आर्थिक सुधार के प्रति एक खिंचाव /बाधा के रूप में कार्य करता है।

1.6 वर्ष 2022-23 के पहली छमाही में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि 9.7 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) रही (क्रमशः वर्ष 2021-22 की पहली और दूसरी छमाही में 13.7 प्रतिशत और 4.7 प्रतिशत रही)। यह सुधार व्यक्तिगत खपत और सकल अचल पूंजी निर्माण से हुआ है, जो निवल निर्यात के नकारात्मक योगदान की भरपाई करता है। वर्ष 2022-23 की तीसरी तिमाही में मज़बूत हो रहे सुधार ने उच्च आवृत्ति संकेतकों को परिलक्षित किया है और यह विशेष रूप से संपर्क गहन क्षेत्रों से संबंधित हैं। विनिर्माण और सेवाओं दोनों के लिए भारत के क्रय प्रबंधकों के सूचकांक (पीएमआई) ने अक्तूबर और नवंबर में क्षेत्रीय और वैश्विक सूचकांकों ने बेहतर प्रदर्शन किया। इसी तरह, अन्य संकेतक जैसे मोटर वाहन पंजीकरण, यात्री यातायात, स्टील, सीमेंट और पेट्रोलियम की खपत घरेलू आर्थिक गतिविधियों में सुधार को दर्शाता है।

चार्ट 1.3: 2022 के झटकों का प्रभाव*

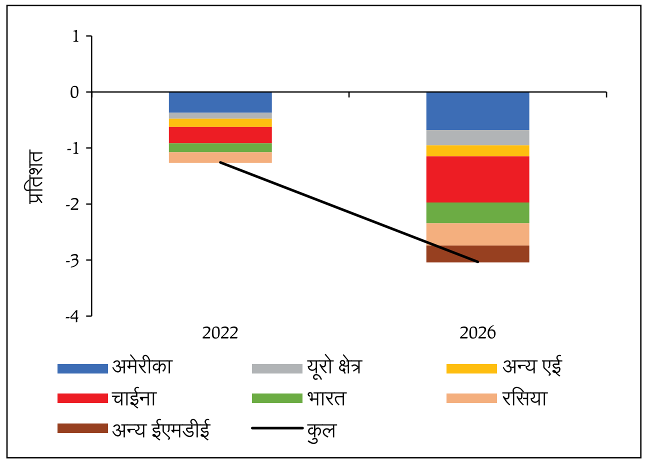

नोट: * पूर्व-झटका विकास पूर्वानुमानों से प्रतिशत बिंदु विचलन।
स्रोत: आईएमएफ।

1.7 दूसरी ओर, वैश्विक वृद्धि में मंदी और मजबूत अमेरिकी डॉलर (यूएसडी) निवल निर्यात पर दबाव बढ़ा रहे हैं। अक्टूबर 2022 में भारत का व्यापारिक निर्यात 20 महीने के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद मामूली रूप से ठीक हुआ है। सेवाओं के निर्यात की बढ़ती हिस्सेदारी और विप्रेषण के मजबूत अंर्तवाह से व्यापारिक व्यापार घाटे में बढ़ोतरी हो रही है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगातार निवल प्रवाह और जुलाई 2022 से पोर्टफोलियो प्रवाह की शुरूआत यह दर्शाता है कि चालू खाता घाटा (सीएडी) आसानी से वित्तपोषित हो जाएगा।

1.8 प्रमुख/हेडलाइन उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) मुद्रास्फीति जनवरी 2022 से मुद्रास्फीति लक्ष्य दायरे के ऊपरी स्वीकार्य बैंड से ऊपर रहने के बाद, कम हो गई है। जबकि यह परिणाम खाद्य और ऊर्जा की कीमतों, कोर मुद्रास्फीति में लगातार बढ़ रहे झटके की एक श्रृंखला को दर्शाता है जो आगे चलकर मुद्रास्फीति पर दबाव बनाएगा। फ्रंट-लोडेड मौद्रिक नीति कार्रवाइयों से मुद्रास्फीति को स्वीकार्यता बैंड में लाने और मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को निर्धारित करते हुए लक्ष्य के करीब आने की आशा है।

I.1 वैश्विक पृष्ठभूमि

I.1.1 समष्टि वित्तीय विकास एवं आउटलुक

1.9 केंद्रीय बैंकों द्वारा की गई मौद्रिक नीति कार्रवाइयों से वैश्विक वित्तीय स्थितियां काफी हद तक कस गईं और अनिश्चितता के स्तरों में वृद्धि हुई (चार्ट 1.4 ए और बी)। हाल ही में, हालांकि, वित्तीय स्थितियों में सुधार हुआ है।

1.10 केंद्रीय बैंकों द्वारा मूल्य स्थिरता बहाल करने के उनके संकल्प पर जोर देने के साथ, सरकारी (सॉवरेन) बॉन्ड पर नाममात्र के लाभ से तेजी से वृद्धि हुई है (चार्ट 1.5 ए)। अमेरिका (यूएस) में, ट्रेजरी यील्ड कर्व जुलाई 2022 से उलट गया है, दिसंबर 2021 की समाप्ति से 2 साल और 10 साल के ट्रेजरी यील्ड में क्रमश: 348 आधार अंक (बीपीएस) और 197 आधार अंक की बढ़ोतरी हुई है (14 दिसंबर, 2022 तक)। यूरो क्षेत्र और यूनाइटेड किंग्डम (यूके) दोनों में सॉवरेन बॉन्ड के प्रतिफल में भी वृद्धि हुई है (चार्ट 1.5 बी)।

चार्ट 1.4: वित्तीय स्थितियां

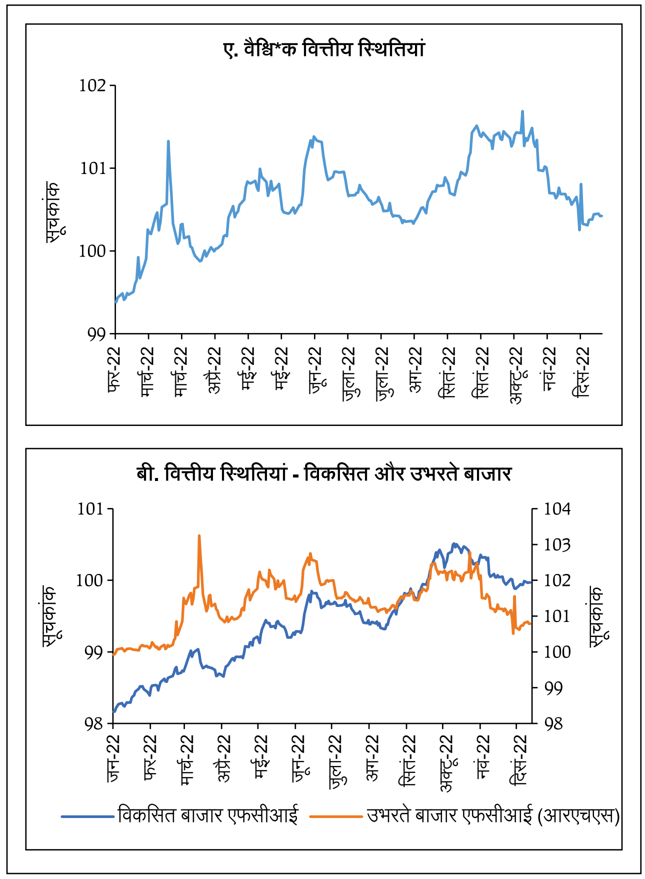

स्रोत: गोल्डमैन सेस

चार्ट 1.5: सरकारी बॉन्ड प्रतिफल में वृद्धि

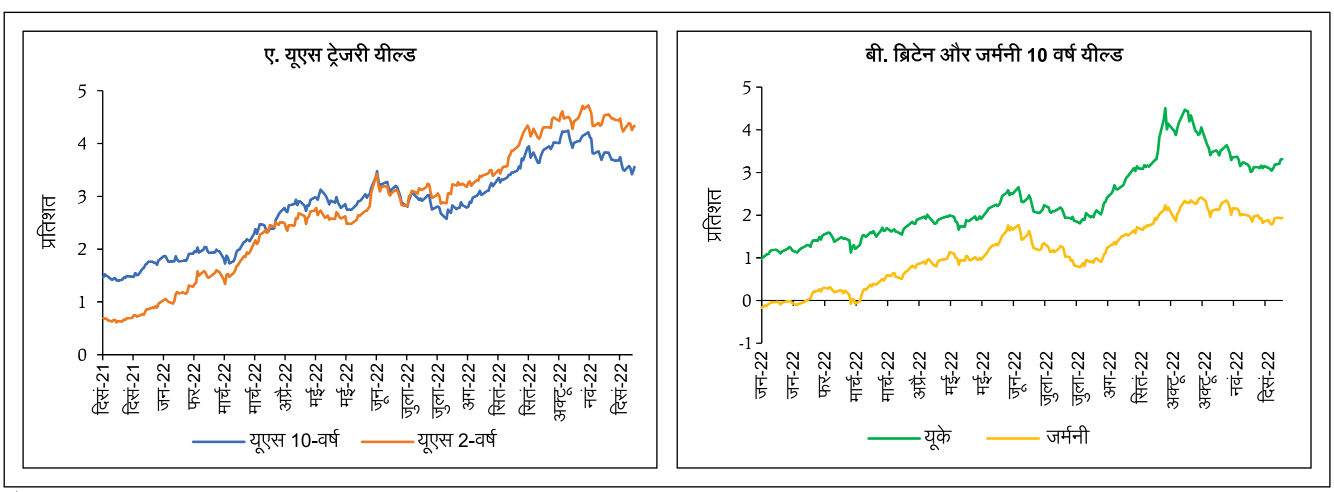

स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.11 इक्विटी में तेजी से गिरावट आई है (चार्ट 1.6)। कॉरपोरेट बॉन्ड में बढ़ोतरी (स्प्रेड) से पर्याप्त वृद्धि हुई है और कॉरपोरेट बॉन्ड बाजार में परेशानी बढ़ रही है, विशेष रूप से रेटिंग स्केल से नीचे होना (चार्ट 1.7 ए और बी)। वित्तीय स्थितियों के कड़े होने के परिणामस्वरूप लगभग सभी आस्ति वर्गों के लिए नकारात्मक रिटर्न मिला (सारणी 1.1)।

चार्ट 1.6: इक्विटी बाजार में गिरावट

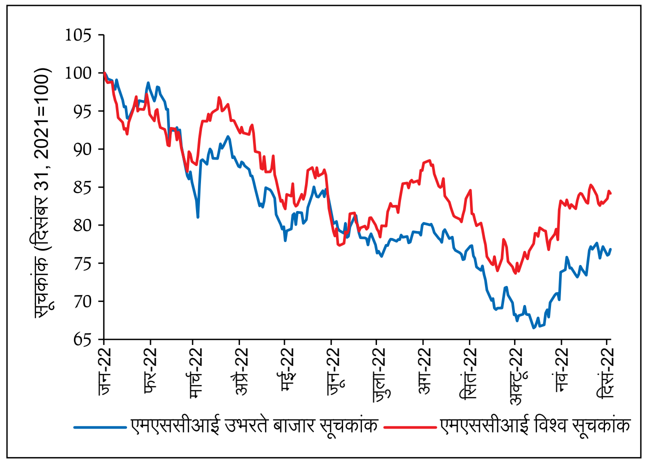

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.7: कॉरपोरेट बॉन्ड मार्केट

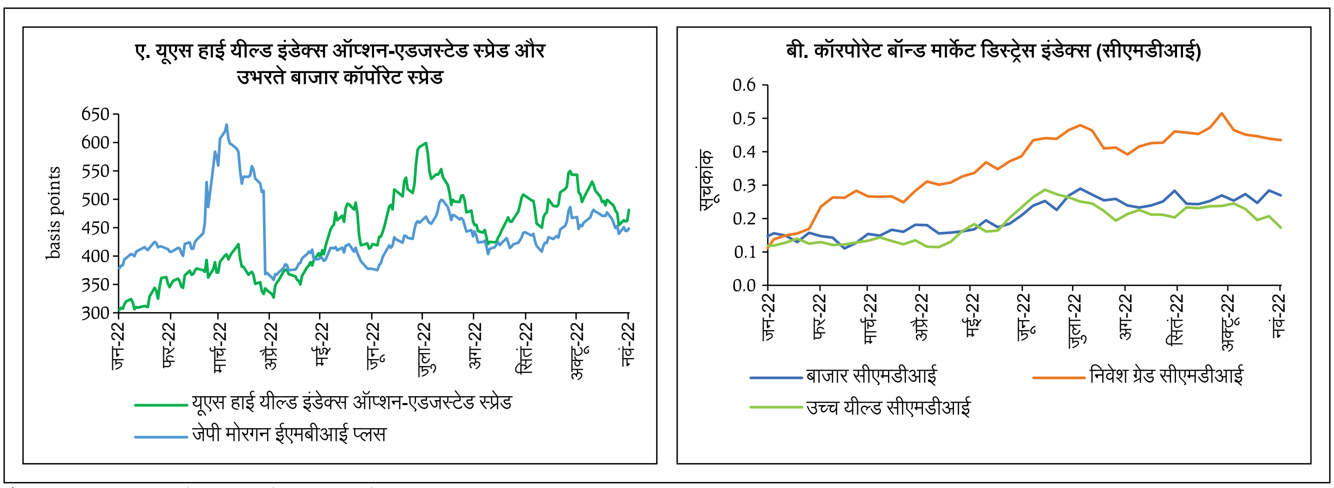

नोट: ईएमबीआई का अर्थ है इमर्जिंग मार्केट्स बॉन्ड इंडेक्स।
स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सेंट लुइस, एफआरईडी, जेपी मॉर्गन और न्यूयॉर्क फेडरल रिजर्व।

सारणी 1.1: एसेट रिटर्न

वापसी (प्रतिशत)	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018	2019	2020	2021	2022 (YTD)
ब्लूमबर्ग यूएस एग्रीगेट लॉन्ग टीआर इंडेक्स	24.0	-12.9	9.4	29.9	3.6	-12.7	25.1	-1.2	1.3	8.5	-1.8	14.8	17.7	-4.6	-24.4
ब्लूमबर्ग यूएस एग्रीगेट टीआर इंडेक्स	5.2	5.9	6.5	7.8	4.2	-2.0	6.0	0.5	2.6	3.5	0.0	8.7	7.5	-1.5	-11.0
ब्लूमबर्ग ग्लोबल एग्रीगेट	4.8	6.9	5.5	5.6	4.3	-2.6	0.6	-3.2	2.1	7.4	-1.2	6.8	9.2	-4.7	-14.4
जेपी मॉर्गन जीबीआई-ईएम ग्लोबल कोर	-5.9	21.7	15.4	-2.0	17.5	-8.3	-5.2	-14.3	10.0	14.7	-6.9	10.1	3.5	-9.2	-10.4
एनएएसडीएक्यू समग्र सूचकांक	-40.5	43.9	16.9	-1.8	15.9	38.3	13.4	5.7	7.5	28.2	-3.9	35.2	43.6	21.4	-28.6
एस एंड पी 500 सूचकांक	-38.5	23.5	12.8	-0.0	13.4	29.6	11.4	-0.7	9.5	19.4	-6.2	28.9	16.3	26.9	-16.2
Oil	-53.5	77.9	15.1	8.2	-7.1	7.2	-45.9	-30.5	45.0	12.5	-24.8	34.5	-20.5	55.0	2.8
सोना	3.5	27.6	28.7	10.1	6.4	-27.7	-0.3	-11.4	8.0	13.5	-1.6	18.7	24.3	-3.4	-1.1
एमएससीआई ईएम सूचकांक	-54.5	74.5	16.4	-20.4	15.1	-5.0	-4.6	-17.0	8.6	34.3	-16.6	15.4	15.8	-4.6	-21.0
एमएससीआई वर्ल्ड सूचकांक	-42.1	27.0	9.6	-7.6	13.2	24.1	2.9	-2.7	5.3	20.1	-10.4	25.2	14.1	20.1	-16.3

नोट: 14 दिसंबर, 2022 को अद्यतन किया गया।
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.8: वित्तीय बाजार में अस्थिरता

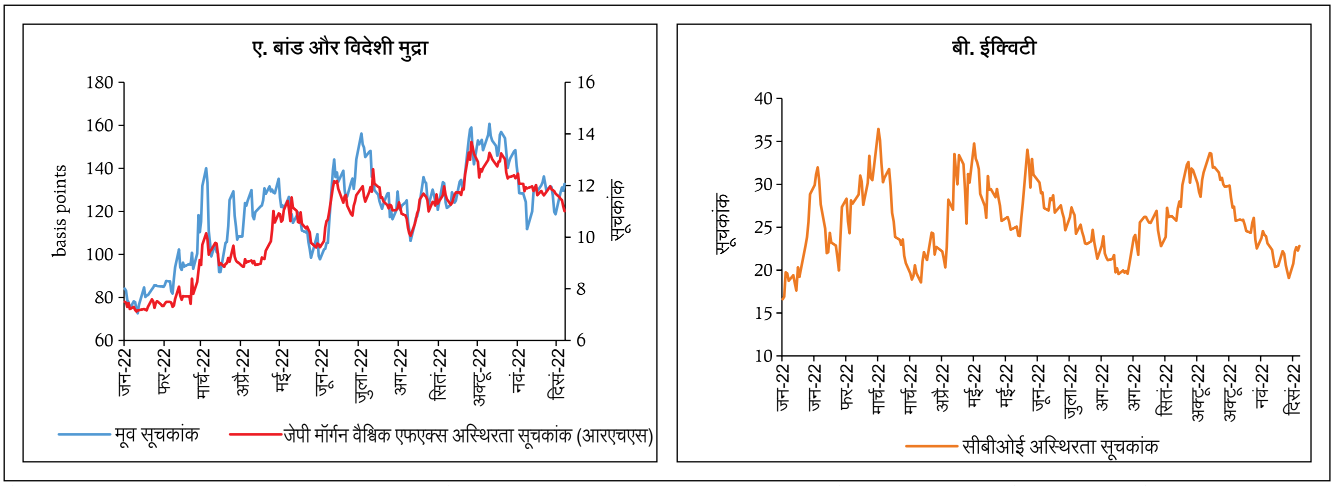

नोट: मूव सूचकांक यूएस फिक्स्ड इनकम मार्केट की अस्थिरता को ट्रैक करता है। एफएक्स अस्थिरता सूचकांक मुद्रा बाजारों की निहित अस्थिरता को मापता है। सीबीओई एस एंड पी 500 बाजार की अंतर्निहित अस्थिरता के अस्थिरता सूचकांक को मापता है।
स्रोत: ब्लूमबर्ग और जेपी मॉर्गन

1.12 इसके साथ-साथ, पूरे बाजार खंडों में अस्थिरता बढ़ी है (चार्ट 1.8 ए और बी)। महामारी की शुरुआत के साथ वित्तीय बाजारों में उथल-पुथल के कारण अल्पावधि (शॉर्ट-टर्म) डॉलर फंडिंग बाजारों में भी तनाव के लक्षण दिखाई दिए हैं, जापानी येन (जेपीवाई) के लिए क्रॉस-करेंसी आधारित अदला-बदली स्प्रेड और मार्च 2020 के बाद से यूरो अपने उच्चतम स्तर तक बढ़ गया है। हालांकि, हाल की अवधि में अदला-बदली स्प्रेड में कमी आई है (चार्ट 1.9)।

1.13 वित्तीय स्थितियों के कड़े होने से 30-वर्षीय अमेरिकी ट्रेजरी और 30-वर्षीय निश्चित-दर बंधकों पर वास्तविक प्रतिफल में तेज वृद्धि भी दिखाई देती है (चार्ट 1.10)।

1.14 वित्तीय स्थितियां पहले से मौजूद कमियों के साथ परस्पर कार्य कर रही हैं और बाजार की शिथिलता को बढ़ा रही है। बदले में, यह केंद्रीय बैंकों को मौद्रिक नीति रुख सख्त बनाए रखते हुए और वित्तीय स्थिरता को संरक्षित रखने के लिए चलनिधि तनाव को कम करने के लिए हस्तक्षेप करते हुए विरोधी स्थिति के लिए मजबूर कर रहा है। यूके में, गिल्ट बाजार में अर्थव्यवस्था को सहायता पहुंचाने के लिए वित्तीय उपायों की घोषणा के कारण अत्यधिक अस्थिरता आई और जिसके चलते बिना निधियों के उधारी और राजकोषीय स्वास्थ्य के बारे में चिंता जताई गई। चूंकि अत्यधिक लिवरेज़ पेंशन फंडों को मार्क-टू-मार्केट नुकसान का सामना करना पड़ा और बड़े पैमाने पर बिकवाली वित्तीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण जोखिमें बन गई,

चार्ट 1.9: एफएक्स-अंतर्निहित डॉलर फंडिंग स्प्रेड

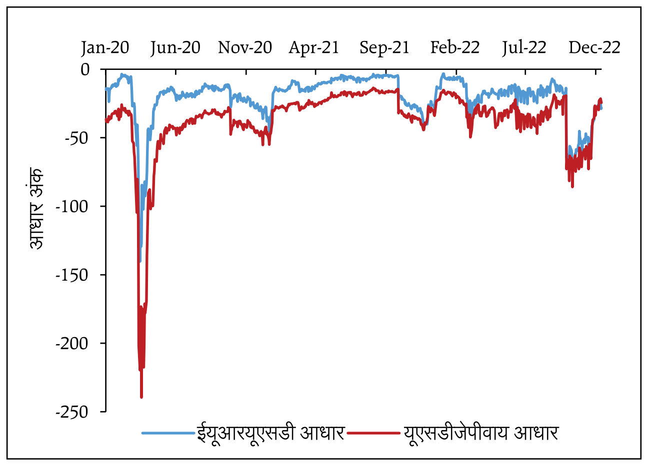

नोट: आधार अदला-बदली में निहित ब्याज दर के बीच के अंतर को दर्शाता है सीधे उधार लेने की ब्याज दर की तुलना में दूसरी मुद्रा प्राप्त करने के लिए एक मुद्रा (अधिक नकारात्मक = अधिक महंगी यूएसडी फंडिंग)।
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

चार्ट 1.10: यू.एस. लंबी अवधि की दरें

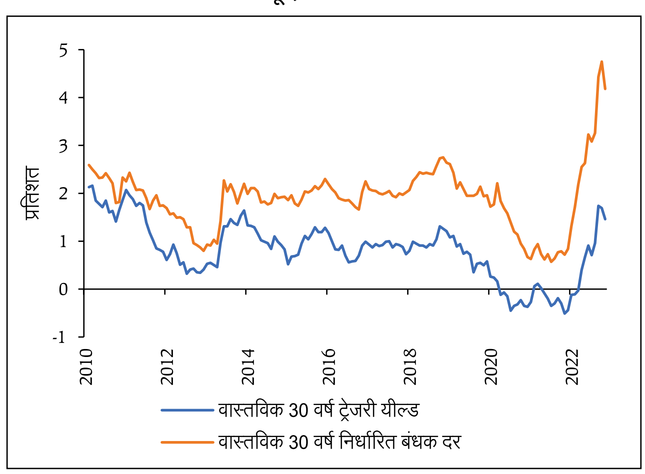

स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सेंट लुइस, एफआरईडी

बैंक ऑफ इंग्लैंड (बीओई) को अस्थायी अवधि के लिए दीर्घकालिक सरकारी बांडों की लक्षित खरीदारी करनी पड़ी। इस बीच, यूरोपीय सेंट्रल बैंक ने सदस्य राज्यों में सॉवरेन बॉन्ड के खंडन जोखिम को कम करने और मौद्रिक नीति के प्रभावी प्रसारण को सुनिश्चित करने के लिए एक ट्रांसमिशन प्रोटेक्शन इंस्ट्रूमेंट (टीपीआई) के गठन की घोषणा की। मौद्रिक नीति को कड़ा करने और चलनिधि के सरल/सामान्यीकरण के इस चरण में, वित्तीय स्थिरता को संरक्षित करने के उद्देश्य से परिचालनों और मौद्रिक नीति के उन व्यापक निर्देश के बारे में परिचालनों के बीच अंतर को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना केंद्रीय बैंकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया।

1.15 आर्थिक दृष्टिकोण के बारे में बढ़ती अनिश्चितता की पृष्ठभूमि को देखते हुए, वैश्विक वित्तीय स्थितियों की मजबूती, बाजार में उतार-चढ़ाव और आस्ति बाजारों में छिटपुट बिकवाली ने वैश्विक स्तर पर समष्टि-वित्तीय जोखिमों को बढ़ा दिया है। भविष्य के झटके यदि कोई हो, मौजूदा वित्तीय प्रणाली की कमियों को बढ़ा सकते हैं।

I.1.2 अन्य वैश्विक समष्टि वित्तीय जोखिम

1.16 वित्तीय स्थिति लगातार कड़ी होती जा रही है और आर्थिक आउटलुक अनिश्चित है, समष्टि वित्तीय जोखिमों का संतुलन नीचे की ओर झुका हुआ है। ऋण की कमी/तनाव, वित्तीय स्थिरता के लिए मौद्रिक मज़बूती के जोखिम, मुद्रा की अस्थिरता, क्रिप्टो आस्ति बाजार में उथल-पुथल और असीमित निधि (ओपन-एंडेड फंड्स) की वृद्धि कुछ प्रमुख जोखिम हैं जो संभवत: वैश्विक वित्तीय स्थिरता को कमजोर कर सकते हैं।

ए. ऋण तनाव

1.17 आईएमएफ के अनुसार, 2020 में वैश्विक ऋण में सकल घरेलू उत्पाद के 29 प्रतिशत अंक की अधिकतम एक साल की वृद्धि होने के बाद, 2021[1] में सकल घरेलू उत्पाद के 10 प्रतिशत अंक गिर गया। हालांकि, जीडीपी अनुपात के लिए वैश्विक ऋण, पूर्व-महामारी के स्तर से 19 प्रतिशत अंक ऊपर रहा। अमरीकी डालर के अनुसार, वैश्विक ऋण में लगातार वृद्धि हुई है और अब यह 235 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के उल्लेखनीय उच्च स्तर पर है। जैसा कि केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति से निपटने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि किए हैं, सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के लिए उधार लेने की लागतों में वृद्धि हो रही है, उच्च ऋण कमियों को व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। कम आय वाले उभरते राष्ट्रों में ऋण संकट विशेष रूप से चिंताजनक है जहां महामारी के निशान अधिक स्पष्ट हैं और संप्रभु (सोवरेन) के प्रसार तेजी से बढ़ रहे हैं।

1.18 बढ़ी हुई ऋण स्तरों और तेजी से बढ़ रही उधार लेने की लागतों को देखते हुए कल्याण स्वरूप हानियों को कम करने या रोकने के लिए कई देशों ने रहने की लागत के की कमी के लिए उपलब्ध सीमित राजकोषीय नीति स्पेस पर ध्यान केंद्रीत करवाया है। आईएमएफ के अनुसार, 2022 में सकल घरेलू उत्पाद का 91 प्रतिशत वैश्विक सरकारी ऋण[2] का अनुमान लगाया गया था, जो पूर्व-महामारी स्तर के 7.5 प्रतिशत अधिक है (चार्ट 1.11)। इसके आगे, राजकोषीय घाटा एई में जीडीपी के 3.6 प्रतिशत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (ईएमई) में 6.2 प्रतिशत तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया है, जो क्रमशः

चार्ट 1.11: सामान्य सरकारी ऋण

(जीडीपी का प्रतिशत)

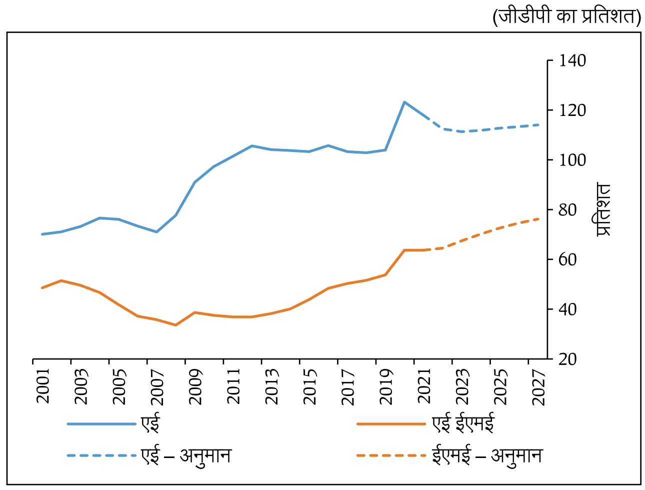

नोट: एई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बारे में बताता है और ईएमई उभरते बाजार अर्थव्यवस्था के बारे में बताता है
स्रोत: आईएमएफ

[1] आईएमएफ (2022), ग्लोबल डेट डेटाबेस।

[2] चीन को छोड़कर

चार्ट 1.12: सामान्य सरकारी संतुलन

(जीडीपी का प्रतिशत)

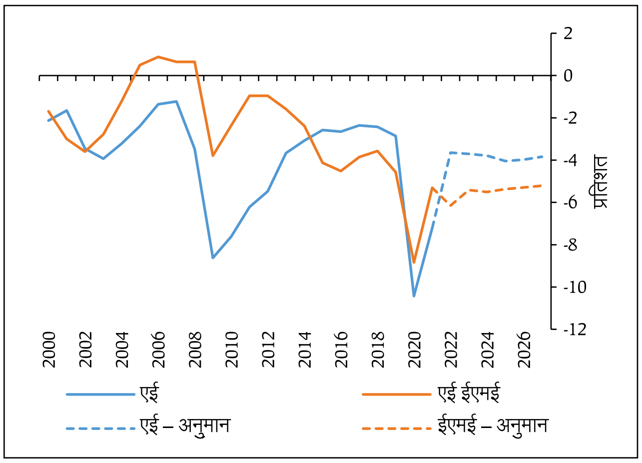

नोट: एई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को संदर्भित करता है और ईएमई उभरते बाजार अर्थव्यवस्था को संदर्भित करता है

स्रोत: आईएमएफ।

चार्ट 1.13: 2022 में ईएमई सामान्य सरकारी ऋण

(जीडीपी का प्रतिशत)

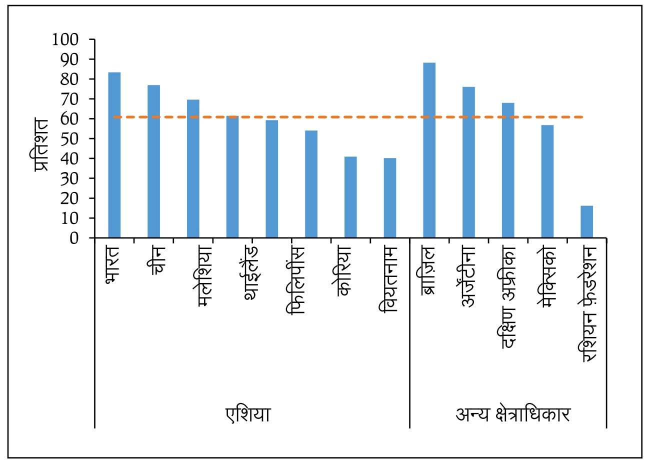

नोट: बिंदीदार रेखा औसत सामान्य सरकारी ऋण का प्रतिनिधित्व करती है।

स्रोत: आईएमएफ।

1.1 और 2.2 प्रतिशत अंक, उनके 2017-19 के औसत से ऊपर है (चार्ट 1.12 और 1.13)।

1.19 उसी समय में, गैर-वित्तीय क्षेत्र के ऋण (सरकार, गैर-वित्तीय कॉरपोरेट्स और परिवार) का बाजार मूल्य कोविड-19 महामारी के दौरान बहुत उच्च स्तर पर पहुंच गए थे (चार्ट 1.14) जो भेद्यता के स्रोत के रूप में उभर रहा है और यह विशेष रूप से सख्त मौद्रिक नीति चक्र के कारण हुआ (चार्ट 1.15)। कई अर्थव्यवस्थाओं में, निजी क्षेत्र का ऋण सरकारी ऋण से अधिक

चार्ट 1.14: वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण में वृद्धि

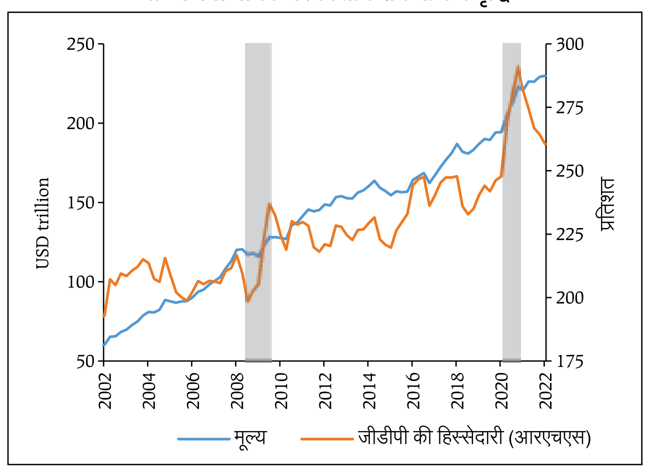

स्रोतः बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस)।

चार्ट 1.15: वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण तुलना

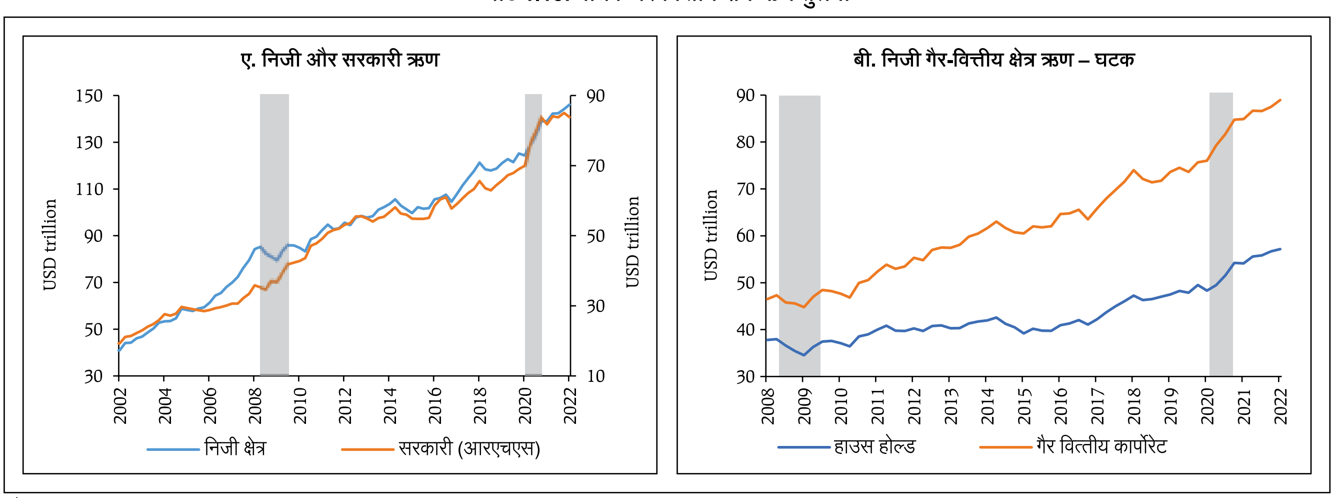

स्रोत: बीआईएस

है (सारणी 1.2)। एई में गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण का हिस्सा अधिक है (चार्ट 1.16)। वित्तीय स्थिरता बोर्ड के अनुसार, ऋण सर्विसिंग के लिए एक समस्या हो सकती है अगर औसत ब्याज दरें वैसी ही दर से बढ़ी जैसा कि ग्लोबल वित्तीय संकट के दौरान किया था और आय में 3 प्रतिशत[3] की गिरावट हुई। कई ईएमई के लिए जिनका ऋण स्तर पहले से ही व्यथित स्तर पर है यह दबाव आगे भी तेज होने की संभावना है क्योंकि उनकी मुद्राएं अमेरिकी डालर के मुकाबले मूल्यह्रास हुई है और उधार लेने की लागत में वृद्धि हुई है।

सारणी 1.2: वैश्विक गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण पहली तिमाही :2022

जीडीपी का प्रतिशत

	कुल गैर वित्तीय क्षेत्र	सरकारी	निजी	निजी	
				हाउस होल्ड	गैर वित्तीय कार्पोरेट
वैश्विक	**261**	**95**	**166**	**65**	**101**
विकसित	**281**	**114**	**167**	**74**	**93**
यूएस	275	117	158	77	81
यूरो क्षेत्र	273	103	169	59	110
यूके	271	118	153	85	68
जापान	425	238	186	69	117
उभरती	**230**	**67**	**163**	**51**	**113**
चाईना	292	73	218	61	157
भारत	176	85	91	37	54
कोरिया	268	47	221	105	115
रसिया	118	17	100	22	79
तुर्की	127	41	86	13	73
साउथ अफ्रीका	135	69	66	34	32
ब्राजील	175	90	85	34	51
मेक्सिको	82	42	41	16	24

स्रोत: बीआईएस

बी. वित्तीय स्थिरता के लिए मौद्रिक सख्त/कसाव जोखिम

1.20 मौद्रिक नीति का आक्रामक रूप से कड़ा होना अगले एक साल तक जारी रहने की संभावना है (चार्ट 1.17 और 1.18)। वर्तमान में कड़ा/सख्त होने के चरण के दो विशेषताएं हैं जो ऐतिहासिक रूप से सामने आ रही/आयी हैं। सबसे पहले,

चार्ट 1.16: देश के अनुसार गैर-वित्तीय क्षेत्र ऋण, पहली तिमाही :2022

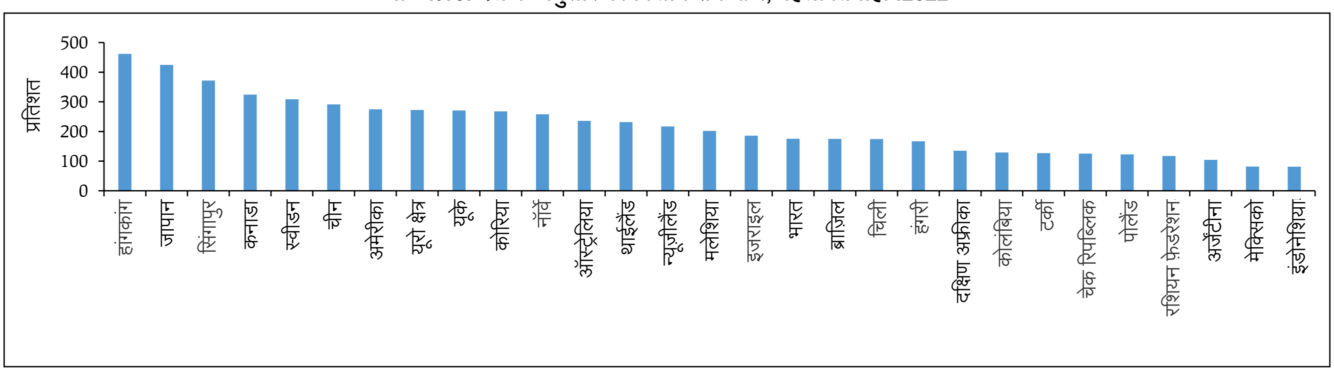

स्रोत: बीआईएस

चार्ट 1.17: केंद्रीय बैंक दर वृद्धि (प्रतिशत)

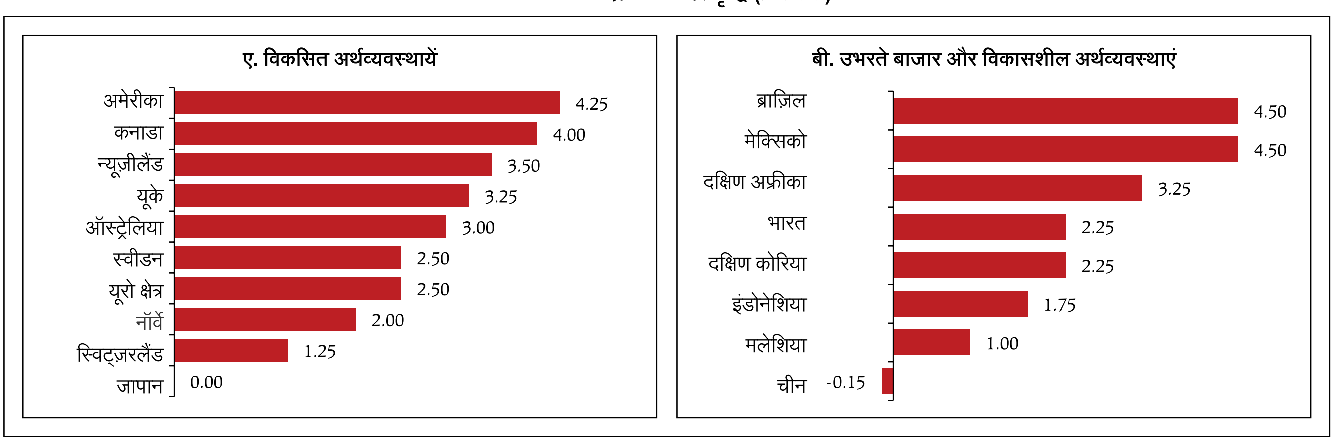

नोट: 15 दिसंबर, 2022 की स्थिति के अनुसार।
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

[3] वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2022), "2022 दूसरी छमाही भेद्यता आकलन", अगस्त।

चार्ट 1.18: 1-वर्ष की अंतिम दर अपेक्षाएँ

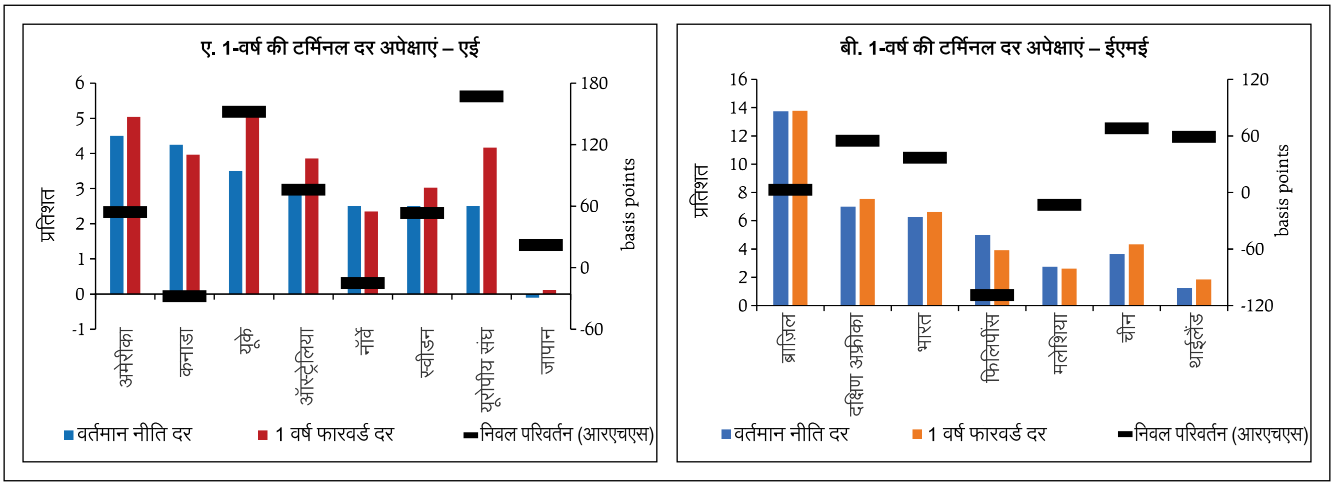

नोट: 15 दिसंबर, 2022 की स्थिति के अनुसार।
स्रोत: ब्लूमबर्ग।

यह पिछले 50 वर्षों में सबसे अधिक सिंक्रनाइज़ हुई है, दूसरा, नीतिगत दर में दो बार शीघ्र वृद्धि हुई है जैसा कि पहले किया गया था। फ्रंटलोडेड और कसने की सामान्य से तेज गति वित्तीय स्थिरता को प्रभावित किया है क्योंकि यह वित्तीय प्रणाली की कमियों के साथ कई चैनलों के माध्यम से कार्य कर रही हैं।

1.21 वास्तविक अर्थव्यवस्था में ऋण का प्रवाह में बाधा और बाजार का विस्थापन हाने से केंद्रीय बैंकों द्वारा ब्याज़ दर में बढ़ोतरी के कारण जब वित्तीय स्थितियां सख्त हो जाती हैं तो जोखिम वाली संपत्ति अक्सर बेच दी जाती है। गैर-बैंकिंग वित्तीय संस्थानों के फुट प्रिंट में वृद्धि से बाजार इस तरह के एपिसोड के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए हैं, जैसा कि मार्च 2020 में बाजार में उथल-पुथल देखा गया था। दूसरा, हाल के वर्षों में अटेंडेंट ऋण सेवा लागत के साथ निजी उधारकर्ताओं और सरकार दोनों के ऋण स्तर में काफी वृद्धि हुई है। यह ईएमई के लिए डॉलर मूल्यवर्ग वाले ऋण के साथ और अधिक स्पष्ट है, जो अमेरीकी डालर के तेज वृद्धि के साथ बढ़ा हुआ है। तीसरा, कई अर्थव्यवस्थाओं में, आय की तुलना में आवास की कीमतों का अनुपात पिछले कसे हुए चक्र से अधिक है। अंत में, वित्तीय स्थितियों का कड़े होने से और आस्ति की गुणवत्ता खराब होने के कारण वित्तीय संस्थाओं को होने वाले नुकसान ने वित्तीय स्थिरता को संकटग्रस्त किया है जो उन्हें जोखिम कम करने और उधार देने के मानकों को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। बदले में यह आर्थिक विकास में बाधा बन सकता है।

1.22 मौद्रिक कसाव के आकार और गति को कैलिब्रेट करना एक चुनौती है क्योंकि केंद्रीय बैंक विकसित हो रही घरेलू चुनौतियों का सामना करते हैं जो देश-विशिष्ट विविधताओं को दर्शाता है। वित्तीय स्थितियों का प्रभाव वित्तीय प्रणाली में पहले से मौजूद कमियां बढ़ाने के साथ त्वरित और बड़े आकार की रही हैं और वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करता है। जबकि जीएफसी के बाद विनियामक सुधारों से बैंक बैलेंस शीट्स का सुदृढ़ीकरण हुआ और उनकी आघातसहनीयता में सुधार हुआ और यूके में पेंशन फंड के मामले में छुपा हुआ लिवरेज़ सामने आया है और इन बफ़र्स पर हावी हो सकता है और परस्पर जुड़ी वित्तीय प्रणाली में सर्वांगी स्थिरता को खतरा हो सकता है जहां बैंक गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थताओं के लिए प्रतिपक्ष हैं। केंद्रीय बैंकों द्वारा मात्रात्मक कसाव चलनिधि के दबाव को बढ़ा सकता है। मौद्रिक सख्ती का असर केंद्रीय बैंक के तुलन पत्र पर भी पड़ेगा। चूंकि वे तेजी से ब्याज दरें बढ़ा रहे हैं तो उन्हें नुकसान हो सकता है क्योंकि वे अपनी देयताओं पर लगातार ब्याज अदा करते हैं जो लगातार बढ़ती रहती हैं जबकि आस्तियां (प्रतिभूतियों) अपेक्षाकृत स्थिर रहती हैं (चार्ट 1.19)। स्वतंत्र मौद्रिक नीति के संचालन करने, सरकार को अधिशेष

हस्तांतरण और करदाता[4] को हानि, यदि कोई हो के लिए उनकी क्षमता के अनुसार केंद्रीय बैंकों के लिए संभावित नुकसान के कई प्रभावी आयाम हैं।

सी. करेंसी अस्थिरता (वोलैटिलिटी)

1.23 वैश्विक आघातों और स्पिलओवर के कारण विनिमय दर में उतार-चढ़ाव बड़े पैमाने पर हुआ और मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखने के लिए मौद्रिक नीति हस्तक्षेप किए गए। विशेष रूप से अमेरिकी डालर उन्नत और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की करेंसियों के मुक़ाबले तेजी से मजबूत हुआ (चार्ट 1.20 ए और बी)।

1.24 हाल ही के विनिमय दर की गतिविधियों का एक प्रमुख कारक व्यापार में परिवर्तन है। जिन देशों ने व्यापार की खराब स्थिति का अनुभव किया है, विशेष रूप से जो बहुत अधिक ऊर्जा आयात पर निर्भर हैं, ने भी कमोडिटी निर्यातकों की तुलना में उनकी मुद्राओं में बड़े मूल्यह्रास का सामना किया है (चार्ट

चार्ट 1.19: फेडरल रिजर्व सिस्टम ओपन मार्केट अकाउंट (एसओएमए) - अनुमानित निवल आय

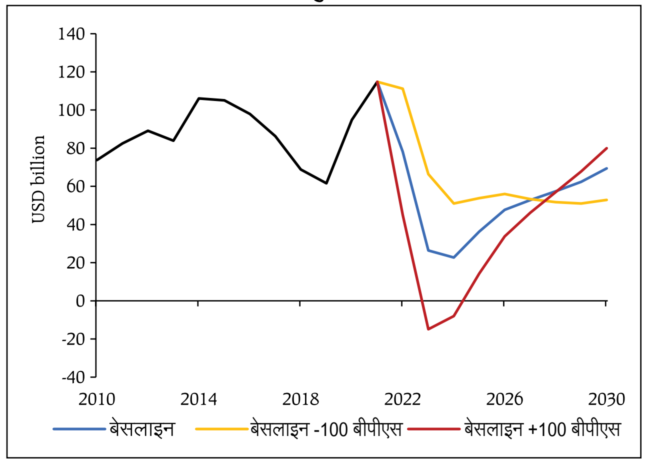

स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ न्यूयॉर्क, ओपन मार्केट परिचालन 2021 वार्षिक रिपोर्ट

चार्ट 1.20: यूएसडी मूल्यवृद्धि

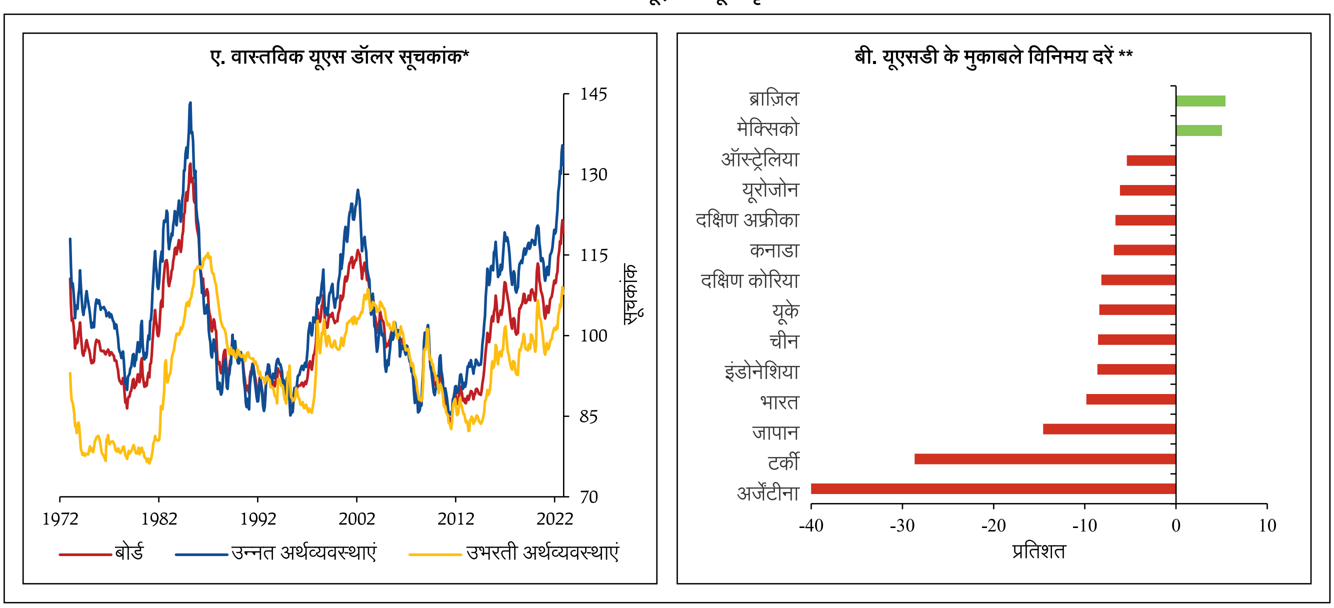

नोट: * माल और सेवाओं में व्यापार के आधार पर फेडरल रिजर्व बोर्ड के व्यापार-भारित वास्तविक अमेरिकी डॉलर सूचकांक का मासिक औसत। वृद्धि USD की सराहना दर्शाती है।
** 31 दिसंबर, 2021 से 14 दिसंबर, 2022 तक अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सांकेतिक द्विपक्षीय विनिमय दरों में बदलाव।
स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सेंट लुइस, एफआरईडी, ब्लूमबर्ग।

[4] इंग्लिश, विलियम बी., कोह्न, डोनाल्ड (2022), "व्हाट इफ फेड बुक्स लॉसेस बीकॉज ऑफ़ इट्स क्वांटिटेटिव ईजिंग?", ब्रूकिंग्स, जून।

चार्ट 1.21: व्यापार की शर्तों और विनिमय दर मूल्यह्रास

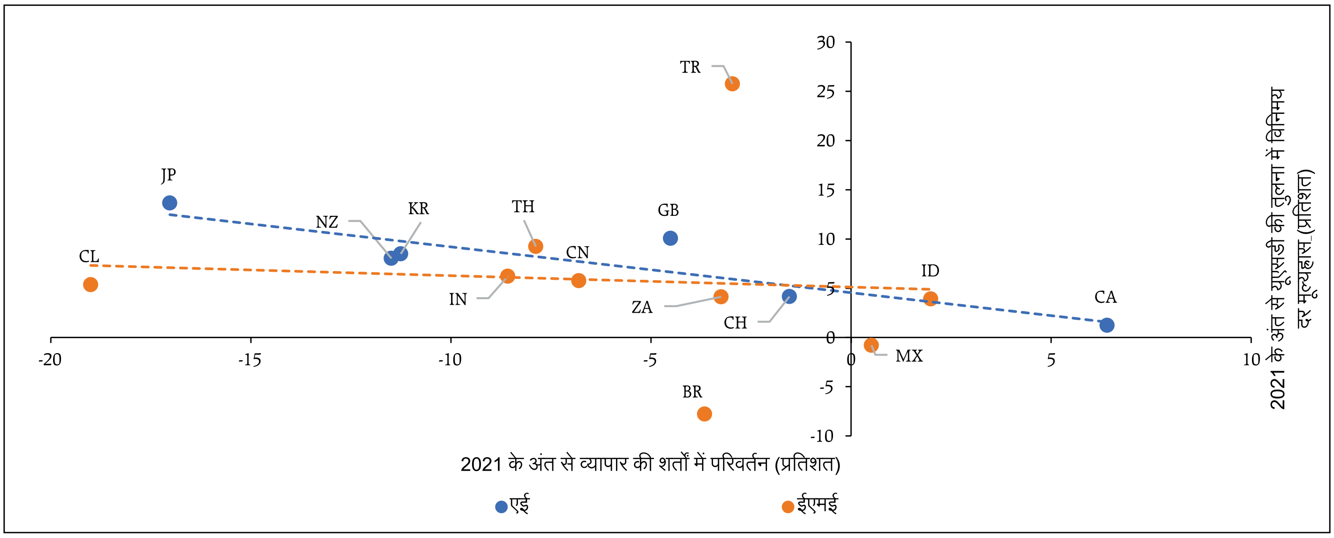

नोट: जेपी = जापान, एसई = स्वीडन, एनओ = नॉर्वे, जीबी = यूनाइटेड किंगडम, केआर = दक्षिण कोरिया, एनजेड = न्यूजीलैंड, ईयू = यूरोज़ोन, सीए = कनाडा, एयू = ऑस्ट्रेलिया, सीएच = स्विट्जरलैंड, सीएन = चीन, टीएच = थाईलैंड, आईडी = इंडोनेशिया, आईएन = भारत, जेडए = दक्षिण अफ्रीका, एमएक्स = मेक्सिको, बीआर = ब्राजील, पीएल = पोलैंड, सीएल = चिली, टीआर = तुर्की।
स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.21)। यह अमेरीकी व्यापार की शर्तों में सुधार के अनुरूप है क्योंकि अमेरिका उर्जा का एक निवल निर्यातक बन गया है।

1.25 विभिन्न देशों में मौद्रिक नीति को सख्त करने की अलग-अलग गति मुद्रा के उतार-चढ़ाव को प्रभावित करने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक रहा है। अमेरिकी डालर की तुलना में अन्य मुद्राओं में बड़े मूल्यह्रास को आम तौर पर अमेरिका की तुलना में नीतिगत दरों के अंतर के साथ परस्पर जोड़ कर देखा गया है (चार्ट 1.22)।

1.26 वैश्विक आर्थिक स्थितियों पर मजबूत अमेरिकी डालर का प्रभाव महत्वपूर्ण[5] रहा है, क्योंकि यह ट्रेड इनवॉयस तैयार

चार्ट 1.22: नीति दर परिवर्तन और विनिमय दर मूल्यह्रास

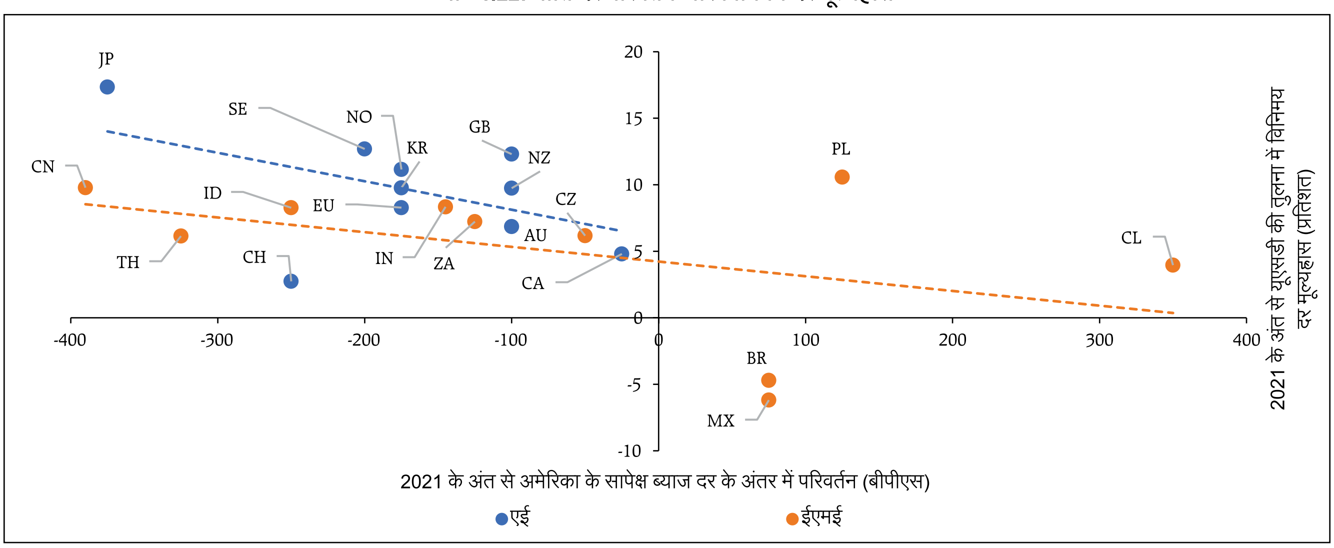

नोट : जेपी = जापान, जीबी = यूनाइटेड किंगडम, केआर = दक्षिण कोरिया, एनजेड = न्यूजीलैंड, सीए = कनाडा, सीएच = स्विट्जरलैंड, सीएन = चीन, टीएच = थाईलैंड, आईडी = इंडोनेशिया, आईएन = भारत, जेडए = दक्षिण अफ्रीका, एमएक्स = मेक्सिको, बीआर = ब्राजील, सीएल = चिली, टीआर = तुर्की
स्रोत: ब्लूमबर्ग

[5] डेमियानो, सैंड्री, हॉफमैन, बोरिस एंड मेहरोत्रा, आरोन (2022), "ग्लोबल एक्सचेंज रेट एडजस्टमेंट्स: ड्राइवर्स, इम्पैक्ट्स एंड पॉलिसी इम्प्लिकेशंस", बीआईएस बुलेटिन न. 62, नवंबर।

चार्ट 1.23: वैश्विक लेनदेन और आस्तियों में यूएसडी की हिस्सेदारी

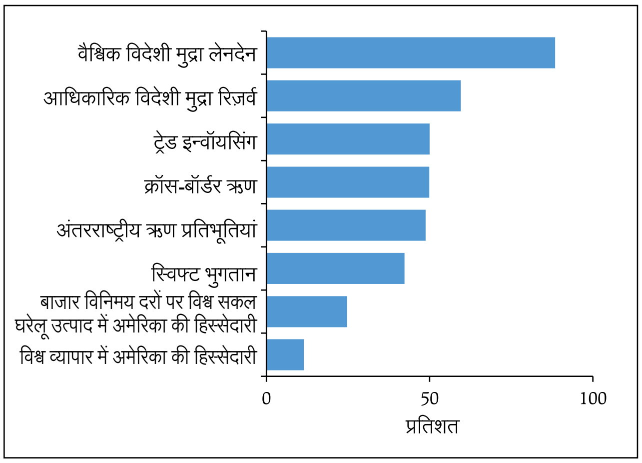

स्रोत: बीआईएस तिमाही समीक्षा, दिसंबर 2022

चार्ट 1.24: अमेरिकी डॉलर और तेल की कीमतें

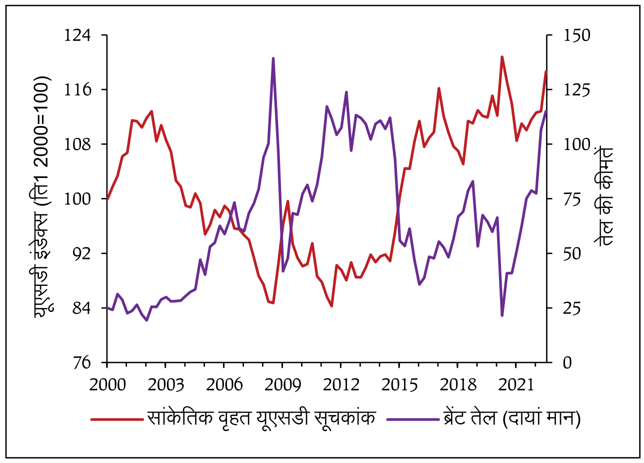

नोट: वस्तु और सेवाओं में व्यापार के आधार पर फेडरल रिजर्व बोर्ड व्यापार-भारित सांकेतिक डॉलर सूचकांक जिसमें प्रमुख अमेरिकी व्यापारिक भागीदारों का व्यापक समूह है। यह वृद्धि अमेरिकी डॉलर की मूल्यवृद्धि दर्शाती है।
स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सेंट लुइस, एफआरईडी, ब्लूमबर्ग

करने और वित्तपोषण, वैश्विक पूंजी बाजारों में मुद्रा के निधीयन और सीमा-पार भुगतान के मामले में सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली मुद्रा है (चार्ट 1.23)। वर्ष 2022 के बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस) द्वारा विदेशी मुद्रा और ओवर-द-काउंटर (ओटीसी) डेरिवेटिव्स मार्केट्स पर किए गए त्रिवार्षिक सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि वैश्विक मुद्रा व्यापार में अमेरिकी डॉलर का निरंतर प्रभुत्व बना हुआ है और कुल व्यापार में केवल अमेरिकी डॉलर की हिस्सेदारी 88 प्रतिशत की है।

1.27 अमेरिकी डालर के मूल्य में वृद्धि से भी आयात की कीमतें बढ़ती हैं, विशेष रूप से उन वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं जिनका इनवॉयस अमेरिकी डालर में तैयार किया जाता है, जिससे मुद्रास्फीति में वृद्धि होती है। वास्तव में, पिछले प्रकरणों से हटकर, पण्य की बढ़ी हुई कीमतें अमेरिकी डालर अधिमूल्यन (चार्ट 1.24) के साथ मेल खाती हैं।

1.28 स्थानीय मुद्राओं में पण्य की कीमतें काफी अधिक बढ़ी हैं। कीमतों और मजदूरी पर दूसरे क्रम के प्रभाव के साथ-साथ इससे वस्तुओं की बढ़ती कीमतों के मुद्रास्फीतिक प्रभाव बढ़ गए हैं (चार्ट 1.25)। अमेरिकी डालर के मजबूत होने से व्यापार ऋण की स्थिति भी कठोर होती है और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं पर दबाव बढ़ता जाता है[6]।

1.29 उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में, अमेरिकी डालर के मजबूत होने से पूंजी बहिर्वाह हुआ है और

चार्ट 1.25: घरेलू मुद्रा में तेल की कीमतों में वृद्धि*

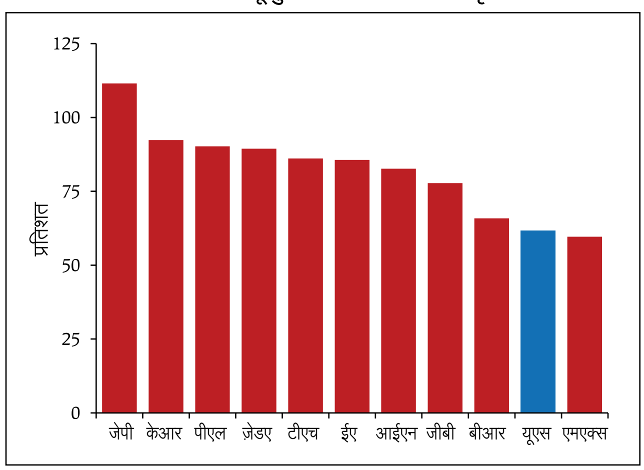

नोट: * 31 दिसंबर, 2020 से 14 दिसंबर, 2022 तक प्रतिशत परिवर्तन
स्रोत: ब्लूमबर्ग

[6] ब्रूनो वी एंड एच एस शिन (2021): "डॉलर्स एंड एक्सपोर्ट्स: द एफेक्ट्स ऑफ करेंसी स्ट्रेंथ ऑन इंटरनेशनल ट्रेड", VoxEU, 27 जुलाई, cepr.org/voxeu/columns/dollars-and-exports-effects-currency-strength-international trade

डॉलर मूल्यवर्ग के ऋण पर ऋण सेवा लागत में वृद्धि हुई है (चार्ट 1.26)। ऐतिहासिक रूप से, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक मंदी कम विकसित और उथले वित्तीय बाजारों और कमजोर बैलेंस शीट के मद्देनजर अमेरिकी डॉलर में मूल्यवृद्धि के झटके से जुड़ी हुई है[7]।

1.30 बीआईएस ने अपनी दिसंबर तिमाही की समीक्षा में अनुमान लगाया है कि 80 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण इस अर्थ में "गायब" है कि वे एफएक्स स्वैप, फॉरवर्ड और मुद्रा स्वैप के अंग हैं, जिन्हें -बैलेंस शीट के बाहर रिपोर्ट किया गया है[8]। गायब डॉलर संबंधी दायित्वों के इस आश्चर्यजनक आकार में से, बैंकों का एक्सपोजर 52 ट्रिलियन अमेरिकी डालर था और गैर-बैंकों का एक्सपोजर 26 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का आधा था। इसके अलावा, यह 26 ट्रिलियन अमेरिकी डालर ऋण शायद अमेरिका के बाहर की फर्मों द्वारा धारित है जिनके लिए अमेरिकी डालर एक विदेशी मुद्रा है। बीआईएस समीक्षा में इस बात पर भी प्रकाश डाला गया है कि 2022 बीआईएस त्रिवार्षिक सर्वेक्षण के नए आंकड़ों के अनुसार, निपटान जोखिम वितरण योग्य एफएक्स टर्नओवर के लगभग एक तिहाई में मौजूद है, जिसके प्रणालीगत प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं।

डी. बैंकिंग क्षेत्र की आघात-सहनीयता

1.31 प्रतिकूल वैश्विक वित्तीय वातावरण के बावजूद, पर्याप्त पूंजी बफर और अनर्जक ऋणों के मध्यम स्तर के कारण बैंकिंग प्रणाली की आघात-सहनीयता बनी हुई है। यह देखते हुए कि निवेश पोर्टफोलियो पर बढ़ती ब्याज दरों का प्रारंभिक प्रभाव सीमित था, 2022 की पहली छमाही में लाभप्रदता में सुधार उच्च निवल ब्याज आय के कारण था। हालांकि, 2022 की दूसरी छमाही में मार्क-टू-मार्केट नुकसान बढ़ सकता है (चार्ट 1.27)।

चार्ट 1.26: उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं से पूंजी पलायन

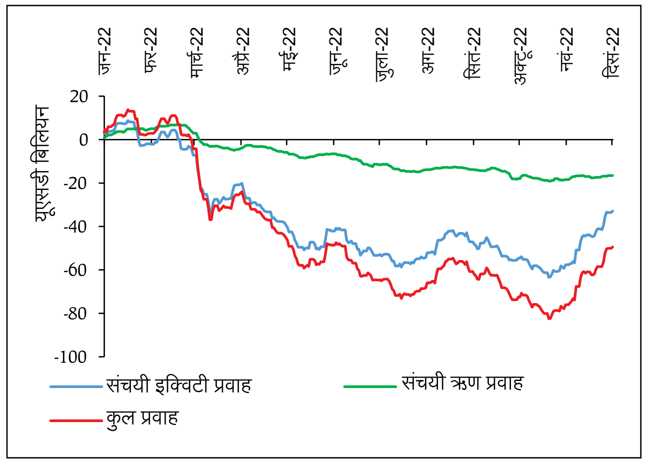

स्रोत: आईआईएफ

चार्ट 1.27: बैंकों की लाभप्रदता और पूंजी

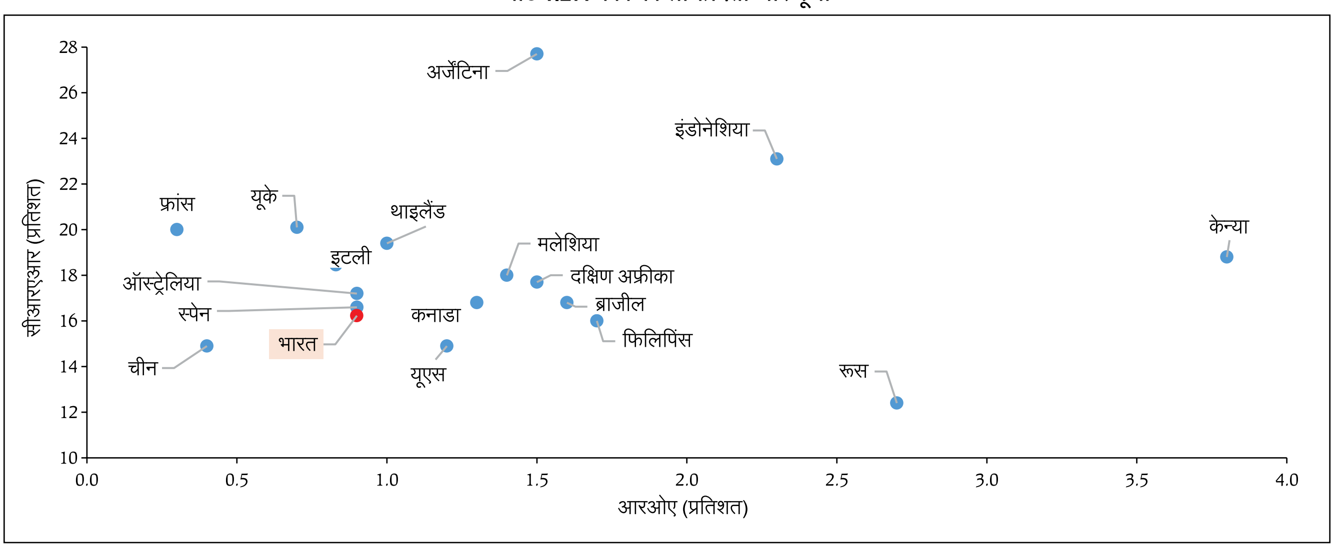

स्रोत: वित्तीय सुदृढ़ता संकेतक, आईएमएफ

[7] ओब्स्टफेल्ड, मौरिस एंड झोउ, हाओनान (2022), "द ग्लोबल डॉलर साइकिल", आर्थिक गतिविधि पर ब्रोकिंग पेपर्स, अगस्त

[8] बीआईएस (2022), "बीआईएस तिमाही समीक्षा", दिसंबर।

1.32 आईएमएफ द्वारा भारत सहित 29 अर्थव्यवस्थाओं - 24 एई और 5 ईएमई में बैंकों के लिए किए गए एक दबाव परीक्षण, जिसमें बैंकिंग क्षेत्र की संयुक्त आस्तियां की हिस्सेदारी वैश्विक बैंकिंग आस्तियों का 70 प्रतिशत है, से पता चलता है कि समग्र रूप से वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र में आम तौर पर महामारी के झटकों को सहन करने के लिए आघात-सहनीयता होती है। गंभीर मंदी परिदृश्य के तहत उनके सामान्य इक्विटी टियर 1 (सीईटी 1) पूंजी अनुपात में एई बैंकों के लिए 2.5 प्रतिशत अंक और ईएमई बैंकों के लिए 5.5 प्रतिशत अंक की गिरावट आएगी (चार्ट 1.28 ए)। एई में अधिकांश बैंकों में आघात-सहनीयता रहेगी लेकिन ईएमई में 29 प्रतिशत बैंकों में न्यूनतम पूंजी आवश्यकता (सीईटी 1 अनुपात 4.5 प्रतिशत से नीचे)[9] निर्धारित स्तर से नीचे जा सकती है (चार्ट 1.28 बी)।

ई. जलवायु वित्त

1.33 दुनिया भर में जलवायु संबंधी जोखिम बढ़ रहे हैं क्योंकि सूखा, बाढ़, गर्मी की लहरों और कड़ाके की ठंड की तीव्रता बढ़ रही है और दक्षिणी और उत्तरी गोलार्ध दोनों में ऐसी घटनाएं बार-बार हो रही हैं। विभिन्न अर्थव्यवस्थाएं आपस में समन्वयन कर रही हैं और एक ऐसी महत्वाकांक्षी योजना की दिशा में काम कर रही हैं जो जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए, इन खतरों को कम करने और इनसे सामंजस्य बिठाने, दोनों के प्रयासों को तेज करती है। इन प्रयासों का एक प्रमुख अंश आने वाले वर्षों में जलवायु संबंधी जोखिम को कम करने के लिए, यानी, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और खतरों से सामंजस्य बिठाने के लिए वित्त उपलब्ध कराने हेतु जलवायु

चार्ट 1.28: आईएमएफ वैश्विक बैंक दबाव परीक्षण

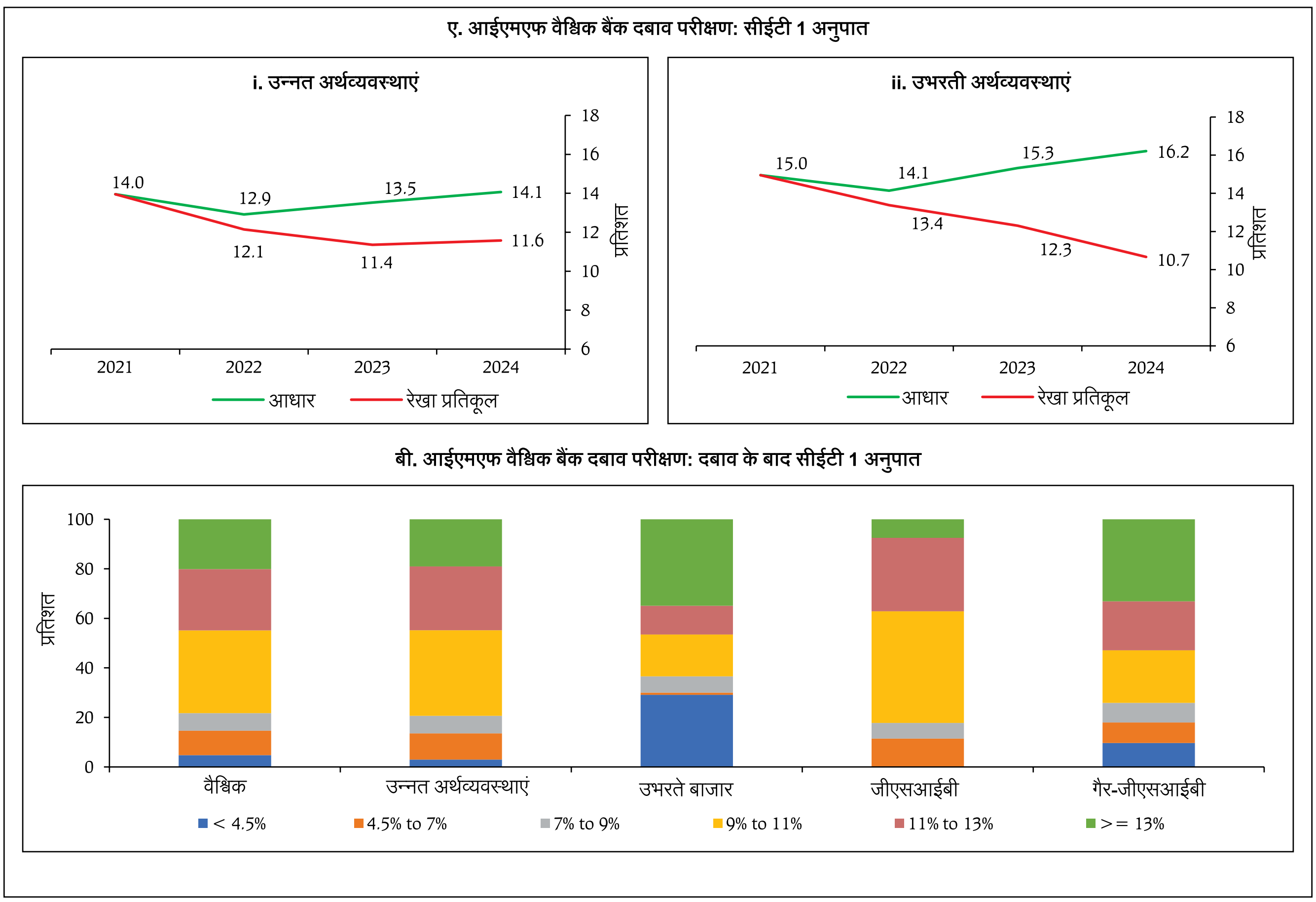

स्रोत: आईएमएफ

[9] आईएमएफ (2022), "द ग्लोबल बैंक स्ट्रेस टेस्ट, मॉनेटरी एंड कैपिटल मार्केट्स डिपार्टमेंटल पेपर", सितंबर।

संबंधी जोखिम के लिए वित्तपोषण को बढ़ावा देना है जो जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से सामंजस्य बिठाने हेतु आवश्यक है। चूंकि दुनिया भर में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का दो-तिहाई हिस्सा उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) से आता है और उनमें जलवायु जोखिमों का खतरा काफी अधिक है, इसलिए उनके लिए जलवायु वित्तपोषण की बहुत आवश्यकता है।

1.34 अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) के अनुसार, अगर उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं (ईएमडीई) 2050 तक निवल-शून्य ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तक पहुंचने के रास्ते पर रहना चाहते हैं तो उन्हें 2030 तक स्वच्छ ऊर्जा में अपने निवेश को सालाना 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ाना होगा[10]। इसके अलावा, उनकी अनुमानित वार्षिक अनुकूलन वित्तपोषण आवश्यकता 2030 तक 160 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 340 बिलियन अमेरिकी डॉलर और 2050 तक 315 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 565 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक है, इन अर्थव्यवस्थाओं में अनुकूलन वित्त अंतर मौजूदा वैश्विक अनुकूलन वित्त प्रवाह से पांच से दस गुना अधिक है[11]। महत्वपूर्ण जलवायु वित्त आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, कम निवेश जलवायु से संबंधित वित्तीय जोखिमों (चार्ट 1.29 और 1.30) के एक्सपोजर के बढ़ने से वित्तीय स्थिरता जोखिम बढ़ सकते हैं (चार्ट 1.29 और चार्ट 1.30)।

1.35 महामारी के मद्देनजर सार्वजनिक वित्त विस्तारित स्तर पर होने के साथ, उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में जलवायु वित्तपोषण की जरूरतों को पूरा करने के लिए निजी वित्त महत्वपूर्ण है। हालांकि, निजी जलवायु वित्त के बढ़ने से कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। घरेलू पूंजी बाजार का कम मजबूत होना, कम रिटर्न, डेटा और प्रकटीकरण के अभाव में निवेश लाभ के बारे में सूचना विषमता और उच्च क्रेडिट जोखिम निवेशकों की रुचि को कम करने वाले कुछ मुख्य कारण हैं। हालांकि पर्यावरणीय, सामाजिक और अभिशासन संबंधी (ईएसजी) निवेश बढ़ रहा है, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में अपने समकक्षों की तुलना में उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में फर्मों के ईएसजी स्कोर कम होने से ईएमडीई आस्तियों (चार्ट 1.31 और 1.32) के लिए संस्थागत निधियों के आबंटन में व्यवधान हो रहा है[12] (चार्ट 1.31 और चार्ट 1.32)।

चार्ट 1.29: शमन में वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह

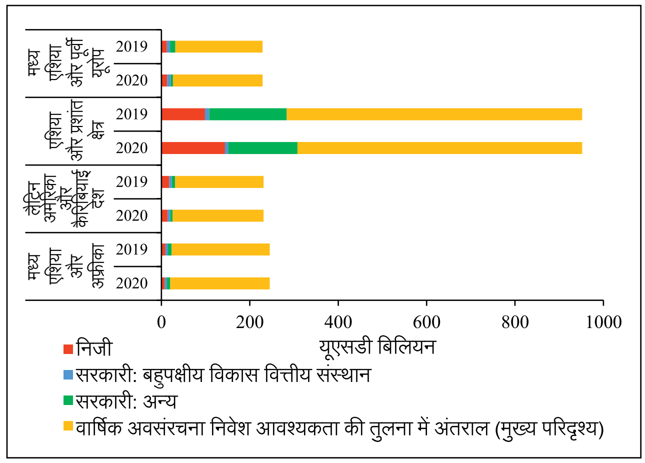

स्रोत: आईएमएफ

चार्ट 1.30: सामंजस्य बिठाने में वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह

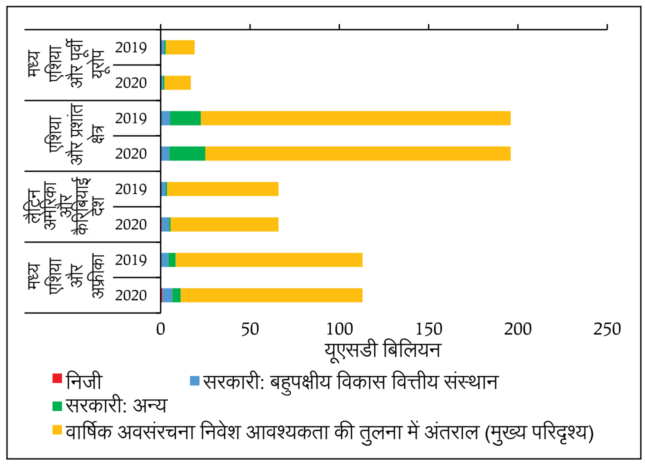

स्रोत: आईएमएफ

चार्ट 1.31: ईएसजी स्कोर (संभाव्यता) का सरल वितरण कार्य

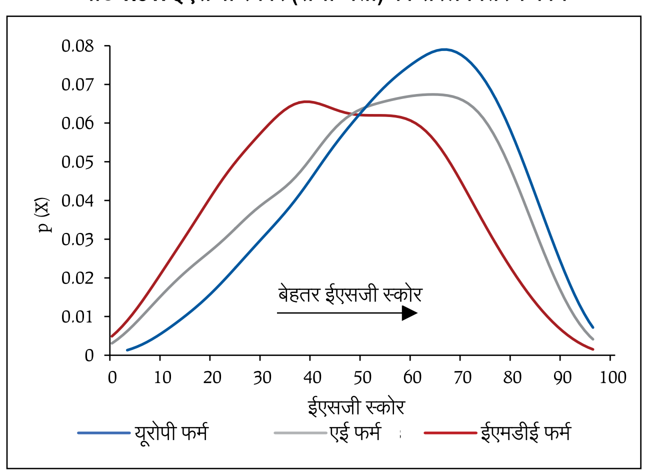

स्रोत: आईएमएफ

---

[10] इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी (2021), "फाइनैंशिंग क्लीन एनर्जी ट्रांजिशंस इन इमर्जिंग एंड डेवलपिंग इकोनॉमीज़" वर्ल्ड एनर्जी इंवेस्टमेंट 2021 स्पेशल रिपोर्ट, पेरिस।

[11] यूनाइटेड नेशंस इंवाइरोन्मेंट प्रोग्राम (2022), "एडेप्टेशन गैप रिपोर्ट 2022: टू लिटिल, टू स्लो - क्लाइमेट एडाप्टेशन फेल्योर पुट्स वर्ल्ड एट रिस्क", नवंबर।

[12] आईएमएफ (2022), "ग्लोबल फाइनैंशियल स्टैबिलिटी रिपोर्ट- नैविगेटिंग द हाई-इंफ्लेशन इंवाइरोन्मेंट", अक्टूबर।

चार्ट 1.32: जारी ईएसजी ऋण

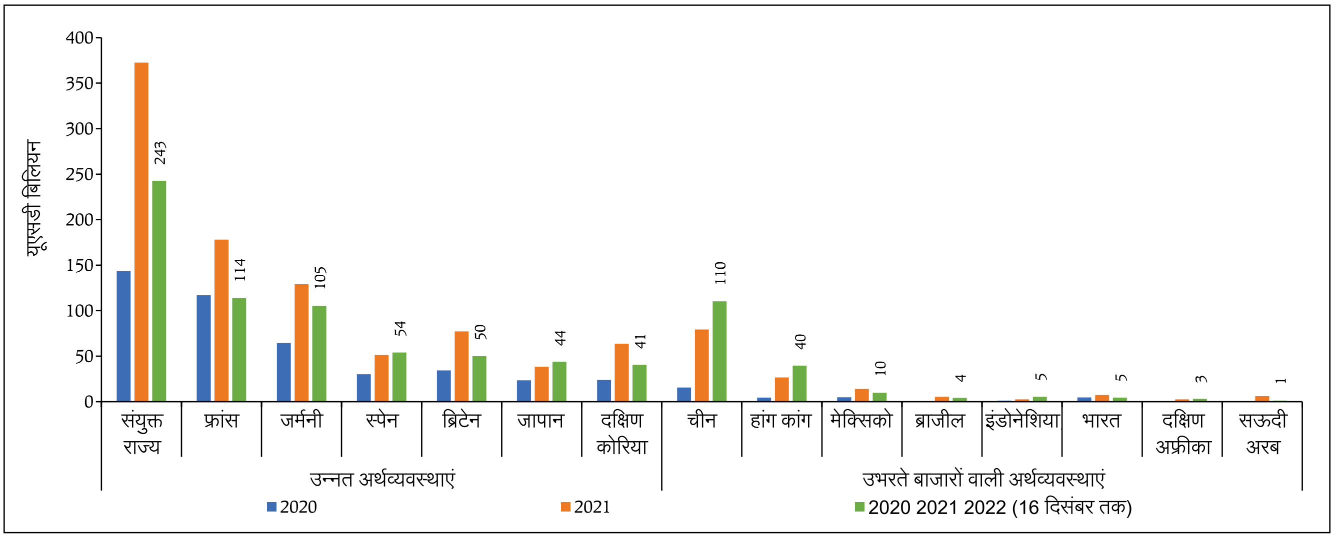

स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.36 उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) में जलवायु वित्त के लिए आपूर्ति और मांग के बीच असंतुलन को कम करने के लिए, सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। निजी क्षेत्र को नवीन वित्तपोषण साधनों को विकसित करने की आवश्यकता है। आईएमएफ के अनुसार, स्थिरता से जुड़े बांड जैसे परिणाम-आधारित साधन उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) के लिए विशेष रूप से उपयुक्त होंगे क्योंकि उन्हें उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों से जोड़ा जा सकता है। इसी तरह, सार्वजनिक और निजी निधियों को मिलाकर मिश्रित वित्त का उपयोग करके निजी निवेश को कम करने का उपयोग निजी पूंजी को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है[13]।

च. असीमित अवधि वाली निवेश निधि[14]

1.37 वैश्विक वित्तीय संकट के बाद असीमित अवधि वाली निवेश निधि (ओईएफ) तेजी से बढ़ी हैं। 2022 की पहली तिमाही में उनकी कुल निवल आस्ति 41 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर थी, जो गैर-बैंक वित्तीय क्षेत्र में आस्तियों का लगभग पांचवां हिस्सा है[15] (चार्ट 1.33)।

1.38 असीमित अवधि वाली निवेश निधि (ओईएफ) क्षेत्र का विस्तार वित्तीय मध्यस्थता में बढ़ते बदलाव को दर्शाता है जो

चार्ट 1.33: गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता क्षेत्र की कुल निवल आस्ति और हिस्सेदारी, ति.1:2002-ति.1:2022

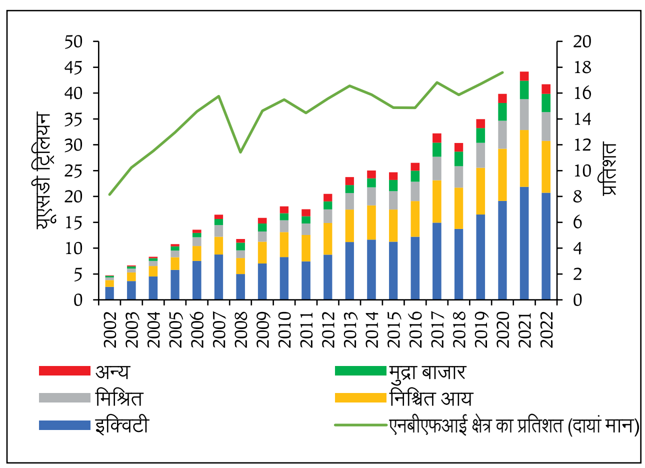

स्रोत: आईएमएफ

[13] पूर्वोक्त

[14] ओपन-एंडेड इन्वेस्टमेंट फंड्स म्युचुअल फंड हैं जो ट्रेडिंग दिवस के अंत में निर्धारित मूल्य पर प्रतिदिन शेयरों को जारी या रिडीम कर सकते हैं।

[15] आईएमएफ (2022), "ग्लोबल फाइनैंशियल स्टैबिलिटी रिपोर्ट- नैविगेटिंग द हाई-इंफ्लेशन इंवाइरोन्मेंट", अक्टूबर।

बैंकों को छोड़कर गैर-बैंक वित्तीय संस्थानों की ओर बढ़ रहा है। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद बैंकिंग नियमों को कठोर करने और बैंकों की बैलेंस शीट को कम करने से भी इस बदलाव में मदद मिली है। आस्ति बाजारों के कामकाज में उनका बढ़ता महत्व अस्थिरता और बहुत ही कम कीमत पर बिक्री को बढ़ावा देने के माध्यम से संभावित वित्तीय स्थिरता जोखिम पैदा करता है, खासकर तब,जब बाजार में चलनिधि में गिरावट आती है। जब वित्तीय स्थितियां सख्त हो गई तब ओईएफ को मार्च 2020 में बाजार के उथल-पुथल में बड़े पैमाने पर मोचन दबाव का सामना करना पड़ा (चार्ट 1.34)। इसके परिणामस्वरूप, आस्ति बाजार में शिथिलता आ गई और चलनिधि में बहुत कमी आई जिससे केंद्रीय बैंकों को सामान्य बाजार कामकाज को बहाल करने के लिए हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

1.39 गैर-बैंक वित्तीय संस्थानों से उत्पन्न होने वाले वित्तीय स्थिरता जोखिमों के लिए नीतिगत समाधानों की आवश्यकता होती है जो निवेशकों के भागने के जोखिम को कम करके कमजोरियों को कम करते हैं। उनके वैश्विक संचालन और संभावित प्रतिकूल सीमा-पार स्पिलओवर प्रभावों के लिए भी अधिक अंतरराष्ट्रीय नियामकीय समन्वय की आवश्यकता है।

जी. क्रिप्टो एसेट्स मार्केट, स्टेबलकॉइन्स और विकेंद्रीकृत वित्त (डीईएफआई)

1.40 क्रिप्टो एक्सचेंज एफटीएक्स के पतन और दिवालियापन और बाद में क्रिप्टो संपत्ति बाजार में बिक्री ने क्रिप्टो इकोसिस्टम में अंतर्निहित कमजोरियों को उजागर किया है। हाल ही में, सबसे बड़े क्रिप्टो एक्सचेंज बिनेंस ने भी अपने प्लेटफॉर्म पर स्टेबलकॉइन की निकासी पर प्रतिबंध लगा दिया है। एफटीएक्स के पतन से पहले एल्गोरिथम स्टेबलकॉइन टेरायूएसडी/लूना की विफलता, क्रिप्टो ऋणदाता सेल्सियस से आकस्मिक निकासी और थ्री एरोज कैपिटल क्रिप्टोकरेंसी हेज फंड का दिवालियापन जैसी घटनाएं हो चुकी थीं।

1.41 उथल-पुथल ने कई अंतर्दृष्टि[16] प्रदान की हैं। सबसे पहले, क्रिप्टो परिसंपत्ति अत्यधिक अस्थिर हैं। बिटकॉइन की कीमत नवंबर 2021 के अपने शिखर से 74 प्रतिशत (14 दिसंबर, 2022 तक) घट गई है। अन्य क्रिप्टो परिसंपत्तियों में भी कीमतों में इसी तरह की गिरावट हुई और बढ़ी हुई अस्थिरता का अनुभव हुआ है (चार्ट 1.35 और तालिका 1.3)।

चार्ट 1.34: ओईएफ मासिक निवल प्रवाह, ति.1:2002-ति.1:2022 (कुल निवल कमजोर आस्तियों का प्रतिशत)

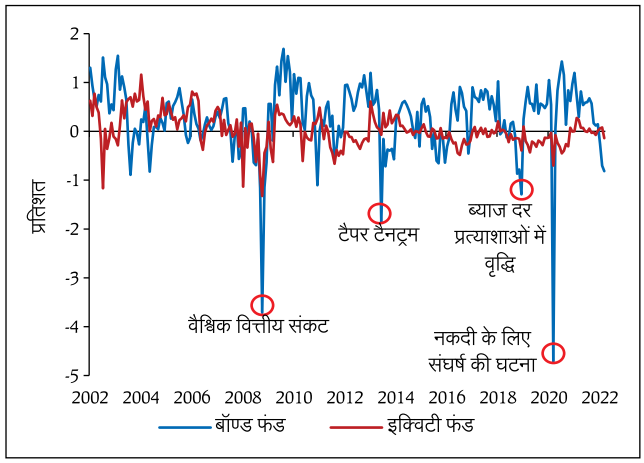

स्रोत: आईएमएफ

चार्ट 1.35: चुनिंदा क्रिप्टो आस्तियों की दैनिक कीमतें

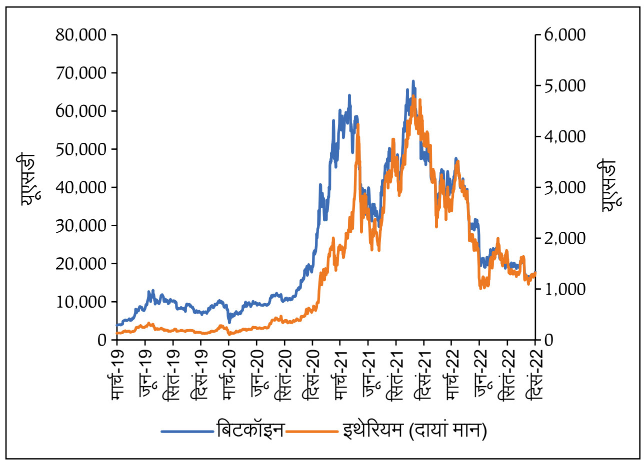

नोट: 14 दिसंबर 2022 को अपडेट किया गया
स्रोत: ब्लूमबर्ग

सारणी 1.3: प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी की कीमतें और सूचकांक

	वर्तमान बाजार पूंजी (यूएसडी)	वर्तमान कीमत (यूएसडी)	तिमाही-दर-तिमाही परिवर्तन (प्रतिशत)	वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन (प्रतिशत)
बिटकॉइन	342.9 Bn	17826.8	(12.4)	(62.4)
इथेरियम	159.4 Bn	1323.1	(17.4)	(65.3)
डीईएफआई सूचकांक	38.3 Mn	68.2	(19.1)	(70.2)

नोट: 14 दिसंबर 2022 को अपडेट किया गया
स्रोत: ब्लूमबर्ग और कॉइनमार्केटकैप

[16] ब्रेनार्ड, लेल (2022), "क्रिप्टो एसेट्स एंड डिसेंट्रलाइज्ड फाइनेंस थ्रू ए फाइनेंशियल स्टेबिलिटी लेंस", बैंक ऑफ इंग्लैंड सम्मेलन, लंदन, जुलाई।

1.42 इसके अलावा, क्रिप्टो परिसंपत्तियों का इक्विटी के साथ उच्च पारस्परिक संबंध भी दिखता है। साथ ही, इन दावों के विपरीत कि वे मुद्रास्फीति हेजिंग लाभों[17] के कारण मूल्य का एक वैकल्पिक स्रोत हैं, क्रिप्टो संपत्ति मूल्य मुद्रास्फीति बढ़ने के बावजूद गिर गई है (चार्ट 1.36 ए और बी)।

1.43 दूसरा, टेरायूएसडी / लूना का पतन इस बात की याद दिलाता है कि वैध मुद्रा के सापेक्ष स्थिर मूल्य बनाए रखने का वादा करने वाले तथाकथित स्थिर कॉइंस में आत्मविश्वास कम होने पर आकस्मिक आहरण होने लगता है। अंत में, एफटीएक्स और सेल्सियस की विफलता से पता चलता है कि क्रिप्टो एक्सचेंज और ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म उधार, ब्रोकरेज, समाशोधन और निपटान जैसे विभिन्न कार्य कर रहे थे, जिनमें उचित शासन संरचनाओं के बिना अलग-अलग जोखिम हैं। इसने उन्हें क्रेडिट, बाजार और चलनिधि जोखिमों से अवगत कराया, जो उनके आवश्यक कार्यों का निर्वहन करने के लिए जरूरी था[18]। क्रिप्टो इकोसिस्टम में कर्जपोषण एक स्थिर विषय है, जिससे विफलताओं का तेजी से सामना करना पड़ता है और नुकसान बहुत भारी और अचानक हो जाते हैं। हाल ही में बीआईएस के एक अध्ययन में कहा गया है कि क्रिप्टो परिसंपत्तियों की बढ़ती कीमतें, विशेष रूप से आबादी के "जोखिम की तलाश" करने वाले युवा वर्ग के बीच, क्रिप्टो अपनाने का एक प्रमुख कारक है[19]।

1.44 क्रिप्टो आस्ति बाजार के अस्थिर बने होने के बाद भी औपचारिक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता पर अभी तक कोई स्पिलओवर नहीं हुआ है। हालांकि,अब तक प्राप्त अनुभव यह संकेत करते हैं कि क्रिप्टो आस्तियों से एक अस्थिर इकोसिस्टम तैयार होता है और इस बात के बढ़ते प्रमाण हैं कि वे अत्यधिक केंद्रित और परस्पर जुड़े हुए हैं। संभावित भविष्य के वित्तीय स्थिरता जोखिमों को दूर करने तथा उपभोक्ताओं और निवेशकों की रक्षा के लिए, क्रिप्टो आस्तियों के लिए एकसमान दृष्टिकोण पर पहुंचना महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न विकल्पों पर विचार किया जा रहा है। एक विकल्प समान-जोखिम-समान-नियामक-परिणाम सिद्धांत को लागू करना है और उन्हें पारंपरिक वित्तीय मध्यस्थों और एक्सचेंजों

चार्ट 1.36: इक्विटी और मुद्रास्फीति के मुकाबले बिटकॉइन

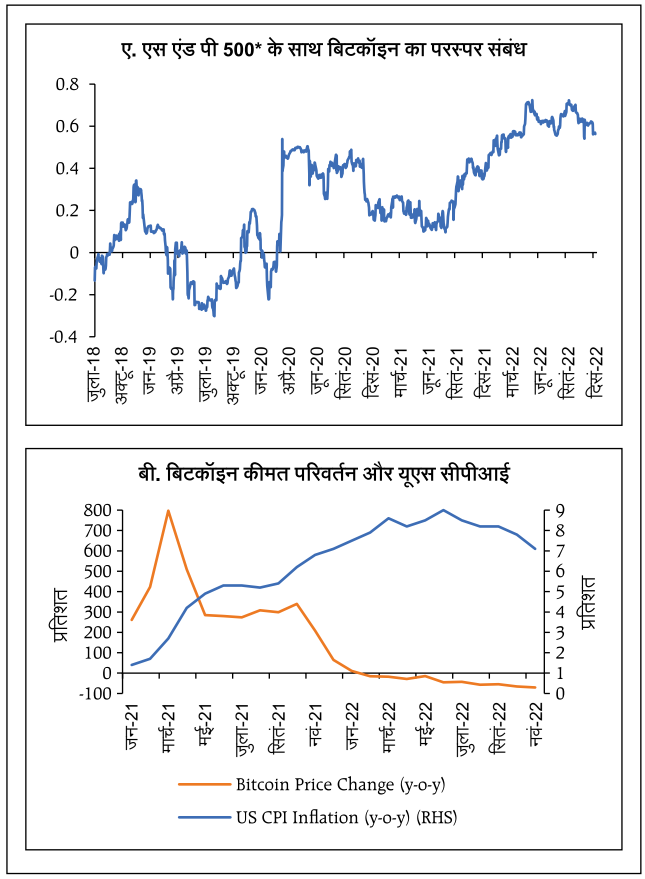

नोट*: दैनिक रिटर्न का 60 दिनों का रोलिंग सहसंबंध
स्रोत: ब्लूमबर्ग

पर लागू एक ही विनियमन के अधीन करना है। एक अन्य विकल्प क्रिप्टो आस्तियों को प्रतिबंधित करना है क्योंकि उनके वास्तविक जीवन के उपयोग के मामले नगण्य हैं। चुनौती यह है कि विभिन्न देशों में सरकार की शक्तियों की तुलना में अलग-अलग कानूनी प्रणालियां और व्यक्तिगत अधिकार हैं। तीसरा विकल्प यह है कि इसे कमजोर किया जाए और इसे व्यवस्थित रूप से अप्रासंगिक बना दिया जाए क्योंकि अंतर्निहित अस्थिरता और जोखिम अंततः इस क्षेत्र को बढ़ने से रोकेगा[20]। हालांकि, तीसरा विकल्प जोखिमों से भरा है क्योंकि इस क्षेत्र का मुख्यधारा के वित्त के साथ परस्पर जुड़ाव अधिक हो सकता है और अपने व्यापक प्रभाव के कारण यह वास्तविक अर्थव्यवस्था पर

[17] बीआईएस (2022), "बैंकिंग इन द शैडो ऑफ बिटकॉइन? द इंस्टिट्युशनल एडॉप्शन ऑफ क्रिप्टोकरेंसीज़", मई।

[18] कनलिफ, जॉन (2022), "रिफ्लेक्शंस ऑन डेफी, डिजिटल करेंसी एंड रेगुलेशन", बैंक ऑफ इंग्लैंड, नवंबर।

[19] राफेल ऑउर, गिउलिओ कॉर्नेली, सेबस्टियन डोएर, जॉन फ्रॉस्ट एंड लियोनार्डो गैंबाकोर्टा (2022), "क्रिप्टो ट्रेडिंग एंड बिटकॉइन प्राइसेस: एविडेंस फ्रॉम ए न्यू डेटाबेस ऑफ रिटेल एडॉप्शन", बीआईएस वर्किंग पेपर्स नंबर 1049, नवंबर।

[20] सेचेती, स्टीफन एंड स्कोनहोल्ट्ज, किम (2022), "लेट क्रिप्टो बर्न", फाइनेंशियल टाइम्स, नवंबर।

पारंपरिक वित्त से वित्तपोषण को दूर कर सकता है। प्रणालीगत स्तर तक बढ़ने के बाद नई तकनीक और व्यवसाय मॉडल को विनियमित करना चुनौतीपूर्ण है। जिम्मेदार नवाचार को बढ़ावा देने और क्रिप्टो इकोसिस्टम में वित्तीय स्थिरता जोखिमों को कम करने के लिए, नीति निर्माताओं के लिए एक उपयुक्त नीति दृष्टिकोण तैयार करना महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, भारत की जी 20 अध्यक्षता के तहत, विभिन्न प्राथमिकताओं में से एक प्राथमिकता है वैश्विक विनियमन के लिए एक ढांचा विकसित करना, जिसमें अनबैक्ड क्रिप्टो आस्तियों, स्टेबल कॉइंस और विकेंद्रीकृत वित्त (डीईएफआई) के निषेध की संभावना शामिल है।

चार्ट 1.37: वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला दबाव सूचकांक

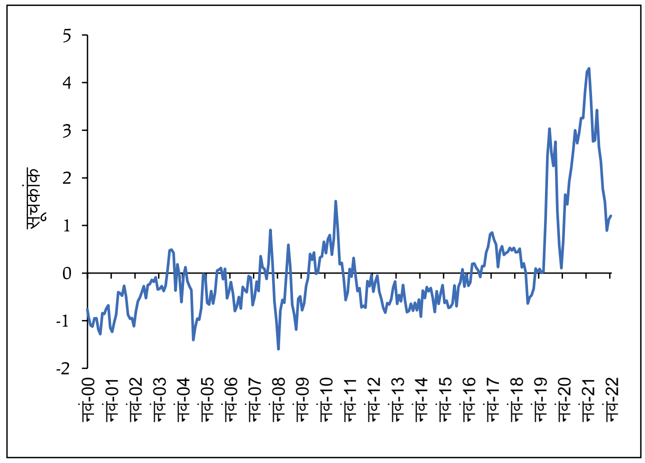

स्रोत: फेडरल रिज़र्व बैंक ऑफ न्यूयार्क

एच. पण्य बाजार

1.45 जून 2022 में अंतिम एफएसआर जारी होने के बाद से आपूर्ति की स्थिति में सुधार और वैश्विक मांग में कमी से गैर-ऊर्जा वस्तुओं की वैश्विक कीमतें रूस-यूक्रेन युद्ध से पहले के अपने स्तर से नीचे आ गई हैं और अगस्त 2022 के बाद ऊर्जा की कीमतें भी कम हो गई हैं। इसके साथ ही माल भाड़े में गिरावट आई है और आपूर्ति पक्ष की बाधाओं में कमी आई है।

1.46 हालांकि, कई अर्थव्यवस्थाओं में, मुद्रा मूल्यह्रास से स्थानीय-मुद्रा अवधि में पण्य की कीमतें अभी भी ऊंचे स्तर पर बरकरार हैं और पिछले पांच वर्षों में अपने औसत से बहुत ऊपर हैं (चार्ट 1.38 ए और बी)। गरीब अर्थव्यवस्थाओं के लिए यह एक दोहरा झटका है क्योंकि वस्तुओं के कारण हुई मुद्रास्फीति से एक मानवीय संकट आने की संभावना है।

चार्ट 1.38: पण्य कीमतें

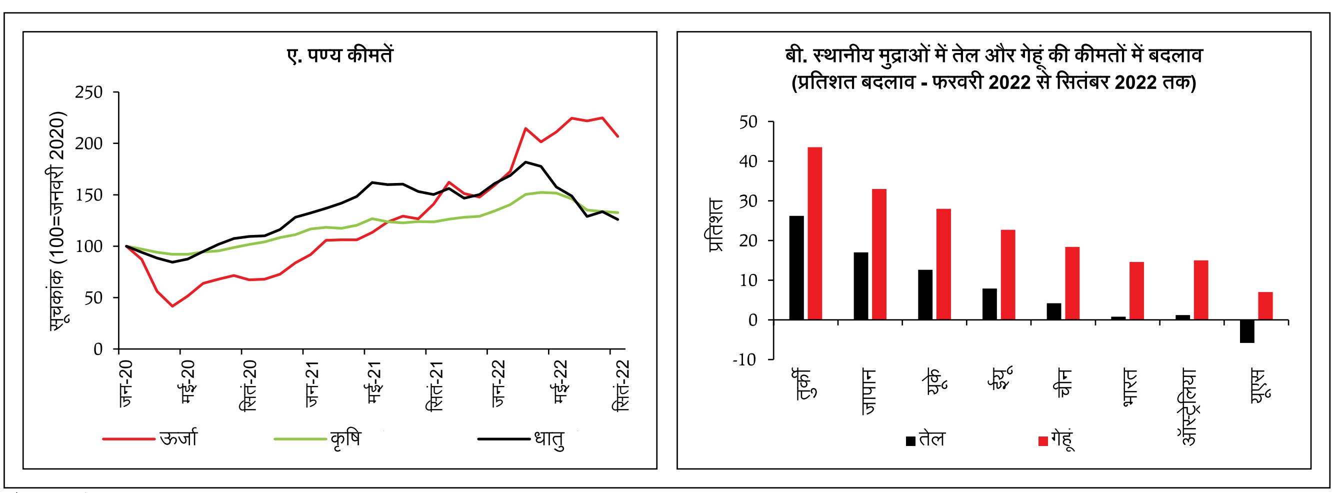

स्रोत: विश्व बैंक

1.47 2022 में 60 प्रतिशत की अपेक्षित वृद्धि के बाद[21], 2023 और 2024 में ऊर्जा की कीमतों में गिरावट का अनुमान है, जो धीमी वैश्विक वृद्धि, प्राकृतिक गैस की कमजोर मांग और जलवायु संक्रमण (चार्ट 1.39) के कारण है। फिर भी, बिजली और परिवहन खर्चों में वृद्धि जैसे दूसरे क्रम के प्रभाव के कारण भू-राजनीतिक तनाव और कई देशों में कम रणनीतिक भंडार के मद्देनजर ऊर्जा की कीमतों के अस्थिर रहने की उम्मीद है।

1.48 खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के खाद्य मूल्य सूचकांक में नवंबर 2022 में लगातार आठवें महीने क्रमिक (एम-ओ-एम) गिरावट दर्ज की गई (चार्ट 1.40)। 2023 में उनके और गिरने का अनुमान है, जो वैश्विक गेहूं की अनुमानित फसल, चावल बाजार की स्थिर आपूर्ति और यूक्रेन से अनाज निर्यात को फिर से शुरू करने से समर्थित है[22]। हालांकि, इस पूर्वानुमान के कम होने का जोखिम हैं क्योंकि युद्ध के कारण आपूर्ति बाधित रह सकती है और प्रतिकूल मौसम पैटर्न उभर सकता है। विश्व बैंक के अनुसार, 2022 में 200 मिलियन से अधिक लोगों को तीव्र खाद्य असुरक्षा का अनुभव होने की उम्मीद है।

1.49 वस्तुओं पर वित्तीयकरण अर्थात इन पर वित्तीय बाजार और संस्थाओं के बढ़ते प्रभावों (चार्ट 1.41) के कारण पण्य व्यापारियों, बैंकों और केंद्रीय प्रतिपक्षकारों (सीसीपी) के बीच पारस्परिक संबंध बढ़ा है। डेरिवेटिव गतिविधि और मध्यस्थता का हिस्सा बड़ी कमोडिटी फर्मों के बीच समूहबद्ध है और ऐसे बैंकों का संकेंद्रण भी बढ़ रहा है जो वित्तीय स्थिरता के उद्देश्यों के साथ कमोडिटी व्यापारियों और समाशोधन सेवाओं को अल्पकालिक ऋण प्रदान करते हैं।

1.50 मार्जिन कॉल को पूरा करने के लिए चलनिधि की मांग के कारण दबाव के समय में बैंकों के कर्जपोषित वस्तु व्यापारियों के प्रति एक्सपोजर से उधार और इंट्राडे एक्सपोजर बढ़ सकता है। यदि वे ऋण की मांग को पूरा करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो पण्य व्यापारी अपने व्यापार को बंद करने के लिए मजबूर हो जाएंगे जिससे बाजार की अस्थिरता बढ़ जाएगी। इसके अलावा, सीसीपी क्लियरिंग सदस्यों के रूप में बैंकों की भूमिका कमोडिटी फर्मों के लिए डेरिवेटिव बाजारों में हेजिंग करना और सीसीपी पर मार्जिन पोस्ट करना मुश्किल बना देगी। चूंकि कमोडिटी

चार्ट 1.39: ब्रेंट कीमत- हाजिर और वायदा

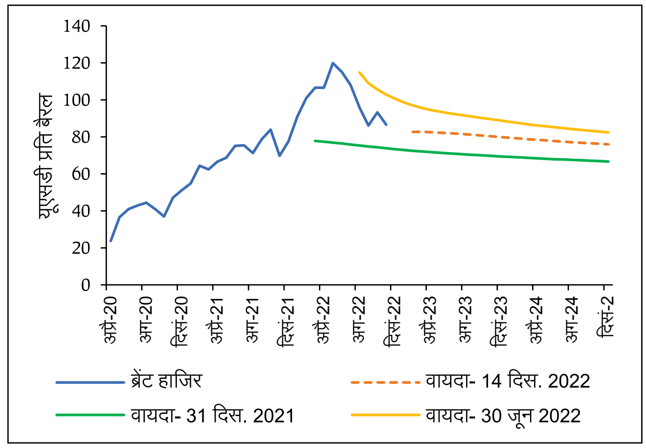

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.40: एफएओ खाद्य कीमत सूचकांक

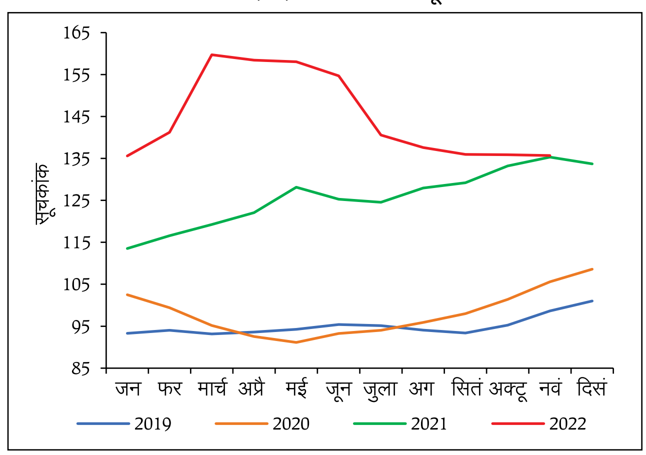

नोट: एफएओ खाद्य मूल्य सूचकांक खाद्य वस्तुओं के एक समूह की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में मासिक परिवर्तन की एक माप है। इसमें 2014-2016 के दौरान प्रत्येक समूह के औसत निर्यात में हिस्सेदारी द्वारा भारित पांच वस्तु समूह मूल्य सूचकांकों का औसत शामिल है।
स्रोत: संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन

चार्ट 1.41: कमोडिटी लिंक्ड इनवेस्टमेंट फंड्स में निवेश

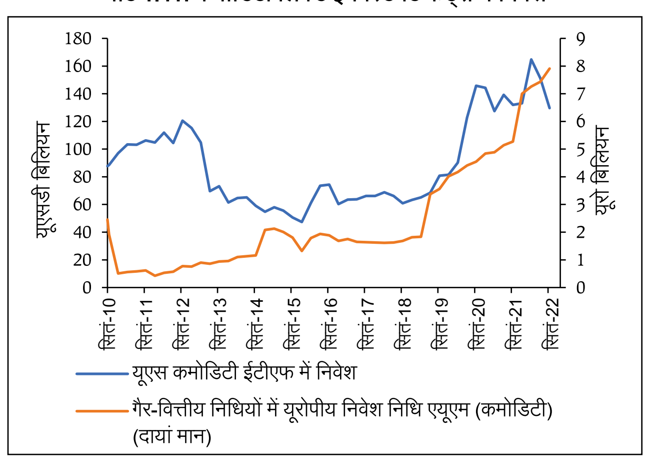

स्रोत: फेडरल रिजर्व बैंक ऑफ सेंट लुइस, एफआरईडी और यूरोपीय सेंट्रल बैंक

[21] वर्ल्ड बैंक ग्रुप (2022)। कमोडिटी मार्केट आउटलुक: पैंडेमिक, वॉर, रेसेसन: ड्राइवर्स ऑफ एल्यूमिनियम एंड कॉपर प्राइसेस, अक्टूबर, विश्व बैंक, वाशिंगटन, डीसी।
[22] पूर्वोक्त

डेरिवेटिव्स बाजारों में कुछ फर्मों का वर्चस्व है, इसलिए किसी भी बड़ी फर्म में व्यवधान के कारण कमोडिटी डेरिवेटिव के लिए अस्थिरता बढ़ सकती है और बाजार चलनिधि कम हो सकती है।

I. केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राएँ

1.51 तकनीकी नवाचार द्वारा समर्थित त्वरित डिजिटलीकरण और निजी क्षेत्र के डिजिटल उद्यमों के प्रसार से केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्राओं (सीबीडीसी) को लॉन्च करने की पहलों में बढ़ोतरी हुई है (चार्ट 1.42)। अग्रणी खिलाड़ियों से लेकर बाद के खिलाड़ियों तक के प्रयोगों से सीबीडीसी शुरू करने की चुनौतियों के बारे में मूल्यवान सबक मिल रहे हैं।

1.52 सीबीडीसी के वित्तीय स्थिरता और मौद्रिक नीति संबंधी निहितार्थ हैं। बैंकिंग (अ)मध्यस्थता पर सीबीडीसी के संभावित प्रभाव के बारे में अभी भी जीवंत बहस चल रही है। चार प्रमुख कारक महत्वपूर्ण हैं।[23] पहला, जमा बाजारों में बैंकों की बाजार शक्ति के आधार पर, बैंक जमाओं के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा करने वाले सीबीडीसी के प्रवेश के परिणामस्वरूप जमा दरें और अधिक हो सकती हैं। दूसरा, बैंक की अमध्यस्थता पर सीबीडीसी का प्रभाव, सीबीडीसी पर दी जाने वाली ब्याज दर पर निर्भर करेगा, जो पर्याप्त रूप से अधिक होने पर, बैंक की अमध्यस्थता का कारण बन सकता है। जब दरें मध्यवर्ती दायरे में हों तो बैंकों की बाजार शक्ति मध्यस्थता की दिशा निर्धारित करेगी। तीसरा, मध्यस्थता पर सीबीडीसी का प्रभाव नगण्य होगा यदि बैंक किसी भी खोई हुई खुदरा जमा को थोक निधि से बदल सकते हैं, जो विशेष रूप से बड़े बैंकों के लिए महत्वपूर्ण है। अंत में, बैंक की अमध्यस्थता की सीमा सीबीडीसी की अधिकतम मात्रा पर लगाए गए प्रतिबंधों से सीमित हो सकती है, जिसे उपयोगकर्ता रख सकते हैं, लेन-देन कर सकते हैं या जिनपर ब्याज कमा सकते हैं।

1.53 अब तक के सीबीडीसी प्रयोगों से कुछ सबक उभर कर सामने आए हैं।[24] सबसे पहले, सीबीडीसी शुरू करने में, उपयुक्त तकनीक का चयन करते समय कई उद्देश्यों के बीच ट्रेड-ऑफ को संतुलित करना आवश्यक है। इन ट्रेड-ऑफ में केंद्रीकृत बनाम विकेंद्रीकृत खाता-बही प्रणाली गोपनीयता और अनुपालन के बीच चुनाव; और स्थिरता और नवीनता सहित डिज़ाइन

चार्ट 1.42: विभिन्न चरणों के अंतर्गत सीबीडीसी की संख्या

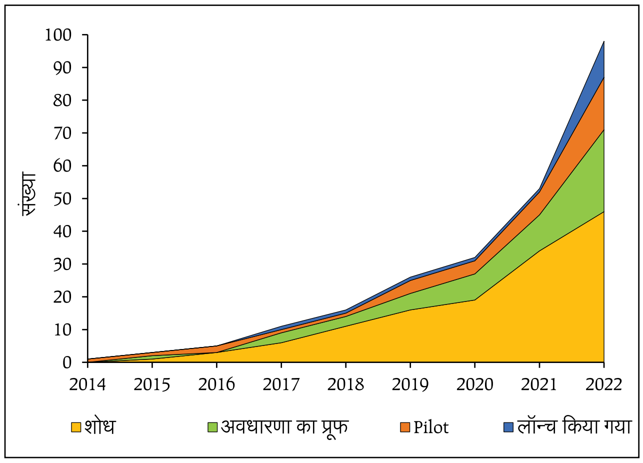

स्रोत: सीबीडीसी ट्रैकर

विकल्प शामिल हैं। दूसरा, शुरू में जैसा सोचा गया था, उसकी तुलना में एक सफल सीबीडीसी विकसित करना अधिक चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि दो विरोधी ताकतें कार्य कर रही हैं: "बहुत सफल" होना और निजी भुगतान विकल्पों को दूर कर देना या "पर्याप्त रूप से सफल नहीं होना" और पर्याप्त मांग उत्पन्न करने में विफल होना।[25] अंत में, सीबीडीसी के लिए निजी-सार्वजनिक सहयोग आवश्यक हो सकता है क्योंकि यह श्रम, लागत और प्राधिकार के विभाजन के लिए उपयुक्त अभिशासन स्थापित करने में मदद करेगा।

1.54 सीबीडीसी की अंतःपरिचालनीयता सुनिश्चित करने, वैश्विक मानक स्थापित करने, सीमापारीय उपयोग बढ़ाने और परिणामी समष्टि-वित्तीय निहितार्थों को बेहतर ढंग से समझने के लिए, अधिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग और अनुभव साझा करना आवश्यक है।

I.2 घरेलू समष्टि-वित्तीय जोखिम

1.55 घरेलू वित्तीय प्रणाली की आघात-सहनीयता बैंकों के स्वस्थ तुलनपत्र, गैर-बैंक वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के मजबूत पूंजी स्तर और घरेलू म्युचुअल फंडों की प्रबंधनाधीन आस्तियों (एयूएम) में मजबूत वृद्धि में परिलक्षित हो रही है। उल्लेखनीय वैश्विक प्रभाव-प्रसार के बावजूद, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में आस्ति-गुणवत्ता, लाभप्रदता, पूंजीगत एवं चलनिधिगत प्रचुरता सहूलियत प्रदान करती हैं। बैंकों की सकल गैर-

[23] फेडरल रिज़र्व बोर्ड (2022), "मैक्रोइकनॉमिक इंप्लिकेशंस ऑफ सीबीडीसी: अ रिव्यू ऑफ लिटरेचर", अक्टूबर।
[24] री, चांग योंग (2022), "सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी: हमने हाल ही में एक प्रयोग से जो सीखा है", बैंक ऑफ कोरिया के गवर्नर, सितंबर।
[25] पैनेटा, फैबियो (2022), "एक डिजिटल यूरो जो जनता की जरूरतों को पूरा करता है: सही संतुलन बनाना", ईसीबी के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य, मार्च।

निष्पादित आस्तियों (जीएनपीए) में गिरावट का रुझान बना हुआ है। मार्च 2022 में जीएनपीए और सकल अग्रिम का अनुपात 5.9 प्रतिशत से गिरकर जून 2022 में 5.7 प्रतिशत और सितंबर 2022 में 5.0 प्रतिशत हो गया, जिससे बैंक ऋण में व्यापक आधार का विस्तार हुआ है। एनबीएफसी द्वारा ऋण देने में भी वृद्धि हो रही है।

I.2.1 कॉर्पोरेट क्षेत्र

1.56 निजी गैर-वित्तीय कंपनियों ने 2022-23 की पहली तिमाही के दौरान मजबूत बिक्री वृद्धि दर्ज की, जो विशेष रूप से पेट्रोलियम कंपनियों के लिए मांग की स्थिति में लगातार सुधार के साथ-साथ, कीमतों में वृद्धि से प्रेरित है। सांकेतिक (नॉमिनल) और वास्तविक बिक्री वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) दोनों महामारी-पूर्व के दो साल के अपने औसत स्तर से अधिक हो गई (चार्ट 1.43 ए और बी)। सेवा क्षेत्र में, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) कंपनियों ने व्यापक वृद्धि पथ को बनाए रखा, और गैर-आईटी सेवा कंपनियों ने मजबूत बिक्री वृद्धि दर्ज की (चार्ट 1.43 सी और डी)।

1.57 2022-23 की दूसरी तिमाही में, मुख्य रूप से राजस्व वृद्धि से ज्यादा इनपुट लागत के बढ़ते व्यय, ब्याज भुगतान और अन्य खर्चों में वृद्धि के कारण, कॉर्पोरेट आय की गति में ह्रास प्रतीत होता है। जहां एक ओर, गैर-आईटी सेवा कंपनियों के परिचालन लाभ मार्जिन में सुधार हुआ, वहीं दूसरी ओर, यह आईटी कंपनियों के लिए स्थिर रहा, तथापि 2022-23 की

चार्ट 1.43: सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की सांकेतिक और वास्तविक बिक्री वृद्धि

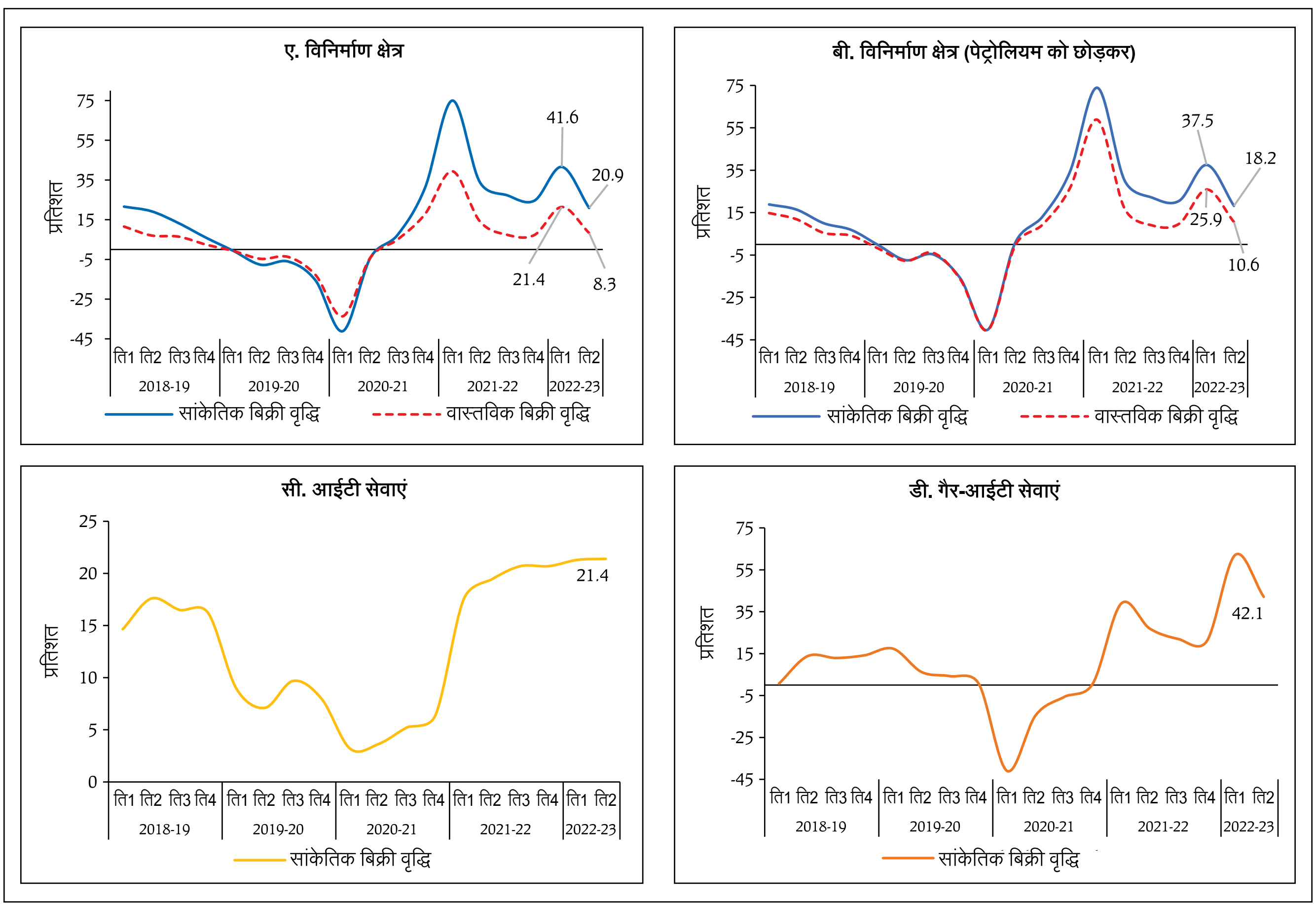

नोट: 2022-23 की दूसरी तिमाही के लिए इस्तेमाल की गई 2,740 सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों का नमूना।
स्रोत: कैपिटलिन और आरबीआई स्टाफ गणना

चार्ट 1.44: सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की परिचालनगत मुनाफा मार्जिन

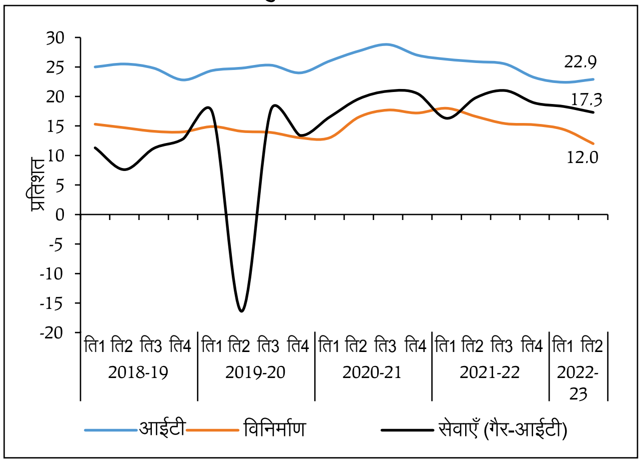

नोट: 2022-23 की दूसरी तिमाही के लिए इस्तेमाल की गई 2,740 सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों का नमूना।

स्रोत: कैपिटलिन और आरबीआई स्टाफ गणना

दूसरी तिमाही के दौरान इनकी स्टाफ लागत में 24.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई (चार्ट 1.44)।

1.58 कॉर्पोरेट क्षेत्र का लीवरेज, जैसा कि ऋण-इक्विटी और ऋण-आस्ति अनुपात में परिलक्षित होता है, धीरे-धीरे महामारी के दौरान रहे निम्न स्तर से बढ़ रहा है (चार्ट 1.45 ए)। 2022-23 की पहली छमाही के दौरान कुल आस्तियों में कैश होल्डिंग्स (बैंकों के पास शेष और अत्यधिक तरल निवेश सहित) की हिस्सेदारी में गिरावट आई है, लेकिन यह अपने महामारी-पूर्व स्तर से काफी ऊपर है (चार्ट 1.45 बी)। दूसरी ओर, कुल आस्तियों में अचल आस्तियों की हिस्सेदारी सुस्त बनी रही और 2021-22 की दूसरी छमाही के दौरान देखे गए स्तर पर ही रही, जो एक नए निजी निवेश चक्र के उत्थान की प्रतीक्षा में है।

1.59 कर्ज चुकौती क्षमता, जिसे ब्याज कवरेज अनुपात (आईसीआर)[26] द्वारा मापा जाता है, विनिर्माण और आईटी फर्मों दोनों के लिए एक से काफी ऊपर रही, जबकि यह गैर-आईटी सेवा फर्मों के लिए एक से मामूली रूप से कम रही (चार्ट 1.46)।

चार्ट 1.45: सूचीबद्ध निजी निर्माण कंपनियों का चुनिंदा अनुपात

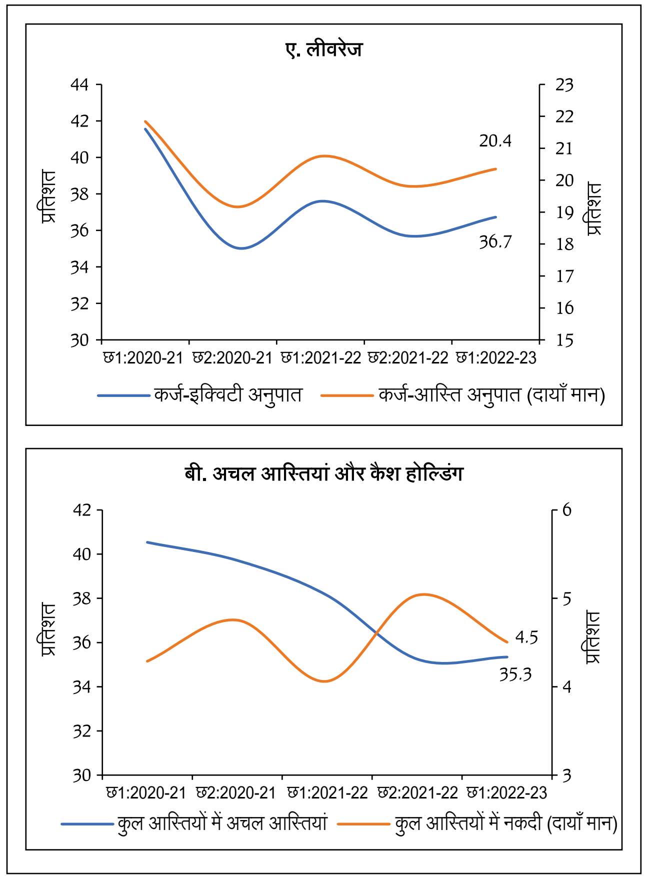

स्रोत: कैपिटलिन और आरबीआई स्टाफ गणना

चार्ट 1.46: सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की कर्ज चुकौती क्षमता

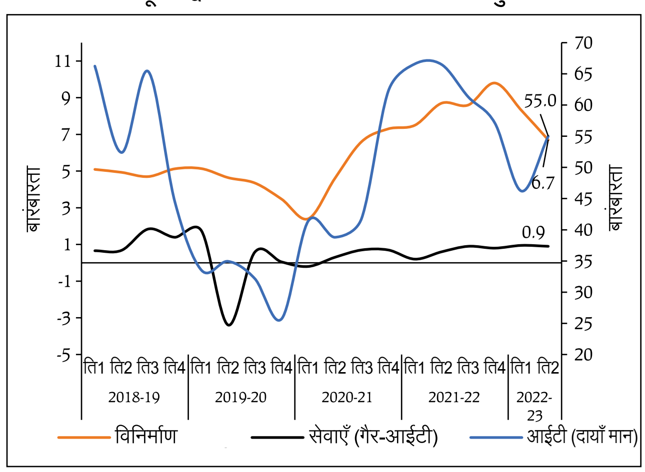

नोट: डेटा 2022-23 की दूसरी तिमाही के लिए इस्तेमाल की गई 2,740 सामान्य सूचीबद्ध निजी गैर-वित्तीय कंपनियों पर आधारित है।

स्रोत: कैपिटलिन और आरबीआई स्टाफ गणना

[26] आईसीआर (यानी, कर-पूर्व आय और ब्याज व्यय पर करों का अनुपात) एक कंपनी की ऋण चुकौती क्षमता का एक पैमाना है। व्यवहार्य आईसीआर के लिए न्यूनतम मूल्य 1 है।

1.60 समुद्रपारीय निर्गमों में कमी और निजी इक्विटी (पीई) / उद्यम पूंजी (वीसी) द्वारा निवेश में गिरावट के साथ, कॉर्पोरेट क्षेत्र की वित्तीय जरूरतों को घरेलू संसाधनों के माध्यम से उतरोत्तर पूरा किया जा रहा है (चार्ट 1.47 और 1.48)। चूंकि वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान घरेलू इक्विटी बाजारों के प्राथमिक खंड के माध्यम से जुटाई गई धनराशि में गिरावट आई है, इसलिए नियमित परिचालनों और क्षमता विस्तार के लिए बैंक ऋण पर निर्भरता बढ़ रही है।

I.2.2 मुद्रा बाजार, सरकारी प्रतिभूतियां और कॉरपोरेट बांड बाजार

1.61 विकास को समर्थन देते हुए मुद्रास्फीति को लक्ष्य के भीतर बनाए रखना सुनिश्चित करने के लिए, समायोजन वापस लेने पर मौद्रिक नीति रुख के फोकस के कारण, घरेलू वित्तीय स्थितियां सख्त हो गई हैं। नीतिगत दर में वृद्धि के साथ-साथ, मुद्रा बाजार दरों और लघु अवधि के बॉन्ड प्रतिफलों में मजबूती आई है। दीर्घावधि दरों में इसके संचरण (पासथ्रू) में सुधार हुआ है लेकिन यह अधूरा है (चार्ट 1.49)। चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) के तहत औसत दैनिक अवशोषण अप्रैल 2022 में रहे ₹7.8 लाख करोड़ से घटकर जून-जुलाई 2022 में ₹3.8 लाख करोड़ और फिर नवंबर 2022 में ₹1.4 लाख करोड़ हो गया (चार्ट 1.50)। सरकारी नकदी शेष में दिन-प्रतिदिन की

चार्ट 1.47: समुद्रपारीय पूंजी बाजार पेशकशों के माध्यम से भारतीय कंपनियों द्वारा जुटाई गई राशि

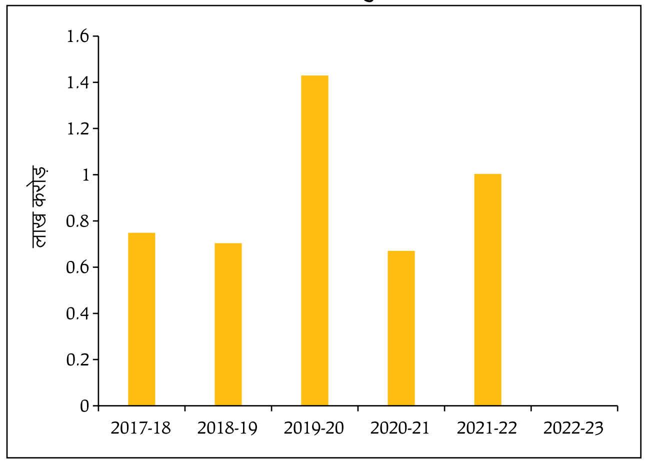

स्रोत: प्राइम डेटाबेस

चार्ट 1.48: भारत में पीई/वीसी निवेश

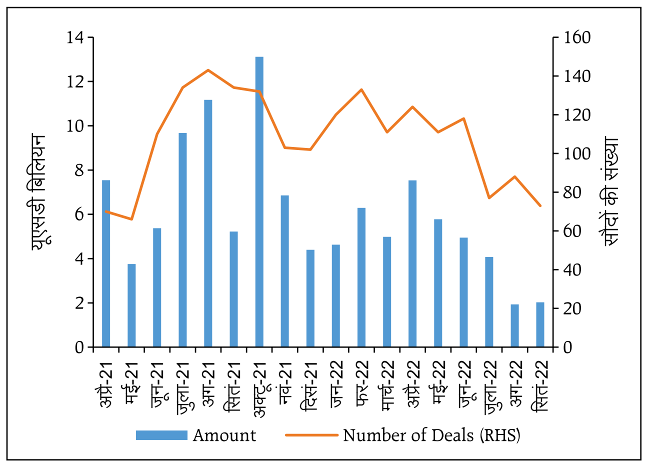

स्रोत: इंडियन वेंचर एंड अल्टरनेट कैपिटल एसोसिएशन (आईवीसीए) - अर्न्स्ट एंड यंग (ईवाई) पीई/वीसी राउंडअप रिपोर्ट।

चार्ट 1.49: सख्त बाजार स्थितियां (31 मार्च 2022 से ब्याज दरों में बदलाव*)

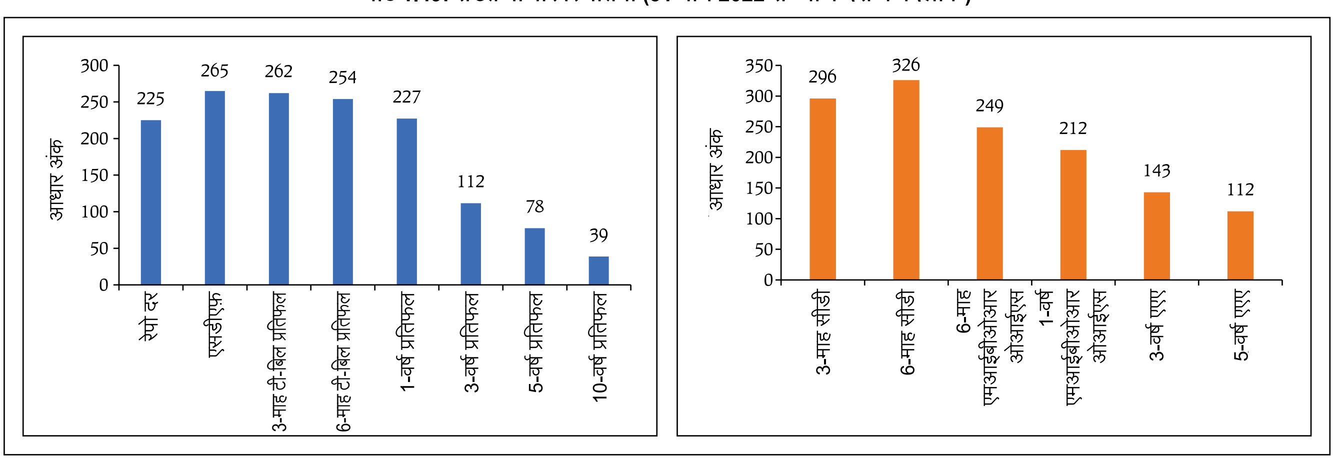

नोट:* 14 दिसंबर, 2022 तक

स्रोत: आरबीआई, एफबीआईएल और ब्लूमबर्ग

हलचल भी चलनिधि स्थितियों में रुक-रुक कर होने वाले बदलावों को प्रभावित करती है, जिसमें कुछ दिन ऐसे भी होते हैं जब ओवरनाइट दरें रेपो दर को पार कर जाती हैं।

1.62 सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) का प्रतिफल वक्र समतल हुआ (चार्ट 1.51 ए और बी) क्योंकि मौद्रिक नीति कार्रवाइयों के जवाब में प्रतिफल वक्र के लघु-छोर में काफी वृद्धि हुई, जबकि वक्र के दीर्घ-छोर में बहुत कम गति से वृद्धि हुई। ऐसा पेपर की बढ़ी हुई आपूर्ति से दबाव कम होने और एक स्थिर मुद्रास्फीति और विकास दृष्टिकोण मजबूत होने के कारण हुआ है। 2022-23 की दूसरी छमाही में निवल जी-सेक आपूर्ति लगभग 4.8 लाख करोड़ रुपये रहने की उम्मीद है, जो एक साल पहले 2.9 लाख करोड़ रुपये थी।

1.63 नीतिगत दरों और राष्ट्रिक प्रतिफल में वृद्धि के अनुरूप, कॉरपोरेट बॉन्ड प्रतिफल में भी वृद्धि हुई है, और निम्नतर दर वाले बॉन्ड (एए और बीबीबी-) के लिए स्प्रेड बढ़ा है। संस्थानों के

चार्ट 1.50: बैंकिंग प्रणाली की चलनिधि सख्त हुई

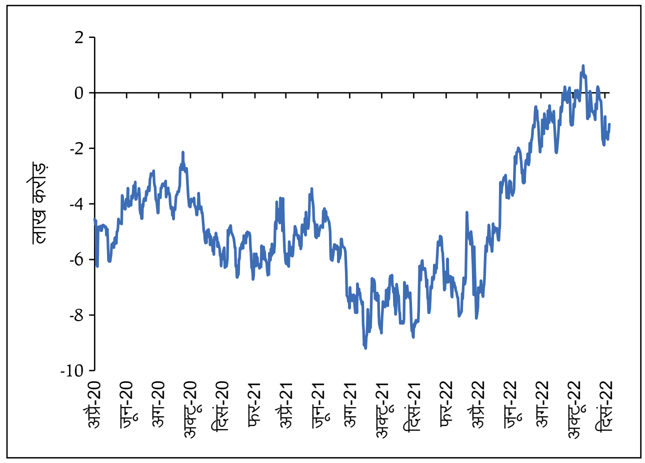

नोट: +टिव/-टिव चलनिधि का अंतःक्षेपण/अवशोषण दर्शाता है।

स्रोत: आरबीआई

चार्ट 1.51: प्रतिफल वक्र समतल हुआ

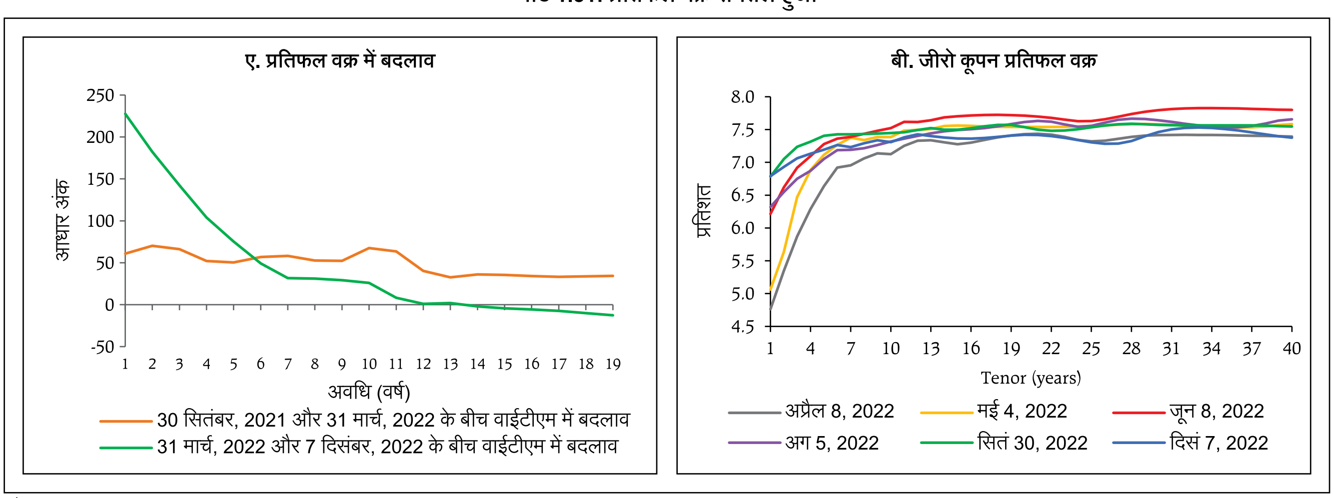

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.52: एएए – 3-वर्षीय कॉर्पोरेट बॉन्ड प्रतिफल और स्प्रेड (3-माह आवर्ती औसत)

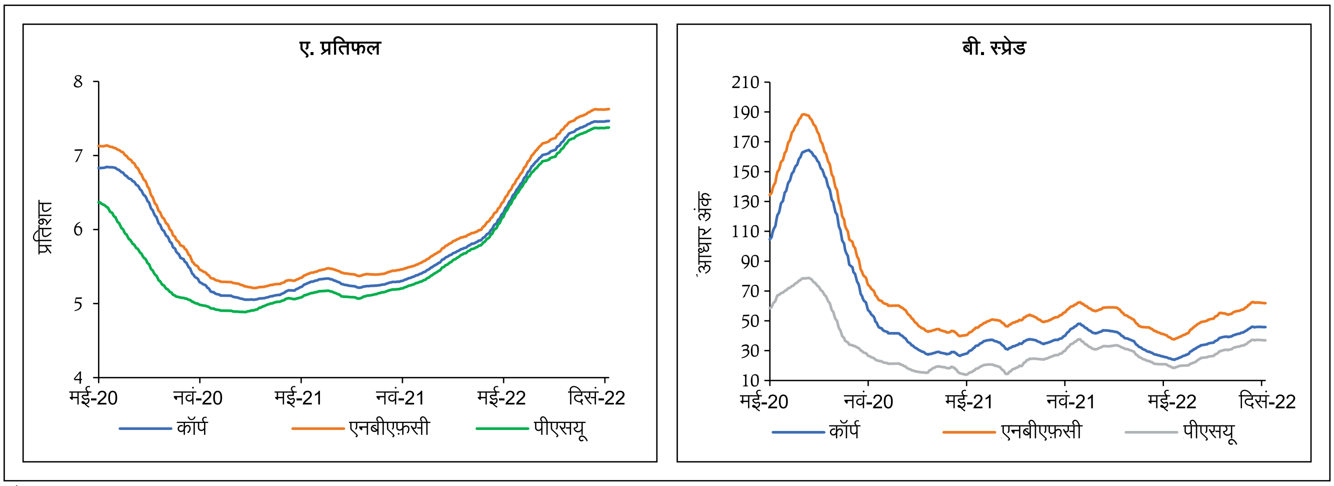

स्रोत: ब्लूमबर्ग

बीच, एनबीएफसी और गैर-वित्तीय कॉरपोरेट्स द्वारा जारी किए गए बॉन्ड के स्प्रेड में मामूली वृद्धि हुई (चार्ट 1.52 ए और बी)।

1.64 प्राथमिक निर्गम के समय और द्वितीयक बाजार व्यापार में सूचीबद्ध गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीडी) के रेटिंग-वार माध्यिका प्रतिफल स्प्रेड की तुलना से पता चलता है कि साल-दर-साल आधार पर 2022-23 की पहली छमाही के दौरान, 3-वर्षीय जी-सेक के बेंचमार्क प्रतिफल पर स्प्रेड सभी रेटिंग श्रेणियों में संकुचित हो गया (चार्ट 1.53 ए और बी)। हालांकि, कारोबार किए गए एनसीडी का औसत प्रतिफल स्प्रेड, 2022-23 की पहली तिमाही की तुलना में 2022-23 की दूसरी तिमाही के दौरान, एए+ को छोड़कर, सभी रेटिंग श्रेणियों के लिए बढ़ा।

1.65 कॉरपोरेट बॉन्ड निर्गमन में निजी स्थानन का दबदबा कायम है। एनबीएफसी, आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) और

चार्ट 1.53: सूचीबद्ध एनसीडी का स्प्रेड - प्राथमिक और द्वितीयक बाजार

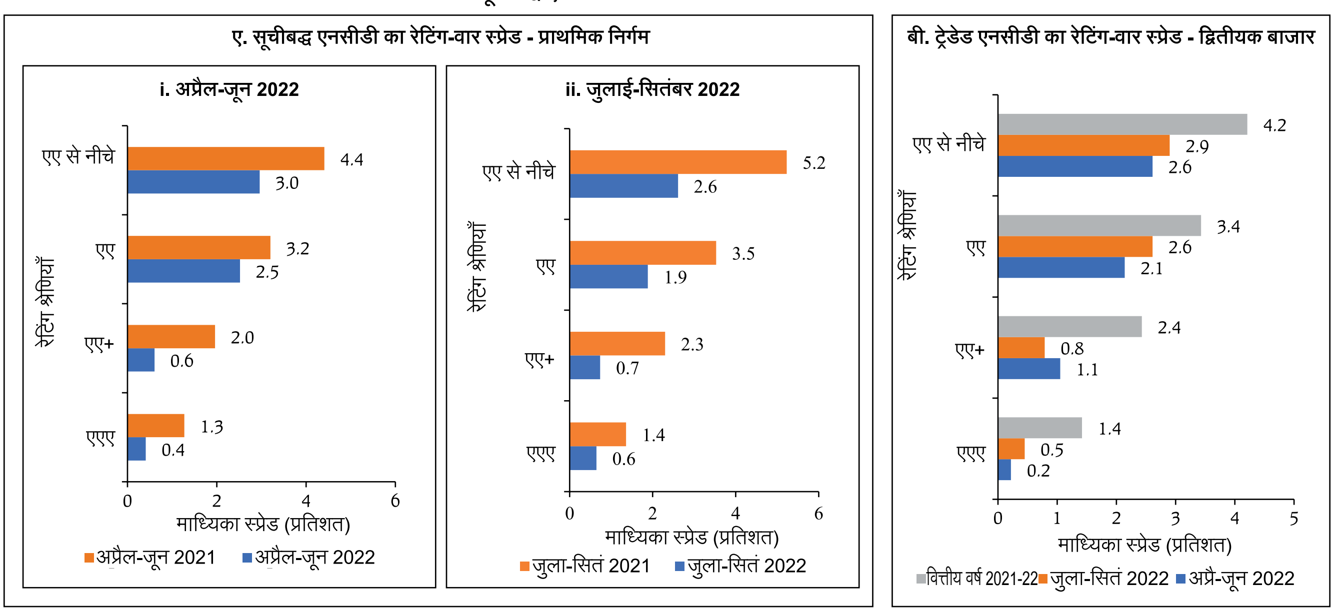

स्रोत: एनएसडीएल, सीडीएसएल

स्रोत: एनएसई, बीएसई

चार्ट 1.54: प्राथमिक बाजार से संसाधन जुटाना और कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणी-वार जारीकर्ता

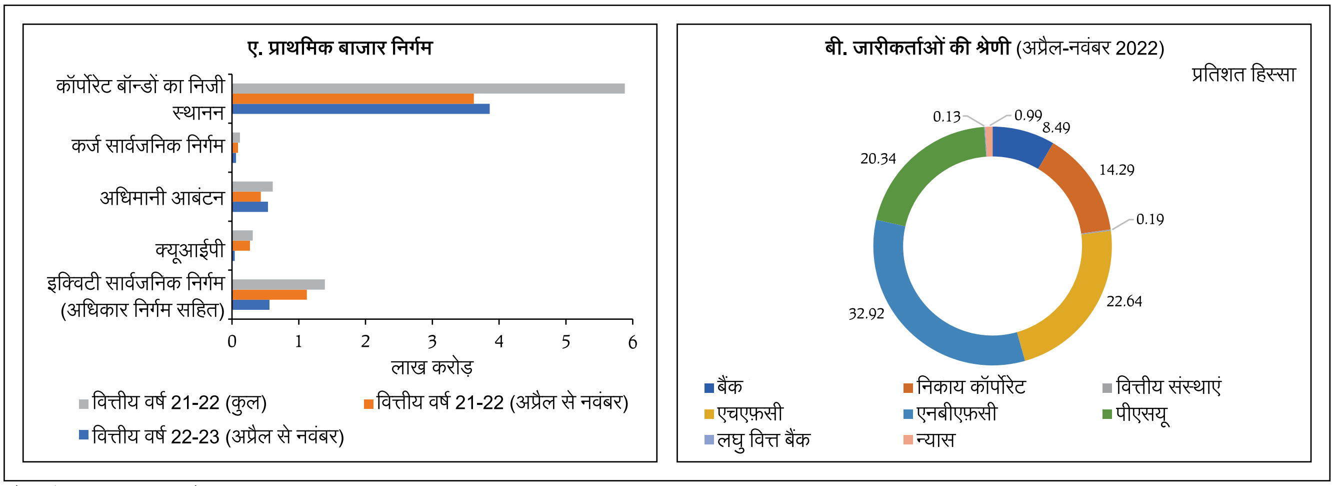

स्रोत: सेबी, एनएसडीएल और सीडीएसएल।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) का, कुल सूचीबद्ध बॉन्ड/डिबेंचर में 73 प्रतिशत हिस्सा है। (चार्ट 1.54)।

1.66 कॉर्पोरेट बॉन्ड के कुल सार्वजनिक निर्गमों में से 70 प्रतिशत हिस्से का अभिदान, निवासियों द्वारा किया गया था (चार्ट 1.55ए)। लगभग दो तिहाई हिस्सा निजी तौर पर बैंकों और निकाय कॉरपोरेटों में रखा गया था (चार्ट 1.55बी)।

I.2.3 सरकारी वित्त

1.67 राजकोषीय सुदृढ़ीकरण के अपने पथ पर वापस लौटते हुए, केंद्र सरकार का लक्ष्य 2022-23 में सकल राजकोषीय घाटे (जीएफ़डी) को पिछले वर्ष के 6.7 प्रतिशत से घटाकर सकल घरेलू उत्पाद का 6.4 प्रतिशत करना है (सारणी 1.4)। चालू वर्ष के दौरान अब तक (अक्टूबर 2022 तक) जीएफडी को, कर संग्रह में उछाल के कारण, पूरे वर्ष के बजट अनुमानों के 45.6 प्रतिशत पर रखा गया है, भले ही पूंजीगत व्यय में वृद्धि मजबूत रही हो। माल और सेवा कर (जीएसटी) संग्रह लगातार

सारणी 1.4: केंद्र सरकार के वित्त - प्रमुख घाटा संकेतक

(मौजूदा बाजार कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत)

मद	2020-21	2021-22 (पीए)	2022-23 (बीई)
राजस्व घाटा	7.3	4.4	3.8
सकल राजकोषीय घाटा	9.2	6.7	6.4
प्राथमिक घाटा	5.7	3.3	2.8

नोट: पीए: अनंतिम खाते; बीई: बजट अनुमान

स्रोत: केंद्रीय बजट, 2022-23; और लेखा महानियंत्रक (सीजीए)

चार्ट 1.55: कॉर्पोरेट बॉन्ड के श्रेणी-वार अभिदाता (अप्रैल-नवंबर 2022)

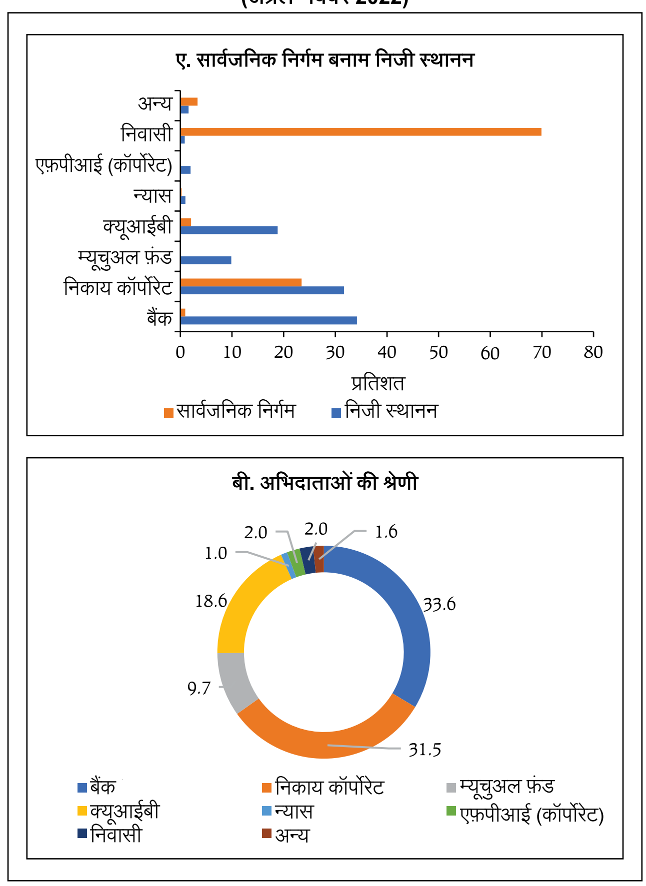

नोट: *अन्य में एआईएफ, सीएम, एफआई, एफआईआई, विदेशी नागरिक, एफपीआई (व्यक्ति), एचयूएफ, एनआरआई और अन्य शामिल हैं।

स्रोत: एनएसडीएल, सीडीएसएल

नौवें महीने ₹1.4 लाख करोड़ से अधिक रहा और नवंबर 2022 में ₹1.46 लाख करोड़ रहा (चार्ट 1.56)।

1.68 केंद्र सरकार का ब्याज भुगतान, जो 2021-22 में जीडीपी का 3.4 प्रतिशत था, 2022-23 (बजट अनुमान) में बढ़कर जीडीपी का 3.6 प्रतिशत होने की उम्मीद है। अप्रैल-अक्टूबर 2022-23 के दौरान, ब्याज भुगतान में 19.9 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई, जो राजस्व प्राप्तियों[27] में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि को पार कर गया। 2022-23 के दौरान अब तक (अक्टूबर 2022 तक), जी-सेक निर्गम का भारित औसत प्रतिफल 7.3 प्रतिशत था, जो 2021-22 (6.28 प्रतिशत) की तुलना में 103 बीपीएस अधिक था।

1.69 ऋण-जीडीपी अनुपात में वृद्धि {केंद्र सरकार के लिए 2018-19 में 48.9 प्रतिशत से 2022-23 (बीई) में 60.2 प्रतिशत की वृद्धि}, उच्चतर मोचन दबाव (चार्ट 1.57 ए और बी) और प्रतिफल में वृद्धि के बावजूद, ब्याज दर-विकास दर अंतर (आर-जी), सांकेतिक ब्याज दर की तुलना में उच्च सांकेतिक वृद्धि के कारण, अनुकूल बना हुआ है, जिससे कर्ज चुकाने में किसी भी अंतरिम बजट की बाधा कम हो गई है।

1.70 राज्य सरकारों के वित्त में 2021-22 में सुधार हुआ क्योंकि उन्होंने महामारी के दौरान खोई हुई राजकोषीय गुंजाइश को फिर से हासिल करने के लिए बजट बनाया। 2021-22 में, उनका संयुक्त सकल राजकोषीय घाटा अनुपात 3.6 प्रतिशत के संशोधित अनुमान की तुलना में सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) के 2.7 प्रतिशत पर बहुत कम था। यह कर और गैर-कर राजस्व- दोनों में अपेक्षा से अधिक वृद्धि के कारण हासिल किया गया है, भले ही व्यय-पक्ष मजबूत रहा हो। 2022-23 के लिए, राज्यों ने 3.3 प्रतिशत के समेकित जीएफडी-जीएसडीपी अनुपात के लिए बजट निर्धारित किया है, जो 15वें वित्त आयोग द्वारा निर्धारित 4 प्रतिशत[28] के सांकेतिक लक्ष्य के भीतर है (सारणी 1.5)।

चार्ट 1.56: मासिक जीएसटी संग्रह

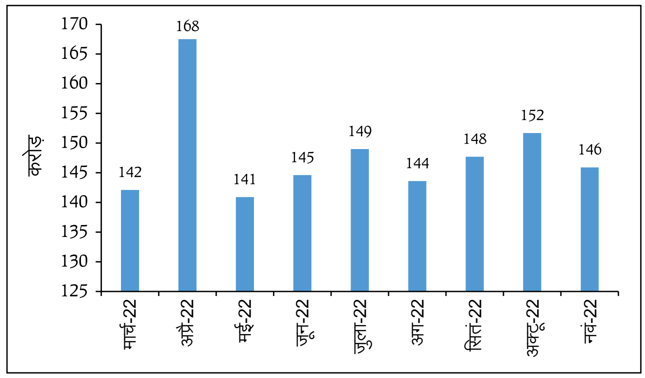

स्रोत: प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी)

चार्ट 1.57: सरकारी उधारियाँ और मोचन

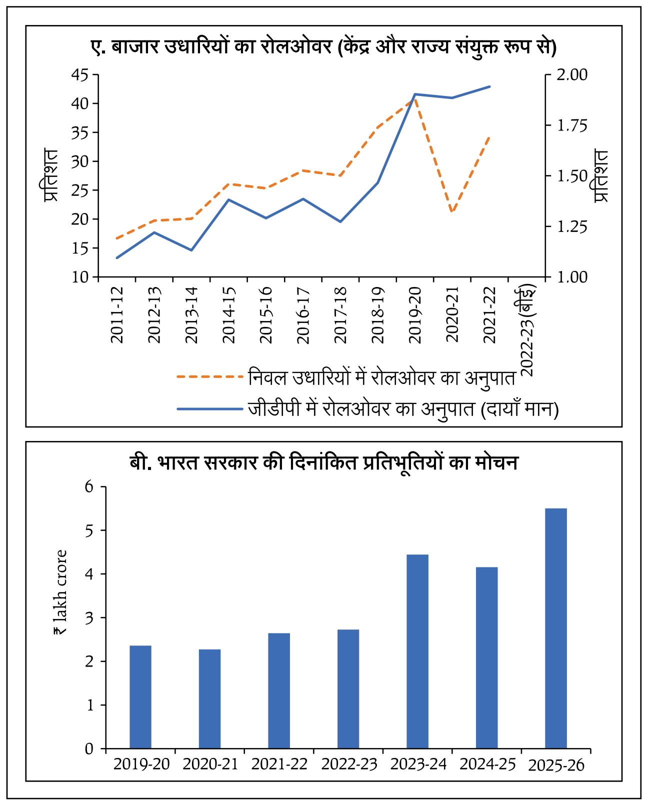

स्रोत: आरबीआई

सारणी 1.5: राज्यों के प्रमुख घाटा संकेतक

घाटा संकेतक	(जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में)			
	2020-21	2021-22 (RE)	2021-22 (PA)	2022-23 (BE)
राजस्व घाटा	1.8	0.9	0.4	0.4
सकल राजकोषीय घाटा	3.8	3.6	2.7	3.3
प्राथमिक घाटा	2.0	1.9	1.1	1.5

नोट: पीए: अनंतिम खाते; बीई: बजट अनुमान; आरई: संशोधित अनुमान
डेटा 29 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों से संबंधित है।

स्रोत: राज्य सरकारों के बजट दस्तावेज।

[27] राजस्व प्राप्तियों में कर और गैर-कर राजस्व शामिल हैं।

[28] कुल निवल उधार सीमा में से जीएसडीपी का 0.5 प्रतिशत उधार लेने की गुंजाइश राज्यों द्वारा किए गए बिजली क्षेत्र के सुधारों से जुड़ी है।

1.71 राजकोषीय सुदृढ़ीकरण से लाभ के बावजूद, कई राज्यों द्वारा घोषित बढ़ती सब्सिडी के बारे में चिंताएं बनी हुई हैं। पंद्रहवें वित्त आयोग की रिपोर्ट में भी कुछ राज्यों के राजस्व व्यय में सब्सिडी की बढ़ती हिस्सेदारी के मुद्दे को चिह्नित किया है (एफसी-XV रिपोर्ट)[29]। 2019-20 में संकुचन के बाद, सब्सिडी पर राज्यों का खर्च क्रमशः 2020-21 और 2021-22 के दौरान 12.9 प्रतिशत और 11.2 प्रतिशत बढ़ा है। आनुपातिक रूप से, उनके कुल राजस्व व्यय में सब्सिडी का हिस्सा भी 2019-20 में रहे 7.8 प्रतिशत से बढ़कर 2021-22 में 8.2 प्रतिशत हो गया है। गैर-योग्य सब्सिडी पर बढ़ते व्यय से राज्यों के व्यय में प्रतिबद्ध व्यय का हिस्सा बढ़ सकता है, जिससे विकासात्मक और पूंजीगत व्यय के लिए उपलब्ध राजकोषीय गुंजाइश बाधित हो सकती है।

I.2.4 बाह्य क्षेत्र की प्रगति और विदेशी मुद्रा बाजार

1.72 वैश्विक मंदी के बढ़ते जोखिमों, अभी भी वस्तुओं की उच्च कीमतों और पूंजी प्रवाह में अस्थिरता के कारण, भारत का बाह्य क्षेत्र भारी वैश्विक प्रतिकूलताओं का सामना कर रहा है। जहां बाहरी मांग में कमी के कारण, व्यापार निर्यात में अक्टूबर 2022 में संकुचन आ गया है, वहीं व्यापार आघात की शर्तों के कारण आयात का परिमाण बढ़ता जा रहा है।

1.73 इसके परिणामस्वरूप, अप्रैल-नवंबर 2022 के दौरान माल व्यापार घाटा बढ़कर 198.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 115.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। वैश्विक माल ढुलाई दरों में ऐतिहासिक उच्च स्तर से गिरावट के साथ-साथ, पण्यों की कीमतों में कुछ उलटफेर के बावजूद, निर्यात के लिए बिगड़ते दृष्टिकोण से व्यापार और चालू खाता शेष पर दबाव जारी रह सकता है (चार्ट 1.58 ए और बी)।

1.74 बढ़ते तेल आयात बिल, जो आयातित ऊर्जा पर संरचनात्मक निर्भरता को दर्शाता है, ने नीतिगत गतिशीलता के दायरे को सीमित कर दिया है (चार्ट 1.59)। वैश्विक कच्चे तेल की खपत में भारत की हिस्सेदारी 2000 में 3.0 प्रतिशत से बढ़कर 2010 में 3.8 प्रतिशत और 2021 में और बढ़कर 5.2

चार्ट 1.58: पण्य निर्यात, आयात और व्यापार शेष

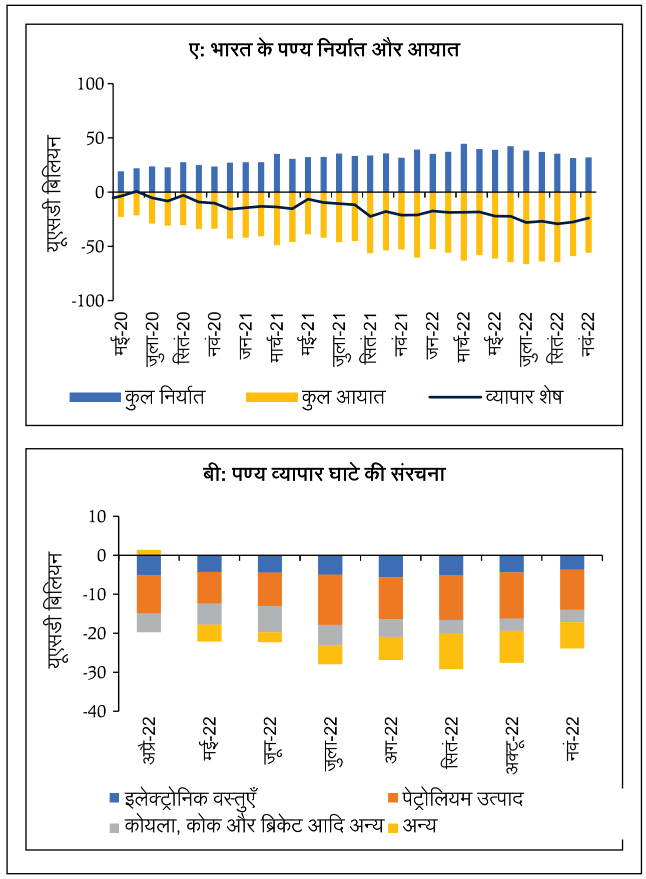

स्रोत: डीजीसीआई&एस और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय।

चार्ट 1.59: भारत का तेल आयात बिल

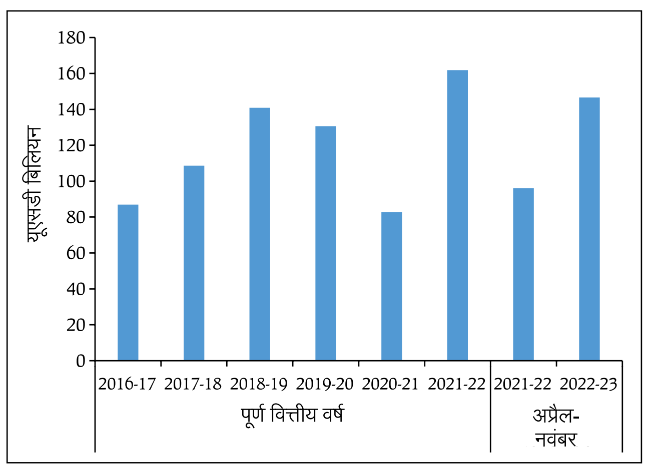

नोट: 2020-21 के आंकड़े संशोधित हैं और 2021-22 के लिए अनंतिम हैं

स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई&एस)

[29] वित्त आयोग, भारत (2020), "कोविड काल में वित्त आयोग: 2021-26 के लिए रिपोर्ट। खंड- IV राज्य", अक्टूबर।

प्रतिशत हो गई है।[30] वास्तव में, 2022 में वैश्विक पेट्रोलियम मांग में प्रतिदिन 2 मिलियन बैरल की वृद्धि का पांचवां हिस्सा भारत का है। भारत कच्चे तेल के संबंध में एक 'प्राइस टेकर' है, और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये (आईएनआर) के हालिया मूल्यह्रास - अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों के मूल्यवर्ग की मुद्रा - ने आयात पर दबाव बढ़ा दिया है।

1.75 भारत का सीएडी पिछली तिमाही में जीडीपी के 2.2 प्रतिशत और 2021-22 में 1.2 प्रतिशत से बढ़कर, 2022-23 की दूसरी तिमाही में जीडीपी का 4.4 प्रतिशत हो गया। सीएडी में वृद्धि मुख्य रूप से माल व्यापार घाटे के बढ़ने के कारण हुई, जो निर्यात पर मंद हो रही वैश्विक मांग के प्रभाव को दर्शाता है, यद्यपि सेवाओं के निर्यात और विप्रेषण में वृद्धि मजबूत रही।

1.76 विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (एफपीआई) (6.5 अरब अमेरिकी डॉलर), प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) (6.4 अरब अमेरिकी डॉलर) और व्यापार ऋण (5.1 अरब अमेरिकी डॉलर) के नेतृत्व में निवल पूंजी प्रवाह, सीएडी की वित्त पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में कम पड़ गया, जिसके परिणामस्वरूप, 2022-23 की तीसरी तिमाही के दौरान भुगतान संतुलन (बीओपी) के आधार पर विदेशी मुद्रा भंडार में 30.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर कमी आयी (चार्ट 1.60)। 2022-23 की तीसरी तिमाही (16 दिसंबर, 2022 तक) के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में 30.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर की बढ़ोतरी हुई, जो 30 सितंबर, 2022 को 532.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

1.77 2022-23 के दौरान अब तक, 22.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवल एफडीआई एक साल पहले के स्तर से ऊपर बना हुआ है। जुलाई-दिसंबर (14 दिसंबर, 2022 तक) में एफपीआई का अंतःप्रवाह 11.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर था और अप्रैल-जून 2022 के दौरान भारी बहिर्वाह के कारण वित्तीय वर्ष के लिए अब तक के निवल बहिर्वाह को 2.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक सीमित कर दिया गया (चार्ट 1.61 ए और बी और सारणी 1.6)। चुकौती के कारण बाहरी वाणिज्यिक उधारियों (ईसीबी) से निवल प्रवाह नकारात्मक हो गया, जबकि अनिवासी जमाराशियाँ एक साल पहले के स्तर से ऊपर आ गईं।

चार्ट 1.60: भारत का भुगतान शेष

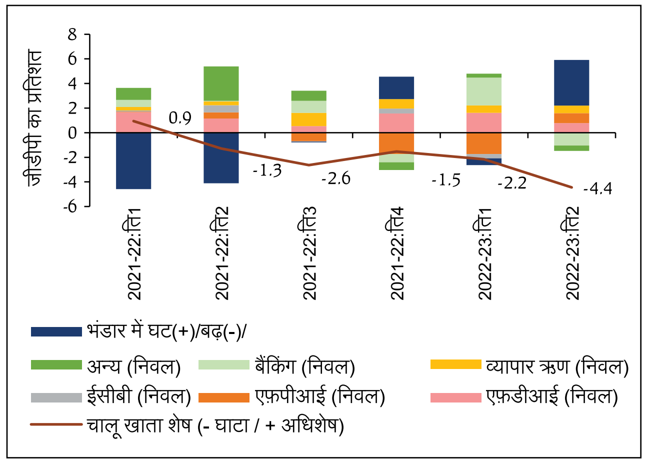

स्रोत: आरबीआई

चार्ट 1.61: संचयी एफडीआई और एफपीआई प्रवाह

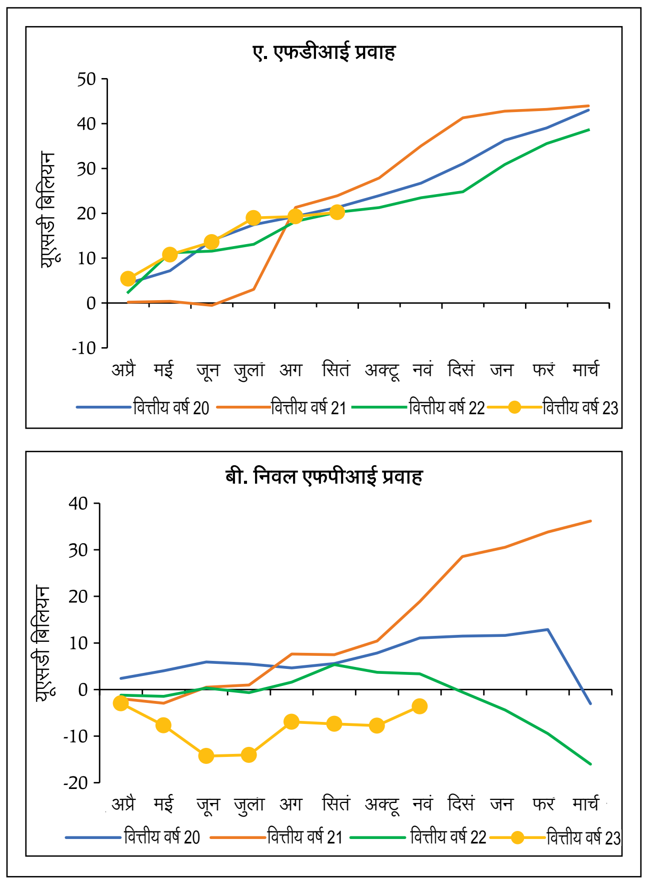

स्रोत: आरबीआई और एनएसडीएल

[30] ब्रिटिश पेट्रोलियम (2022), "वैश्विक ऊर्जा की सांख्यिकीय समीक्षा", जुलाई।

सारणी 1.6: निवल पूंजी प्रवाह

(यूएसडी बिलियन)

घटक	अब तक वित्तीय वर्ष			वित्तीय वर्ष (अप्रैल-मार्च)	
	अवधि	2022-23	2021-22	2021-22	2020-21
1. एफडीआई (निवल)	अप्रैल-अक्तू	22.7	21.3	38.6	44.0
2. एफपीआई (निवल)	अप्रैल-नवं	-3.2	2.7	-14.1	38.7
2ए इक्विटी	अप्रैल-नवं	-3.3	-1.8	-15.6	38.8
2बी कर्ज	अप्रैल-नवं	0.2	4.5	1.5	-0.1
3. ईसीबी में भारत (निवल)	अप्रैल-नवं	-5.9	4.2	7.4	0.2
4. अनिवासी भारतीय जमा(निवल)	अप्रैल-अक्तू	4.9	3.3	3.2	7.4

टिप्पणी: वर्ष 2022-23(अप्रैल-नवं) का एफपीआई और पिछले वर्ष की इसी अवधि के लिए डेटा एनएसडीएल से प्राप्त किया गया है, जबकि वर्ष 2021-22 और 2020-21 के आंकड़े बीओपी पर आधारित हैं।

स्रोत: आरबीआई और एनएसडीएल

1.78 भारत का कुल विदेशी मुद्रा भंडार 16 दिसंबर, 2022 तक 563.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जो वैश्विक स्पिलओवर की तुलना में मजबूत बफर है (चार्ट 1.62)।

1.79 यूएसडी की मजबूती और ट्रेजरी तथा अन्य राष्ट्रिक बांड के प्रतिफल में वृद्धि के परिणामस्वरूप लगभग 66.0 प्रतिशत मूल्यांकन हानि हुई जिससे वर्ष 2022-23 (सितंबर, 2022 के अंत तक)भण्डार में 75 बिलियन अमेरिकी डॉलर की गिरावट हुई (चार्ट 1.63 ए और बी)।

1.80 सितंबर 2022 के अंत तक भारत का विदेशी ऋण अल्पकालिक ऋण के साथ (रेसीड्युअल परिपक्वता के आधार पर) जो 45.0 प्रतिशत है इसके साथ 610.5 बिलियन अमेरिकी

चार्ट 1.62: भारत की विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियाँ दीर्घावधि प्रवृत्ति

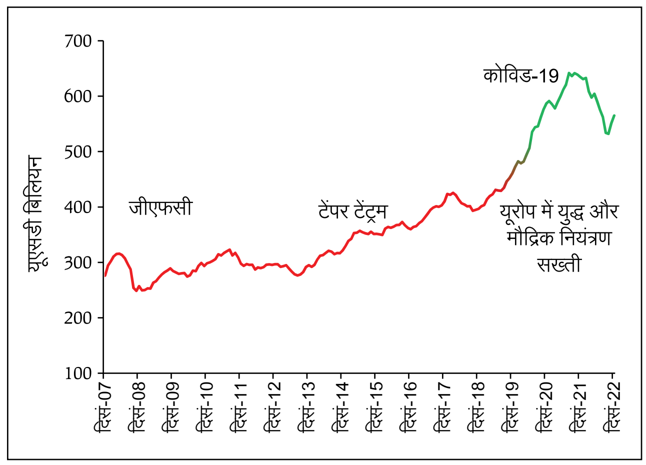

स्रोत: आरबीआई

चार्ट 1.63: विदेशी मुद्रा आस्तियों पर मूल्यांकन और प्रवाहों का हस्तक्षेप और प्रभाव

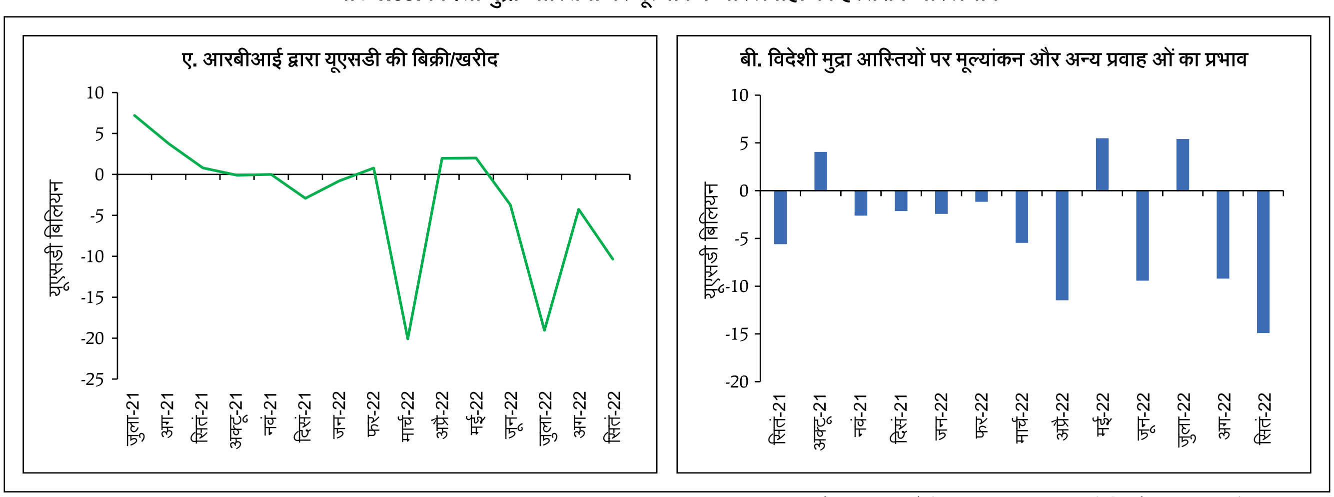

टिप्पणी: (+) से आशय परचेज जिसमें स्वैप के तहत परचेज लैग और आउटराइट फारवर्ड शामिल है। (-) से आशय सेल जिसमें स्वैप के तहत सेल लैग और आउटराइट फारवर्ड शामिल है।

स्रोत: आरबीआई

टिप्पणी: मूल्यांकन और अन्य प्रवाहों के प्रभाव की गणना महीने के दौरान एफसीए में निवल परिवर्तन से महीने के हस्तक्षेप को घटाकर की जाती है। अन्य प्रवाह ओं में ब्याज से प्राप्तियां, छूट और अन्य विविध मदें शामिल हैं।

स्रोत: आरबीआई

चार्ट 1.64: विदेशी कर्ज की मुद्रा संरचना

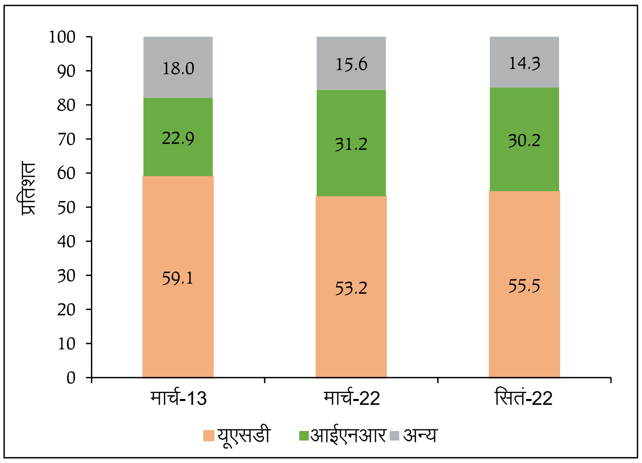

स्रोत: आरबीआई और वित्त मंत्रालय,भारत सरकार

डॉलर रहा। समयानुसार, डॉलर में मूल्यवर्गित कर्ज का हिस्सा गिरा है, जबकि रुपए में मूल्यवर्गित कर्ज बढ़ गया है (चार्ट 1.64), यह इस बात को इंगित करता है कि विविधीकरण जारी है।

1.81 वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में पूंजी प्रवाह के अंतर्गत, ईसीबी की भारित औसत परिपक्वता वर्ष में 5.6 (2021-22 की पहली छमाही में 4.9 वर्ष) तक बढ़ी जो कम रोलओवर जोखिम को दर्शाता है। ईसीबी को मुख्य रूप से चार प्रमुख मुद्राओं में दर्शाया गया है अर्थात् यूएसडी (81.4 प्रतिशत), यूरो (4.5 प्रतिशत),जेपीवाई (4.4 प्रतिशत) और रुपया (8.7 प्रतिशत)। ईसीबी ऋण के एक प्रमुख घटक का बचाव किया जाता है,जबकि कुछ हिस्से की गारंटी भारत सरकार द्वारा दी जाती है इसके साथ ही बिना बचाववाले ईसीबी को स्वाभाविक बचाव व्यवस्थाएं के रूप में रखा जाता है जहां उधारकर्ता की कमाई विदेशी मुद्रा में होती है (सारणी 1-7)।

1.82 कैलेंडर वर्ष 2022 (14 दिसंबर तक) के दौरान भारतीय रूपया में डॉलर के मुकाबले 10.0 प्रतिशत की गिरावट, यूरो के मुकाबले 4.2 फीसदी की गिरावट, पाउंड स्टर्लिंग के मुकाबले 1.7 फीसदी की गिरावट और चीनी युआन के मुकाबले 1.3 प्रतिशत की गिरावट रही लेकिन जापानी येन के मुकाबले 6.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस बीच, अमेरिकी डॉलर सूचकांक में 8.5 प्रतिशत की मजबूती आई (चार्ट 1.65)।

सारणी 1.7: ईसीबी ऋण

(यूएसडी मिलियन)

विवरण	(सितं-2022 तक)
ए. ईसीबी - कुल बकाया	173,487
बी. ईसीबी – आईएनआर मूल्यवर्गित	15,109
सी. ईसीबी - एफडीआई कंपनी 'विदेशी पैरेंट से उधार'	28,426
जिनमें से:	
(क) आईएनआर मूल्यवर्गित	10,790
(ख) एफसीवाई मूल्यवर्गित	17,636
डी. ईसीबी – गैर-रुपया और गैर-एफडीआई [= ए-बी-सी(बी)]	140,742
जिनमें से:	
(क) सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां	53,163
(ख) निजी कंपनियां और अन्य	87,580
ई. गैर-रुपया गैर-एफडीआई ईसीबी के हेजिंग विवरण (अर्थात, उपर्युक्त डी)	61,589
(1) अप्रैल 2019 के दौरान के पंजीकरण पर घोषित हेजिंग	44,695
जिनमें से:	
(क) सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां	8,800
(ख) निजी कंपनियां और अन्य	35,895
(2) उधारकर्ताओं द्वारा हेज किए गए अन्य पिछले ऋणों की सूचना दी गई	17,164
जिनमें से:	
(ग) सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियां	6,786
(घ) निजी कंपनियां और अन्य	10,378
एफ. ईसीबी – अनहेज्ड {डी-(ई1+ई2)}	78,884
जी. अनहेज्ड गैर-रुपया गैर-एफडीआई ईसीबी का हिस्सा {(एफ)/(ए)*100}	45

स्रोत: आरबीआई

चार्ट 1.65: प्रमुख मुद्राओं की तुलना में भारतीय रुपया में उतार-चढ़ाव

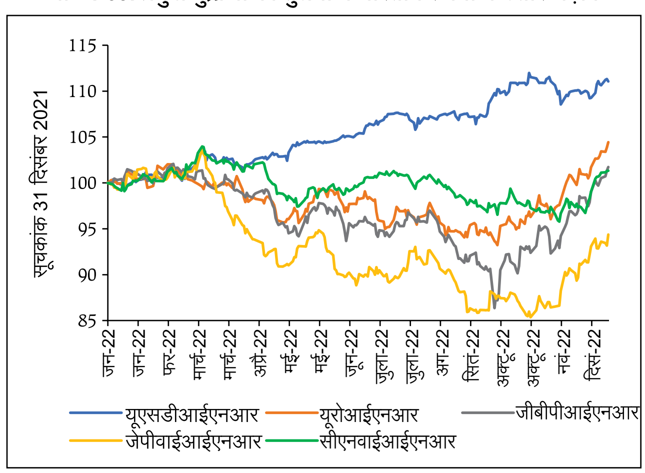

स्रोत: रिफिनिटिव,एफबीआईएल

1.83 वर्ष के पहले भाग में अनुभव की गई अस्थिरता के मुकाबले अक्तूबर के मध्य से रुपये में सुधार हुआ है और अपने दीर्घावधि ट्रेंड के करीब कारोबार कर रहा है (चार्ट 1.66)।

1.84 वैश्विक वित्तीय बाजारों में अत्यधिक अस्थिरता के बावजूद सविराम सुधारों से भारतीय रुपया अपने समकक्ष की तुलना में स्थिर रहा (चार्ट 1.67 ए और बी)।

1.85 अस्थिरता के लिए उपाय, जैसेकि 1 महीने के बाजार भाव जिसमें यूएसडी-आईएनआर केविकल्प और जोखिम रिवर्सल की अस्थिरता निहित है[31] यूक्रेन में युद्ध से तेजी से बढ़ी और तदोपरांत इसमें गिरावट आई (चार्ट 1.68 ए और बी)।

चार्ट 1.66: यूएसडी-आईएनआर दीर्घावधि प्रवृत्ति

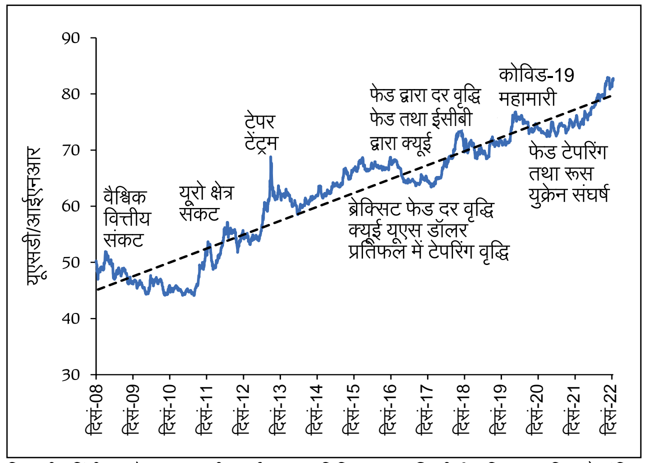

टिप्पणी: बिंदीदार रेखा यूएसडी-आईएनआर विनिमय दर की दीर्घकालिक प्रवृत्ति को इंगित करती है

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.67: विनिमय दर अस्थिरता

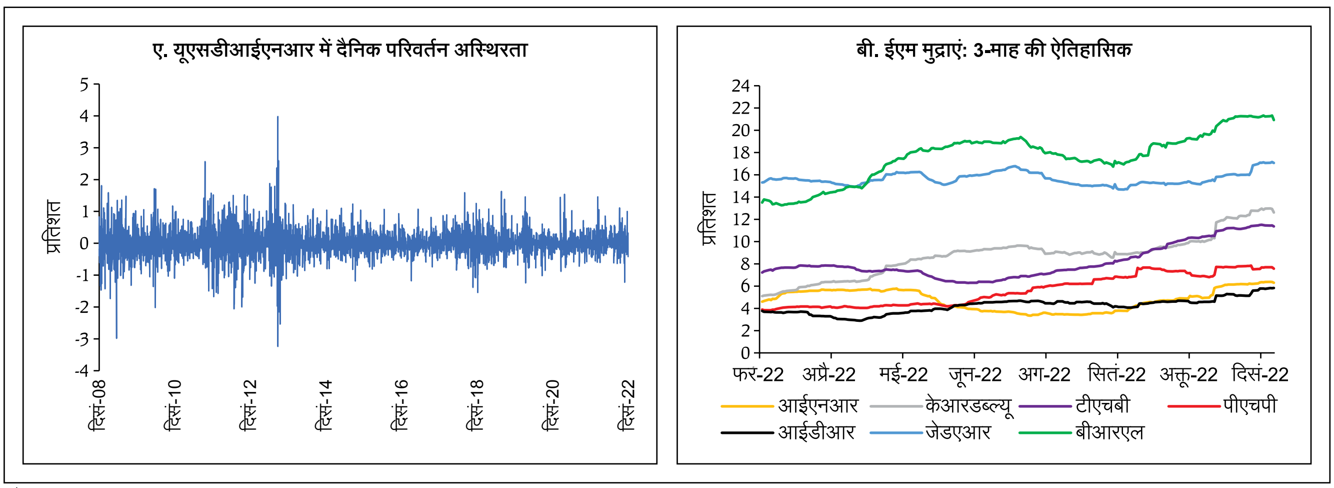

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.68: यूएसडी-आईएनआर अंतर्निहित अस्थिरता

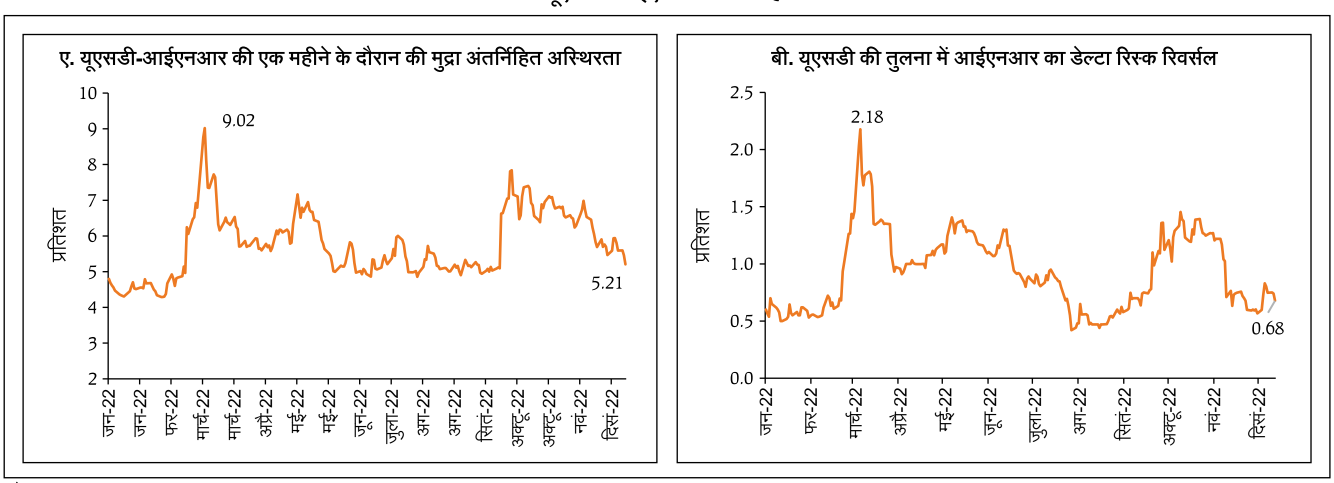

स्रोत: ब्लूमबर्ग

[31] रिस्क रिवर्सल आउट-ऑफ-द-मनी कॉल और पुट विकल्पों की निहित अस्थिरता के बीच अंतर का एक उपाय है। एक सकारात्मक जोखिम उत्क्रमण यह दर्शाता है कि कॉल की अस्थिरता समान वस्तुओं की अस्थिरता से अधिक है, जिसका अर्थ है कि अधिक बाजार प्रतिभागी यूएसडी-आईएनआर विनिमय दर में वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं।

1.86 सभी अवधियों में वायदा प्रीमियम नरम हो गया। एक साल का वायदा प्रीमियम, जो फर्मों के लिए हेजिंग लागत दर्शाता है मार्च 2021 के अंत में 4.6 प्रतिशत से कम होकर जून 2022 के अंत में 3.0 प्रतिशत और 14 दिसंबर 2022 तक 2.0 प्रतिशत तक हो गया (चार्ट 1.69)।

I.2.5 इक्विटी बाजार

1.87 वैश्विक स्पिलओवर की प्रतिक्रिया में जोखिम की भावना में अस्थिर बदलाव ने दुनिया भर के प्रमुख शेयर बाजारों को प्रभावित किया है। कैलेंडर वर्ष 2022 के दौरान अब तक (14 दिसंबर 2022), एसएंडपी 500 सूचकांक में 16.4 प्रतिशत, डीएएक्स 40 सूचकांक में 9.0 प्रतिशत और एमएससीआई उभरते हुए बाजार सूचकांक में 21.0 प्रतिशत तक गिरावट आई। इसके विपरीत, मजबूत घरेलू फंडामेंटल, घरेलू कंपनियों की मजबूत बिक्री बढ़त,विदेशों से पोर्टफोलियो निवेश में बहाली और घरेलू संस्थागत निवेशकों से निरंतर समर्थन से निफ्टी 50 सूचकांक में 8.5 फीसदी की तेजी दर्ज की गई (चार्ट 1.70 ए और बी)।

1.88 अप्रैल-जून 2022 के दौरान बढ़ते वैश्विक भू-राजनीतिक और वित्तीय विकास से जोखिम बढ़ा जिससे एफपीआई का अधिक बहिर्गमन हुआ। भारतीय परिसंपत्तियों की नए सिरे से वापसी के साथ जुलाई-दिसंबर(14 दिसंबर 2022 तक) के दौरान शेयर बाजारों में एफपीआई 11.6 अमेरिकी डॉलर बिलियन लगाया जिससे वित्तीय वर्ष के दौरान 2.7 अमेरिकी डॉलर बिलियन संचयी निवल बहिर्गमन की कमी आई (चार्ट

चार्ट 1.69: फॉरवर्ड प्रिमिया कर्व

स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.71: मासिक एफपीआई प्रवाह

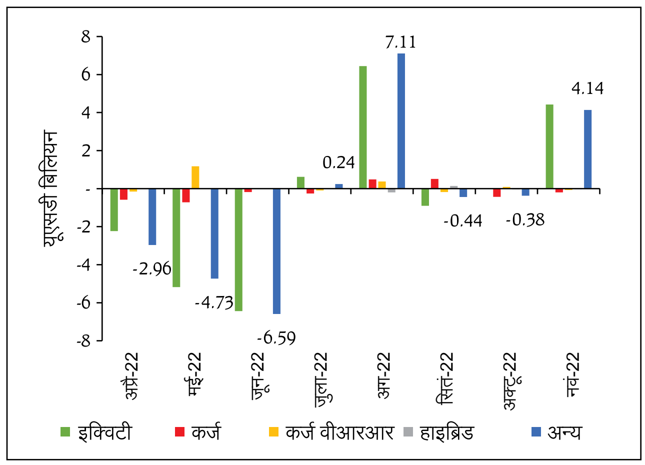

स्रोत: एनएसडीएल

चार्ट 1.70: इक्विटी बाजार उतार-चढ़ाव

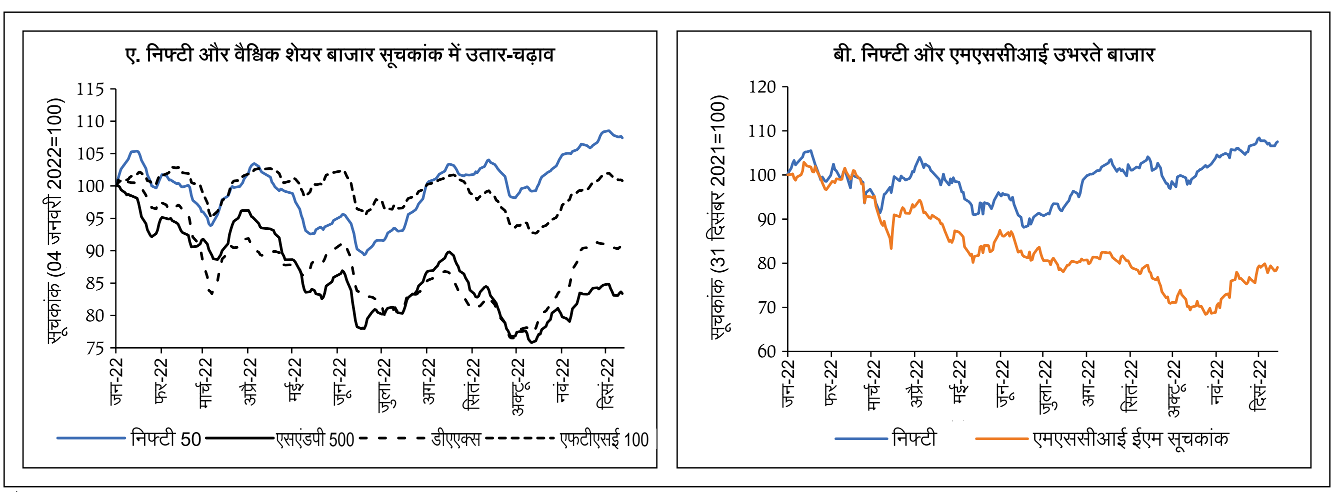

स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.71)। कैलेंडर वर्ष 2022 के दौरान व्यापक उतार-चढ़ाव पैदा करने वाले कारकों में से एक अस्थिर एफपीआई प्रवाह रहा, इसके साथ ही अस्थिरता सूचकांक – एनएसई वीआईएक्स सामान्य अवधि औसत लगभग 15.7 (जनवरी 2015 से दिसंबर 2019 तक के बीच पांच साल के कोविड-पूर्व औसत) के मुकाबले 16 से 32 की सीमा में आगे बढ़ा।

1.89 एफपीआई के उतार-चढ़ाव के प्रभाव को घरेलू संस्थागत निवेशकों से प्रवाह (बैंक,म्यूच्युअल फंड, बीमा कंपनियां और नेशनल पेंशन सिस्टम) ने प्रतिसंतुलित किया।

वर्ष 2022-23 के दौरान (नवंबर 2022 तक), निवल घरेलू संस्थागत निवेश (डीआईआई) अंतर्वाह (म्यूच्युअल फंड के अतिरिक्त) ₹27,578 करोड़ रहा। वर्ष 2021-22 में 1.90 लाख करोड़ के निवेश के साथ वर्ष 2022-23 (नवंबर 2022 तक) में ₹1.21 लाख करोड़ के म्यूच्युअल फंड के इक्विटी में निवल निवेश से सकारात्मक रुझान जारी रहा(चार्ट 1.72)। डीआईआई की ऑफसेटिंग प्रकृति भारतीय इक्विटी बाजारों के एफपीआई प्रवाह द्वारा संचालित बड़े और अस्थिर उतार-चढ़ाव को अपेक्षाकृत कम संवेदनशील बनाती है।

1.90 समग्र रूप से, एफपीआई और निवल डीआईआई (म्यूच्युअल फंड सहित) का योग वर्ष 2019-20 के 0.84 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2021-22 में 1.23 लाख करोड़ हो गया। वर्ष 2022-23 (नवंबर 2022 तक) में एफपीआई और डीआईआई का संयुक्त निवल निवेश ₹1,25,984 करोड़ रहा (चार्ट 1.73)।

1.91 वैयक्तिक निवेशकों द्वारा कुल निवल निवेश ग्राहकों और अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) सहित, एक साल पहले के ₹59,992 करोड़ से घटकर अप्रैल-नवंबर 2022-23 के दौरान ₹13,551 करोड़ रह गया (चार्ट 1.74)।

1.92 जनवरी 2020 के कुल डीमैट खाते (जैसाकि डिपॉजिटरी एनएसडीएल और सीडीएसएल में रिपोर्ट किया गया

चार्ट 1.72 : एफपीआई और डीआईआई प्रवाह – वित्तीय वर्ष 2022-23

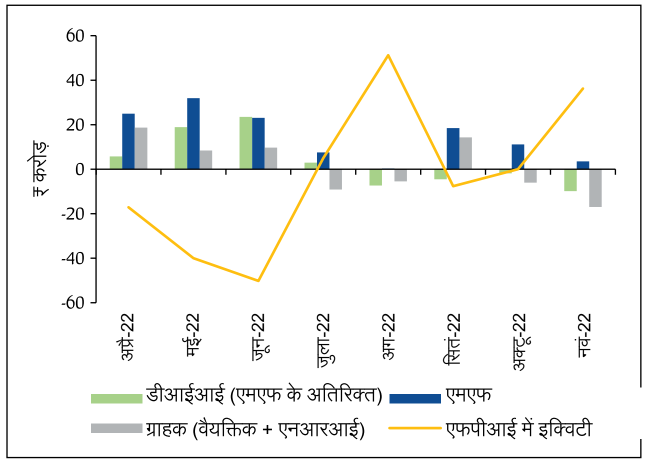

स्रोत-एनएसडीएल ,एनएसई और बीएसई

चार्ट 1.73 : एफपीआई और डीआईआई प्रवाह – वित्तीय वर्ष 2018-19 से वित्तीय वर्ष 2022-23

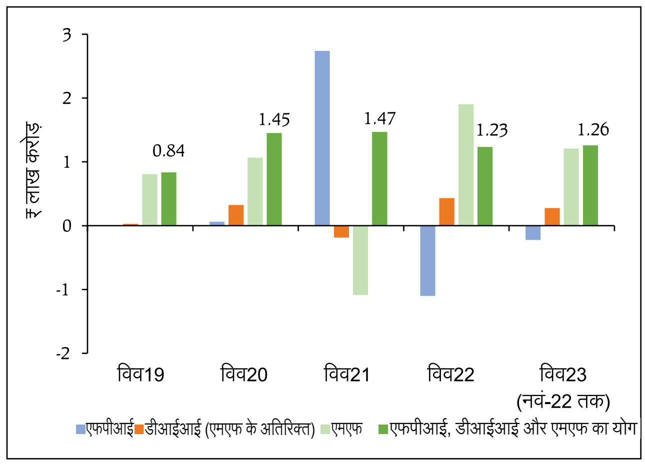

स्रोत: एनएसडीएल, एनएसई और बीएसई

चार्ट 1.74 : वैयक्तिकों का निवल निवेश और निफ्टी 50 प्रतिलाभ

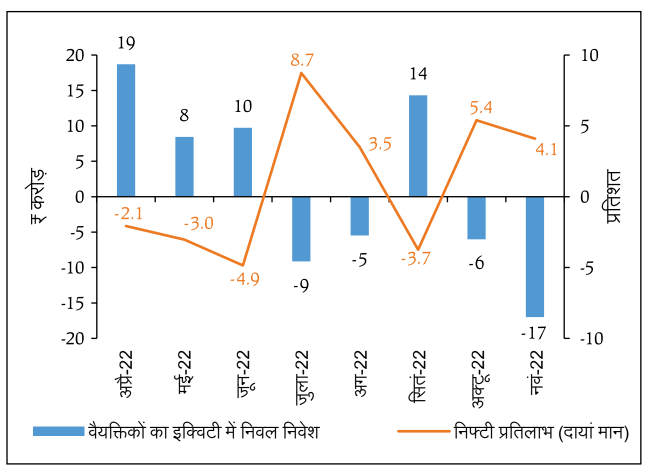

स्रोत: एनएसडीएल ,सीडीएसएल, एनएसई और बीएसई

[32] एनएसडीएल- नेशनल सिक्युरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड; सीडीएसएल- केंद्रीय निक्षेपागार सर्विसेज लिमिटेड।

चार्ट 1.75: डीमेट खातों और एसआईपी प्रवाह में प्रवृत्ति

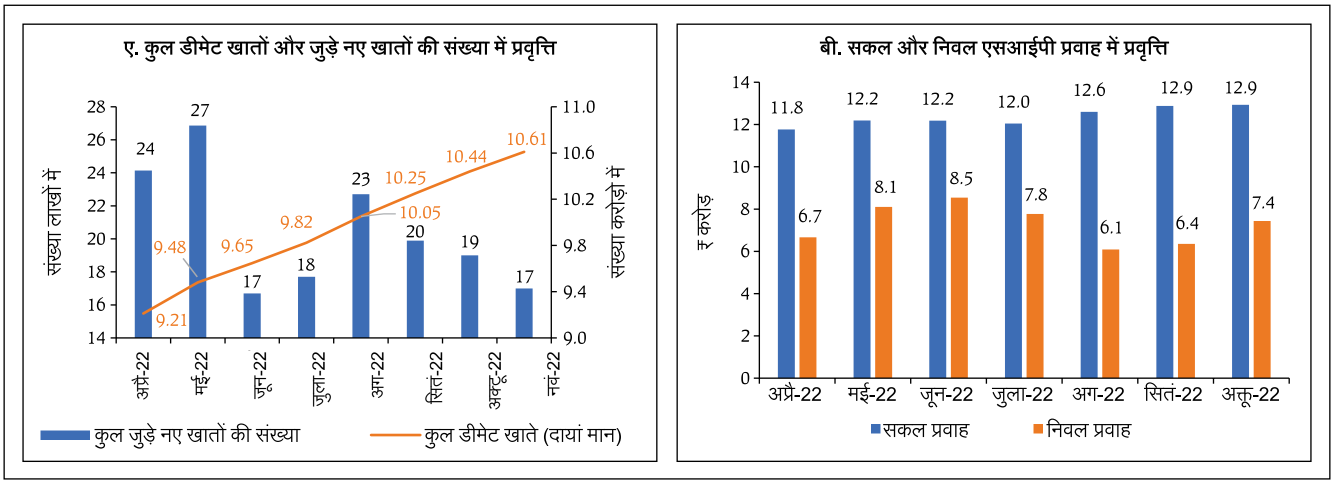

स्रोत: एनएसडीएल ,सीडीएसएल

स्रोत: सेबी

है) 3.95 करोड़ से बढ़कर नवंबर 2022 में 10.61 करोड़ हो गए। सुनियोजित निवेश योजना(एसआईपी) से म्यूच्युअल फंड के आवक में लगातार वृद्धि हुई (चार्ट 1.75 ए और बी)।

1.93 जैसाकि भारत की विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा समष्टि आर्थिक संभावनाएं और अर्जन अनुमान मजबूत है, ऐसे में भारतीय इक्विटी बाजार मूल्यांकन अभी भी अधिक है (चार्ट

चार्ट 1.76 : इक्विटी बाजार मूल्यांकन

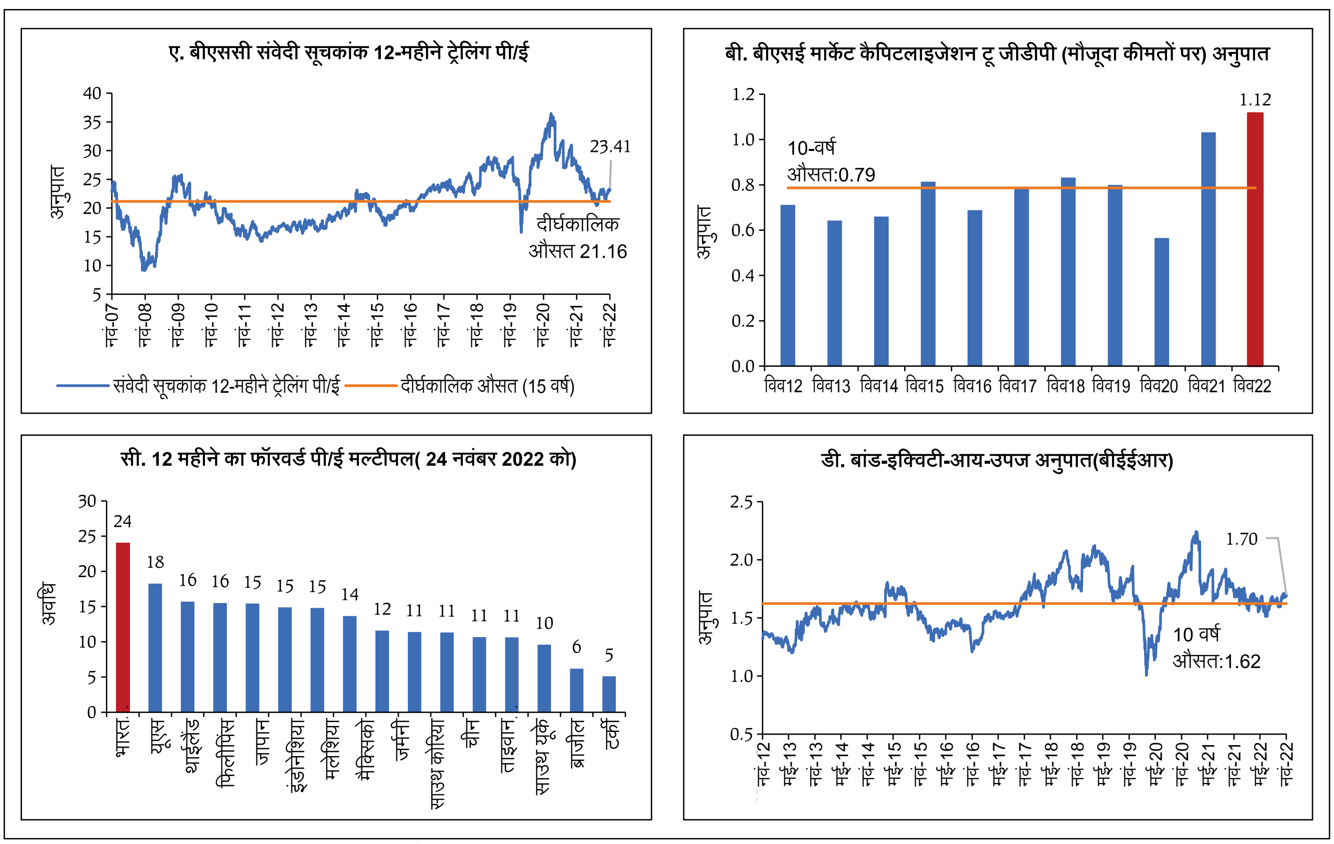

टिप्पणी: जीडीपी वर्ष 2022-23 के लिए दूसरे अग्रिम अनुमानों पर आधारित है।
स्रोत: ब्लूमबर्ग, एमओएसपीआई, आरबीआई स्टाफ की गणना।

सारणी 1.8 : घरेलू म्यूच्युअल फंड उद्योग के प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां

(₹ करोड़ में)

तक	बी30 एयूएम			टी30 एयूएम			उद्योग एयूएम		
	इक्विटी	गैर इक्विटी	कुल	इक्विटी	गैर इक्विटी	कुल	इक्विटी	गैर इक्विटी	कुल
30 जून 2022	3,62,090	2,56,628	6,18,718	10,33,835	19,11,537	29,45,372	13,95,925	21,68,165	35,64,090
31 अक्तूबर 2022	4,29,988	2,80,964	7,10,952	12,04,642	20,34,729	32,39,371	16,34,630	23,15,693	39,50,323
30 नवंबर 2022	4,40,174	2,83,568	7,23,742	12,29,866	20,83,953	33,13,819	16,70,040	23,67,521	40,37,561

टिप्पणी: टी 30 भारत में शीर्ष 30 भौगोलिक स्थानों को संदर्भित करता है और बी 30 शीर्ष 30 शहरों के बाहर के स्थानों को संदर्भित करता है।

स्रोत: सेबी

1.76)। 12 महीने के अनुगामी मूल्य-से-आय (पी/ई) अनुपात और जीडीपी का बाजार पूंजीकरण दोनों अपने दीर्घकालिक ऐतिहासिक औसत से अधिक हैं। 12 महीने का फॉरवर्ड पी/ई एई और ईएमई दोनों के सापेक्ष सबसे अधिक है।

I.2.6 म्यूच्युअल फंड

1.94 जून-नवंबर 2022 के मध्य घरेलू म्यूच्युअल फंड उद्योग का एयूएम घरेलू निधियों की निधि(एफओएफ) के अतिरिक्त 13.3 प्रतिशत से अधिक ₹ 40.4 ट्रिलियन हो गया। 30 शीर्ष अतिरिक्त शहरों की एयूएम अर्थात् बी30 शहरों [33] में इसी अवधि के दौरान 19 प्रतिशत की वृद्धि हुई जिसका नेतृत्व म्यूच्युअल फंड और डिजिटलीकरण के माध्यम से लेनदेन में आसानी के प्रति बढ़ी जागरूकता ने किया(सारणी 1.8)।

1.95 सभी श्रेणियों की इक्विटी-उन्मुख योजनाओं के एयूएम में 21.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एक्सचेंज ट्रेडेड फंड और इंडेक्स फंड में भी पर्याप्त निवल अंतर्वाह देखा गया। असीमित अवधि कर्ज केंद्रित योजनाएं चलनिधि को छोड़कर, गिल्ट फंड और लंबी अवधि की निधियों में निवल बहिर्गमन देखा गया (सारणी 1.9 और चार्ट 1.77 ए और बी)।

चार्ट 1.77 : योजना-वार म्यूच्युअल फंड निवल अंतर्वाह

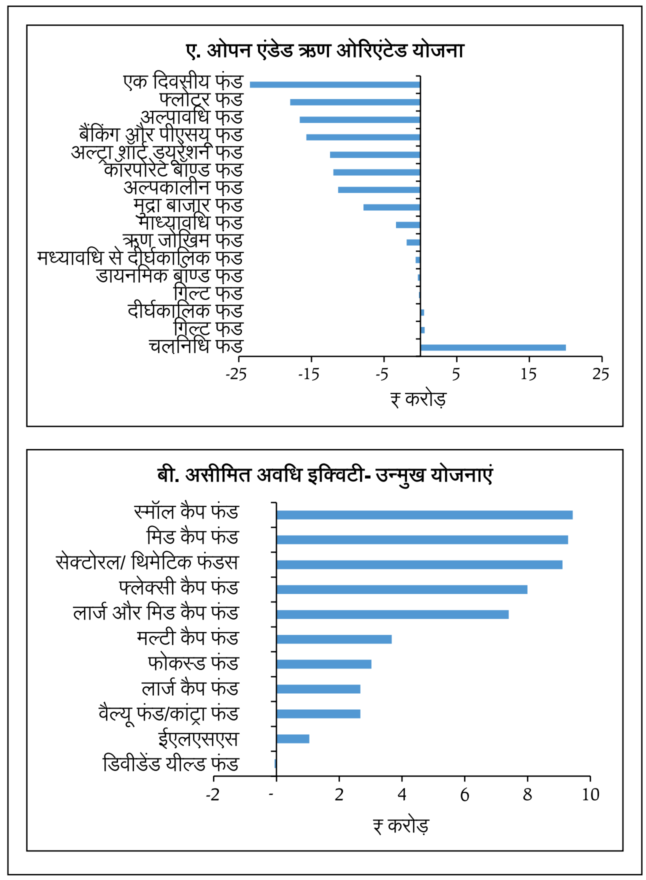

स्रोत: सेबी

सारणी 1.9: म्यूच्युअल फंड द्वारा संसाधन जुटाव में प्रवृत्ति

(₹ करोड़ में)

माह	जून-22	जुला-22	अग-22	सितं-22	अक्तू-22	नवं-22
कर्ज उन्मुख योजनाएं						
निवल अंतर्वाह/निधियों का बहिर्गमन	-96,301	5,487	50,576	-66,630	-2,820	7,030
प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां	12,51,614	12,64,664	13,23,006	12,60,182	12,63,380	12,79,026
इक्विटी उन्मुख योजनाएं						
निवल अंतर्वाह/निधियों का बहिर्गमन	15,480	8,883	5,942	14,077	9,253	2,224
प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां	12,92,390	14,22,446	14,84,950	14,70,743	15,29,344	15,65,102
कुल						
निवल अंतर्वाह/निधियों का बहिर्गमन	-69,853	23,605	65,077	-41,404	14,047	13,264
प्रबंधन के अंतर्गत आस्तियां	35,64,090	37,74,803	39,33,878	38,42,351	39,50,323	40,37,561

स्रोत: सेबी

[33] बी 30 शीर्ष 30 शहरों के बाहर के स्थानों को संदर्भित करता है।

1.96 अल्पावधि चलनिधि हेतु निवेशकों और उनकी वरीयता के प्रति प्रतिकूल मनोभाव को दर्शाते हुए, एक दिन के म्यूच्युअल फंड के हिस्से का एएमयू असीमित अवधि कर्ज का कुल एएमयू, नवंबर 2021 के 6.1 प्रतिशत से बढ़कर नवंबर 2022 में 8.2 प्रतिशत हो गया (चार्ट 1.78)।

1.97 असीमित अवधि कर्ज चलनिधि आघात के लिए संवेदनशील हैं और संभावित रूप से बाजार में दवाब को बढ़ा सकते हैं। म्यूच्युअल फंड में जोखिम से बचने और जोखिम के लिए प्रबंधन ढांचा हेतु भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड(सेबी) ने आस्ति प्रबंध कंपनियों(एएमसी) के लिए असीमित अवधि कर्ज योजना में चल आस्ति धारित और ऐसी योजनाओं के लिए दबाव परीक्षण अनिवार्य करने के लिए विभिन्न मानदंड निर्धारित किए हैं। इसके अतिरिक्त, म्यूच्युअल फंड योजनाओं में निवेशकों के प्रति पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विशेषरूप से अव्यवस्थित बाजार के दौरान, सेबी ने असीमित अवधि कर्ज केंद्रित म्यूच्युअल फंड योजनाओं के लिए स्विंग प्राइसिंग फ्रेमवर्क की शुरूआत की है जो रिडीम करनेवाले निवेशकों को गतिविधियों के अनुसार निवल आस्ति मूल्यों को बदलने के लिए सक्षम बनाएगा जिससे वो ट्रेडिंग लागत को कवर करें।

1.98 हालांकि औसत चलनिधि आस्ति धारित जिसमें नकद, सरकारी प्रतिभूतियां, खजाना बिल और रेपो असीमित अवधि कर्ज योजना (एक दिवसीय निधि के अतिरिक्त, तरल निधि, गिल्ट फंड और गिल्ट फंड 10 साल की निरंतरता अवधि के साथ) द्वारा सरकारी प्रतिभूतियां में शामिल है। एयूएम के असीमित अवधि कर्ज योजना के एक साल पहले के 34.7 प्रतिशत से कम होकर नवंबर 2022 में 29.8 प्रतिशत हो गया, जो सेबी द्वारा निर्धारित न्यूनतम 10 प्रतिशत से काफी अधिक है (चार्ट 1.79)।

1.99 भिन्न विश्लेषण से पता चलता है कि असीमित अवधि कर्ज योजना के संबंध में जो मैकाले अवधि 12 माह से कम के लिए ऋण और मुद्रा बाजार लिखत में निवेश करती है एक समान प्रवृत्ति देखी गई है। दोनों कॉरपोरेट बॉन्ड फंड जो मुख्य रूप से एएए-श्रेणीकृत कॉर्पोरेट बॉन्ड और बैंकिंग में निवेश करते हैं और पीएसयू फंड विशेष रूप से बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सरकारी वित्तीय संस्थाएं के ऋण उपकरणों में निवेश

चार्ट 1.78 : असीमित अवधि कर्ज योजना में एक दिवसीय म्यूच्युअल फंड का हिस्सा

(एयूएम का प्रतिशत)

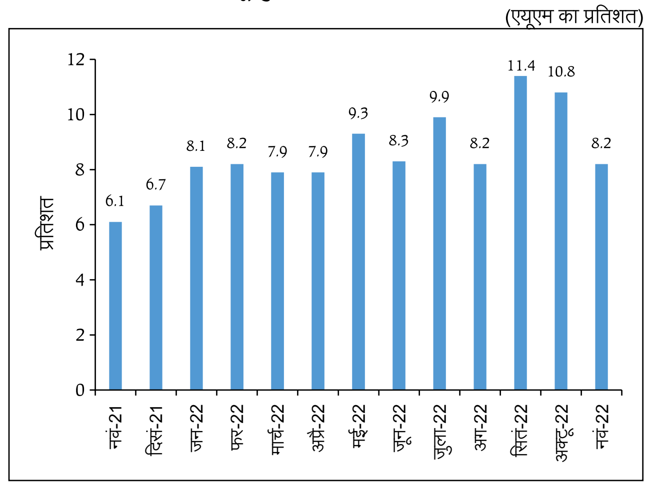

स्रोत-सेबी

चार्ट 1.79 : म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना द्वारा चल आस्ति धारिता में हिस्सा

(एयूएम का प्रतिशत)

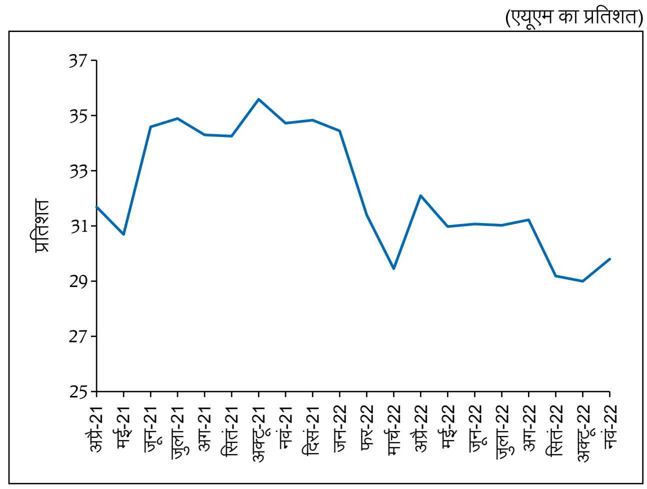

टिप्पणी: डेटा शीर्ष 10 एएमसी पर आधारित है

स्रोत-सेबी

चार्ट 1.80 : म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना द्वारा चल आस्ति धारिता में हिस्से का योजना-वार विश्लेषण

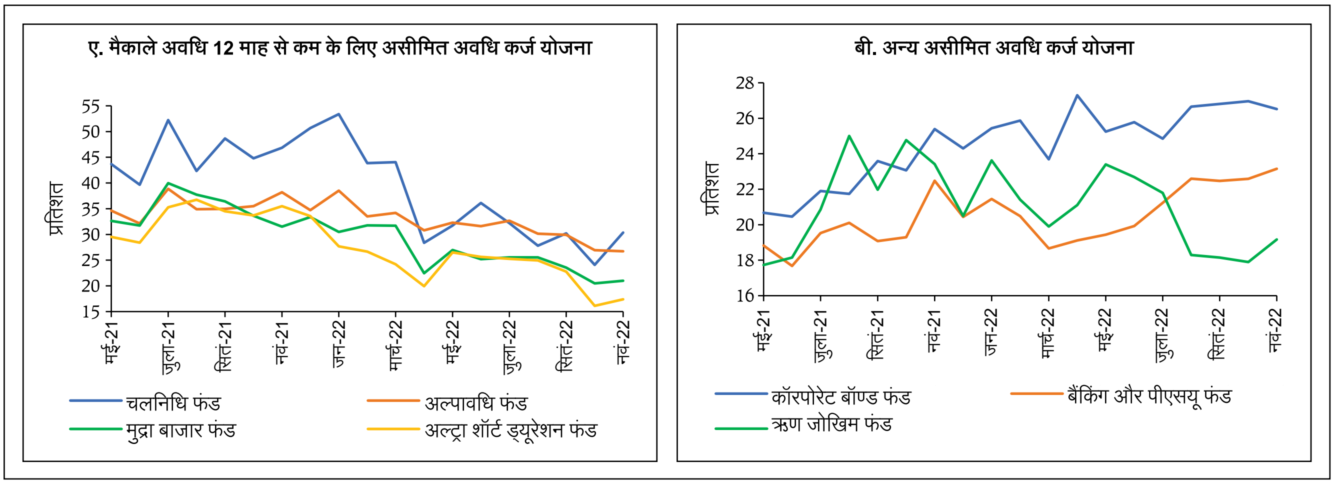

टिप्पणी: डेटा शीर्ष 10 एएमसी पर आधारित है
स्रोत-सेबी

करते है, इन्होंने चलनिधि आस्ति धारित में वृद्धि का अनुभव किया है(चार्ट 1.80 ए और बी)।

1.100 मार्च 2020 से सेबी द्वारा किए गए विनियामक उपाय से बाजार में उथल-पुथल ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि असीमित अवधि कर्ज योजना लंबे समय तक चलनिधि दवाब या प्रतिक्रिया में अस्थिरता का सामना चरम स्थितियों में नहीं करेंगी (चार्ट 1.81 और चार्ट 1.82 ए और बी)। असीमित अवधि निधि की भूमिका आस्ति बाजार के दबाव को बढ़ाने में वित्तीय स्थिरता जोखिम महत्वपूर्ण है, इन संस्थाओं को दबाव से बचाने और पर्याप्त चलनिधि को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त गार्डरेल बनाया गया है।

चार्ट 1.81 : म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना का मासिक निवल प्रवाह

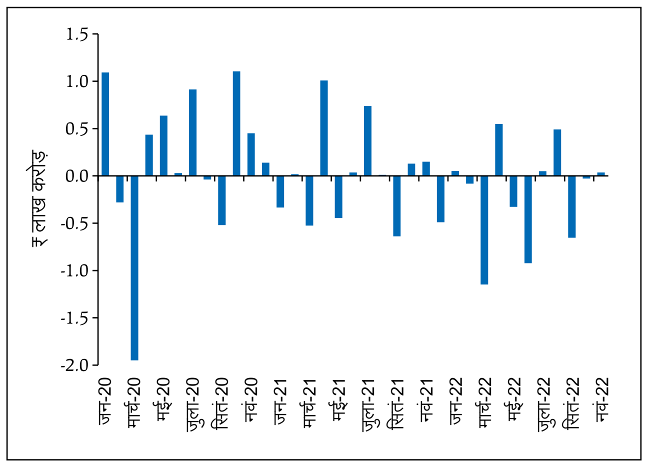

स्रोत-सेबी

चार्ट 1.82 : म्यूच्युअल फंड की असीमित अवधि कर्ज योजना की मासिक अस्थिरता

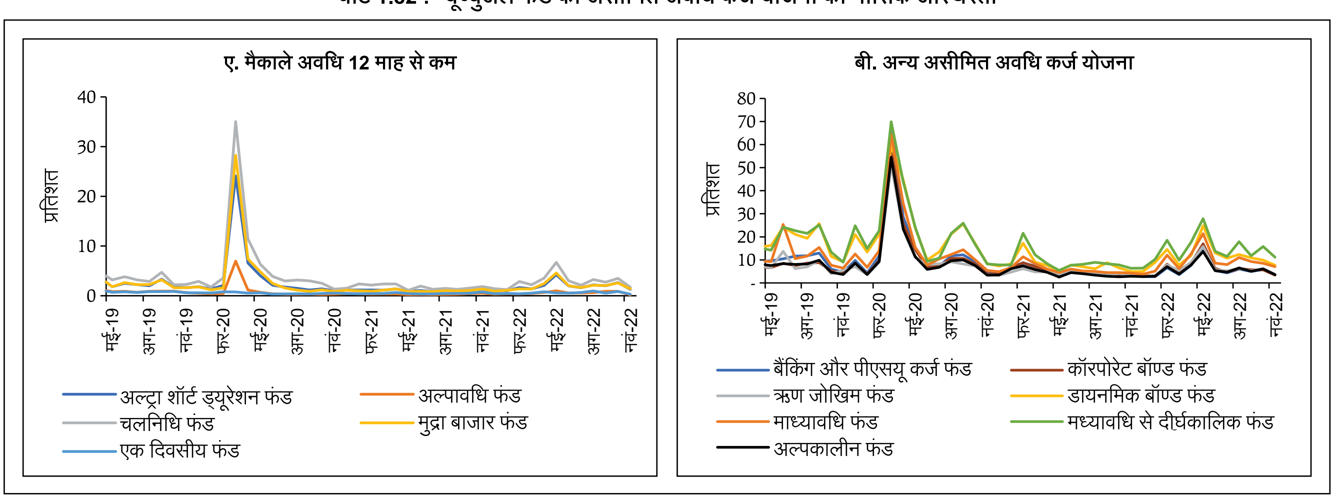

टिप्पणी: डेटा शीर्ष 10 एएमसी की मासिक अस्थिरता के माध्यिका पर आधारित है।
स्रोत-सेबी

I.2.7 वैकल्पिक निवेश कोष

1.101 पिछले कुछ वर्षों में प्रतिबद्धताओं और हुए निवेश दोनों के संदर्भ में वैकल्पिक निवेश द्वारा धन जुटाने (एआईएफ)) में लगातार बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में श्रेणी- I, श्रेणी- II और श्रेणी- III एआईएफ[34] का संचयी निवेश क्रमश: 8.3 प्रतिशत, 10.5 प्रतिशत और 7.1 प्रतिशत से बढ़ा है (चार्ट 1.83)।

1.102 एआईएफ अपने निवेशकों को ऐसी आस्तियों में जो पारंपरिक निवेशों यथा ट्रेडेड स्टॉक और बांडों से कम सहसंबद्ध हों, की अपेक्षा अधिक प्रतिफल देते हैं । अपने फंड का बड़ा हिस्सा वह असूचीबद्ध इक्विटी और ऋण लिखतों में जिसमें प्रतिभूतीकृत उत्पाद शामिल है उसमें अभिनियोजित करते हैं (चार्ट 1.84)।

1.103 देश में निवेशकों के बढ़ते उत्साह और समानांतर विकसित होनेवाले मजबूत विनियामक फ्रेमवर्क से एआईएफ तंत्र सुदृढ़ हो रहा है। सभी जोखिम पूंजी फंड,एसएमई फंड, रियल एस्टेट फंड, प्राइवेट इक्विटी फंड्स, संकटग्रस्त आस्ति और बचाव निधि के फंड की गतिविधियों की सूक्ष्म निगरानी आवश्यक है। इनकी पारिश्रमिक नीतियों, वित्तीय लीवरेज की सीमा और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं से प्रणालीगत जोखिम संभव हैं। हाल ही में यह सुनिश्चित करने के लिए सेबी ने सेबी (एआईएफ) विनियम, 2012 में संशोधन किया है जिससे प्रत्येक योजना की आस्तियां और देयताएं विलग और अन्य योजना से रिंगफेंस्ड हों। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक योजना के बैंक और प्रतिभूतियां खातों को भी अन्य योजनाओं से विलग और रिंगफेंस्ड किया जाता है।

चार्ट 1.83 : एआईएफ निधि संग्रहण

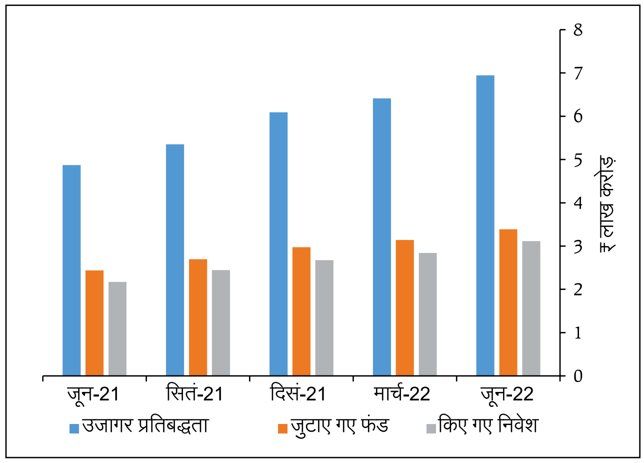

स्रोत: सेबी

चार्ट 1.84 : एआईएफ द्वारा लिखत-वार निधियों का अभिनियोजन

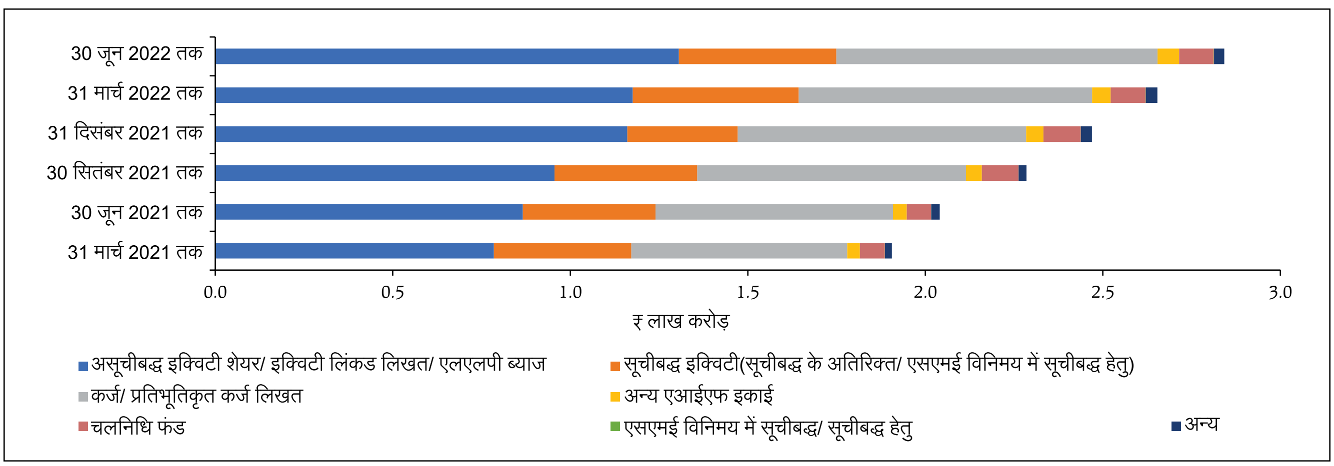

स्रोत-सेबी

[34] श्रेणी I एआईएफ: ऐसे एआईएफ जो स्टार्ट-अप अथवा शुरुआती चरण के वेंचर अथवा सामाजिक वेंचर अथवा एसएमई अथवा बुनियादी ढांचे अथवा अन्य क्षेत्रों अथवा क्षेत्रों में निवेश करते हैं जिसे सरकार अथवा विनियामक, सामाजिक या आर्थिक रूप से वांछनीय मानती हैं और इसमें वेंचर कैपिटल फंड, एसएमई फंड, सोशल इंपैक्ट फंड, इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, विशेष स्थिति फंड तथा ऐसे अन्य वैकल्पिक निवेश फंड जो निर्दिष्ट किए जा सकते हैं, शामिल होंगे।

श्रेणी II एआईएफ: ऐसे एआईएफ जो श्रेणी I और III में नहीं आते हैं और जो दिन-प्रतिदिन परिचालन संबंधी आवश्यकताएं की जरूरतों को पूरा करने के अतिरिक्त लीवरेज या उधार नहीं लेते हैं और जैसा कि सेबी एआईएफ विनियमों में अनुमति दी गई है,यथा रियल एस्टेट फंड, प्राइवेट इक्विटी फंड, संकटग्रस्त आस्ति के लिए फंड आदि।

श्रेणी III एआईएफ: ऐसे एआईएफ जो विविध या जटिल व्यापारिक रणनीतियों को नियोजित करते हैं और सूचीबद्ध या असूचीबद्ध डेरिवेटिव जैसे हेज फंड, पीआईपीई फंड आदि में निवेश के माध्यम से लीवरेज नियोजित करते हैं।

I.2.8 केंद्रीय पक्षकार/प्रतिपक्ष (सीसीपी)

1.104 वर्ष 2007-09 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में विनियामकों ने डेरिवेटिव विनियमन के लिए मजबूत मानकों को लागू करने के लिए विनियम बनाए हैं । यह भी देखा गया है कि कुछ उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में लागू किए गए सीसीपी जैसे वित्तीय बाजार बुनियादी ढांचे (एफएमआई) को नियंत्रित करने वाले कानूनों में ऐसे प्रावधान शामिल किए गए हैं जो उन्हें क्षेत्रोत्तर पहुँच प्रदान करते हैं। इस तरह के विनियम, यदि सभी अर्थव्यवस्थाओं में लागू किए जाते हैं, तो इससे समानान्तर रूप से क़ानूनों की एक ऐसी जटिल उलझन पैदा हो सकती है जिसके कारण कानूनी अपेक्षाएं तथा प्रतिबंध एक दूसरे पर अतिव्याप्त हो सकते हैं और मेजबान विनियामकों द्वारा किए जाने वाले पर्यवेक्षण की क्षमताओं और उसकी गुणवत्ता में विश्वास की कमी प्रदर्शित कर सकते हैं। इस तरह की एकतरफा कार्रवाइयों से स्थानीय बाजारों में व्यवधान पैदा हो सकता है और घरेलू वित्तीय स्थिरता को क्षति पहुँच सकती है।

1.105 इसके अलावा इस तरह की कार्रवाइयों से बैंकों और अभिरक्षकों की विदेशी मुद्रा, सरकारी प्रतिभूतियों, इक्विटी, ऋण और व्युत्पन्न बाजारों में भाग लेने की क्षमता बाधित होगी, जहां अनिवार्य केंद्रीय समाशोधन के संबंध में स्थानीय अधिदेश इसके विरुद्ध होंगे, जिससे बाजारों में व्यवधान होगा और इन संस्थाओं के व्यावसायिक हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रणाली में संभावित कमियों की शुरुआत हो जाती है जिससे डोमिनो प्रभाव पैदा होने की संभावना होती है जब बड़ी निधियों के सकल निपटान के कारण चलनिधि अवरुद्ध हो जाती है । सीसीपी निर्धारण की वापसी के साथ, एक बार जब कोई बड़ा बैंक प्रत्यक्ष भागीदार से अप्रत्यक्ष भागीदार हो जाता है, तो इससे प्रणालीगत जोखिम का एक कारक पैदा हो जाता है क्योंकि संबंधित बड़ा बैंक, केंद्रीय बैंक के फंडिंग विंडो तक पहुंच के बिना काम करता है। ये व्यवधान बाजार के कामकाज/व्यवहार में अस्थिरता पैदा कर सकते हैं, साथ ही उच्च पूंजी अपेक्षाओं, मार्जिन अपेक्षाओं में वृद्धि, बढ़े हुए क्रेडिट जोखिम और बहुपक्षीय नेटिंग लाभ की कमी के माध्यम से समाशोधन सदस्यों को भी प्रभावित कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप इस चक्र को नया रूप दिया जाएगा क्योंकि वित्तीय बाजार बुनियादी ढांचा (पीएफएमआई) के लिए सिद्धांतों के विकास में आम सहमति बनाई गई थी, जो श्रमसाध्य प्रयासों से प्राप्त किए गए मानक हैं और वैश्विक मानक तय करने वाली निकायों द्वारा लाए गए हैं .

1.106 संभावित प्रभावों को रोकने और गतिरोध को हल करने के लिए, संबंधित हितधारकों {यूरोपीय प्रतिभूति और बाजार प्राधिकरण (एस्मा) और यूरोपीय आयोग सहित} के बीच निरंतर जुड़ाव और सकारात्मक बातचीत हुई है। चर्चा अभी भी जारी है, ताकि पारस्परिक रूप से स्वीकार्य व्यवस्था का निर्माण किया जा सके, जो मेजबान विनियामक की क्षेत्रीय स्वतंत्रता को विधिवत मान्यता देता हो। तथापि, संभावित बाजार व्यवधान की अवांछनीय स्थिति में, संभावित वैकल्पिक व्यवस्था के माध्यम से उपचारात्मक उपायों पर उन संस्थाओं के साथ विचार-विमर्श किया जा रहा है जिनके प्रभावित होने की संभावना है ।

I.2.9 बैंकिंग स्थिरता संकेतक

1.107 बैंकिंग प्रणाली की स्थिति बैंकिंग स्थिरता संकेतक (बीएसआई) में परिलक्षित होती है। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान, बढ़ते शुद्ध ब्याज मार्जिन और आस्ति गुणवत्ता और दक्षता अनुपात में वृद्धि से प्रेरित लाभप्रदता में वृद्धि ने बीएसआई के सुधार में योगदान दिया । यद्यपि चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर) के संदर्भ में पूंजी अनुपात और चलनिधि जोखिम द्वारा मापी गई मजबूती में कुछ कमी थी, फिर भी बैंकिंग प्रणाली में विनियामक न्यूनतम के सापेक्ष पर्याप्त पूंजी और चलनिधि बफर हैं (चार्ट 1.85 और 1.86) ।

चार्ट 1.85: बैंकिंग स्थिरता मैप

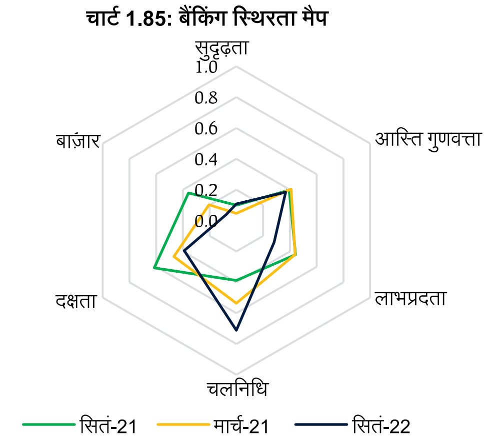

नोट : केंद्र से दूरी जोखिम बढ़ने का संकेत देती है ।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणीयां और स्टाफ गणनाएं ।

[35] बीएसआई उन अंतर्निहित परिस्थितियों और जोखिम कारकों में परिवर्तन के समग्र मूल्यांकन को दर्शाता है जो बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता को प्रभावित करते हैं ।

चार्ट 1.86: बैंकिंग स्थिरता संकेतक - वैयक्तिक जोखिम कारकों का योगदान

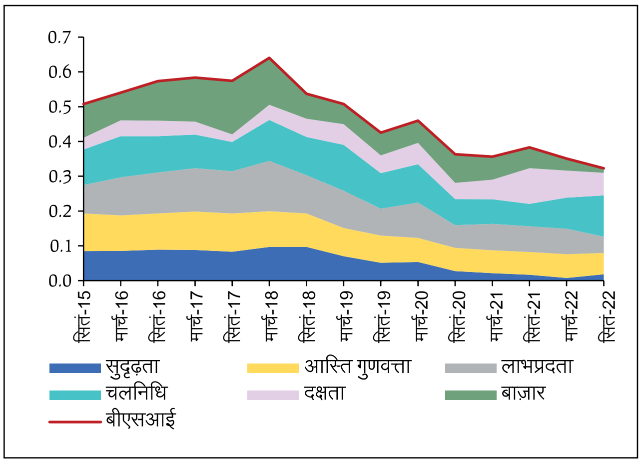

नोट : एक संकेतक के मूल्य में वृद्धि जोखिम स्तर में वृद्धि या उसके विपरीत मूल्य में कमी जोखिम स्तर में कमी को दर्शाती है। प्रत्येक जोखिम कारक का स्तर समग्र जोखिम के प्रति उसके योगदान को दर्शाता है।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 1.87: ऋण वृद्धि - एससीबी

ऋण वृद्धि (वर्ष दर वर्ष : प्रतिशत)

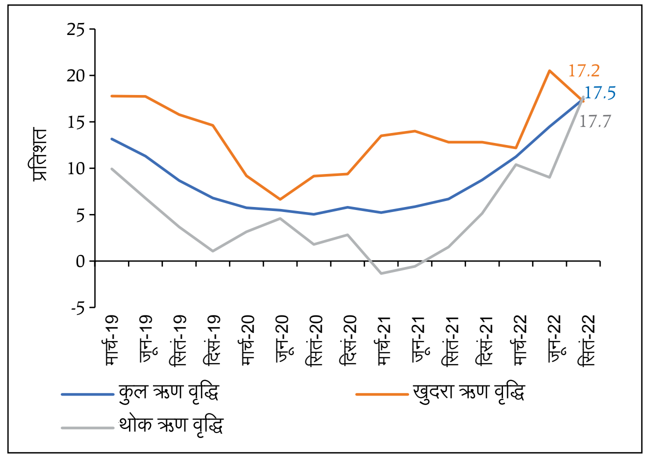

नोट: एससीबी में पीएसबी, पीवीबी और एफबी शामिल हैं।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ, सीआरआईएलसी और स्टाफ गणनाएं।

I.2.10 बैंकिंग प्रणाली

1.108 तीन साल तक एकल अंकों में रहने के बाद, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) द्वारा बैंक ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) सितंबर 2022 में 17.5 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गई, जो पिछली बार दिसंबर 2011 में दर्ज की गई थी। हाल के वर्षों में खुदरा ऋण अपेक्षाकृत उच्च वृद्धि दर्ज कर रहा है, लेकिन थोक ऋण[36] ने 17.7 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) दर्ज की है(चार्ट 1.87)। उल्लेखनीय है कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) की ऋण बही में सितंबर 2013 के बाद से सबसे तेज वृद्धि हुई। दूसरी ओर, निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) ऋण देने के मामले में पीएसबी समकक्षों से आगे बने रहे (चार्ट 1.88 ए और बी)।

चार्ट 1.88 ऋण वृद्धि – बैंक समूह वार

(वर्ष-दर-वर्ष : प्रतिशत)

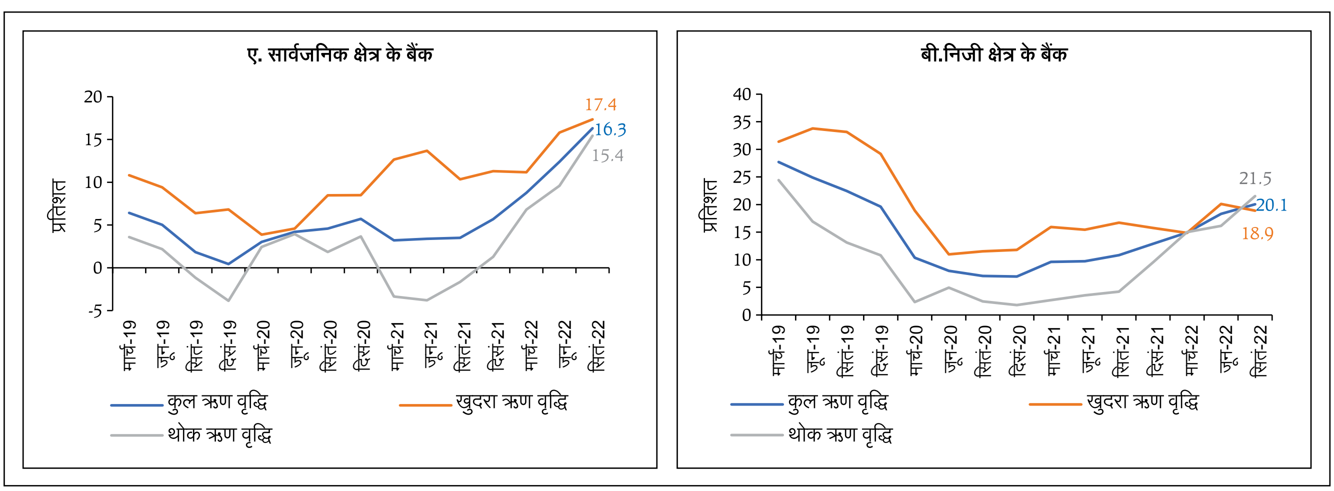

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ, सीआरआईएलसी और स्टाफ गणनाएं।

[36] थोक ऋणों में बैंकिंग क्षेत्र के वे सकल ऋण और अग्रिम शामिल होते हैं, जिसमें उधारकर्ता का समग्र निधीकृत जोखिम ₹ 5 करोड़ या उससे अधिक होता है तथा खुदरा ऋणों में बैंकिंग क्षेत्र के वे सकल ऋण और अग्रिम शामिल होते हैं, जिसमें उधारकर्ता का समग्र निधीकृत जोखिम ₹ 5 करोड़ से कम होता है।

सारणी 1.10: थोक ऋण में वृद्धि

(व-द-व:प्रतिशत)

	पीएसयू				गैर-पीएसयू			
	मार्च-21	सितं-21	मार्च-22	सितं-22	मार्च-21	सितं-21	मार्च-22	सितं-22
पीएसबी	5.4	11.9	15.1	22.6	-9.0	-9.1	0.0	9.7
पीवीबी	60.0	20.1	9.0	20.2	-6.1	-1.2	13.5	20.6
पीएसबी+पीवीबी	11.7	13.1	14.1	22.2	-7.7	-6.0	5.4	14.2

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

1.109 थोक कर्जदारों[38] को दी जाने वाली कुल वित्त पोषित राशि का 86 प्रतिशत हिस्सा रखने वाली कंपनियों[37] को दिए जाने वाले बैंक ऋण के बारीक विश्लेषण से संकेत मिलता है कि कोविड-19 अवधि के दौरान सरकारी स्वामित्व वाली कंपनियां (पीएसयू) ऋण वृद्धि में सबसे आगे रहीं। हाल के वर्षों में, निजी (गैर-पीएसयू) कंपनियों को ऋण देने की गति में तेजी आई है (तालिका 1.10)। यह वृद्धि बाजार उधारी (9.1 प्रतिशत; वर्ष-दर-वर्ष) में वित्तपोषण के बावजूद हुई (सारणी 1.11)।

1.110 निजी गैर-वित्तीय कंपनियों को थोक ऋण का मात्रात्मक विभाजन 5,000 करोड़ रुपये तक के ऋण में मजबूत वृद्धि को दर्शाता है, खासकर ₹1000-5000 करोड़ के समूहन में। हालांकि, बड़े आकार के ऋणों (>5000 करोड़ बकेट) में वृद्धि धीमी रही (चार्ट 1.89)। दीर्घकालिक रेटिंग भी एक बेहतर प्रोफ़ाइल दिखाती है (चार्ट 1.90)।

सारणी 1.11: निधियों का समग्र संग्रहण

लाख करोड़

बकाया राशि (तिमाही समाप्ति)	मार्च-20	सित-20	मार्च-21	सित-21	मार्च-22	सित-22
वाणिज्यिक पेपर(सीपी)	345	362	364	371	352	401
कॉर्पोरेट बॉण्ड	3254	3406	3613	3701	4017	4030
ईसीबी	1242	1210	1238	1285	1350	1414
थोक उधरियां	5582	5410	5507	5492	6079	6747
कुल	**10423**	**10388**	**10722**	**10849**	**11798**	**12592**

स्रोत : आरबीआई, सेबी और एनएसडीएल

चार्ट 1.89 गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय बाध्यताधारी/उधारकर्ताओं के जोखिम वितरण

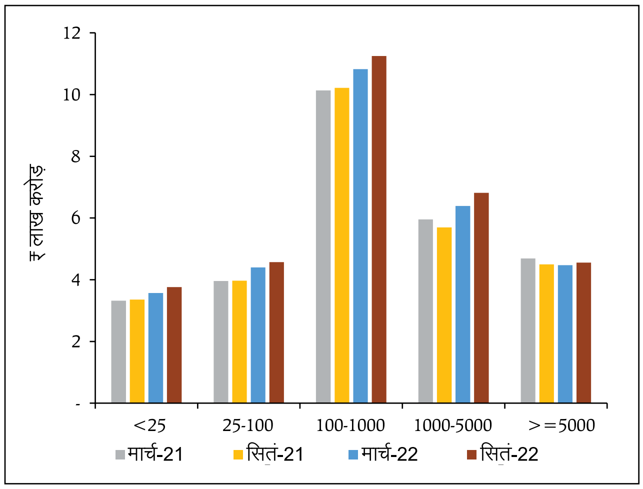

स्रोत : सीआरआईएलसी और आरबीआई स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 1.90: दीर्घावधि रेटिंग

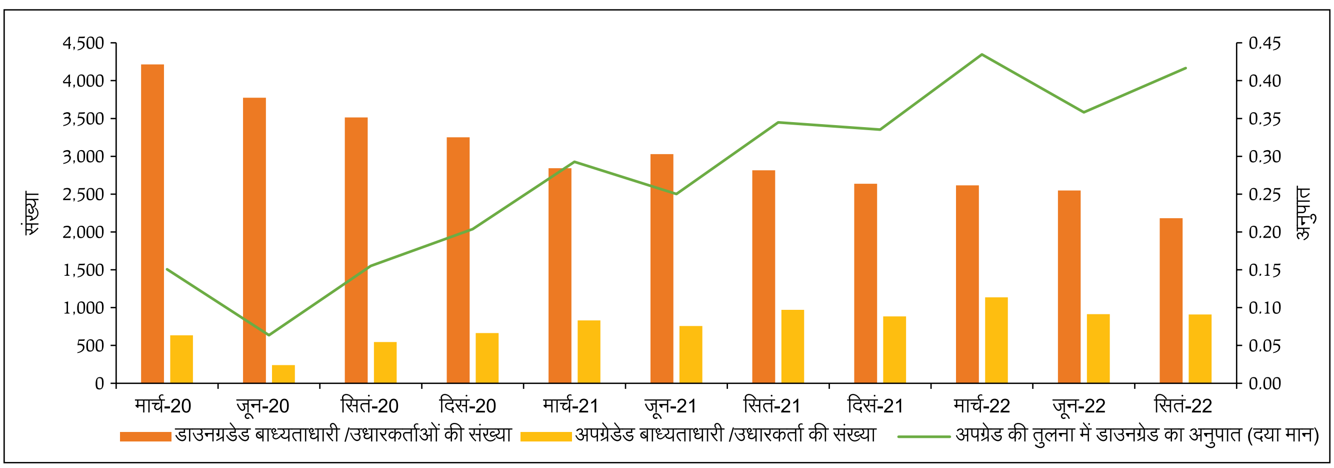

स्रोत: प्राइम डाटाबेस

[37] सहकारी, साझेदारी, ट्रस्ट और समितियों के अलावा अन्य संगठन।

[38] बैंकिंग क्षेत्र के सकल ऋण और अग्रिम जिसमें बाध्यताधारियों/उधारकर्ताओं का समग्र एक्सपोजर ₹ 5 करोड़ और उससे अधिक है।

1.111 वृद्धिशील ऋण-जमा (सीडी) अनुपात वार्षिक (122.0 प्रतिशत, वर्ष-दर-वर्ष) और अर्ध-वार्षिक आधार (172.5 प्रतिशत मार्च 2022 की तुलना में सितंबर 2022) दोनों पर तेजी से बढ़ा। (चार्ट 1.91 ए और बी) I तथापि, मौजूदा उच्च ऋण वृद्धि पिछले कुछ वर्षों के निम्न आधार पर है। इसके अलावा, पिछले कुछ वर्षों में जमा राशियों के संचय ने बैंकों को बढ़ती ऋण मांग को निधि देने में सक्षम बनाया है।

1.112 बैंक ऋण वृद्धि के निधि प्रदान करने के लिए अपनी उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियों (एचक्यूएलए) को भी कम कर रहे हैं। इससे कुल एलसीआर सितंबर 2020 में 173.0 प्रतिशत के उच्च स्तर से घटकर 135.6 प्रतिशत हो गया, जो 100 प्रतिशत की विनियामकीय अपेक्षाओं से ऊपर है। पीवीबी के एलसीआर में पीएसबी और विदेशी बैंकों (एफबी) की तुलना में अधिक गिरावट हुई है (चार्ट 1.92 ए और बी) I

चार्ट 1.91 ऋण जमाराशि अनुपात में वृद्धि

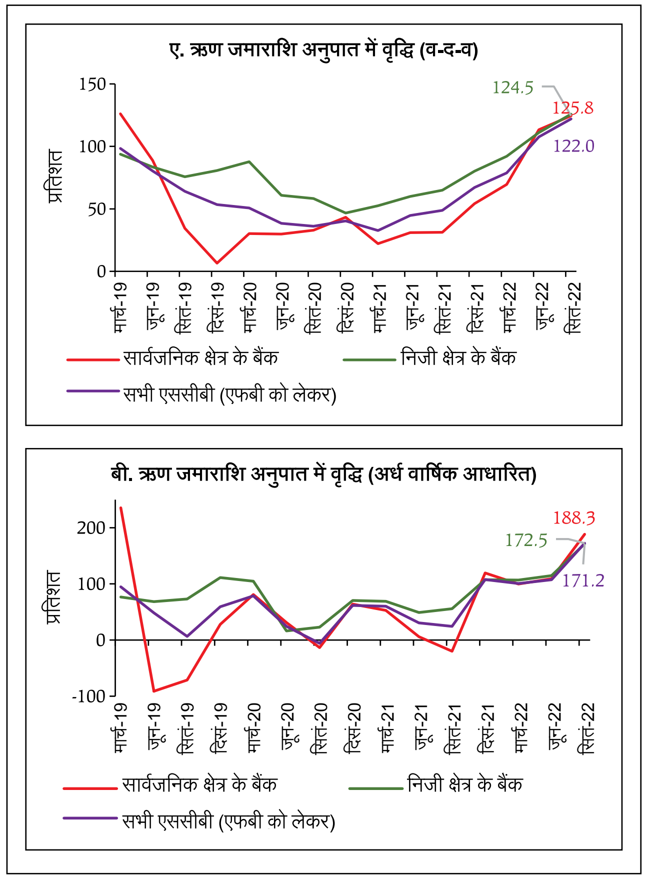

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं I

चार्ट 1.92 : चलनिधि कवरेज अनुपात और इसके घटकों में उतार-चढ़ाव

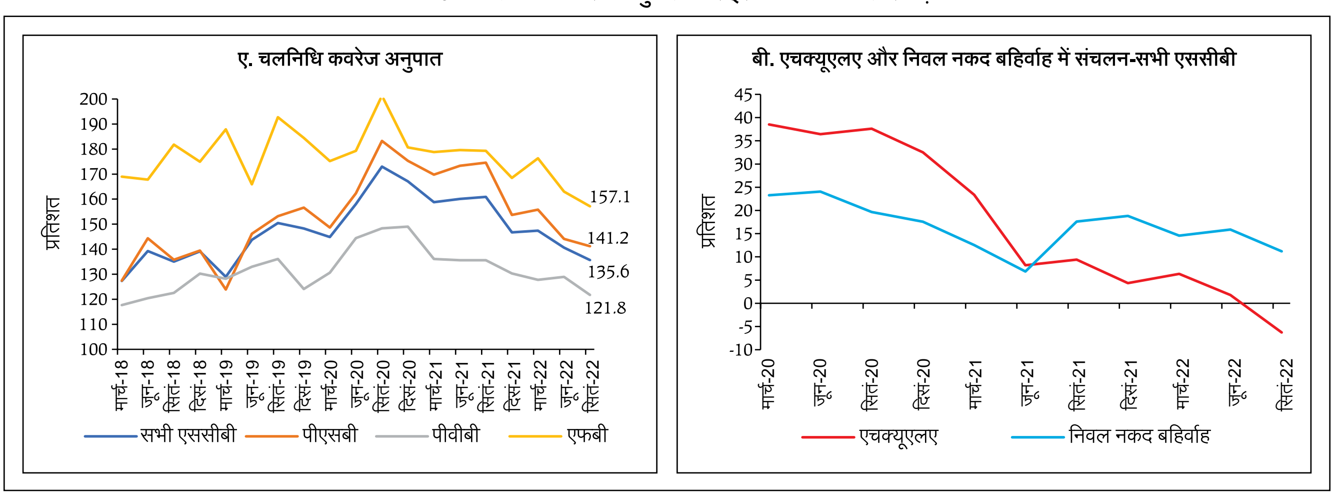

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं I

चार्ट 1.93: भारत में घरेलू वित्तीय बचत

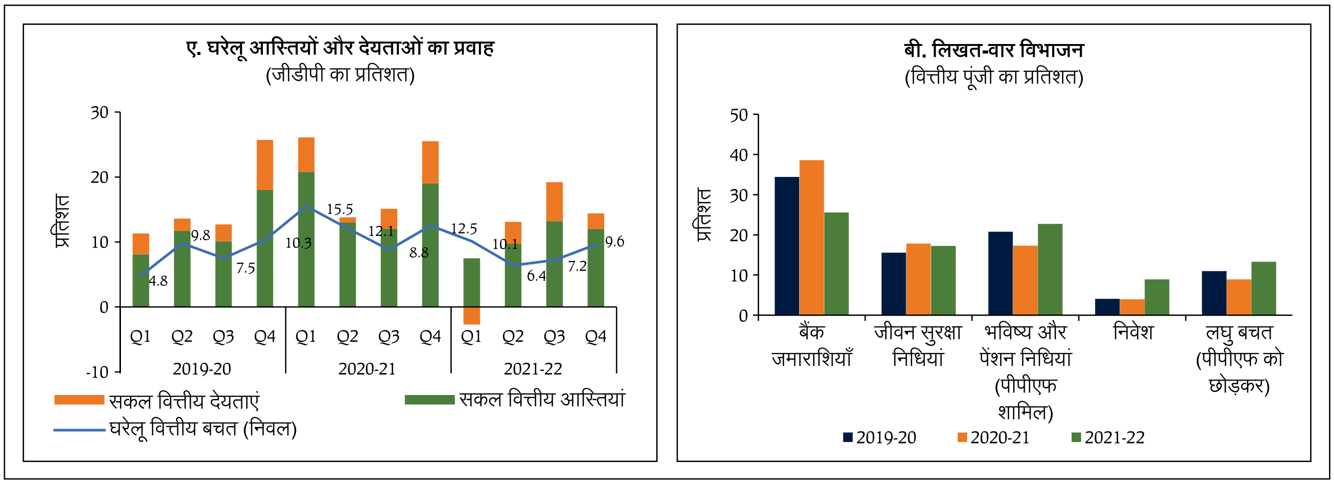

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक

1.113 घरेलू वित्तीय बचत के एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि लाभ की तलाश में वर्ष 2021-22 के दौरान बैंक जमा से छोटी बचत, भविष्य निधि और अन्य निवेश के अवसरों में कुछ विविधीकरण हुआ है (चार्ट 1.93 ए और बी)।

1.114 इसके फलस्वरूप, बैंक अन्य कानूनी इकाई ग्राहकों (जैसे एमएफ, बीमा कंपनियों), गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट्स और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों से धन प्राप्त कर रहे हैं, जिनके पास खुदरा जमा की तुलना में अधिक रन-ऑफ कारक हैं (चार्ट 1.94 और 1.95)। यह बैंकों की कुछ ऐसे प्रकार की देनदारियों से उधार योग्य संसाधन बनाने संबंधी लचीलेपन को बाधित कर सकता है जिनके लिए उन्हें एचक्यूएलए के उच्च स्तर को बनाए रखना आवश्यक होता है।

1.115 लेवल-1 परिसंपत्तियां, जिनमें अनिवार्य रूप से सरकारी प्रतिभूतियां शामिल हैं, एचक्यूएलए में बहुव्यापी हैं, जबकि 5-10

चार्ट 1.94 : निवल नकद बहिर्वाह के अवयव - सभी एससीबी

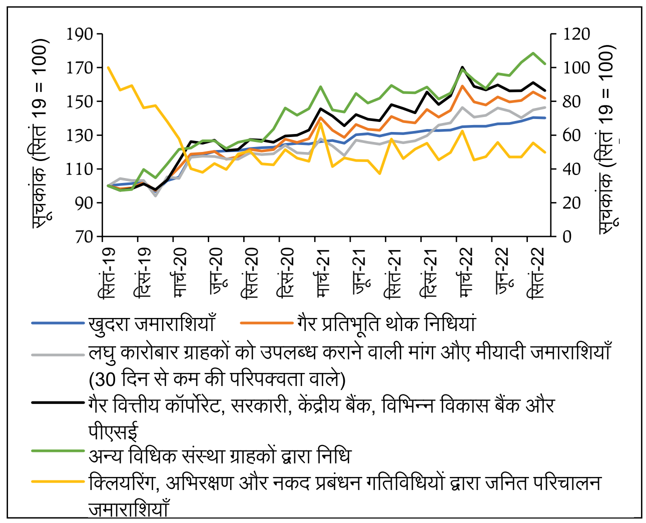

नोट : सभी एससीबी जिसमें पीएसबी और पीवीबी शामिल हैं।
स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 1.95 : रन-ऑफ कारक में संचलन (वर्ष-दर-वर्ष)

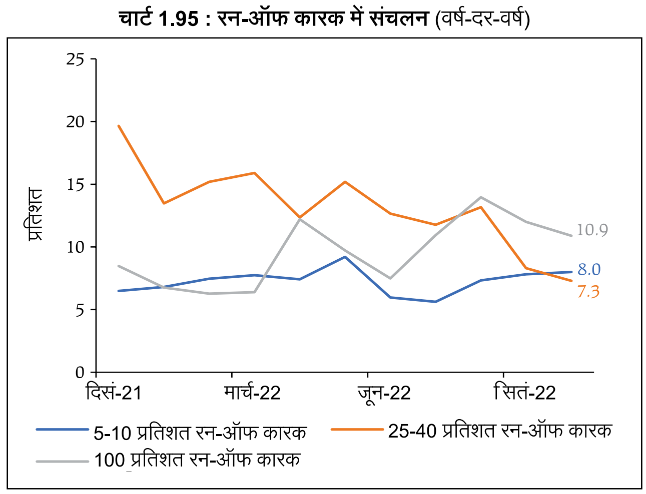

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 1.96 : एचक्यूएलए और नकद बहिर्वाह – घटकों का हिस्सा

(31 अक्तूबर 2022 तक)

(प्रतिशत)

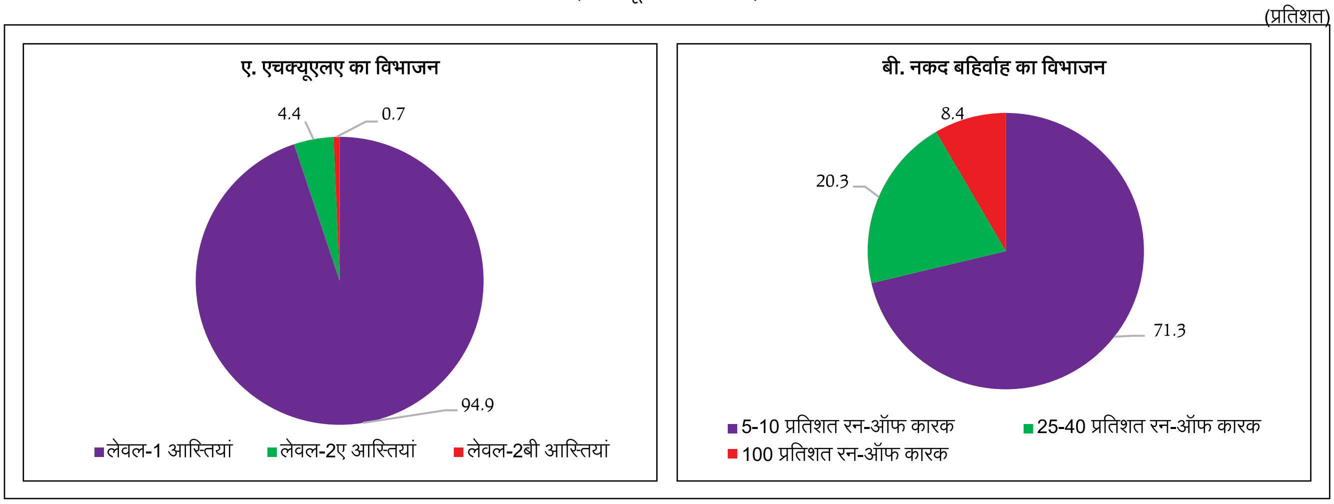

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक

प्रतिशत तक के रन-ऑफ कारकों वाली खुदरा जमा राशियाँ शुद्ध बहिर्वाह का प्रमुख हिस्सा हैं (चार्ट 1.96 ए और बी)।

1.116 बैंकिंग प्रणाली की आस्ति गुणवत्ता में सुधार जारी रहा: सकल गैर-निष्पादित आस्ति (जीएनपीए) अनुपात थोक अग्रिम और खुदरा ऋणों के लिए क्रमिक रूप से घट गया (चार्ट 1.97 ए)। ऋण वृद्धि में तेजी के अनुरूप, जोखिम-भारित आस्तियों (आरडब्ल्यूए) में वृद्धि हुई है, जो बेहतर आर्थिक संभावनाओं पर बैंकों की जोखिम क्षमता में सुधार को इंगित करता है (चार्ट 1.97 बी)।

1.117 जीएनपीए अनुपात एक तिमाही पहले 5.7 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2022 में 5.0 प्रतिशत हो गया। एनपीए में कमी या एनपीए में ताजा वृद्धि का समग्र एनपीए में कमी में प्रमुख

चार्ट 1.97 आस्ति गुणवत्ता और जोखिम भार

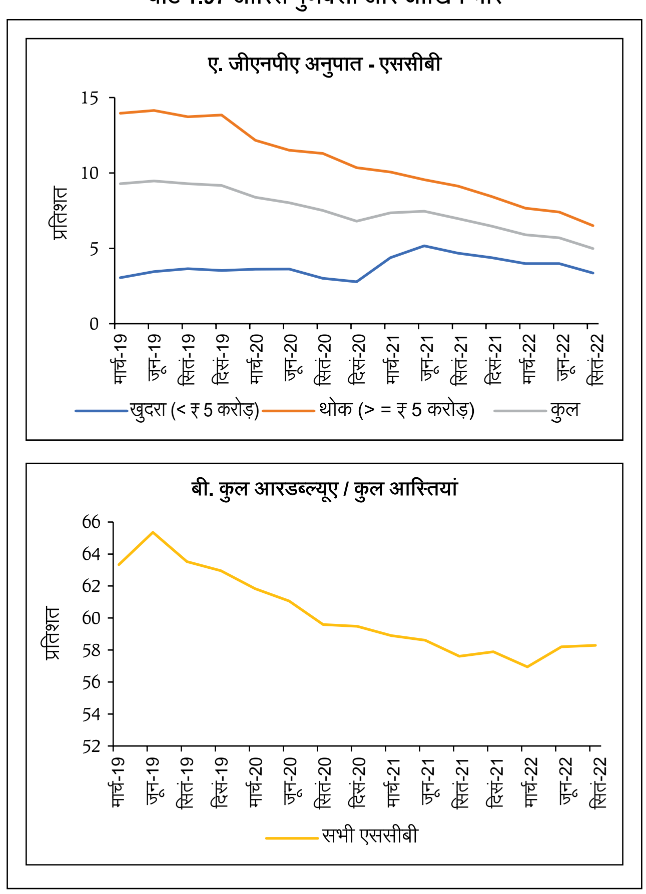

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 1.98 : जीएनपीए में उतार-चढ़ाव

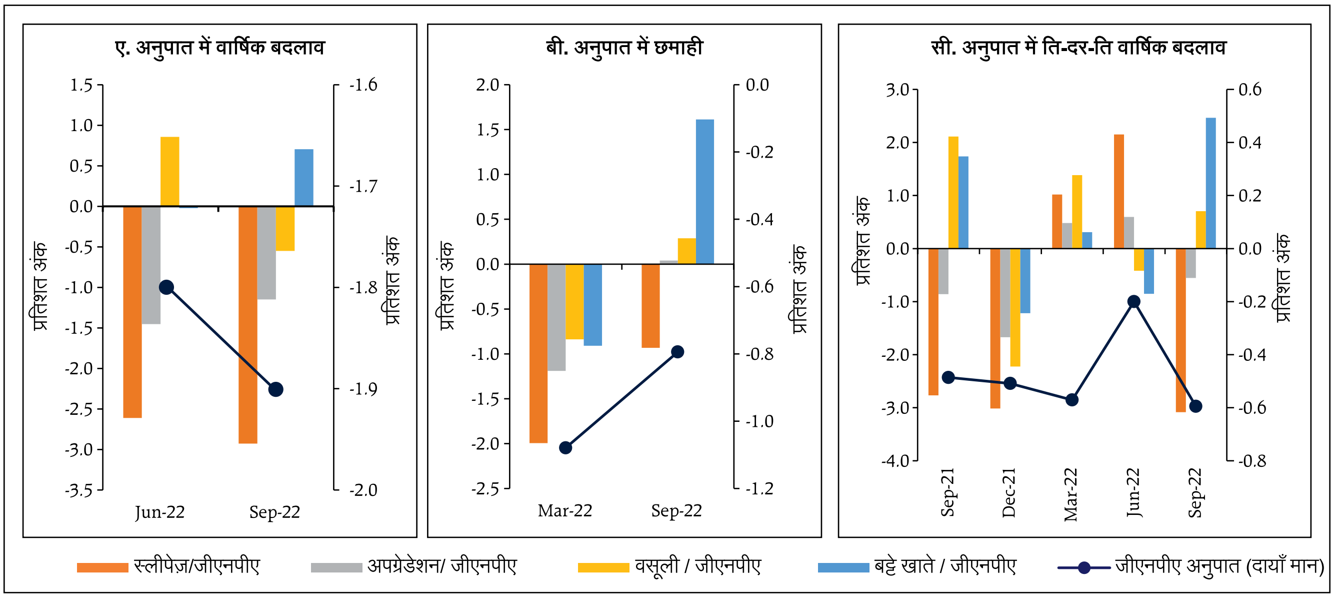

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

योगदान रहा (चार्ट 1.98 ए, बी और सी)। जीएनपीए अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति जारी रहने की संभावना है - दबाव परीक्षण ढांचे के आधारभूत परिदृश्य के तहत, इसमें सितंबर 2023 में 4.9 प्रतिशत तक गिरावट रहने का अनुमान है।

1.118 जोखिम भारित आस्तियों में वृद्धि के साथ, पूंजी स्तर कम हो गया है: सीआरएआर और सीईटी -1 अनुपात दोनों में गिरावट आई है, हालांकि ये विनियामक अपेक्षाओं से ऊपर रहीं (चार्ट 1.99 ए और बी)।

I.2.11 गैर बैंकिंग वित्तीय संस्थाएं (एनबीएफसी)

1.119 एनबीएफसी क्षेत्र में कोविड-19 की दूसरी लहर के बावजूद मजबूत सुधार दर्ज किया गया है, जिसमें आस्ति गुणवत्ता लगातार सुधार दिखा रहा है। इस क्षेत्र का जीएनपीए अनुपात (मुख्य निवेश कंपनियों को छोड़कर) जून 2021 में 6.9 प्रतिशत से गिरकर सितंबर 2022 में 5.1 प्रतिशत हो गया। हालांकि, विशेष उल्लिखित खाते (एसएमए) दिसंबर 2021 में कुल अग्रिम के 8.5 प्रतिशत से सितंबर 2022 में बढ़कर 10.8 प्रतिशत हो गए। चुनिंदा एनबीएफसी समूहों जैसे एनबीएफसी-निवेश और क्रेडिट कंपनियों (जीएनपीए अनुपात 69 प्रतिशत) और एनबीएफसी-फैक्टर (68 प्रतिशत का जीएनपीए अनुपात) के कुछ क्षेत्रो में दबाव देखा गया है (सारणी 1.12)। आस्ति

चार्ट 1.99: पूंजी पर्याप्तता

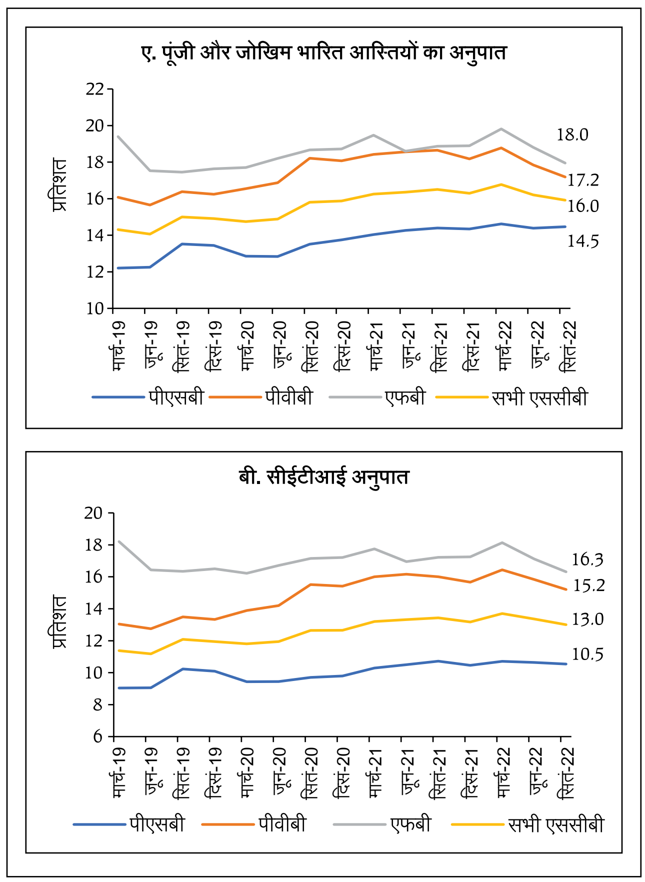

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

सारणी 1.12: सभी एनबीएफसी श्रेणियों में आस्ति गुणवत्ता अनुपात

(प्रतिशत)

		जीएनपीए	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2			जीएनपीए	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2
एनबीएफसी-सूक्ष्म वित्तीय कंपनी (2.6%)	मार्च-21	5.4	2.3	1.7	1.0	एनबीएफसी-आधारभूत संरचना वित्तीय कंपनी (42.4%)	मार्च-21	3.9	5.2	1.9	2.4
	जून-21	6.1	8.8	4.4	2.4		जून-21	3.8	3.0	0.1	6.9
	सितं-21	5.9	4.4	2.2	1.4		सितं-21	3.8	1.9	0.0	10.9
	दिसं-21	5.7	2.4	2.1	1.4		दिसं-21	4.0	0.2	0.0	3.3
	मार्च-22	5.5	1.5	1.2	1.1		मार्च-22	3.4	2.5	2.2	2.1
	जून-22	4.8	1.7	1.4	1.4		जून-22	3.4	6.9	1.1	5.4
	सितं-22	4.7	1.4	1.6	1.8		सितं-22	3.1	2.8	0.1	8.4
एनबीएफसी-कारक (0.1%)	मार्च-21	25.0	13.7	1.7	1.7	एनबीएफसी-निवेश डेट फंड (1.1%)	मार्च-21	0.4	0.0	0.1	1.7
	जून-21	29.2	14.2	2.2	2.7		जून-21	0.4	0.0	0.0	0.6
	सितं-21	26.0	13.8	1.5	1.1		सितं-21	0.4	0.0	0.0	0.6
	दिसं-21	27.1	13.6	2.3	0.0		दिसं-21	0.8	0.6	0.1	0.0
	मार्च-22	22.0	11.7	1.3	0.0		मार्च-22	0.3	0.0	0.1	0.4
	जून-22	9.5	13.3	3.6	0.5		जून-22	0.4	0.0	0.0	0.1
	सितं-22	6.8	10.7	2.1	0.9		सितं-22	0.4	0.0	0.1	0.0
एनबीएफसी-निवेश और ऋण कंपनी (53.7%)	मार्च-21	8.0	7.5	3.2	3.1	कुल	मार्च-21	6.1	6.3	2.6	2.7
	जून-21	9.6	8.2	4.5	3.9		जून-21	6.9	5.8	2.5	5.1
	सितं-21	9.0	7.2	3.9	3.3		सितं-21	6.5	4.7	2.1	6.5
	दिसं-21	9.0	6.6	3.5	2.9		दिसं-21	6.6	3.6	1.9	3.0
	मार्च-22	7.7	5.8	3.3	2.2		मार्च-22	5.7	4.2	2.7	2.1
	जून-22	7.1	6.3	3.0	2.2		जून-22	5.4	6.4	2.1	3.5
	सितं-22	6.9	5.9	2.8	2.2		सितं-22	5.1	4.4	1.6	4.8

नोट: 1. 30 सितंबर, 2022 तक एनबीएफसी के कुल अग्रिमों में एनबीएफसी की प्रत्येक श्रेणी के प्रतिशत हिस्से को दर्शाता है।
2. 28 नवंबर, 2022 की स्थिति के अनुसार एनबीएफसी-डी, एनबीएफसी-एनडी-एसआई और एनबीएफसी-एनडी (कोर इन्वेस्टमेंट कंपनियों को छोड़कर) के आंकड़ों पर आधारित जो अनंतिम हैं।

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

वर्गीकरण के संबंध में संशोधित स्पष्टीकरण, जो 1 अक्टूबर, 2022 से लागू हुआ, के अनुसार यह अनिवार्य है कि सभी एनबीएफसी से एनपीए को अपग्रेड करने के लिए पूरे बकाया को एकत्र करना अपेक्षित है। आस्ति वर्गीकरण महीने के अंत से 90 दिनों की शुरुआत करने की वर्तमान प्रथा के विपरीत, बिल्कुल अतिदेय तिथि से शुरू होगा, जब से खाता अतिदेय हो जाता है। ये विनियामकीय परिशोधन निकट भविष्य में आस्ति गुणवत्ता के क्षेत्र के आकलन को प्रभावित कर सकते हैं।

1.2.12 एमएसएमई क्षेत्र को ऋण प्रवाह

1.120 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र, जो महामारी से प्रभावित था, वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही में बदल गया और वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में इसी गति को बनाए रखा। पीवीबी द्वारा उधार में तीव्र गति से वृद्धि हुई, जबकि पीएसबी ने अपेक्षाकृत मध्यम गति से वृद्धि दर्ज की (चार्ट 1.100)। इस क्षेत्र में निरंतर ऋण वृद्धि का श्रेय आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) के तहत दिए गए ऋण, घरेलू मांग में व्यापक आधार पर बहाली, उच्च कार्यशील

चार्ट 1.100 एमएसएमई क्षेत्र में ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष : प्रतिशत)

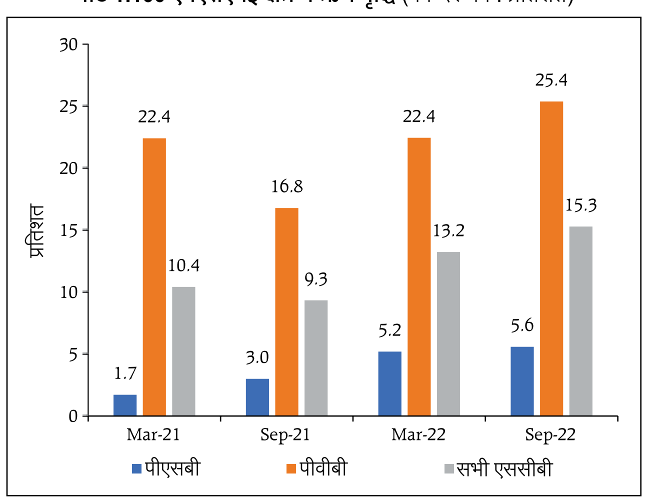

नोट : एमएसएमई मंत्रालय द्वारा प्रदान किए गए एमएसएमई वर्गीकरण के लिए पुराने दस्तावेजों की वैधता के विस्तार के कारण, पिछली तिमाहियों के लिए विनियामक विवरणियों के अनुसार एमएसएमई ऋण बकाया आंकड़ों को संशोधित किया गया है

स्रोत : आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणनाएं।

सारणी 1.13: एमएसएमई पुनर्रचना योजना [41]

बैंक समूह	के अनुसार पुनर्रचित खातों में बकाया शेष (₹ करोड़)	
	31 मार्च 2022	30 सितंबर 2022
पीएसबी	77,338	78,117
पीवीबी	28,767	29,068
एफ़बी	624	675
सभी एससीबी	1,06,728	1,07,859
एमएसई पोर्टफोलियो में प्रतिशत हिस्सेसरी	5.31	5.21

नोट: पीएसबी, पीवीबी और चार प्रमुख विदेशी बैंकों द्वारा सूचित आंकड़ा।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ की गणनाएं।

पूंजी अपेक्षाओं और एमएसएमई की परिभाषा में विनियामक संशोधनों को दिया जा सकता है।

1.121 एमएसएमई क्षेत्र का समग्र जीएनपीए अनुपात (पीएसबी और पीवीबी) मार्च 2022 के 9.3 प्रतिशत से कम होकर सितंबर 2022 में 7.7 प्रतिशत हो गया। ₹ 25 करोड़ से कम की राशि वाले अग्रिम जिनके संबंध में आमतौर पर आस्ति गुणवत्ता संबंधी चिंताएं बनी रहती हैं, इनकी आस्ति गुणवत्ता मार्च 2022 की तुलना में सितंबर 2022 में बेहतर हुई हैं। वर्ष 2018 से आरंभ की गई विनियामकीय रियायत और पुनर्रचना योजनाएं समाप्त हो गई हैं। 30 सितंबर 2022 के अनुसार, एससीबी के एमएसएमई पोर्टफोलियो में पुनर्रचित ऋण का हिस्सा 5.21 प्रतिशत रहा, 31 मार्च 2022 में यह 5.31 प्रतिशत था[40] (सारणी 1.13)।

1.122 कोविड-19 से निपटने हेतु व्यवसायिक संस्थाओं को सहायता एवं अतिरिक्त चलनिधि उपलब्ध कराने में ईसीएलजीएस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ईसीएलजीएस के अंतर्गत, 30 सितंबर 2022 तक ₹2.82 लाख करोड़ की राशि संवितरित की गई है, जिसमें से एससीबी ने ₹ 2.46 लाख करोड़ संवितरित किए हैं और इसका अधिकांश हिस्सा ईसीएलजीएस 1.0 के अंतर्गत संवितरित हुआ (चार्ट 1.101)। ईसीएलजीएस का लाभ मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र और व्यापारी वर्ग ने उठाया, ये महामारी से सबसे अधिक प्रभावित थे (चार्ट 1.102)।

चार्ट 1.101: संवितरित ईसीएलजीएस गारंटी

(हिस्सा प्रतिशत में)

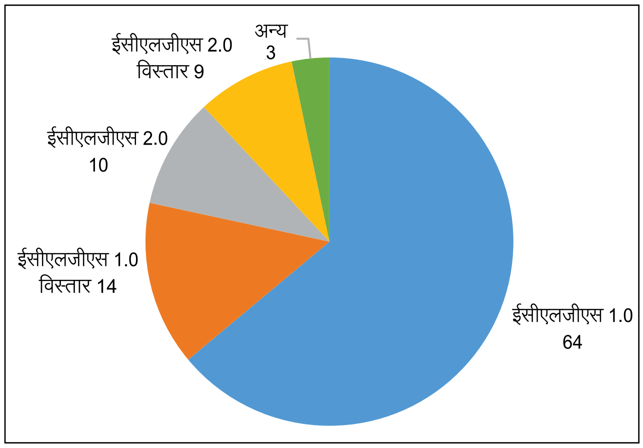

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट 1.102 : क्षेत्र वार ईसीएलजीएस गारंटी

(हिस्सा प्रतिशत में)

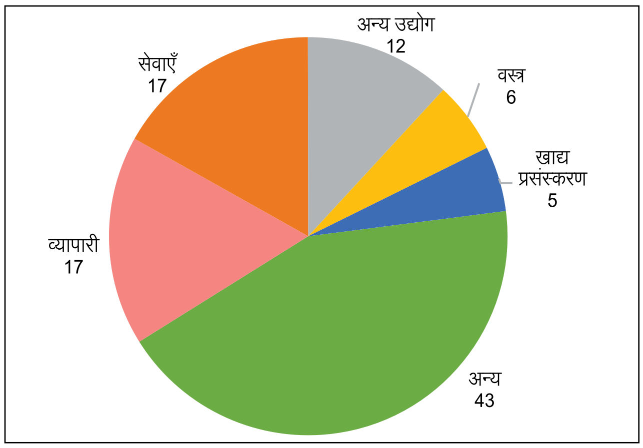

स्रोत: एनसीजीटीसी

[39] भारत सरकार ने परिपत्र संख्या आरबीआई/2020-2021/10 एफआईडीडी.एमएसएमई और एनएफएस.बीसी. सं. 3/06.02.31/2020-21 दिनांक 2 जुलाई 2020 और उसके बाद के स्पष्टीकरण के अनुसार उद्यमों को सूक्ष्म, लघु और मध्यम में वर्गीकृत करने के लिए संयंत्र और मशीनरी में निवेश और कारोबार संबंधी योग्यता मानदंड और गणना की पद्धति में परिवर्तन किया है।

[40] मई 2021 की योजना के तहत पुनर्गठित एमएसएमई ऋण सितंबर 2022 के अंत में कुल एमएसएमई अग्रिमों का 2.3 प्रतिशत था।

[41] एमएसएमई खातों का पुनर्रचना निम्नलिखित के अनुसार किया गया है:

1. "सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र – अग्रिमों की पुनर्रचना" विषयक परिपत्र डीबीआर. सं. बीपी. बीसी. 18/21.04.048/2018-19 दिनांक 01 जनवरी 2019
2. "सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र – अग्रिमों की पुनर्रचना" विषयक परिपत्र डीओआर. सं. बीपी. बीसी. 34/21.04.048/2019-20 दिनांक 11 फरवरी 2020
3. "सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र – अग्रिमों की पुनर्रचना" विषयक परिपत्र डीओआर. सं. बीपी. बीसी. 34/21.04.048/2020-21 दिनांक 06 अगस्त 2020
4. समाधान ढांचा - 2.0: सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के कोविड -19 संबंधित दबाव का निराकरण - समग्र एक्सपोज़र के लिए सीमा में संशोधन विषयक परिपत्र डीओआर.एसटीआर.REC.12/21.04.048/2021-22 दिनांक 05 मई 2021 के साथ पठित परिपत्र डीओआर.एसटीआर.REC.21/21.04.048/2021-22 दिनांक 04 जून 2021

1.123 पीवीबी ने ईसीएलजीएस का पीएसबी से अधिक उपयोग किया, पीवीबी के आवर्ती उधारकर्ताओं को संवितरित की गई राशि पीएसबी से लगभग दोगुनी है (चार्ट 1.103 ए और बी, तालिका 1.14)।

1.124 ईसीएलजीएस का लाभ उठाने वाले उधारकर्ताओं के पृथक-पृथक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश छोटे उधारकर्ता सूक्ष्म उद्यम श्रेणी के रहे हैं (चार्ट 1.104 ए)। दूसरी ओर, संवितरण की मात्रा के अनुसार, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के अलावा अन्य व्यवसायों द्वारा इसका लगभग एक तिहाई लाभ उठाया गया था, जो महामारी से संबंधित दबाव की व्यापक प्रकृति को दर्शाता है (चार्ट 1.104 बी)।

सारणी 1.14 : ईसीएलजीएस उधारकर्ताओं का औसत टिकट आकार

उधारदाता संस्थाओं की श्रेणी	उधारकर्ता प्रकार	औसत टिकट आकार (₹ लाख में)
पीएसबी	नए उधारकर्ता आवर्ती उधारकर्ता	3.6 18.2
पीवीबी	नए उधारकर्ता आवर्ती उधारकर्ता	1.5 47.5
एफ़बी	नए उधारकर्ता आवर्ती उधारकर्ता	57.4 80.3
एनबीएफ़सी	नए उधारकर्ता आवर्ती उधारकर्ता	1.9 8.7

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट 1.103: बैंक समूह-वार ईसीएलजीएस गारंटी

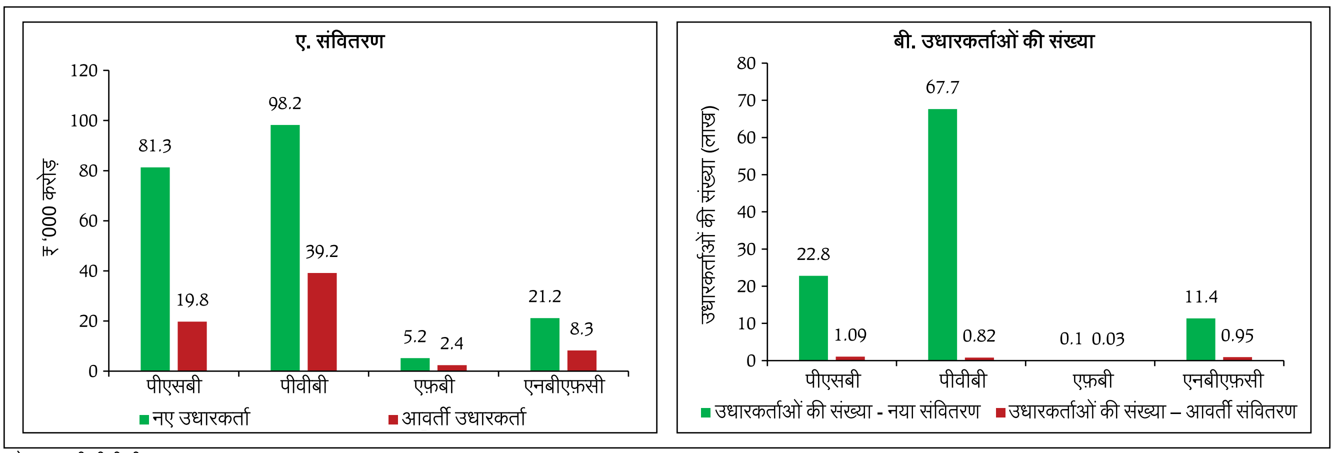

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट 1.104: उधारकर्ता श्रेणी वार ईसीएलजीएस गारंटी

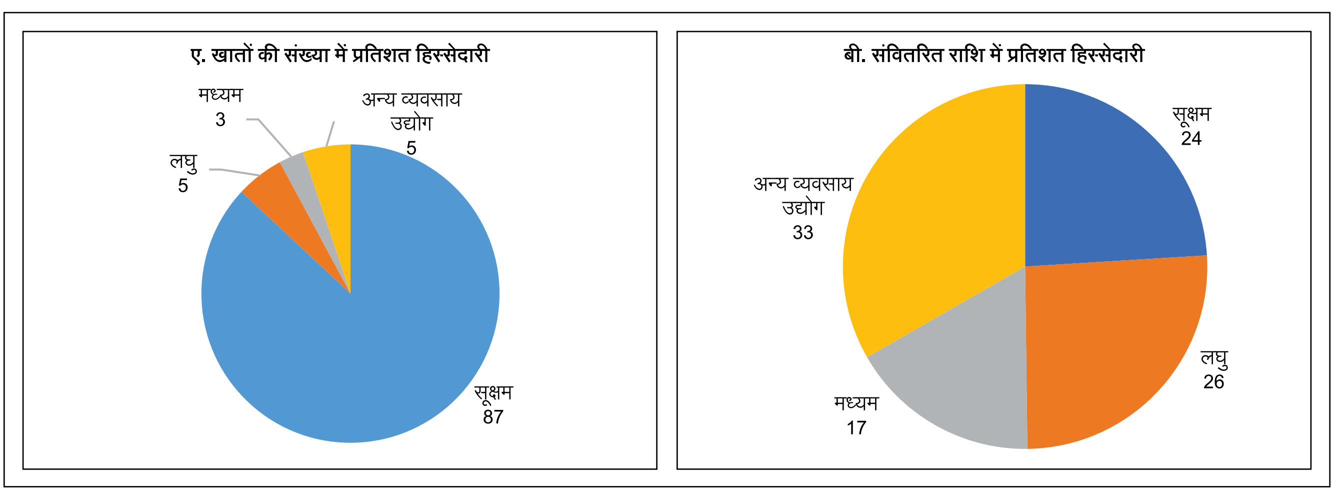

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट 1.105: राशि वार ईसीएलजीएस गारंटी

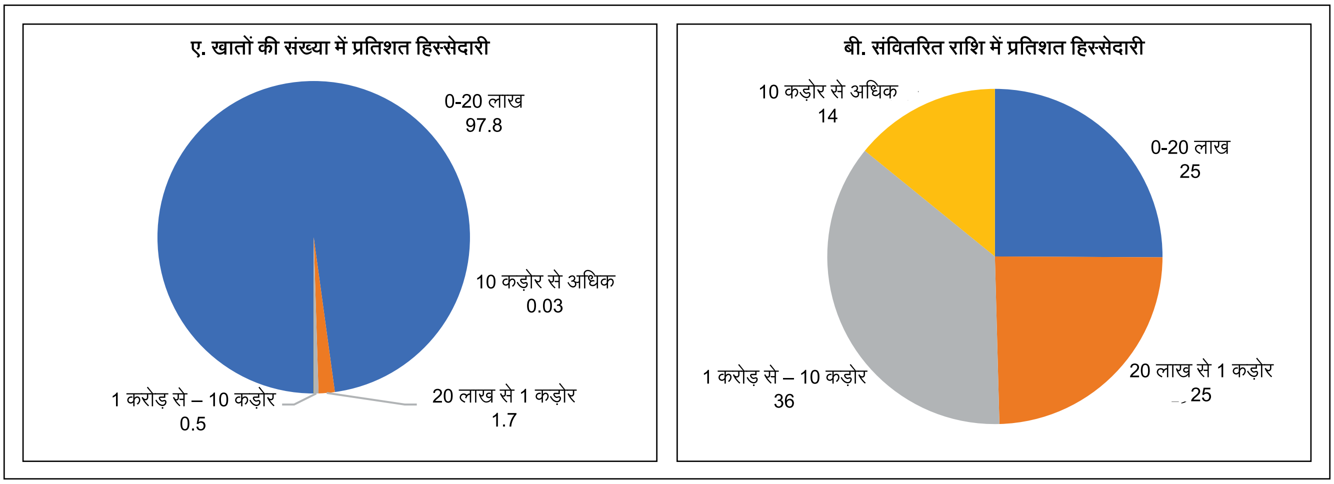

स्रोत: एनसीजीटीसी

1.125 ऋण आकार के अनुसार संवितरण को समूहीकृत करने पर भी इसी तरह की तस्वीर उभरती है (चार्ट 1.105 ए और बी)।

1.126 ईसीएलजीएस ऋण की सितंबर 2022 की स्थिति यह दर्शाती है कि एमएसएमई क्षेत्र में संकट जारी है, इसमें ईसीएलजीएस के तहत निधि प्राप्त करने वाले खातों का छठा हिस्सा एनपीए में बदल रहा है (चार्ट 1.106)।

1.127 ईसीएलजीएस के तहत संवितरित ऋणों का एक चौथाई लाभ यद्यपि सूक्ष्म उद्यम क्षेत्र ने उठाया, लेकिन समग्र एनपीए में उनका हिस्सा बहुत अधिक था (चार्ट 1.107 ए और बी)।

चार्ट : 1.106 : इकाई प्रकार – एनपीए वार

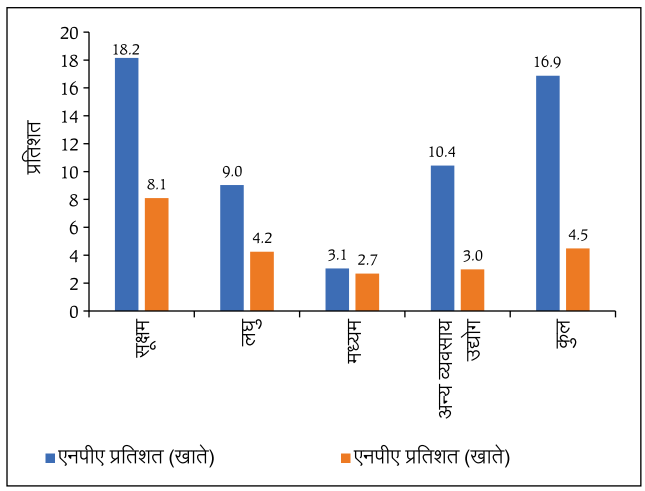

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट : 1.107 : उधारकर्ता श्रेणी – एनपीए वार

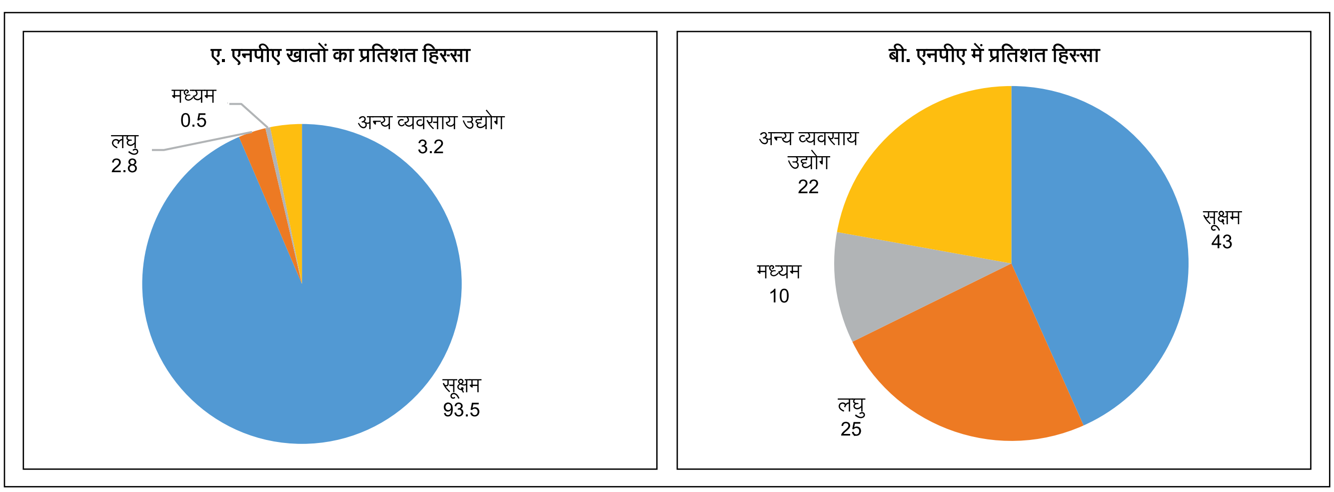

स्रोत: एनसीजीटीसी

1.128 एनपीए का क्षेत्र-वार विश्लेषण यह दर्शाता है कि ईसीएलजीएस संवितरण का एक-तिहाई भाग प्राप्त करने वाला सेवाएं और व्यापार का क्षेत्र दबावग्रस्त बना रहा तथा ईसीएलजीएस के अंतर्गत कुल चूक में इनकी आधे से अधिक हिस्सेसरी_रही (चार्ट 1.108)।

I.2.13 सूक्ष्म वित्त क्षेत्र

1.129 सूक्ष्म वित्त क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण में नियमित रूप से वृद्धि हो रही है, सभी प्रकार के उधारदाताओं ने इसमें सुस्थिर ऋण वृद्धि दर्ज की है। संशोधित विनियम[42] के अंतर्गत एनबीएफसी को अपनी आस्तियों की 10 प्रतिशत की पूर्व-सीमा से बढ़ाकर 25 प्रतिशत तक सूक्ष्म वित्त ऋण देने की अनुमति दी गई थी, इसमें मजबूत वृद्धि दिखी और वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर नए ऋणों में इनकी दोगुनी से अधिक हिस्सेदारी रही (चार्ट 1.109 ए, बी और सी)।

चार्ट : 1.107 : एनपीए का हिस्सा ईसीएलजीएस क्षेत्र वार

(प्रतिशत)

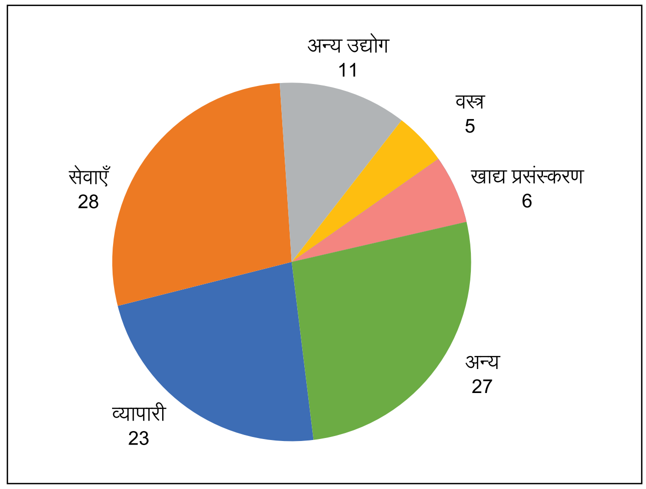

स्रोत: एनसीजीटीसी

चार्ट 1.109 सूक्ष्म वित्त खंड को उधार देना

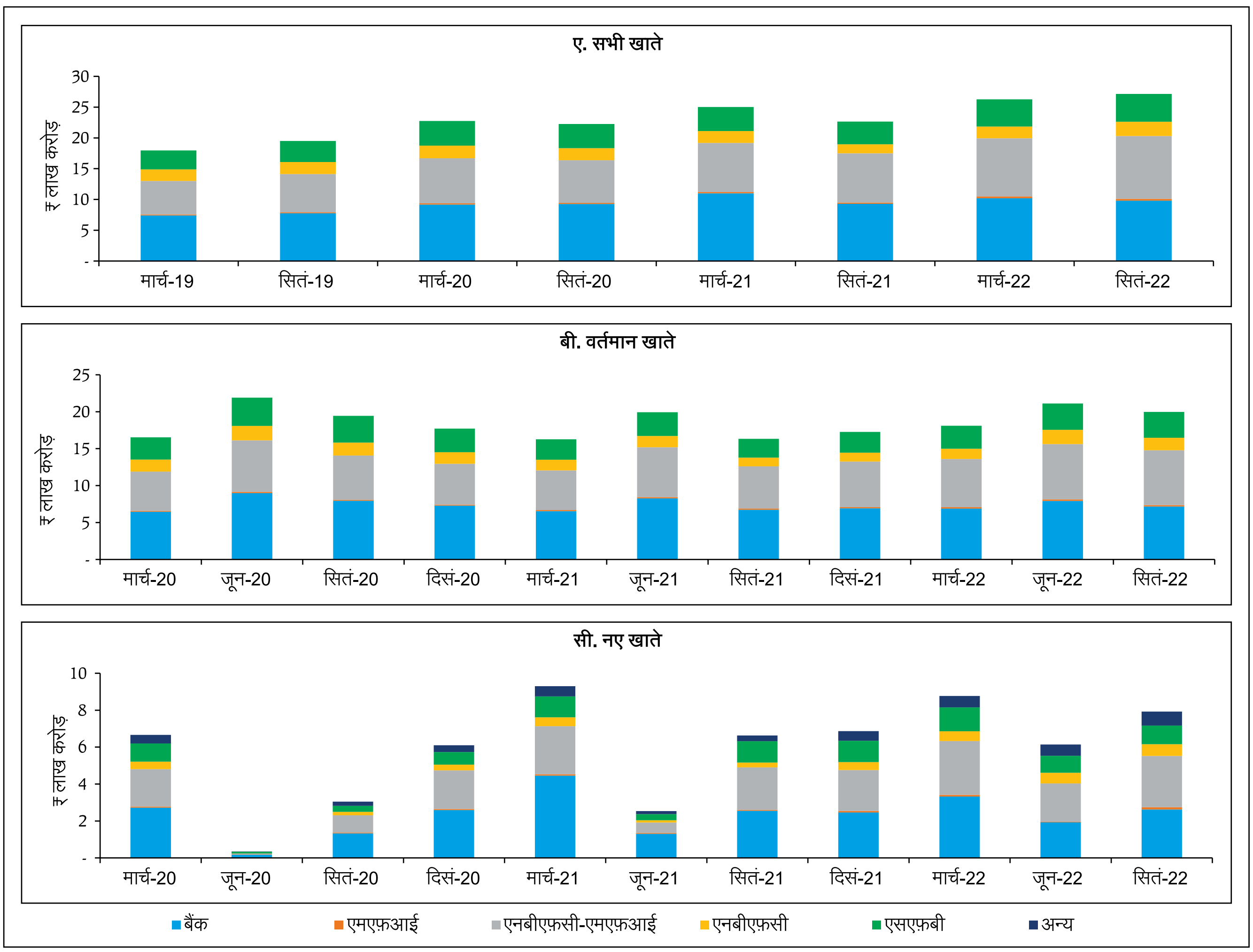

स्रोत: ईक्वीफैक्स

[42] आरबीआई ने 14 मार्च 2022 के परिपत्र के माध्यम से सूक्ष्म वित्त आस्ति के रूप में अर्हता प्राप्त आस्तियों की परिभाषा को उदरीकृत/समीक्षा किया है।

चार्ट 1.110 : सूक्ष्म वित्त खंड में दबाव

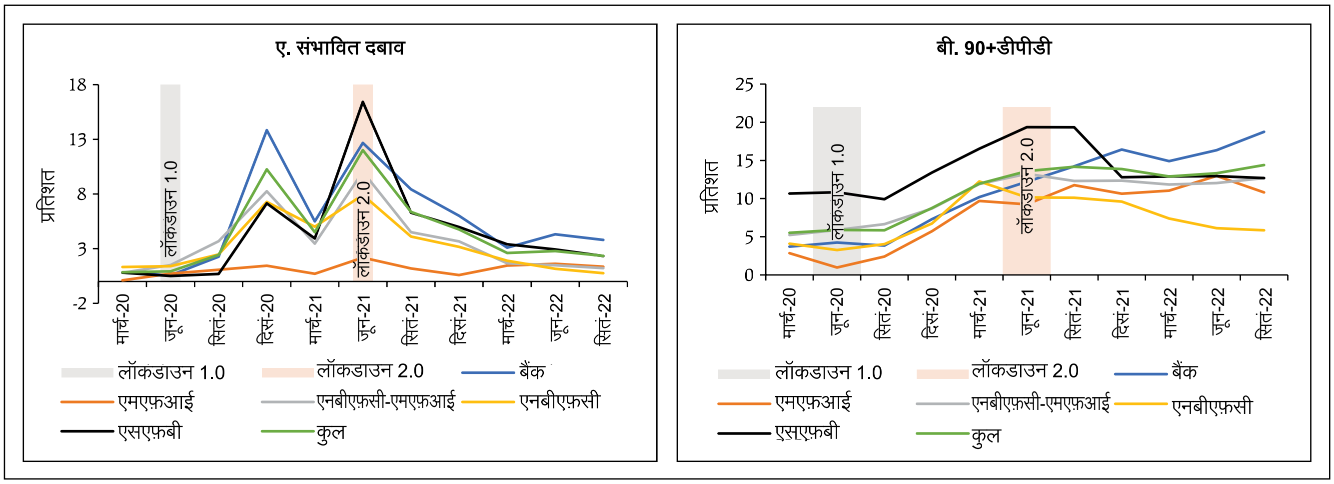

स्रोत: ईक्वी फैक्स

1.130 सूक्ष्म वित्त क्षेत्र में 90+ दिनों के बाद बकाया मानदंड (डीपीडी) के संदर्भ में मापित समग्र चूक में वृद्धि हुई है जिसमें बैंकों के मामले में यह चूक सबसे अधिक रही। अन्य प्रकार के उधारदाताओं की श्रेणी में या तो मामूली हानि हुई है या उसमें गिरावट आई है। इसी प्रकार, सभी श्रेणियों के उधारदाताओं के लिए 30+ डीपीडी द्वारा मापित स्लिपेज की जोखिम वाले क्रेडिट में गिरावट हुई (चार्ट 1.110 ए और बी)।

I.2.14 उपभोक्ता क्रेडिट

1.131 अक्टूबर 2022 में सभी श्रेणियों के ऋणों के संबंध में पूछताछ की मात्रा में गिरावट के साथ बैंक क्रेडिट में हाल के वर्षों में प्रमुख चालक बने रहने वाले उपभोक्ता क्रेडिट में उसके संबंध में पूछताछ की मात्रा[43] के आधार पर में नरमी के संकेत दिखे रहे हैं तथापि ये महामारी पूर्व के स्तरों के ऊपर बने हुए हैं (चार्ट 1.111)।

1.132 महामारी की दूसरी लहर के बाद से फिनटेक प्लेटफॉर्म पर पूछताछ में मजबूत वृद्धि महसूस की गई थी, इस वृद्धि में भी स्थिरता देखी गई। (चार्ट 1.112)।

चार्ट 1.111 उत्पाद श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा

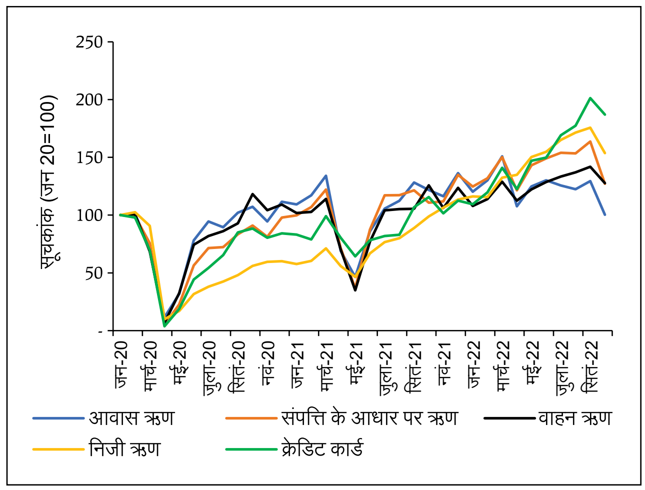

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

चार्ट 1.112 ऋणदाता श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा

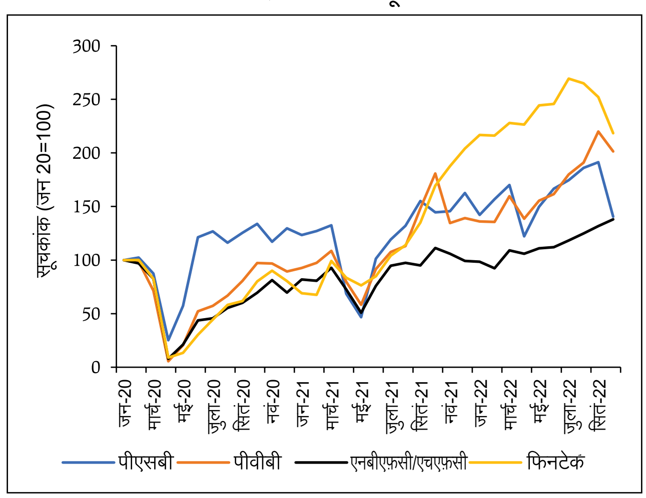

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

[43] एक क्रेडिट पूछताछ तब सृजित होता है जब कोई उधारकर्ता ऋण के लिए आवेदन करता है और ऋणदाता को अपना क्रेडिट रिकॉर्ड लेने की अनुमति देता है। आर्थिक गतिविधि में परवर्तन के कारण क्रेडिट रिकॉर्ड डाटा में परिवर्तन करने के लिए पूछताछ, क्रेडिट बाजार के शुरुआती कदमों में से एक है

1.133 जोखिम स्तरों के अनुसार पूछताछ की मात्रा के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उच्च श्रेणी के उपभोक्ताओं की तुलना में प्राइम और प्राइम के नीचे के उपभोक्ताओं द्वारा ऋण की मांग तेज गति से बढ़ी है (चार्ट 1.113)।

1.134 समग्र रूप से उद्योग के स्तर पर कम रेटिंग वाले उधारकर्ताओं की हिस्सेदारी में गिरावट के साथ वृद्धिशील क्रेडिट की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इसके साथ ही, पीएसबी के ओरिजिनेशन प्रोफ़ाइल में भी सुधार हुआ है (चार्ट 1.114 ए, बी और सी)।

1.135 उपभोक्ता क्रेडिट में हुए नुकसान को पोर्टफोलियो में से 90 दिनों या उसके बाद के देय के अनुपात के संदर्भ में मापा गया है और उसमें सुधार दिखाई दिया है तथा सभी उधारदाताओं में चूक का स्तर निचले स्तर पर स्थिर हो रहा है (सारणी 1.15)। तथापि, समग्र रूप से आस्ति गुणवत्ता पर विशेष रूप से बंधकों पर नीतिगत दरों में वृद्धि तथा उसके प्रगामी प्रभाव पर बारीकी से निगरानी रखने की आवश्यकता है।

I.2.15 आवास बाजार

1.136 दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों ने मौद्रिक नीति को आक्रामक रूप से सख्त किया है, बढ़ती बंधक दरें और सख्त उधार मानक, 2023 में घर की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं।

चार्ट 1.113 जोखिम श्रेणी वार पूछताछ की मात्रा

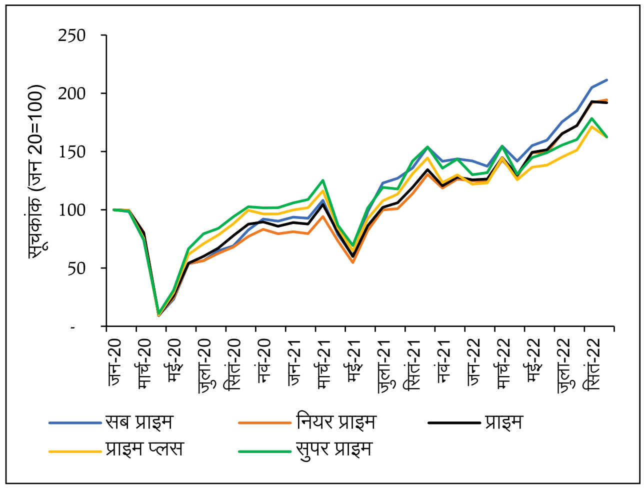

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.15: सभी उत्पाद श्रेणियों में समग्र उपभोक्ता क्रेडिट में चूक के स्तर

(प्रतिशत)

	पीएसबी	पीवीबी	एनबीएफ़सी/ एचएफ़सी	फिनटेक
सितं-21	4.8	2.4	3.6	4.6
अक्टू-21	5.1	2.1	3.9	4.1
नवं-21	5.0	2.0	3.4	4.0
दिसं-21	4.8	2.1	3.2	3.2
जन-22	4.9	2.3	3.2	3.1
फर-22	4.7	2.0	3.0	2.6
मार्च-22	4.5	1.7	2.3	2.2
अप्रै-22	4.6	1.4	2.6	2.2
मई-22	4.6	1.5	2.5	2.1
जून-22	4.5	1.6	2.2	2.0
जुल-22	4.5	1.9	2.1	2.0
अग-22	4.4	1.7	2.1	2.0
सितं-22	4.3	1.5	1.8	2.0

नोट: 90 दिन पूर्व की बकाया शेष राशि पर आधारित।
स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

ओरिजिनेशन जोखिम श्रेणी वार

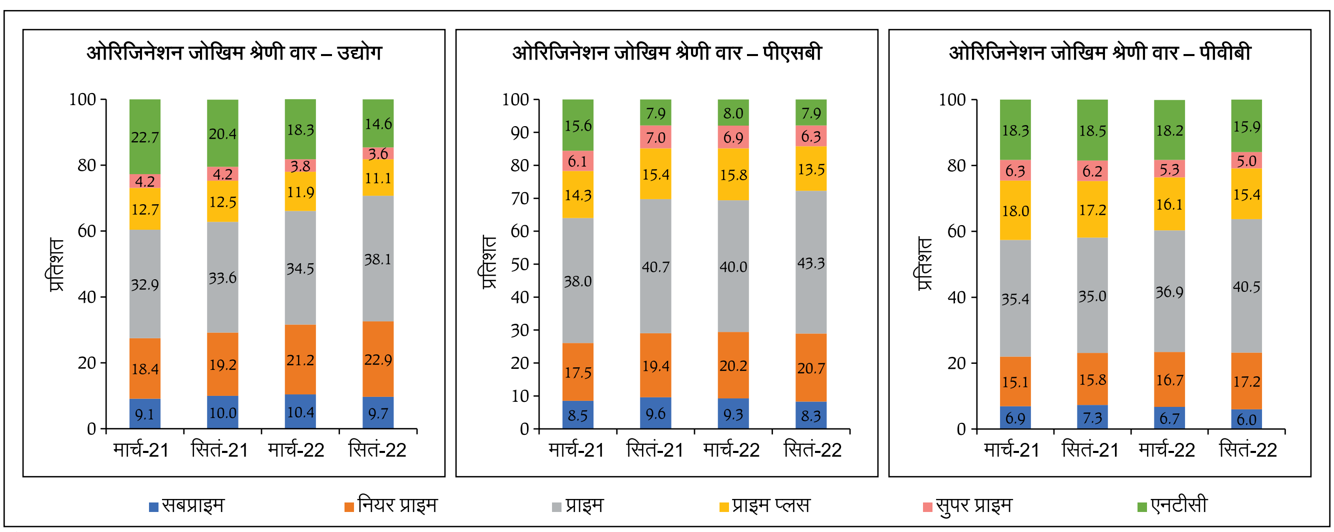

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

[44] प्राइम के नीचे और क्रेडिट हेतु नए उधारकर्ता।

चार्ट 1.115 : आवास कीमतों में उचार-चढ़ाव

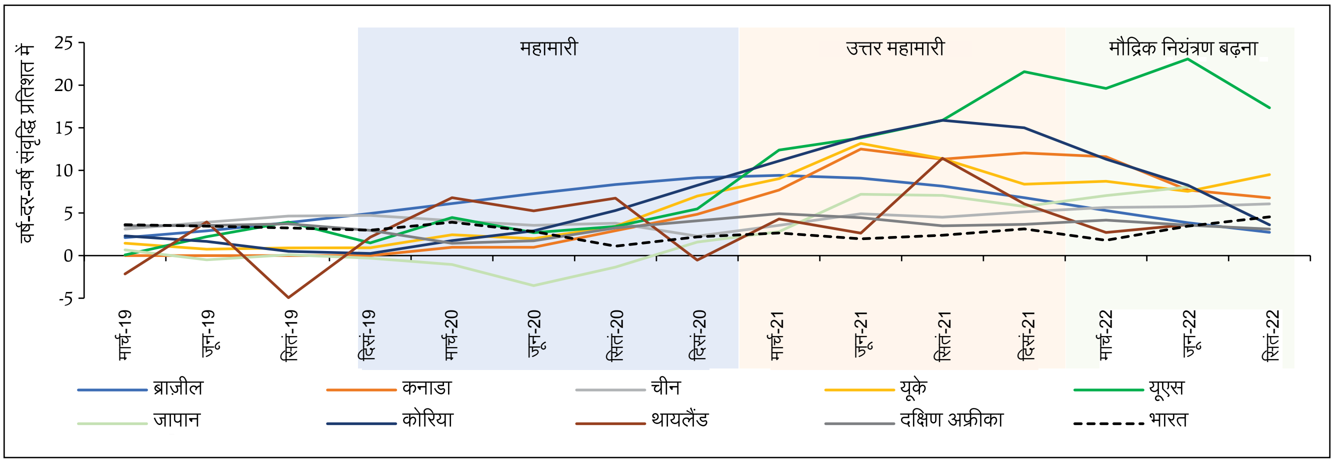

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक और डीबीआईई, आरबीआई

प्रमुख उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में आवास की कीमतें पहले से ही कम होने लगी हैं (चार्ट 1.115)।

1.137 वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही में अखिल भारतीय आवास मूल्य सूचकांक (एचपीआई) में 4.5 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की बढ़ोतरी हुई, जो पिछली तिमाही में 3.5 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) थी। क्रमिक आधार पर आवासों की कीमतों में 0.4 प्रतिशत की मामूली वृद्धि दर्ज की गई।

1.138 वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में आवास बाजार गतिविधि में वृद्धि के माध्यम से आवास की कीमतों में सुधार प्रदर्शित हुआ। नतीजतन, आवास की बिक्री में वृद्धि हुई है, और नई परियोजनाओं में और विस्तार हुआ है, जो निवेश और अंतिम उपयोग दोनों प्रयोजनों से स्थिर आवास मांग को दर्शाता है (चार्ट 1.116 ए)। कुल मिलाकर, बिना बिके आवासों की संख्या में गिरावट और मजबूत बिक्री की गति के परिणामस्वरूप इन्वेंट्री ओवरहैंग कम हो गई, हालांकि घरों के क्षेत्रफल के अनुसार इस इन्वेंटरी में भिन्नता होती है (चार्ट 1.116 बी)।

I.2.16 वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक

1.139 एफएसआर बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता का आकलन करने के लिए बैंकिंग स्थिरता का एक ख़ाका नियमित रूप से प्रकाशित करता है। वित्तीय क्षेत्र के अन्य खंडों तक इसका विस्तार बढ़ाने के उद्देश्य से, भारतीय वित्तीय प्रणाली में समग्र दबाव के स्तर की निगरानी के लिए वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक (एफएसएसआई) नामक एक व्यापक संकेतक बनाने का प्रयास किया गया है। एफएसएसआई का उद्देश्य (ए) दबाव की अवधि

चार्ट 1.116: आवास बिक्री, नई परियोजनाएं और अविक्रीत माल-सूची

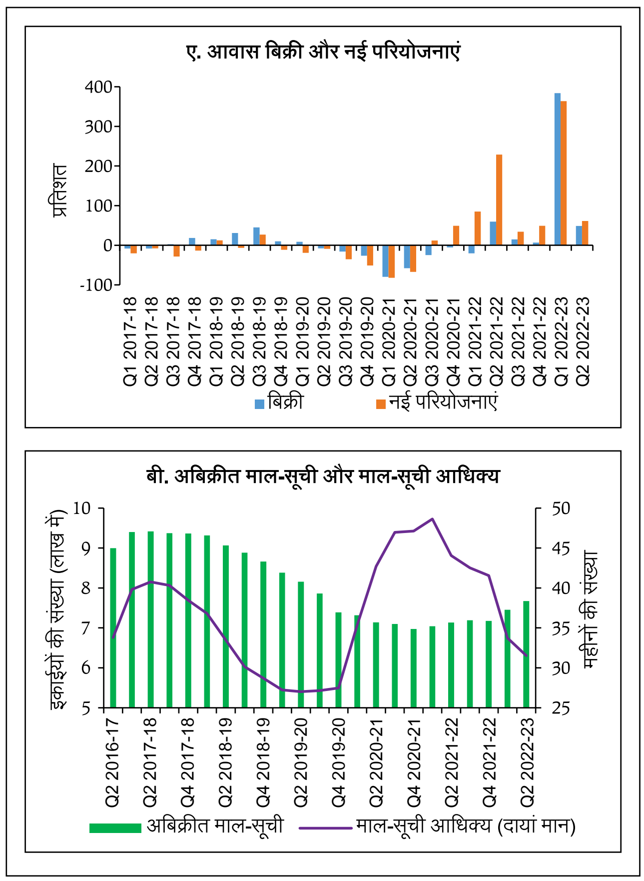

स्रोत: प्रोपटाइगर डाटालैब

की पहचान करने में मदद करना; (बी) वित्तीय प्रणाली में दबाव की तीव्रता और अवधि का आकलन करना; और (ग) वित्तीय बाजारों और मध्यस्थों की आघातों और असंतुलन का सामना करने की क्षमता को मापना है (बॉक्स 1.1)।

बॉक्स 1.1: वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक

वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक (एफएसएसआई) में पांच वित्तीय बाजार खंडों - इक्विटी, विदेशी मुद्रा, मुद्रा, सरकारी कर्ज और कॉरपोरेट कर्ज बाजार तथा वित्तीय मध्यस्थ खंडों के तीन समूहों - बैंक, एनबीएफसी और एएमसी-एमएफ (चटर्जी एवं अन्य, 2017, हॉलो एवं अन्य, 2012 और लौजिस एवं अन्य, 2012) से संबंधित जोखिम कारक शामिल हैं। इसमें रियल सेक्टर का भी एक घटक है जिसमें रियल सेक्टर के उन चुनिंदा चरों को शामिल किया गया है जो वित्तीय क्षेत्र के साथ अपने मजबूत अंतर्संबंधों के चलते वित्तीय स्थिरता को प्रभावित करते हैं। कुल मिलाकर, नौ बाजारों/क्षेत्रों के 39 जोखिम कारकों पर विचार किया गया है (सारणी 1)। जोखिम कारकों को न्यूनतम-अधिकतम पद्धति[45] द्वारा चरों में परिवर्तित कर सामान्यीकृत किया गया है, ये इकाई-मुक्त हैं तथा शून्य और एकांक के बीच क्रमसूचक पैमाने पर मापित हैं। प्रत्येक बाजार/क्षेत्र के लिए रूपांतरित जोखिम कारकों हेतु समान भारांक का उपयोग कर उप-संकेतक *'वाई'* में संकलित किया गया है जो *आई* वें बाजार/क्षेत्र को दर्शाता है।

सम्मिश्रित एफएसएसआई की गणना उप-संकेतकों को पुनः एकत्रित करके समान-विचरण भारित औसत पद्धति के आधार पर की गई है, जहां प्रत्येक उप-संकेतक *'वाई'* का भार *'डब्ल्यू'* अपने प्रतिदर्श मानक विचलन 'सी' का व्युत्क्रमानुपाती है, और इस प्रकार निर्धारित किया गया है,

$$w_i = \frac{1/s_i}{\sum_{i=1}^{9}(1/s_i)}$$

सम्मिश्रित एफएसएसआई इस रूप में प्राप्त किया गया है,

$$FSSI_t = \sum_{i=1}^{9} w_i\, y_{it}$$

एफएसएसआई का उच्च मान दबाव अधिक होने का संकेत होगा।

प्रायोगिक अनुमान ये बताते हैं कि एफएसएसआई ने अतीत में भारतीय वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करने वाली प्रमुख दबाव घटनाओं का पता लगा लिया है। वैश्विक वित्तीय संकट की अवधि के बाद 2013 में टेपर टैन्ट्रम के दौरान वित्तीय दबाव की तीव्रता सबसे अधिक थी। हाल फिलहाल में, वर्ष 2018 में मैसर्स इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज (आईएलएफएस) लिमिटेड के पतन के साथ-साथ वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी की पहली लहर के दौरान भी बढ़े हुए दबाव को देखा जा सकता है (चार्ट 1)।

रूस-यूक्रेन युद्ध की शुरुआत ने प्रणालीगत वित्तीय दबाव में वृद्धि को तीव्र कर दिया, हालांकि यह महामारी की पहली लहर के दौरान देखे गए स्तर की तुलना में कमतर है। बैंक और एनबीएफसी के साथ-साथ एएमसी-एमएफ जैसी वित्तीय संस्थाएं मजबूत बनी हुई हैं।

तालिका 1: एफएसएसआई के प्रत्येक घटक का गठन करने वाले जोखिम कारक

इक्विटी बाजार		1. निफ्टी 50 मासिक रिटर्न और दो वर्ष की रोलिंग विंडो में इसके अधिकतम के बीच का अंतर 2. निफ्टी 50 बाजार पूंजीकरण-जीडीपी अनुपात 3. एनएसई-वीआईएक्स सूचकांक 4. निवल इक्विटी एफपीआई प्रवाह
सरकारी कर्ज बाजार		5. 10-वर्षीय सरकारी प्रतिभूति में हुए उतार-चढ़ाव 6. सावधि स्प्रेड: 10 वर्षीय सरकारी प्रतिभूति और 3-माह टी-बिल दर के बीच स्प्रेड 7. दो वर्ष की रोलिंग विंडो में न्यूनतम की तुलना में 10-वर्षीय सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल में वृद्धि 8. निवल कर्ज एफपीआई प्रवाह
विदेशी मुद्रा बाजार		9. दो वर्ष के रोलिंग विंडो में रुपये और डॉलर विनिमय दर और इसके अधिकतम दर के बीच का अंतर। 10. रुपया डॉलर विनिमय दर में माह-दर-माह मूल्यवृद्धि/मूल्यह्रास 11. रुपया डॉलर विनिमय दर का जीएआरसीएच (1,1) उचार-चढ़ाव 12. 3-माह वायदा प्रीमियम और उसके ऐतिहासिक उच्चतम के बीच का अंतर
मुद्रा/अल्पकालिक बाजार		13. भारित औसत मांग दर और भारित औसत बाजार रेपो दर के बीच का स्प्रेड 14. 3-माह सीडी दर और 3-माह टी-बिल दर के बीच का स्प्रेड 15. 3-माह गैर-एनबीएफसी सीपी दर और 3-माह टी-बिल दर के बीच का स्प्रेड 16. 3-माह सीपी दर में हुए उतार-चढ़ाव 17. 3-माह ओआईएस दर और 3-माह टी-बिल दर के बीच का स्प्रेड
कॉरपोरेट बॉण्ड बाजार		18. 3-वर्षीय एएए कॉरपोरेट बॉण्ड और 3-वर्षीय सरकारी प्रतिभूति के बीच प्रतिफल स्प्रेड 19. 3-वर्षीय बीबीबी और 3-वर्षीय एएए कॉरपोरेट बॉण्ड प्रतिफल के बीच का अंतर 20. 3-वर्षीय बीबीबी कॉरपोरेट बॉण्ड प्रतिफल और उसके उच्चतम के बीच का अंतर
बैंकिंग क्षेत्र	एससीबी	21. सीआरएआर (एससीबी) 22. आरओए (एससीबी) 23. एससीबी (एससीबी) 24. आय पर लागत (एससीबी) 25. दबावग्रस्त आस्ति अनुपात (एससीबी) 26. बैंकिंग बीटा: सीओवी(आर,एम)/वीएआर(एम), 2-वर्षीय चल विंडो पर आर= बैंक निफ्टी वर्ष-दर-वर्ष, एम= निफ्टी 50 वर्ष-दर-वर्ष
	यूसीबी	27. जीएनपीए अनुपात (यूसीबी) 28. सीआरएआर (यूसीबी) 29. आरओए (यूसीबी)
एनबीएफसी क्षेत्र		30. जीएनपीए अनुपात 31. सीआरएआर 32. आरओए 33. 3-माह एनबीएफसी दर और 3-माह टी-बिल दर के बीच का स्प्रेड
एएमसी-एमएफ सेक्टर		34. म्यूचुअल फंड मोचन: (वर्ष-दर-वर्ष) 35. म्यूचुअल फंड निवल प्रवाह
रियल सेक्टर		36. जीडीपी संवृद्धि 37. सीपीआई मुद्रास्फीति 38. जीडीपी अंश स्वरूप चालू खाता शेष 39. जीडीपी अंश स्वरूप सकल राजकोषीय घाटा

(Contd.)

[45] न्यूनतम-अधिकतम विधि सूत्र का उपयोग करके प्रत्येक संकेतक (एक्स) को सूचकांक स्कोर (आई) में सामान्य करती है:
I = (X - X_min) / (X_max - X_min)
जहां X_max और X_min क्रमशः X के अधिकतम और न्यूनतम स्वीकार्य मान हैं।

27.243 mm

चार्ट 1 : वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक

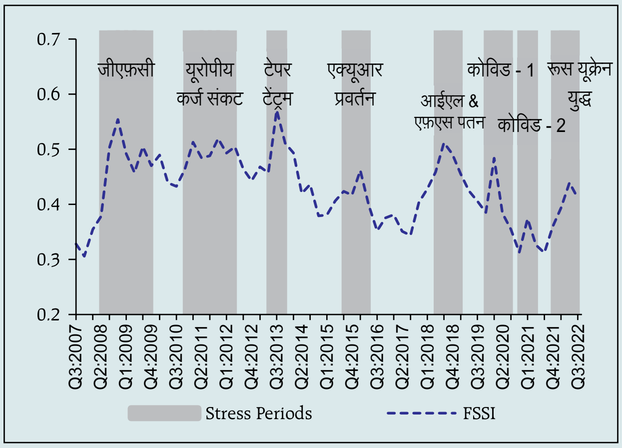

स्रोत: भारतीय अर्थव्यवस्था डाटावेस, ब्लूमबर्ग, सीईआईसी, भा.रि.बैं. पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना

चार्ट 2 : वित्तीय प्रणाली दबाव संकेतक – घटक

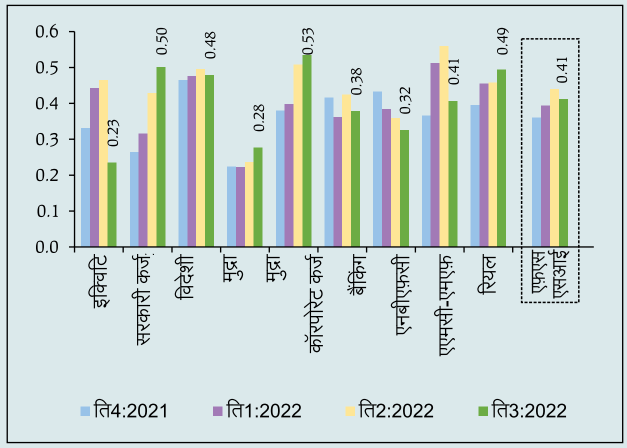

स्रोत: भारतीय अर्थव्यवस्था डाटावेस, ब्लूमबर्ग, सीईआईसी, भा.रि.बैं. पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना

सितंबर 2022 के दौरान सरकारी और कॉरपोरेट बॉण्ड बाजारों में दबाव बढ़ गया। विदेशी मुद्रा बाजार में दबाव को नियंत्रित कर लिया गया था परंतु रियल क्षेत्र में दबाव बढ़ हुआ था। इक्विटी बाजार में दबाव कम बना रहा और मुद्रा बाजार में हल्का दबाव रहा (चार्ट 2)।

संदर्भ:

1. चटर्जी, एस., चिउ, सी.डब्ल्यू.जे., हासिओग्लू होके, एस., और ड्रुप्रे, टी. (2017). ए फाइनैन्शल स्ट्रेस इंडेक्स फॉर दी यूनाइटेड किंगडम। वर्किंग पेपर नंबर 697, बैंक ऑफ इंग्लैंड।

2. होलो, डी., क्रेमर, एम., और लो डुका, एम. (2012). सीआईएसएस – ए कॉम्पोजिट इन्डिकेटर ऑफ सिस्टेमिक स्ट्रेस इन दी फाइनैन्शल सिस्टम।

3. लूजिस, डी.पी., और वूल्डिस, ए.टी. (2012). ए मेथडालजी फॉर कंस्ट्रक्टिंग ए फाइनैन्शल सिस्टमिक स्ट्रेस इंडेक्स: एन एप्लिकेशन टू ग्रीस। इकनॉमिक मॉडलिंग, 29 (4), 1228-1241।

1.2.17 **प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण**[46]

1.140 नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण में, वैश्विक प्रभाव-प्रसारों और वित्तीय बाजार की अस्थिरता से जोखिम और बढ़ गया और 'उच्च' जोखिम श्रेणी में बना रहा। उत्तरदाताओं ने उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक नीति के कड़े रुख, भू-राजनीतिक जोखिमों, वैश्विक वृद्धि से जुड़ी अनिश्चितता तथा निधीयन जोखिम का उल्लेख वैश्विक जोखिमों के प्रमुख चालक के रूप में किया गया है। वित्तीय बाजार जोखिम में वृद्धि वित्तीय स्थितियों में सख्ती के कारण थी। संस्थागत जोखिम और सामान्य जोखिम 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बने रही, तथापि उत्तरदाताओं ने उल्लेख किया है कि क्रिप्टो आस्ति और जलवायु परिवर्तन से जोखिम बढ़ रहे हैं। समष्टि आर्थिक अनिश्चितता में कमी आई और यह 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बनी हुई है। घरेलू मुद्रास्फीति, पूंजी बहिर्वाह, राजकोषीय घाटे और राष्ट्रिक ऋण रेटिंग के जोखिम धारणा में गिरावट के परिणामस्वरूप समग्र समष्टि आर्थिक जोखिमों में कमी आई है। घरेलू समष्टि-वित्तीय स्थितियों के लिए जोखिम पैदा करने वाली वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, बाहरी क्षेत्र के की गतिविधियों का प्रभाव मध्यम रहा क्योंकि आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने इसे मध्यम प्रभाव वाला माना। लगभग सभी सर्वेक्षण उत्तरदाताओं ने वर्ष 2023 में वैश्विक मंदी की मध्यम से बहुत उच्च संभावना की उम्मीद की है।

1.141 आधे से अधिक उत्तरदाताओं के अनुसार भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में स्थिरता बरकरार है और एक वर्ष की अवधि में इसकी संभावनाओं में सुधार हुआ है। लगभग तीन-चौथाई उत्तरदाताओं को उम्मीद है कि अगले छह महीनों में बैंकिंग क्षेत्र की आस्ति गुणवत्ता में मामूली सुधार होगा या यह अपरिवर्तित रहेगी। लगभग दो-तिहाई उत्तरदाताओं ने अगले छह महीनों में आर्थिक गतिविधियों में बहाली, कॉरपोरेट्स द्वारा ऋण की बढ़ती मांग, निवेश चक्र में तेजी, व्यापारिक भावनाओं में मजबूती,

[46] विवरण अनुबंध 1 में दिया गया है।

कार्यशील पूंजी ऋणों की बढ़ती मांग, सरकार द्वारा बुनियादी क्षेत्र में उच्च सार्वजनिक निवेश और निर्यात को बढ़ावा देने वाली उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के आधार पर ऋण संभावनाओं में सुधार का अनुमान लगाया है।

1.142 पिछले कुछ वर्षों से, एसआरएस उत्तरदाताओं के प्रणालीगत जोखिमों पर गुणात्मक दृष्टिकोण ने समष्टि वित्तीय प्रणाली के बारे में जोखिम धारणाओं को मापने के लिए प्रतिनिधि दृष्टिकोण के रूप में अच्छी तरह से काम किया है (बॉक्स 1.2)।

बॉक्स 1.2: प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण और समष्टि वित्तीय रुख

रिज़र्व बैंक का द्वि-वार्षिक प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) वैश्विक और घरेलू समष्टि-वित्तीय गतिविधियों दोनों से उत्पन्न भारतीय वित्तीय प्रणाली के प्रणालीगत जोखिम के प्रमुख स्रोतों पर बाजार सहभागियों और अन्य हितधारकों की गुणात्मक धारणाओं को एकत्रित करता है। अक्टूबर-नवंबर 2011 के दौरान पहली बार शुरू किए जाने के बाद से अभी तक एसआरएस के 22 चरण संचालित किए जा चुके हैं।

प्रणालीगत जोखिमों पर एसआरएस उत्तरदाताओं के विशिष्ट दृष्टिकोण समष्टि-वित्तीय प्रणाली में दृष्टिकोण (या जोखिम धारणाओं) के लिए प्रतिनिधि दृष्टिकोण हैं और, विभिन्न एसआरएस में उनकी प्रतिक्रियाओं को एकत्रित करके, यह अभ्यास प्रासंगिक समष्टि-वित्तीय संकेतकों के सापेक्ष प्रणालीगत जोखिम संकेतकों को रखकर उनके आर्थिक महत्व का आकलन करता है।

एसआरएस प्रतिक्रियाओं में दीर्घकालिक उतार-चढ़ाव भारत में प्रणालीगत जोखिमों के बारे में उत्तरदाताओं की धारणाओं को मजबूत करने में वैश्विक आघातों की भूमिका को रेखांकित करते हैं। वैश्विक जोखिम, समष्टि-आर्थिक जोखिम और वित्तीय बाजार जोखिमों में विशेष रूप से वर्ष 2016 के बाद से मजबूत सहसंबंध और सामंजस्य है (चार्ट 1)।

अलग-अलग स्तर पर, वैश्विक और समष्टि-आर्थिक जोखिमों का योगदान कुल प्रणालीगत जोखिमों में लगभग आधा रहा। घरेलू वित्तीय बाजार की स्थितियों पर वैश्विक कारकों का बढ़ता प्रभाव वित्तीय बाजार जोखिमों और वैश्विक जोखिम (0.65 के सहसंबंध गुणांक) के बीच संचलन में बढ़ती समकालिकता में परिलक्षित होता है। कान्कॉर्डन्स इंडेक्स ऑफ डाइरैक्शन (हार्डिंग और पैगन, 2002) के आधार पर, समग्र प्रणालीगत जोखिम का समष्टि आर्थिक जोखिम (0.81) के साथ मजबूत सामंजस्य पाया गया है, इसके बाद के क्रम में वैश्विक जोखिम (0.76) और वित्तीय बाजार जोखिम (0.67) आते हैं।

कुल प्रणालीगत जोखिम, जो पांच जोखिम समूहों का औसत है, ने अन्य जोखिम संकेतकों जैसे कि इंडिया VIX और कुछ हद तक शिकागो बोर्ड ऑप्शन एक्सचेंज (सीबीओई) के अस्थिरता सूचकांक के साथ एक सकारात्मक सहसंबंध (0.53) प्रदर्शित किया जो वित्तीय बाजार की अनिश्चितता की निगरानी करने के लिए एक वैकल्पिक संकेतक के रूप

चार्ट 1: प्रणालीगत जोखिम के स्रोत

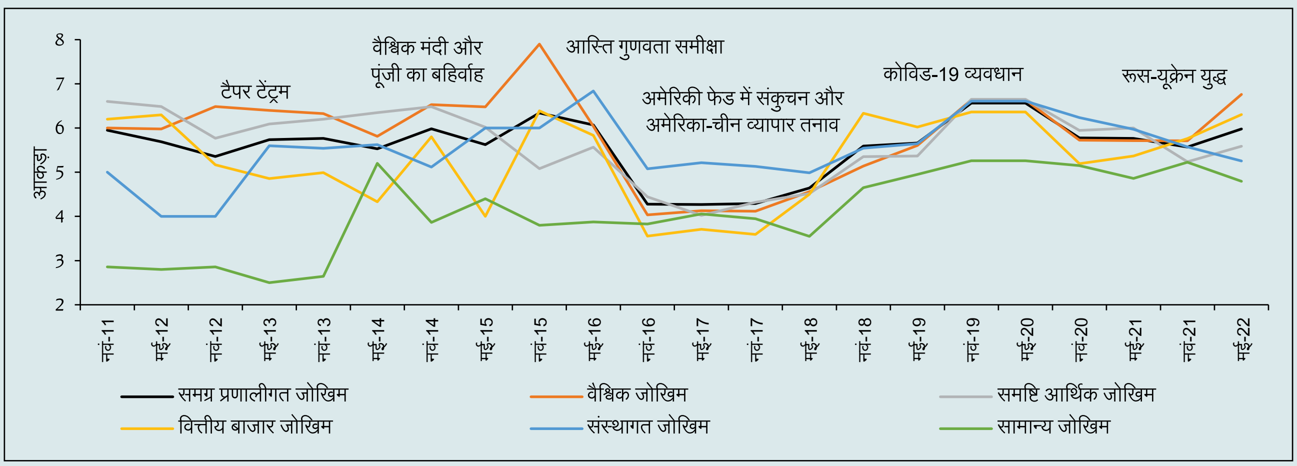

स्रोत: लेखकों द्वारा प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण डेटा के विभिन्न दौर का उपयोग करते हुए की गई गणना।

(Contd.)

[47] समरूपता की डिग्री

$C_{ij} = T^{-1}\left\{\sum_{t=1}^{T}(S_{i,t} \cdot S_{j,t}) + (1 - S_{i,t}) \cdot (1 - S_{j,t})\right\}$

जहाँ $S_{i,t}$ एक श्रृंखला है जो मूल्य एकता को लेती है जब श्रृंखला x_i विस्तारित होती है और जब यह संकुचन में होती है तो शून्य होती है। $S_{j,t}$ श्रृंखला को इसी तरह से परिभाषित किया गया है।

चार्ट-2 : प्रणालीगत जोखिम और वित्तीय संकेतक

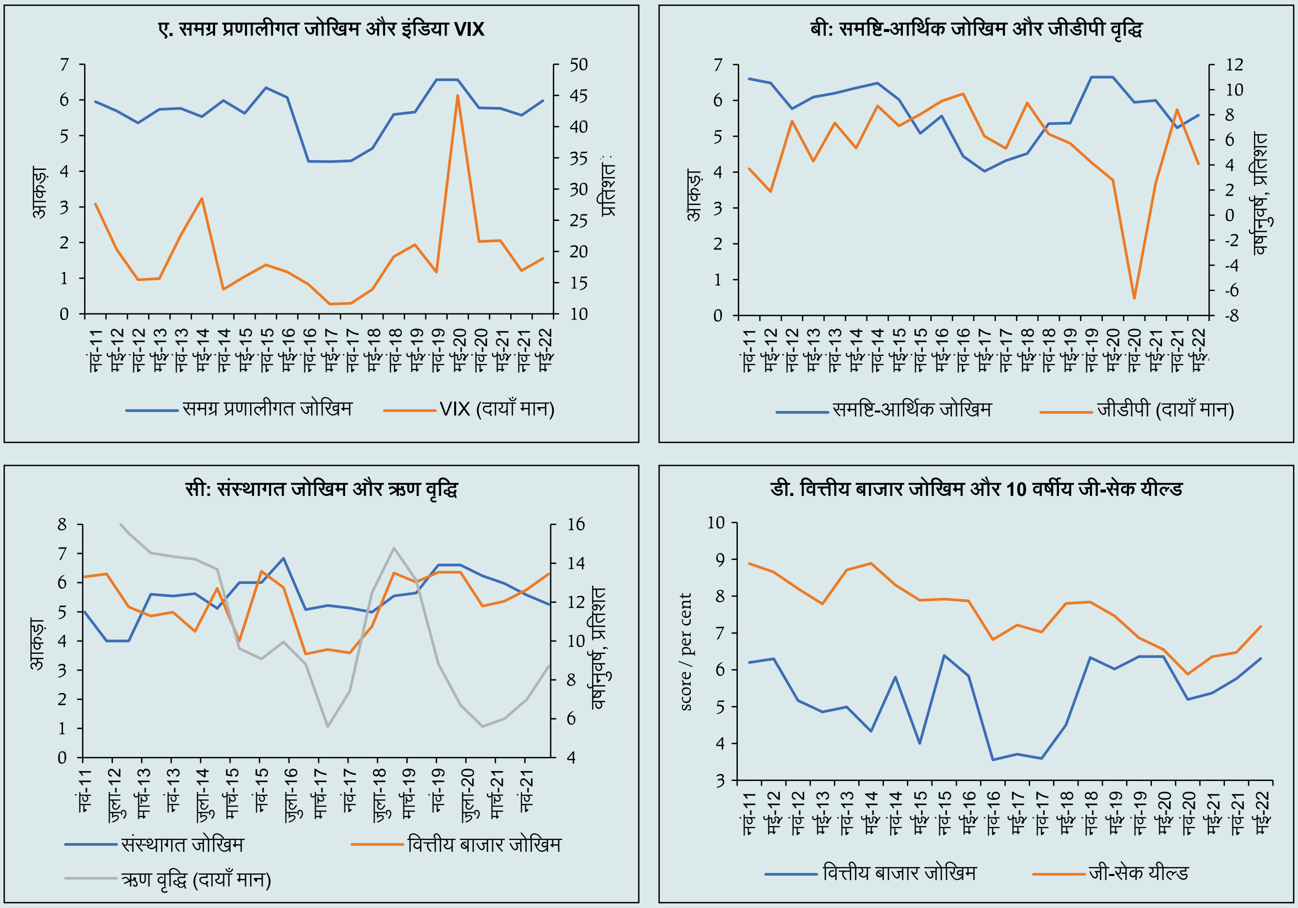

स्रोत: पिछले एसआरएस राउंड, आरबीआई और सीईआईसी डेटाबेस के सर्वेक्षण डेटा से संकलित

में इसके महत्व को दर्शाता है (चार्ट 2ए)। समष्टि-आर्थिक जोखिम का जीडीपी वृद्धि के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबद्ध (-0.37) पाया गया है (चार्ट 2बी) ।

बैंक ऋण वृद्धि 0.48 के समन्वय सूचकांक के साथ संस्थागत जोखिमों के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबद्ध (-0.55) है। बैंक ऋण वृद्धि का वित्तीय बाजार जोखिमों के साथ एक कमजोर सकारात्मक सहसंबंध और उच्च सामंजस्य (0.81) है, जो दबावग्रस्त वित्तीय बाजार स्थितियों के दौरान बैंक उधार और ऋण लिखतों के बीच प्रतिस्थापन प्रभाव के कारण हो सकता है (चार्ट 2सी)। हालांकि जी- सेक प्रतिफल और वित्तीय बाजार जोखिम धारणाओं के बीच सह संबंध कमजोर (0.06) है, फिर भी दोनों के बीच इस दिशा में सामंजस्य उच्च पाया गया है क्योंकि वे मुद्रास्फीति और वैश्विक तथा घरेलू चलनिधि स्थितियों जैसे सामान्य प्रभाव के जवाब में 81 प्रतिशत समय एक साथ चलते हैं (चार्ट 2डी)।

Z-स्कोर के माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता का आकलन किया जाता है[48]: अधिक स्कोर से तात्पर्य - चूक /दिवालियापन की कम संभावना से है तथा कम स्कोर चूक/दिवालायापन की अधिक संभावना दर्शाता है।

चार्ट 3: संस्थागत जोखिम और बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता

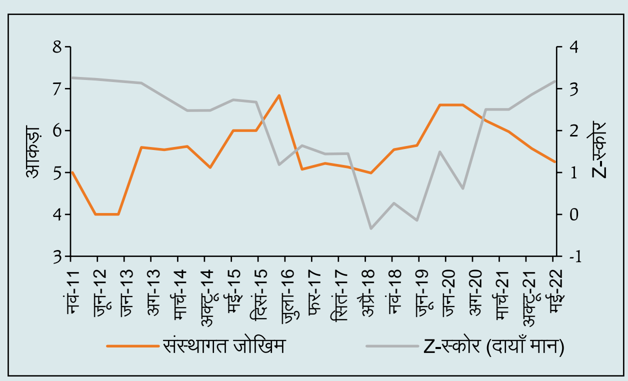

(Contd.)

[48] Z-स्कोर किसी देश की बैंकिंग प्रणाली के चूक की संभावना को दर्शाता है, जिसका अनुमान इस प्रकार लगाया जाता है- (आस्ति पर वापसी + (इक्विटी पूंजी /आस्ति)/ s.d.(आरओए); जहां, एस.डी. आस्तियों पर प्रतिलाभ का मानक विचलन है।

Z-स्कोर का संस्थागत जोखिम धारणा के साथ नकारात्मक रूप से सहसंबद्ध (-0.28) पाया गया है, जिसमें 0.43 पर समरूपता सूचकांक है (चार्ट 3)।

संक्षेप में, एसआरएस उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया इंगित करती है कि वैश्विक प्रणालीगत आघात भारत में प्रणालीगत जोखिमों के प्रमुख चालक बने हुए हैं। वैश्विक जोखिम, व्यष्टि आर्थिक जोखिम और वित्तीय बाजार जोखिम के बीच मजबूत सह-संचलन दर्ज किया गया है।

संदर्भ

1. हार्डिंग, डॉन, और एड्रियन पैगन (2002), "ए कम्पैरिसन ऑफ टू विजनेश साइकल डेटिंग मोथोड," जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक डायनेमिक्स एंड कंट्रोल: 27, 1681-690।
2. भारतीय रिजर्व बैंक: वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (विभिन्न अंक)।

सारांश और दृष्टिकोण

1.143 वित्तीय स्थिरता निहितार्थों के साथ जोखिम की प्रवृत्तियां वैश्विक अर्थव्यवस्था के निचले स्तरों की ओर झुकी हुई हैं। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाएं को और भी अधिक जोखिम का सामना कर रही हैं क्योंकि वे बढ़ती उधारी लागत, ऋण संकट, मुद्रास्फीति के ऊंचे स्तर, अस्थिर वस्तु कीमतों, मुद्रा मूल्यह्रास और पूंजी के बहिर्वाह का सामना कर रही हैं। इस चुनौतीपूर्ण माहौल में समष्टि आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने के लिए घरेलू अर्थव्यवस्था और वित्तीय प्रणाली को उन कार्यों के माध्यम से सुरक्षित करने की आवश्यकता होगी जो कमजोरियों के निर्माण को कम करते हैं और वित्तीय बाजार समायोजन को सुचारू बनाने में सहायता करते हैं।

1.144 इस चुनौतीपूर्ण वैश्विक माहौल और आने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था और घरेलू वित्तीय प्रणाली लचीली बनी हुई है। पूंजी और चलनिधि बफ़र के पर्याप्त स्तर के साथ लाभप्रदता और संपत्ति की गुणवत्ता में सुधार के आधार पर बैंकिंग प्रणाली स्थिर बनी हुई है। विवेकपूर्ण विनियमों और घरेलू आर्थिक संभावनाओं में सुधार ने गैर-बैंकिंग क्षेत्र की वित्तीय स्थिति को मजबूत किया है। वैश्विक बाजारों में बढ़ी अनिश्चितता और अस्थिरता के कारण घरेलू वित्तीय बाजार अस्थिर बने हुए हैं। मौजूदा माहौल में समष्टि-आर्थिक और वित्तीय स्थिरता को बनाए रखना आर्थिक बहाली को प्रोत्साहित करने, वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने और भारत की दीर्घकालिक क्षमता को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण है।

अध्याय II

वित्तीय संस्थान: सुदृढ़ता और आघात सहनीयता

भारतीय वित्तीय क्षेत्र बैंकिंग क्षेत्र के तुलन-पत्र के सुदृढ़ीकरण, खराब ऋणों में सतत कमी और जोखिम को अवशोषित करने की क्षमता के कारण आघात-सह बना हुआ है। समष्टि दबाव परीक्षणों से संकेत मिलता है कि सभी बैंक गंभीर तनाव की स्थिति में भी विनियामकीय न्यूनतम पूंजी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे। दबाव परीक्षणों से संकेत मिलता है कि कुछ गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां चलनिधि के आघात की चपेट में आ सकती हैं। संक्रामक जोखिम और उसके फलस्वरूप शोधन क्षमता को होने वाला अतिरिक्त नुकसान सीमित रह सकता है।

परिचय

2.1 महामारी की शुरुआत के बाद से बैंकों को अवलंब प्रदान करने के लिए किए गए विनियामकीय उपायों और उनके पूंजी आधार को बढ़ाने तथा गैर-निष्पादित ऋणों को कम करने के लिए बैंकों द्वारा किए गए अपने प्रयासों के संयुक्त प्रभाव से ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी तुलन-पत्र मजबूत हुई हैं। वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही के बाद से शुरू हुए नए ऋण चक्र ने वर्ष 2022-23 की प्रथम छमाही के दौरान और अधिक गति पकड़ी जिसके फलस्वरूप क्रेडिट वृद्धि दोहरे अंकों में पहुंच गई और यह वृद्धि व्यापक रूप से सभी क्षेत्रों में रही। ऋण बहियों के कणीय विश्लेषण और आस्ति हानि में कमी के द्वारा बैंकों ने बड़े उधारकर्ताओं के लिए अपने ऋण जोखिम का अच्छी तरह से प्रबंधन किया है।

2.2 यह अध्याय प्रमुख मापदंडों पर वित्तीय मध्यस्थों के हाल के प्रदर्शन का विश्लेषण करके भारत में उनकी मजबूती और आघात सहनीयता का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। खंड II.1 विभिन्न व्यवसायों के समुच्चय, आस्ति गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता, कमाई और एससीबी की लाभप्रदता का आकलन प्रस्तुत करता है और दबाव परीक्षणों और संवेदनशीलता विश्लेषण के माध्यम से व्यापक आर्थिक आघातों के विरुद्ध उनकी लचीलेपन का मूल्यांकन करता है। खंड II.2 और II.3 क्रमशः शहरी सहकारी बैंकों (यूसीबी) और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) के हाल के वित्तीय प्रदर्शन की जांच करते हैं, और उनकी आघात सहनीयता का परीक्षण करते हैं। खंड II.4, II.5 और II.6 क्रमशः बीमा, म्युचुअल फंड और समाशोधन निगम की सुदृढ़ता और आघात सहनीयता के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। समापन खंड II.7 भारतीय वित्तीय प्रणाली की नेटवर्क संरचना और सहबद्धता (कनेक्टिविटी) का विस्तृत विश्लेषण प्रदान करता है और प्रतिकूल परिदृश्य में संक्रमण विश्लेषण के परिणाम प्रस्तुत करता है।

II.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी)[1 2]

2.3 सकल जमाराशियों में कुछ नरमी दर्ज की गई, जो 16 दिसंबर, 2022 को 9.4 प्रतिशत की दर से बढ़ रही थी। चालू खाता और बचत खाता (कासा) की वृद्धि में नरमी आई जबकि सावधि जमाओं ने बढ़ती ब्याज दरों के चलते बढ़त दर्ज की (चार्ट 2.1 ए और बी)।

2.4 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष), जिसने वर्ष 2021-22 की दूसरी छमाही के दौरान गति पकड़ना शुरू किया था, ने अपनी गति को बनाए रखा और 16 दिसंबर, 2022 को इसने 17.4 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि के उच्च स्तर को छू लिया जो पहले वर्ष 2011 के दौरान देखा गया था। यह वृद्धि भौगोलिक क्षेत्रों, आर्थिक क्षेत्रों, जनसंख्या समूहों, संगठनों, खातों के प्रकारों और बैंक समूहों में व्यापक रूप से परिलक्षित हुई (सारणी 2.1 ए और बी)।

2.5 पीवीबी ने पीएसबी की तुलना में बहुत अधिक ऋण वृद्धि दर्ज करना जारी रखा (चार्ट 2.1 सी)। कुल अग्रिमों में सेवाओं और वैयक्तिक ऋणों[3] की हिस्सेदारी बढ़ी (चार्ट 2.1 डी) और

[1] विश्लेषण मुख्य रूप से पर्यवेक्षी विवरणियों पर आधारित होते हैं, जिसमें बड़े उधारकर्ताओं के डेटा के मामले को छोड़कर, जो बैंकों के वैश्विक परिचालनों पर आधारित होते हैं, केवल एससीबी के घरेलू परिचालनों को शामिल किया जाता है। एससीबी में सरकारी क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक और विदेशी बैंक शामिल हैं। सीआरएआर अनुमानों के लिए क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (आरआरबी) और सहकारी बैंकों को छोड़कर, 46 एससीबी के एक नमूने पर विचार किया गया है, जो कुल बैंकिंग क्षेत्र (गैर-आरआरबी) की आस्तियों का लगभग 98 प्रतिशत है।

[2] अध्याय में किए गए विश्लेषण 24 नवंबर, 2022 तक उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित हैं जो अनंतिम हैं।

[3] वैयक्तिक ऋण, व्यक्तियों को दिए गए ऋण हैं और इसमें (ए) उपभोक्ता ऋण (बी) शिक्षा ऋण (सी) अचल संपत्ति (जैसे आवास, आदि) बनाने/बढ़ाने के लिए दिए गए ऋण और (डी) वित्तीय आस्तियों में निवेश के लिए दिए गए ऋण संपत्ति (शेयर, डिबेंचर, आदि) शामिल हैं।

चार्ट 2.1 : एससीबी के जमा और ऋण प्रोफाइल

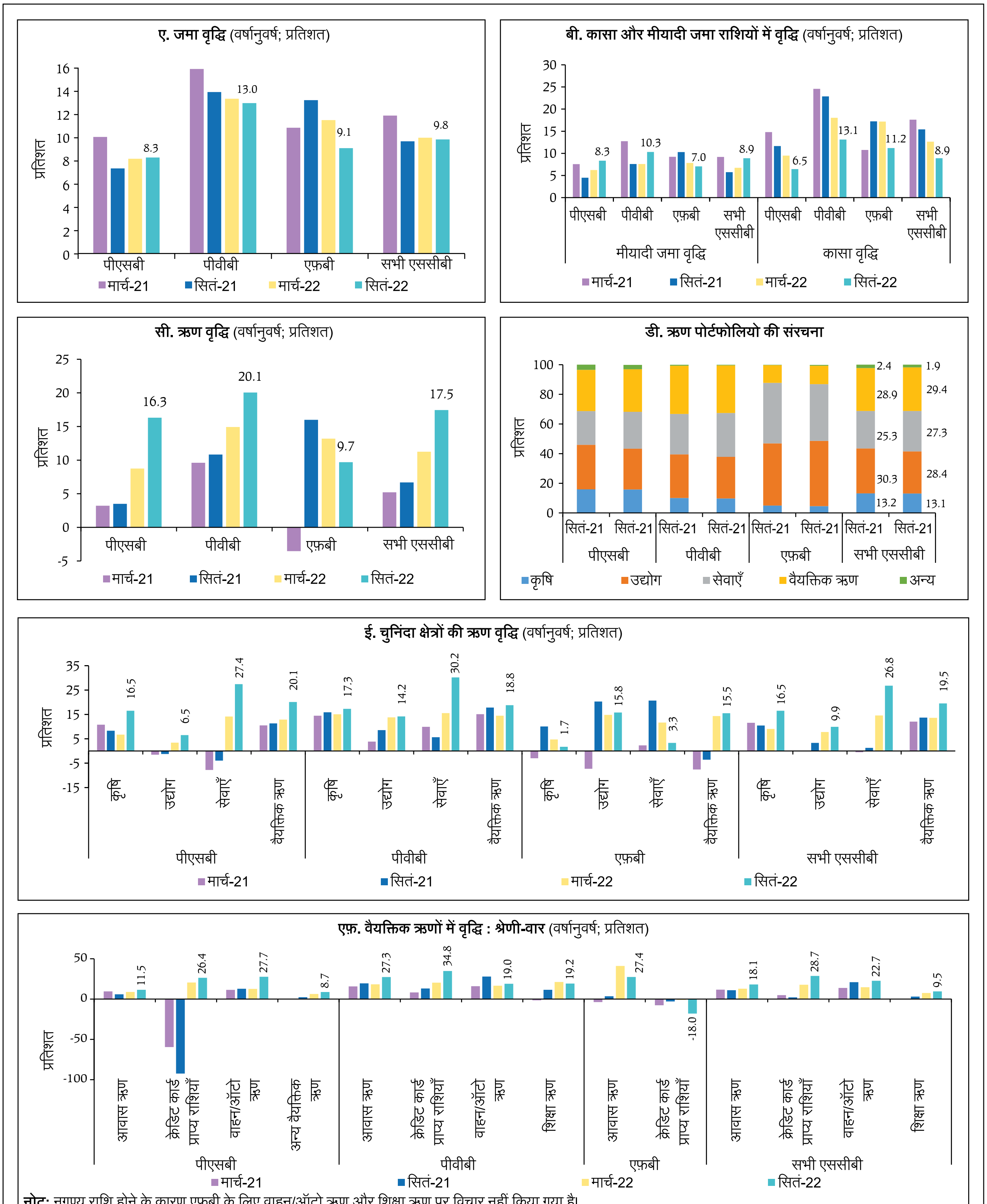

नोट: नगण्य राशि होने के कारण एफ़बी के लिए वाहन/ऑटो ऋण और शिक्षा ऋण पर विचार नहीं किया गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

सारणी 2.1 ए: ऋण हिस्सेदारी और वृद्धि* - सितंबर 2022

(प्रतिशत)

क्षेत्र		कुल ऋण में हिस्सेदारी	ऋण वृद्धि (वर्षानुवर्ष)
संगठनात्मक क्षेत्र	सार्वजनिक क्षेत्र	16.7	15.6
	निजी कॉर्पोरेट्स	26.3	14.7
	हाउसहोल्ड - वैयक्तिक	44.4	19.6
	हाउसहोल्ड - अन्य	10.1	18.0
	अन्य सेक्टर	2.5	52.0
खाता प्रकार	कार्यशील पूंजी ऋण	32.7	16.5
	सावधि ऋण	64.0	19.5
	अन्य प्रकार के ऋण	3.3	7.0
जनसंख्या समूह	ग्रामीण	7.6	12.8
	अर्ध शहरी	13.2	17.5
	शहरी	16.8	20.3
	महानगर	62.4	18.2
भौगोलिक क्षेत्र	उत्तरी	21.2	14.8
	पूर्वोत्तर	1.1	17.4
	पूर्वी	7.1	17.7
	मध्य भाग	8.9	19.7
	पश्चिमी	33.2	22.1
	दक्षिणी	28.5	15.6

नोट: *क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को छोड़कर

स्रोत: मूलभूत सांख्यिकीय विवरणियाँ- 1 और स्टाफ गणना

सारणी 2.1 बी: एससीबी द्वारा प्रदत्त नए ऋणों में वृद्धि : आर्थिक क्षेत्र, संगठन और खाता प्रकार *

(प्रतिशत)

क्षेत्र	ति2: 2021-22	ति3: 2021-22	ति4: 2021-22	ति1: 2022-23	ति2: 2022-23
	वृद्धि (वर्षानुवर्ष)				
आर्थिक क्षेत्र वार संगठन वार					
कृषि	5.7	22.4	26.3	68.3	26.8
उद्योग	5.6	19.6	13.6	22.5	27.9
सेवाएँ	3.3	20.0	15.7	49.9	34.8
वैयक्तिक ऋण	36.8	17.5	23.2	83.9	27.5
संगठन वार					
सार्वजनिक क्षेत्र	-0.1	23.8	18.5	44.7	36.9
निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र	12.2	17.4	14.6	29.3	25.6
हाउसहोल्ड क्षेत्र	17.7	19.4	20.6	77.9	27.2
जिनमें से: व्यक्ति	26.7	18.4	20.2	80.3	26.2
अन्य	-9.0	36.0	54.8	50.2	103.0
खाते वार प्रकार					
कार्यशील पूंजी ऋण	4.3	18.8	15.9	43.9	31.6
सावधि ऋण	14.0	20.2	23.5	69.0	35.3
अन्य प्रकार के ऋण	33.9	24.6	3.2	8.3	0.0
कुल नए ऋण	**11.2**	**20.0**	**18.4**	**49.3**	**30.1**
कुल ऋणों में नए ऋणों का हिस्सा (प्रतिशत)	**15.1**	**16.8**	**17.9**	**15.2**	**16.6**

नोट: *क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को छोड़कर

स्रोत: मूलभूत सांख्यिकीय विवरणियाँ- 1 और स्टाफ गणना

यह कृषि और उद्योग अग्रिमों में ऋण वृद्धि से आगे निकल गई (चार्ट 2.1 ई)। वैयक्तिक ऋण खंड में क्रेडिट कार्ड प्राप्तियों और वाहन/ऑटो ऋणों में 20 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि के साथ व्यापक क्रेडिट वृद्धि देखने को मिली (चार्ट 2.1 एफ)।

II.1.1 आस्ति गुणवत्ता

2.6 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के जीएनपीए[4] अनुपात में गिरावट जारी रही और सितंबर 2022 में यह सात साल के न्यूनतम स्तर अर्थात 5.0 प्रतिशत पर पहुंच गई। निवल अनर्जक आस्तियां (एनएनपीए)[5] अनुपात 1.3 प्रतिशत के दस साल के अपने सबसे निचले स्तर पर था, वहीं पीवीबी का एनएनपीए अनुपात 1 प्रतिशत के नीचे गिर गया (चार्ट 2.2 ए और बी)। तिमाही गिरावट अनुपात, जो दिसंबर 2021 से बढ़ रहा था, वर्ष 2022-23 की दूसरी तिमाही के दौरान सामान्य हो गया, जिसमें पीएसबी द्वारा काफी सुधार दर्ज किया गया (चार्ट 2.2 सी)। मार्च 2021 से प्रावधानीकरण कवरेज अनुपात (पीसीआर)[6] लगातार बढ़ रहा है और सितंबर 2022 में 71.5 प्रतिशत तक पहुंच गया। पीवीबी और एफबी के पीसीआर बढ़कर 75 प्रतिशत से अधिक हो गए (चार्ट 2.2 डी)। इस बीच, लगातार दो वर्षों तक गिरावट के बाद वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान बट्टे खाते और जीएनपीए के अनुपात[7] में वार्षिक आधार पर वृद्धि हुई (चार्ट 2.2 ई)।

[4] जीएनपीए अनुपात सकल ऋण और अग्रिमों में सकल गैर-निष्पादित आस्तियों का अनुपात है।

[5] एनएनपीए अनुपात निवल ऋण और अग्रिमों में निवल गैर-निष्पादित आस्तियों का अनुपात है।

[6] पीसीआर, जीएनपीए और जीएनपीए के लिए रखे गए प्रावधानों (राइट-ऑफ के बिना) का अनुपात है।

[7] बट्टा-खाता अनुपात, वर्ष के दौरान बट्टा-खाता और वर्ष की शुरुआत में जीएनपीए का अनुपात है।

चार्ट 2.2 : चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक

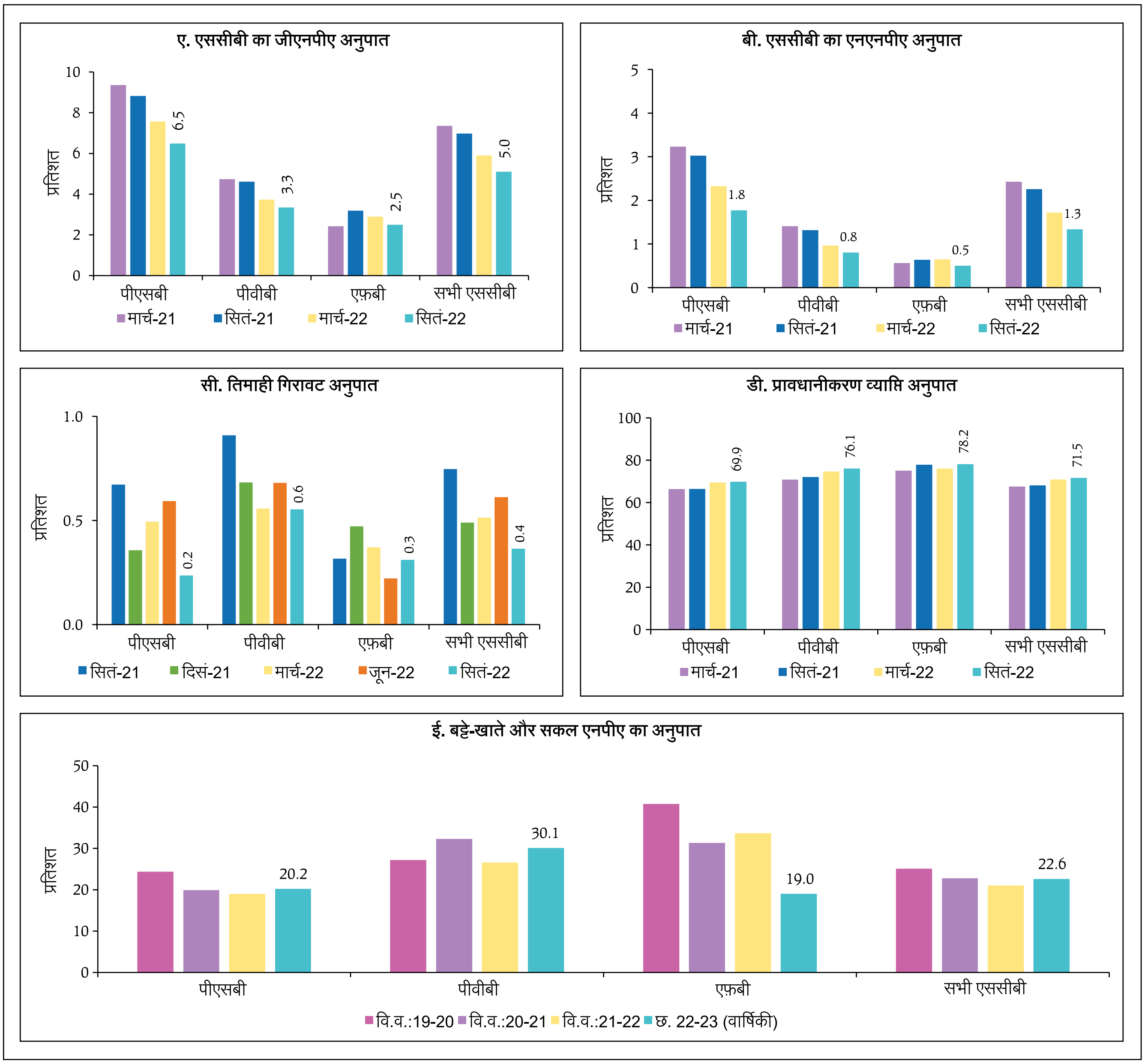

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

II.I.2 क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता

2.7 अधिकांश क्षेत्रों में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार जारी रहा (चार्ट 2.3 ए)। औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में जीएनपीए अनुपात में सुधार भी जारी रहा, हालांकि यह रत्न और आभूषण और निर्माण उप-क्षेत्रों के लिए अपेक्षाकृत उच्च रहा (चार्ट 2.3 बी)। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान वैयक्तिक ऋण खंड की आस्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ, विशेष रूप से आवास और वाहन ऋण में (चार्ट 2.3 सी)।

चार्ट 2.3 : क्षेत्रगत आस्ति गुणवत्ता संकेतक

ए. क्षेत्र-वार जीएनपीए अनुपात और दबाव-ग्रस्त अग्रिम अनुपात

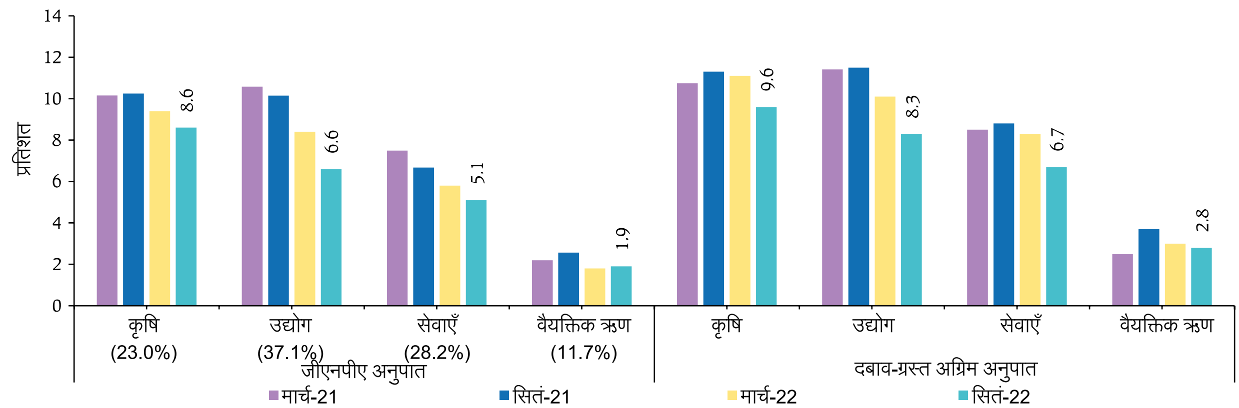

नोट: लेजेंड के साथ कोष्ठकों में दिये गए आंकड़े सितंबर -22 तक एससीबी के कुल जीएनपीए में संबंधित क्षेत्र के जीएनपीए के हिस्से हैं; दबावग्रस्त अग्रिम: सकल गैर-निष्पादित ऋण और पुनर्रचित मानक अग्रिमों को संदर्भित करता है।

बी. औद्योगिक उप-क्षेत्रों के जीएनपीए अनुपात

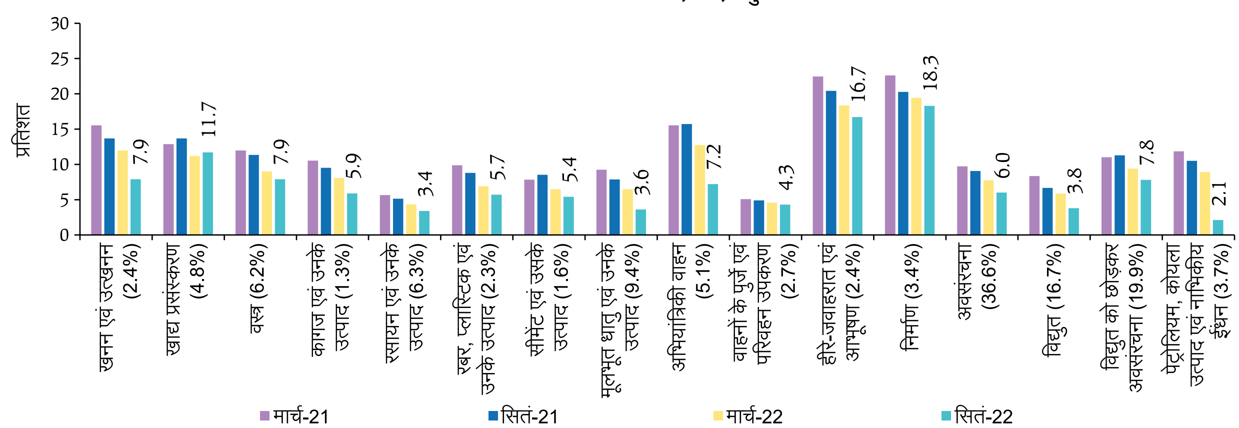

नोट: लेजेंड के साथ कोष्ठकों में दिये गए आंकड़े उद्योग को प्रदत्त कुल ऋण में संबन्धित उप-क्षेत्र के ऋण के हिस्से हैं।

सी. श्रेणीवार वैयक्तिक ऋणों का अनुपात

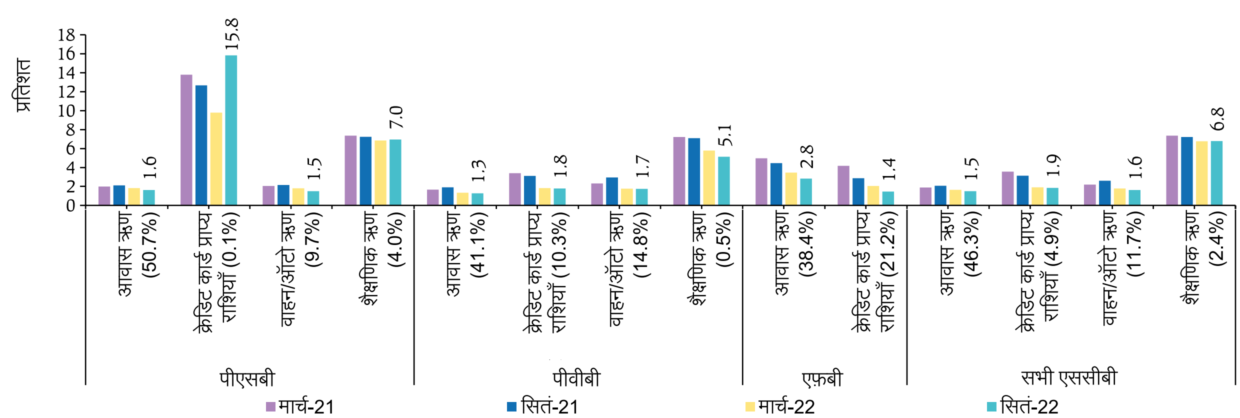

नोट: लेजेंड के साथ कोष्ठकों में दी गई संख्याएं वैयक्तिक ऋणों के कुल ऋण में संबंधित उप-क्षेत्र के ऋण की हिस्सेदारी है; शेष हिस्सेदारी अन्य वैयक्तिक ऋणों से संबंधित है; नगण्य राशि होने के कारण एफ़बी के लिए वाहन/ऑटो ऋण और शिक्षा ऋण को शामिल नहीं किया गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

II.1.3 बड़े उधारकर्ताओं की ऋण गुणवत्ता[8]

2.8 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के सकल अग्रिमों में बड़े उधारकर्ताओं की हिस्सेदारी घट रही है और कुल जीएनपीए में उनका हिस्सा दो साल पहले के 75.6 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2022 में 62.2 प्रतिशत हो गया है (चार्ट 2.4 ए)। बड़े उधारकर्ताओं के जीएनपीए अनुपात में सुधार जारी है और सितंबर 2022 में यह 6.4 प्रतिशत रहा, जो मार्च 2021 में 10 प्रतिशत से अधिक था (चार्ट 2.4 बी)। वर्ष 2022-23 की पहली

चार्ट 2.4 : बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा आस्ति गुणवत्ता संकेतक

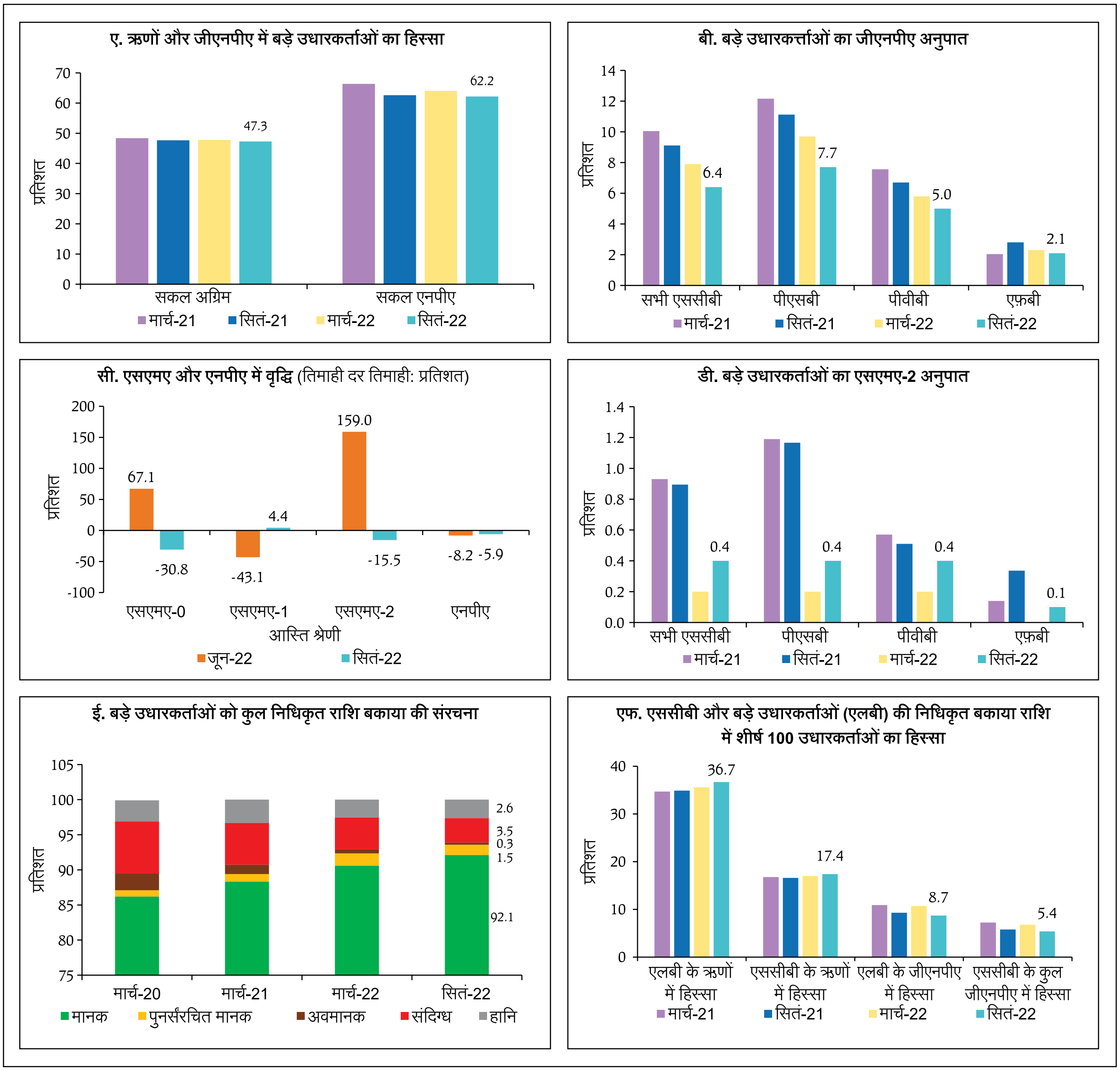

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

[8] ₹5 करोड़ और उससे अधिक का सकल निधि-आधारित और गैर-निधि-आधारित एक्सपोज़र वाले उधारकर्ता को बड़े उधारकर्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विश्लेषण एससीबी के वैश्विक परिचालन पर आधारित है।

तिमाही के दौरान बड़े उधारकर्ताओं के एसएमए-0 और एसएमए-2[9] ऋण में वृद्धि हुई थी, लेकिन नवीनतम तिमाही में इसमें नरमी आई, जिससे नई गिरावट पर अंकुश लगा (चार्ट 2.4 सी)। एसएमए-2 अनुपात में कुछ वृद्धि दर्ज की गई लेकिन सितंबर 2022 में यह 0.4 प्रतिशत पर बना रहा (चार्ट 2.4 डी)। बड़े उधारकर्ता खातों में, कुल बकाया राशि में मानक आस्ति का अनुपात मार्च 2020 में 86.2 प्रतिशत से काफी बढ़कर सितंबर 2022 में 92.1 प्रतिशत हो गया और एनपीए में गिरावट आई। जबकि मार्च 2020 से मार्च 2022 तक पुनर्संरचित मानक अग्रिमों में वृद्धि हुई थी, वही 2022-23 की पहली छमाही के दौरान यह कम हुआ है (चार्ट 2.4 ई)।

2.9 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल ऋण बहियों में शीर्ष 100 बड़े उधारकर्ताओं के हिस्से में बढ़ोतरी जारी रही और यह सितंबर 2022 में 17.4 प्रतिशत रही, जो कि बड़े कॉर्पोरेट द्वारा नए ऋण लिए जाने का संकेत है। शीर्ष 100 उधारकर्ताओं की आस्ति गुणवत्ता में भी काफी सुधार हुआ, क्योंकि एससीबी की जीएनपीए में उनकी हिस्सेदारी मार्च 2022 के 6.8 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2022 में 5.4 प्रतिशत हो गई (चार्ट 2.4 एफ)।

II.1.4. पूंजी पर्याप्तता

2.10 वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान ऋण प्रदान करने संबंधी गतिविधि में तेजी आई, जिसके परिणामस्वरूप जोखिम भारित आस्तियों (आरडब्ल्यूए) में वृद्धि होने कारण अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के पूंजी - जोखिम भारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर) में मार्च 2022 के स्तर से 77 आधार अंक की गिरावट आई (चार्ट 2.5 ए)। प्रणाली स्तरीय टियर-1 लीवरेज अनुपात[10] स्थिर रहा (चार्ट 2.5 बी)।

II.1.5 आय और लाभप्रदता

2.11 प्रणालीगत स्तर पर, निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम) में सितंबर 2021 और सितंबर 2022 के बीच 20 आधार अंकों का सुधार देखा गया, जो बढ़ती ब्याज दर परिदृश्य में जमा दरों की तुलना में ऋण दरों में वृद्धि की तेज दर और साथ ही ऋण

चार्ट 2.5 : पूंजी पर्याप्तता

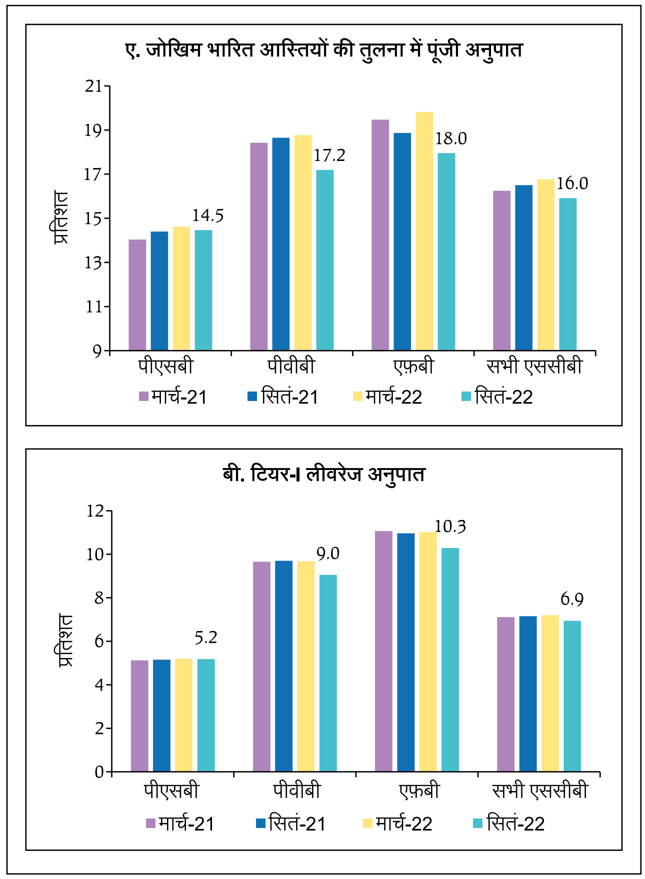

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

[9] क) नकद ऋण/ ओवरड्राफ्ट जैसी परिक्रामी सुविधाओं की प्रकृति में ऋण: यदि बकाया राशि लगातार स्वीकृत सीमा या आहरण शक्ति , जो भी कम हो, से अधिक रहती है तो खाते को 31-60 दिनों की अवधि के लिए - एसएमए-1; 61-90 दिन- एसएमए-2 में रखा जाएगा।

ख) परिक्रामी सुविधाओं के अलावा अन्य ऋण: यदि मूलधन या ब्याज भुगतान या कोई अन्य राशि पूर्ण या आंशिक रूप से 30 दिनों तक बकाया रहती है तो खाते को एसएमए-0; 31-60 दिन बकाया रहे तो एसएमए-1; 61-90 दिन बकाया रहे तो एसएमए-2 में गिना जाएगा।

[10] टियर-I लीवरेज अनुपात, कुल जोखिम के प्रति टियर-I पूंजी- का अनुपात है।

लागत में कमी को दर्शाता है (चार्ट 2.6 ए)। निवल ब्याज आय (एनआईआई) में सशक्त वृद्धि और प्रावधानों में उल्लेखनीय कमी के कारण सितंबर 2022 में कर पश्चात लाभ (पीएटी) 40.7 प्रतिशत बढ़ा। सितंबर 2022 को समाप्त तिमाही के लिए, पीवीबी के पीएटी में 60.7 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई क्योंकि एनआईआई ने दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की और प्रावधान लगभग आधा हो गया (चार्ट 2.6 बी)।

2.12 इक्विटी पर प्रतिफल (आरओई) और आस्तियों पर प्रतिफल (आरओए) में सुधार जारी रहा और यह सितंबर 2022 में क्रमशः 11.2 प्रतिशत और 1.0 प्रतिशत तक पहुंच गया (चार्ट 2.6 सी और डी)। पिछले दो वर्षों में लगातार गिरावट के बाद, निधि की लागत में वृद्धि हुई और आस्तियों पर प्रतिफल में सुधार हुआ (चार्ट 2.6 ई और एफ)। भारत में बैंकों की लाभप्रदता

चार्ट 2.6 : एससीबी के चुनिंदा कार्यनिष्पादन संकेतक

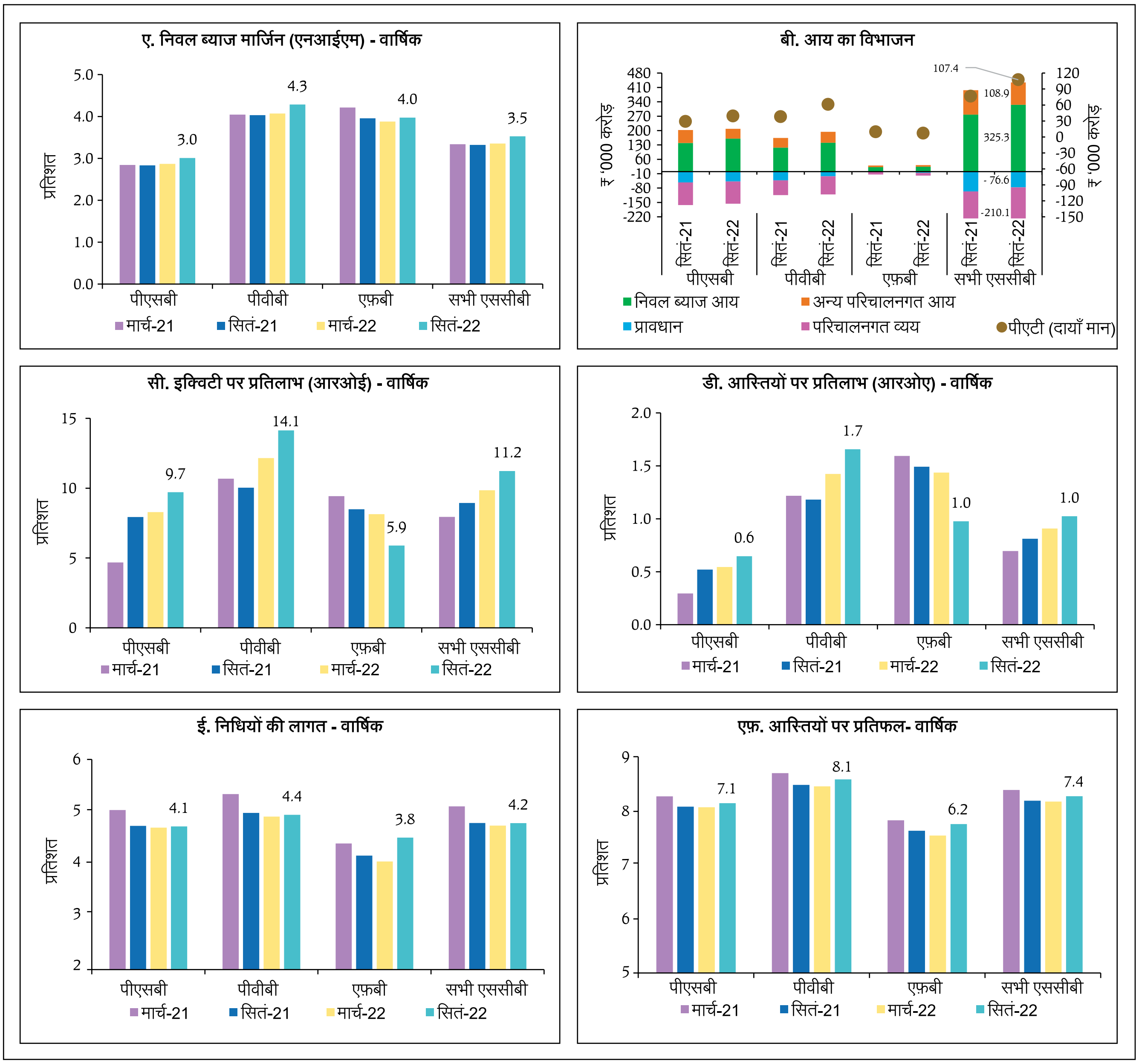

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

पर बढ़ती सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल के प्रभाव के विश्लेषण से पता चलता है कि वित्तीय मध्यस्थता चैनल, बैंकों को ब्याज दर के वृद्धि चक्र (बॉक्स 2.1) के दौरान भी उच्च लाभ प्राप्त करने में मदद करता है।

बॉक्स 2.1: गिल्ट मूल्यांकन और बैंक-लाभप्रदता

खज़ाना बिल (टी-बिल) और राज्य विकास ऋण (एसडीएल) सहित सरकारी प्रतिभूति (जी-सेक), सितंबर 2022 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के निवेश पोर्टफोलियो का 81 प्रतिशत था (चार्ट 1)। ऐतिहासिक रूप से, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) ने निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) की तुलना में सरकारी प्रतिभूति में उच्च निवेश बनाए रखा है।

चार्ट 1: सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) प्रतिभूतियों में निवेश
(कुल निवेश के प्रतिशत के रूप में)

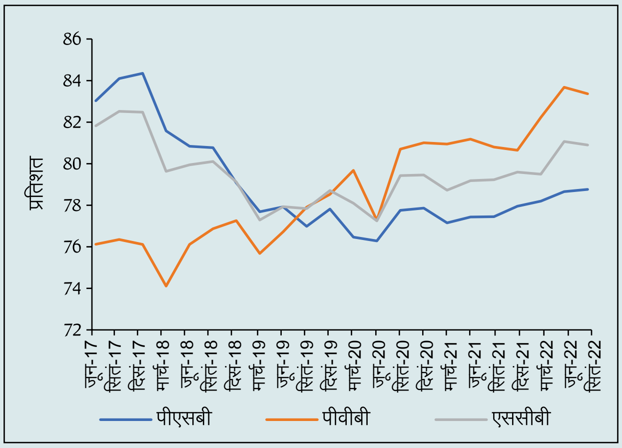

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

एक सख्त मौद्रिक नीति चक्र में, मूल्यन घाटे के कारण बढ़ते प्रतिफल के कारण ट्रेडिंग आय प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। वास्तव में, पिछले पांच वर्षों के दौरान बैंकों की ट्रेडिंग आय में भारी उतार-चढ़ाव दर्ज किया गया है (चार्ट 2)।

चार्ट 2: बैंकों के अर्जन और सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल के घटक

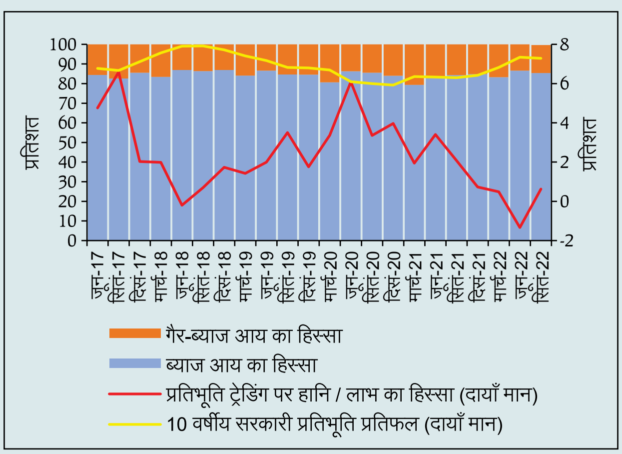

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

प्रतिफल में उतार-चढ़ाव का बैंकों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर होता है और यह बैंकों द्वारा व्युत्पन्नियों (डेरिवेटिव्स) के माध्यम से अपनी ट्रेडिंग बुक में ब्याज दर जोखिम का बचाव करने के लिए जोखिम प्रबंधन तकनीकों के उपयोग पर भी निर्भर करता है। प्रतिफल वक्र के ढलान[11] से बैंकों का निवल ब्याज मार्जिन (एनआईएम) भी प्रभावित होता है – एक तीव्र ढलान (स्लोप) का अर्थ है बैंकों के लिए बड़ा मार्जिन और उच्च मुनाफा होगा। प्रतिफल वक्र का स्तर और ढलान, एनआईएम और ट्रेडिंग आय को विपरीत दिशा में प्रभावित करता है, जो कि ब्याज दर जोखिम का बचाव करने वाले बैंकों के अनुरूप है। (एलेसेंड्री और नेल्सन. 2015; बोरियो और अन्य, 2017)।

भारत में बैंक-लाभप्रदता पर बढ़ते प्रतिफल के प्रभाव का आकलन करने के लिए, वर्ष 2015-16 की पहली तिमाही से वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही तक की अवधि के लिए 42 बैंकों (पीएसबी और

सारणी 1: पैनल रिग्रेशन – सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल और बैंक लाभप्रदता

	ट्रेडिंग आय / कुल आय	एनआईएम	परिचालन लाभ/कुल संपत्ति
1	2	3	4
एनआईएम (-1)		0.487*** (0.019)	
टी-बिल (-1)	-1.015*** (0.137)	0.019** (0.009)	0.013*** (0.004)
ढलान (-1)	-1.968*** (0.178)	0.015 (0.014)	
जीएनपीए अनुपात		-0.008*** (0.002)	-0.004*** (0.001)
कासा/कुल जमा		0.008*** (0.002)	0.003*** (0.001)
लागत-आय अनुपात		-0.004*** (0.001)	-0.009*** (0.001)
स्प्रैड		0.396*** (0.016)	0.013*** (0.001)
तरल संपत्ति / कुल संपत्ति		-0.007*** (0.002)	-0.002 (0.001)
सीपीआई मुद्रास्फीति	-0.017 (0.057)	0.012*** (0.004)	0.003 (0.002)
लीवरेज़ अनुपात	0.223** (0.106)		0.009** (0.004)
कोविड डमी	1.171*** (0.275)		-0.004 (0.011)
विलय डमी		0.198*** (0.054)	0.057*** (0.008)
स्थिर	9.314*** (1.297)	0.433*** (0.116)	0.462*** (0.079)
अवलोकन	880	1,122	880
बैंक की संख्या	42	42	42
आर- स्क्वेयर्ड	0.164	0.818	0.544
बैंक निश्चित प्रभाव	हाँ	हाँ	हाँ

नोट: कोष्ठकों में मानक त्रुटियाँ
*** पी <0.01, ** पी <0.05, * पी <0.1

(Contd.)

[11] समान प्रकार की प्रतिभूति के दीर्घावधि प्रतिफल और अल्पावधि प्रतिफल में अंतर।

पीवीबी) को कवर करने वाले एक निश्चित प्रभाव पैनल डेटा रिग्रेशन मॉडल का उपयोग किया गया था (सारणी 1)। अल्पावधि प्रतिफल और प्रतिफल वक्र के ढलान का ट्रेडिंग आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जो बैंकों के बॉन्ड संविभाग में बाजार मूल्य के अनुसार हानि को दर्शाता है, लेकिन एनआईएम पर प्रभाव सकारात्मक है। कुल मिलाकर, यह पाया गया है कि ब्याज आय और अन्य गैर-ब्याज आय (जैसे शुल्क और कमीशन, हामीदारी, विदेशी मुद्रा संचालन से आय), बढ़ती ब्याज दर परिदृश्य में आंशिक रूप से खजाने घाटे को समायोजित कर सकते हैं।

नरम ब्याज दर चक्र दौरान निवेश की बिक्री पर प्राप्त लाभ का अंतरण करके बनाए गए निवेश उतार-चढ़ाव रिज़र्व (आईएफआर) जैसे प्रतिचक्रीय समष्टि-विवेकपूर्ण उपकरण, सख्ती के दौर में आघात अवशोषक के रूप में कार्य करते हैं। आईएफआर दिशानिर्देशों को अप्रैल 2018 में संशोधित किया गया था, जिसके तहत बैंकों को निवेश की बिक्री पर निवल लाभ को आईएफआर में अंतरित करने हेतु सूचित किया गया था, जब तक कि यह ट्रेडिंग के लिए रखा गए (एचएफटी) और बिक्री के लिए उपलब्ध (एएफएस) पोर्टफोलियो के कम से कम दो प्रतिशत और जहां संभव हो, तक नहीं पहुंच जाता, इसे तीन साल की अवधि के भीतर हासिल किया जाना चाहिए। मार्च 2022 में बैंकिंग प्रणाली का आईएफआर, एचएफटी + एएफएस पोर्टफोलियो के 2.2 प्रतिशत तक पहुंच गया (चार्ट 3) । इससे बैंकों को 2022-23 की पहली तिमाही में सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल में वृद्धि से जुड़े नुकसान और परिणामी ट्रेजरी नुकसान, जो उनके परिचालन लाभ के 4.9 प्रतिशत के बराबर है, को अवशोषित करने में मदद मिली है। हालांकि, बैंकों ने 2022-23 की दूसरी तिमाही में सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल के स्थिर होने के कारण परिचालन लाभ के 2.1 प्रतिशत के बराबर सकारात्मक ट्रेडिंग आय दर्ज की।

चार्ट 3: आईएफआर और ट्रेजरी लाभ: एससीबी

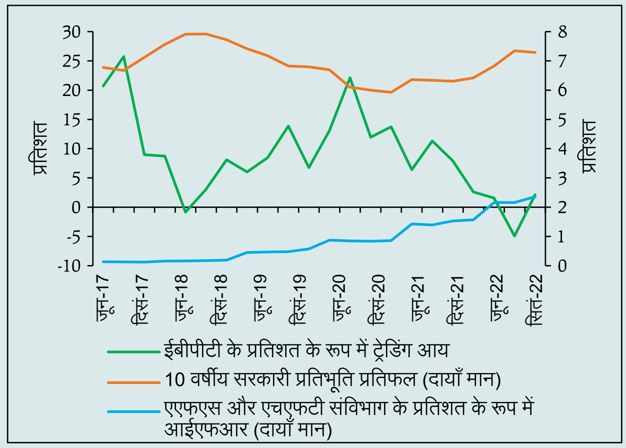

नोट: ईबीपीटी- प्रावधान और करों से पूर्व अर्जन।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

केंद्रीय बैंक मौद्रिक स्थितियों को सख्त करके उच्च मुद्रास्फीति का सामना कर रहे हैं, जिससे बैंकों को सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है, लेकिन प्रतिचक्रीय आईएफआर से उनके निवेश संविभाग में मूल्यन हानि के प्रति बफर प्रदान करने की आशा है।

संदर्भ

1. पी एलेसेंड्री और बीडी नेल्सन (2015), सरल बैंकिंग: लाभप्रदता और प्रतिफल वक्र, जर्नल ऑफ मनी, क्रेडिट एंड बैंकिंग, 47(1), 143-175।
2. सी. बोरियो , एल. गैंबाकोर्टा और बी. हॉफमैन (2017)। बैंक लाभप्रदता पर मौद्रिक नीति का प्रभाव। अंतर्राष्ट्रीय वित्त, 20(1): 48-63।

II.1.6 आघातसहनीयता- समष्टि दबाव परीक्षण

2.13 समष्टि आर्थिक वातावरण जन्य अप्रत्याशित आघातों के लिए एससीबी की तुलन पत्रों की आघातसहनीयता का मूल्यांकन करने के लिए समष्टि-दबाव परीक्षण किए जाते हैं। ये परीक्षण बेसलाइन और दो प्रतिकूल[12] (मध्यम और गंभीर) परिदृश्यों के तहत एक वर्ष के आधार पर पूंजी अनुपात का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं। बेसलाइन परिदृश्य, समष्टि चरों के पूर्वानुमानित मूल्यों से लिया गया है। मध्यम और गंभीर प्रतिकूल परिदृश्यों को समष्टि आर्थिक चरों पर क्रमशः 0.25 से एक मानक विचलन (एसडी) आघात और 1.25 से दो मानक विचलन आघात, प्रत्येक तिमाही में आघात को क्रमिक रूप से

[12] प्रतिकूल परिदृश्य, काल्पनिक प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के तहत सख्त अनुदार आकलन हैं और मॉडल परिणामों को पूर्वानुमान के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। वे पूंजी नियोजन के निहितार्थ के साथ, बैंकों के संविभाग में संभावित आर्थिक हानि के संकेत हैं।

25 आधार अंक बढ़ाते हुए लागू करके प्राप्त किया जाता है (चार्ट 2.7)।

2.14 दबाव परीक्षण के परिणामों से पता चलता है कि अनुसूचित वाणिज्य बैंक अच्छी तरह से पूंजीकृत हैं और हितधारकों द्वारा किसी और पूंजी निवेश के अभाव में भी समष्टि आर्थिक आघातों को सहन करने में सक्षम हैं। बेसलाइन परिदृश्य के तहत, 46 प्रमुख बैंकों का कुल सीआरएआर सितंबर 2022 में 15.8 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2023 तक 14.9 प्रतिशत होने का अनुमान है। मध्यम दबाव परिदृश्य में यह सितंबर 2023 तक 14.0 प्रतिशत और गंभीर दबाव परिदृश्य में 13.1 प्रतिशत तक नीचे जा सकता है, लेकिन यह पूंजी संरक्षण बफर (सीसीबी) आवश्यकताओं (11.5 प्रतिशत) सहित न्यूनतम पूंजी आवश्यकता से काफी ऊपर रहता है (चार्ट 2.8 ए)। 46 अनुसूचित वाणिज्य बैंक में से कोई भी, यहां तक कि गंभीर रूप से दबावग्रस्त स्थिति में भी, अगले एक वर्ष में 9 प्रतिशत की नियामक न्यूनतम पूंजी आवश्यकता का उल्लंघन नहीं करेगा, हालांकि, सीसीबी सहित 9 एससीबी, न्यूनतम पूंजी से नीचे रह सकते हैं(चार्ट 2.8 बी) ।

2.15 बेसलाइन परिदृश्य (चार्ट 2.9 ए) के तहत चुनिंदा 46 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का सीईटी-1 पूंजी अनुपात सितंबर 2022 में 12.8 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2023 तक 12.1 प्रतिशत हो सकता है। यहां तक कि गंभीर रूप से दबावग्रस्त

चार्ट 2.7 समष्टि परिदृश्य धारणा

(प्रतिशत)

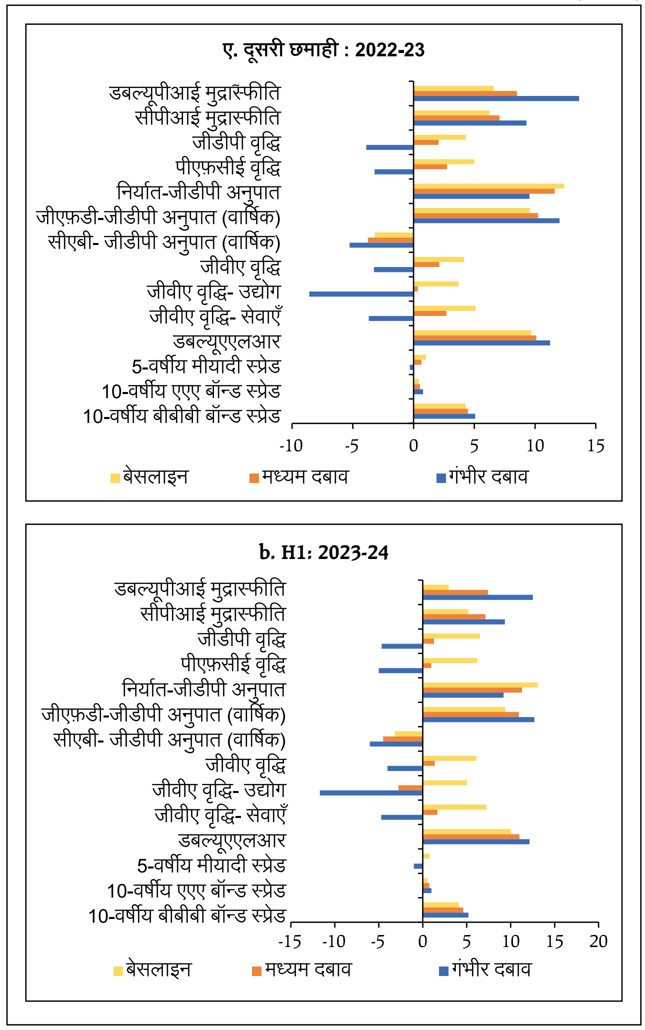

स्रोत: आरबीआई स्टाफ गणना

चार्ट 2.8 : सीआरएआर पूर्वानुमान

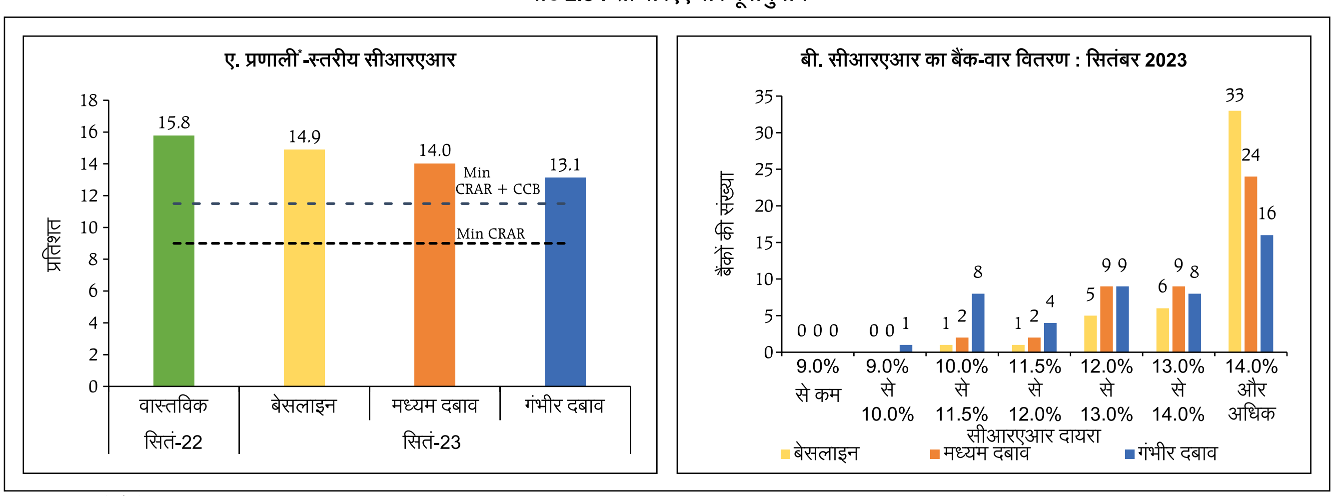

* 46 चयनित बैंकों के लिए

नोट: लाभ कमाने वाले एससीबी के लिए पूंजीगत अरक्षित निधियों में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ अंतरण की कमतर धारणा के अंतर्गत पूंजी पूर्वानुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूंजी अंतर्वाह को शामिल नहीं किया जाता है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

चार्ट 2.9 सीईटी 1 पूंजी अनुपात का पूर्वानुमान

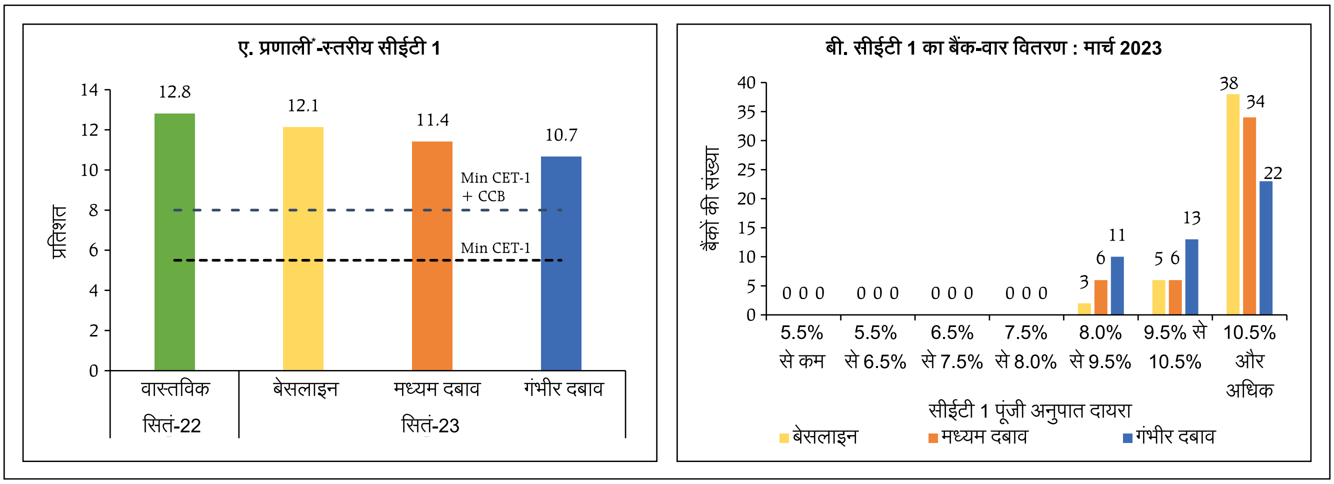

* 46 चयनित बैंकों के लिए

नोट: लाभ कमाने वाले एससीबी के लिए पूंजी भंडार में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ अंतरण की कमतर धारणा के अंतर्गत पूंजी पूर्वानुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूंजी अंतर्वाह को शामिल नहीं किया जाता है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

समष्टि आर्थिक वातावरण में, कुल सीईटी -1 पूंजी अनुपात केवल 210 आधार अंकों से कम होगा, जो न्यूनतम विनियामक मानदंडों का उल्लंघन नहीं करेगा। इसके अलावा, सभी बैंक सभी तीन परिदृश्यों के तहत अगले एक वर्ष में 8.0 प्रतिशत के न्यूनतम विनियामक सीईटी -1 अनुपात और सीसीबी को पूरा करने में सक्षम होंगे(चार्ट 2.9 बी)।

2.16 गिरावट में कमी, बट्टे खाते में वृद्धि और ऋण वृद्धि में निरंतर सुधार के फलस्वरूप सितंबर 2022 में जीएनपीए अनुपात घटकर 5.0 प्रतिशत तक नीचे आ गया। इस धारणा के अंतर्गत कि आगे कोई विनियामक रियायतें नहीं दी जाएंगी तथा नेशनल एसेट रिकंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (एनएआरसीएल) द्वारा दबावग्रस्त संपत्ति खरीद के संभावित प्रभाव को ध्यान में रखे बिना, दबाव परीक्षणों से संकेत मिलता है कि बेसलाइन परिदृश्य के तहत सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2022 में 5.0 प्रतिशत से सुधरकर सितंबर 2023 तक 4.9 प्रतिशत हो सकता है (चार्ट 2.10)। यदि समष्टि आर्थिक वातावरण मध्यम या गंभीर दबाव के परिदृश्य में खराब होता है, तो यह अनुपात क्रमशः 5.8 प्रतिशत और 7.8 प्रतिशत तक बढ़ सकता है। बैंक समूह के स्तर पर, गंभीर दबाव परिदृश्य के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2022 के 6.5 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2023 में 9.4 प्रतिशत, जबकि यह पीवीबी के लिए 3.3 प्रतिशत से बढ़कर 5.8 प्रतिशत हो सकता है, एफबी के लिए 2.5 प्रतिशत से बढ़कर 4.1 प्रतिशत हो जाएगा।

चार्ट 2.10 : एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का पूर्वानुमान

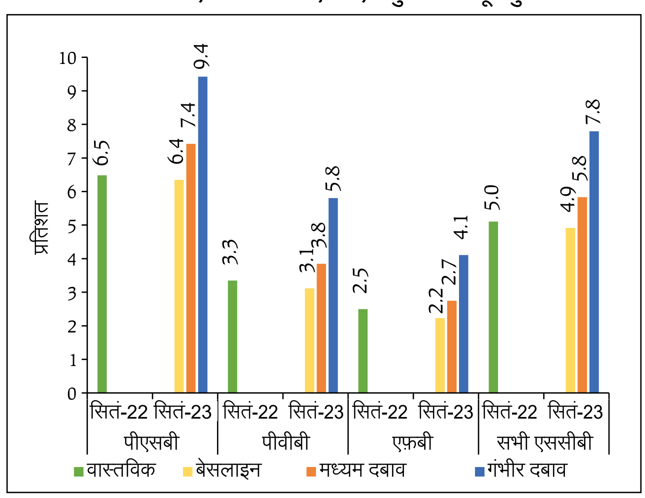

II.1.7 संवेदनशीलता विश्लेषण[13]

2.17 सितंबर 2022 तक एससीबी के संचालन के आधार पर उनकी सुभेद्यता का आकलन करने के लिए एक टॉप-डाउन[14] संवेदनशीलता विश्लेषण किया गया जिसमें विभिन्न दबाव परिदृश्यों[15] में ऋण, ब्याज दर, इक्विटी कीमत और चलनिधि जोखिमों पर कई एकल-कारक आघातों का प्रयोग किया गया।

ए. ऋण जोखिम

2.18 ऋण जोखिम संवेदनशीलता का विश्लेषण दो परिदृश्यों में किया गया है जिसमें प्रणाली स्तरीय जीएनपीए अनुपात एक तिमाही में अपने मौजूदा स्तर से (i) एक एसडी[16] और (ii) दो एसडी बढ़ जाएगा। दो एसडी के एक गंभीर आघात के तहत 46 चुनिंदा एससीबी का जीएनपीए अनुपात 5.1 प्रतिशत से बढ़कर 10.0 प्रतिशत हो जाएगा, प्रणाली-स्तरीय सीआरएआर 350 बीपीएस की कटौती से 15.8 प्रतिशत से घटकर 12.3 प्रतिशत हो जाएगा और टियर-1 पूंजी अनुपात 13.7 प्रतिशत से गिरकर 10.2 प्रतिशत हो जाएगा, किन्तु न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा से काफी ऊपर रहेगा। इस स्थिति में प्रणाली स्तरीय पूंजी की हानि 23.5 प्रतिशत हो सकती है (चार्ट 2.11ए)। प्रतिवर्ती दबाव परीक्षण से पता चलता है कि प्रणाली स्तरीय सीआरएआर को

चार्ट 2.11: ऋण जोखिम- आघात और परिणाम

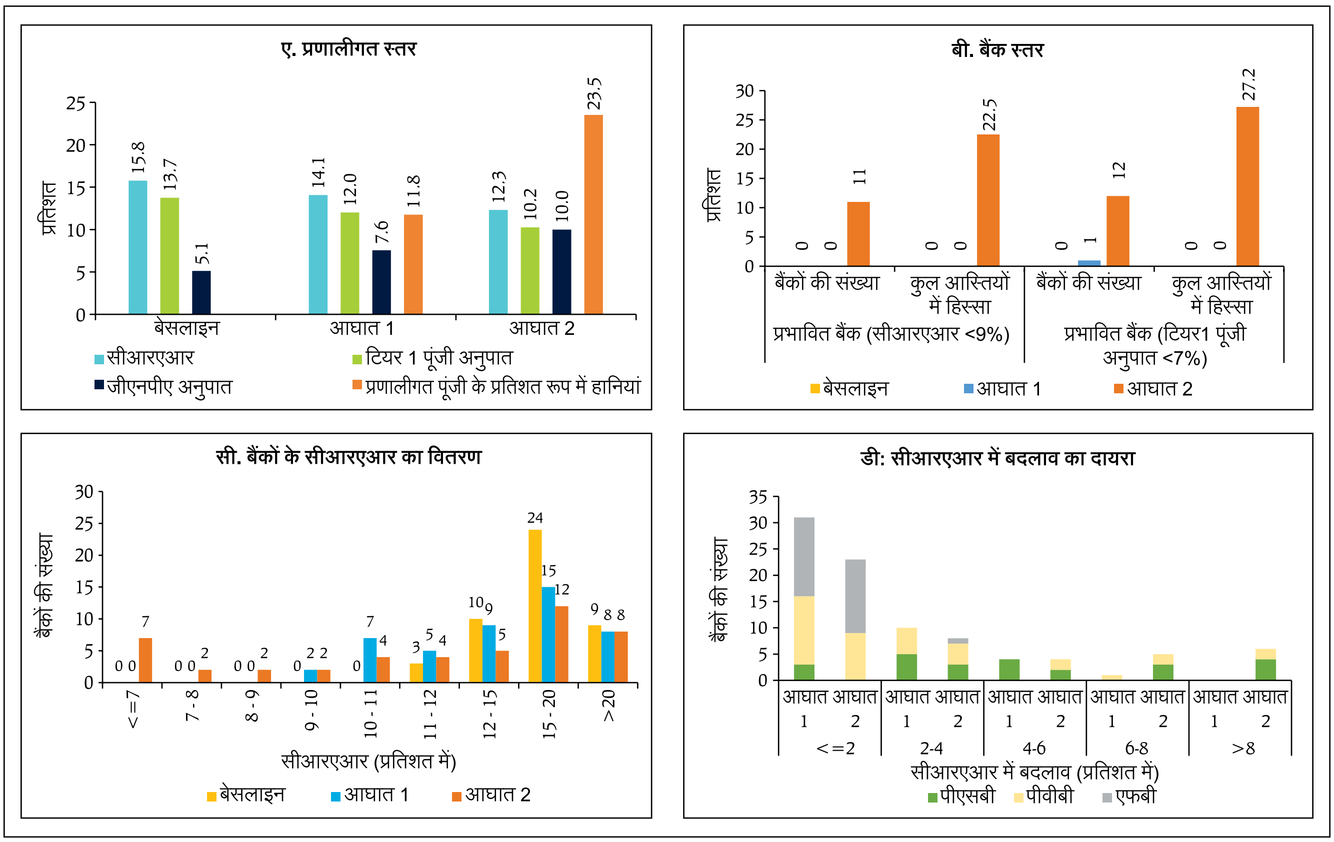

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
आघात 1: जीएनपीए अनुपात पर 1 एसडी आघात
आघात 2: जीएनपीए अनुपात पर 2 एसडी आघात
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना।

[13] समष्टि दबाव परीक्षण के तहत आघात प्रतिकूल समष्टिआर्थिक स्थितियों के संदर्भ में होते हैं, जबकि संवेदनशीलता विश्लेषण में, आघात जीएनपीए, ब्याज दर, इक्विटी मूल्य, जमा और इसी तरह के कारकों पर, एक समय में किसी एक पर लगाए जाते हैं। इसके अलावा, जीएनपीए अनुपात के लिए समष्टि दबाव परीक्षण सिस्टम और प्रमुख बैंक-समूह स्तरों पर किए जाते हैं, जबकि संवेदनशीलता विश्लेषण सिस्टम और व्यक्तिगत बैंक स्तरों पर किए जाते हैं।

[14] टॉप-डाउन दबाव परीक्षण विशिष्ट परिदृश्यों और समग्र बैंक-वार डेटा पर आधारित होते हैं।

[15] एकल कारक संवेदनशीलता विश्लेषण दबाव परीक्षण 46 एससीबी के नमूने के लिए किए जाते हैं जो बैंकिंग क्षेत्र की कुल संपत्ति का 98 प्रतिशत है। विभिन्न काल्पनिक परिदृश्यों के तहत तैयार किए गए आघात चरम लेकिन व्यवहार्य हैं।

[16] जीएनपीए अनुपात के एसडी का अनुमान पिछले 10 वर्षों के तिमाही डेटा का उपयोग करके किया गया है। एक एसडी आघात, जीएनपीए के स्तर में 47 प्रतिशत की वृद्धि करता है।

न्यूनतम 9 प्रतिशत विनियामकीय तक लाने के लिए 4.4 एसडी के आघात की जरूरत होगी। हालांकि, 2.5 एसडी का आघात प्रणाली स्तरीय सीआरएआर को सीसीबी सहित विनियामक न्यूनतम सीआरएआर से नीचे ला सकता है, जो कुल 11.5 प्रतिशत है।

2.19 बैंक स्तरीय दबाव परीक्षण यह दर्शाते हैं कि गंभीर (2 एसडी आघात) परिदृश्य की स्थिति में एससीबी की कुल आस्तियों में 22.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी वाले 11 बैंक अपेक्षित न्यूनतम विनियामकीय सीआरएआर को पूरा करने में विफल हो सकते हैं (चार्ट 2.11 बी)। ऐसे परिदृश्य में सात बैंकों का सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे गिर जाएगा (चार्ट 2.11 सी) और छह बैंकों के सीआरएआर में आठ प्रतिशत अंकों से अधिक की कमी दर्ज की जाएगी। सामान्य रूप से, सीआरएआर के मामले में दोनों आघात परिदृश्यों के अंतर्गत पीवीबी तथा एफबी को पीएसबी की तुलना में कम गिरावट का सामना करना पड़ेगा (चार्ट 2.11 डी)

बी. ऋण संकेंद्रण जोखिम

2.20 बैंकों के ऋण संकेंद्रण पर किए गए दबाव परीक्षणों – उनके मानक एक्सपोज़र के अनुसार शीर्ष वैयक्तिक उधारकर्ताओं को ध्यान में रखते हुए – ने दर्शाया कि संबंधित बैंकों के तीन शीर्ष वैयक्तिक उधारकर्ताओं द्वारा ऋण चुकौती[17] में विफल होने जैसे गंभीर परिदृश्य में किसी भी बैंक को 9 प्रतिशत की विनियामकीय अपेक्षा से कम सीआरएआर में गिरावट का सामना नहीं करना पड़ेगा, हालांकि तीन बैंकों को सीआरएआर में 11.5 प्रतिशत से नीचे गिरावट देखने को मिलेगी – जिसमें सीसीबी के संबंध में न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा शामिल है (चार्ट 2.12 ए)। इस स्थिति में बारह बैंक अपने सीआरएआर में दो प्रतिशत अंकों से अधिक की गिरावट का अनुभव करेंगे (चार्ट 2.12 बी)।

2.21 मानक श्रेणी के शीर्ष तीन उधारकर्ता समूहों द्वारा चुकौती[18] में विफलता वाले गंभीर परिदृश्य में सभी बैंकों के सीआरएआर 9 प्रतिशत से ऊपर रहेंगे, लेकिन पांच बैंक सीसीबी

चार्ट 2.12: ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्सपोज़र

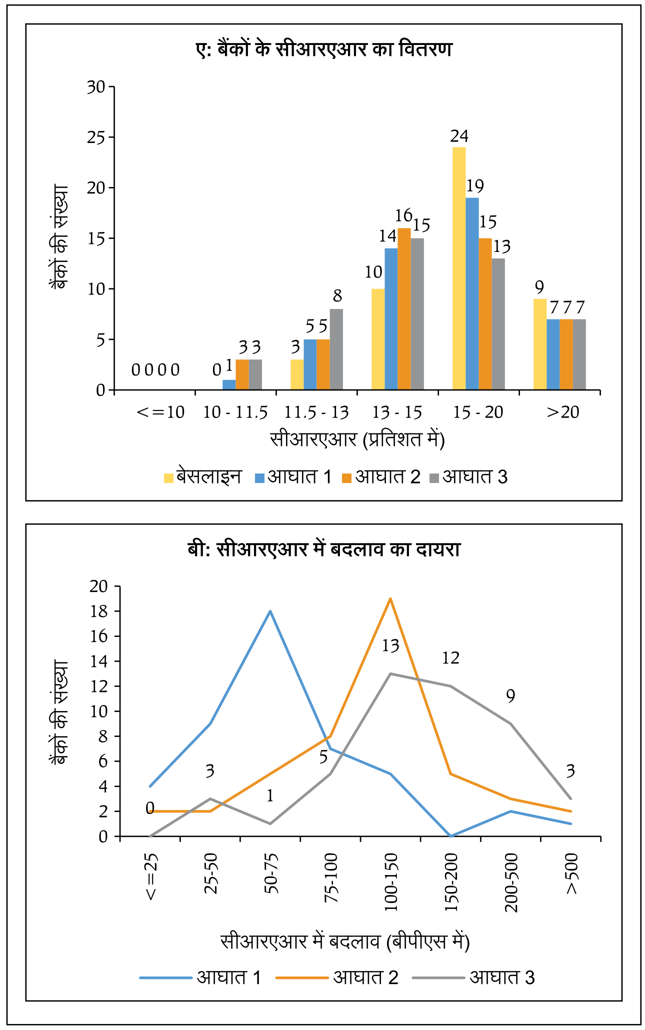

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
आघात 1: शीर्ष वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहता है।
आघात 2: शीर्ष 2 वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
आघात 3: शीर्ष 3 वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

[17] ।चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता मानक श्रेणी से अवमानक श्रेणी में आ गया है।

[18] चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता समूह मानक श्रेणी से अवमानक श्रेणी में आ गया है।

चार्ट 2.13: ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोज़र

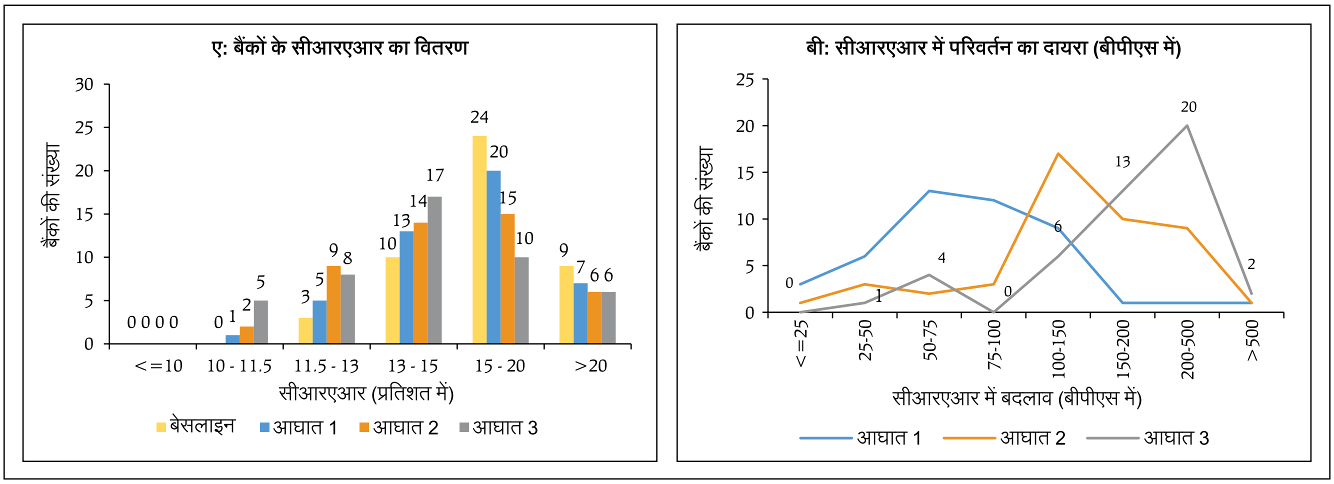

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
आघात 1: शीर्ष 1 समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहता है।
आघात 2: शीर्ष 2 समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
आघात 3: शीर्ष 3 समूह उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

सहित न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा को पूरा करने में विफल हो सकते हैं (चार्ट 2.13 ए) और दो बैंक को सीआरएआर में पांच प्रतिशत अंकों से अधिक की गिरावट का सामना करना पड़ सकता है (चार्ट 2.13 बी)।

2.22 इन बैंको के तीन शीर्ष दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ताओं द्वारा ऋण चुकौती[19] में विफल होने जैसे गंभीर परिदृश्य में अधिकतर बैंकों के सीआरएआर में 25 बीपीएस या उससे कम की गिरावट होगी (चार्ट 2.14)।

चार्ट 2.14: ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम

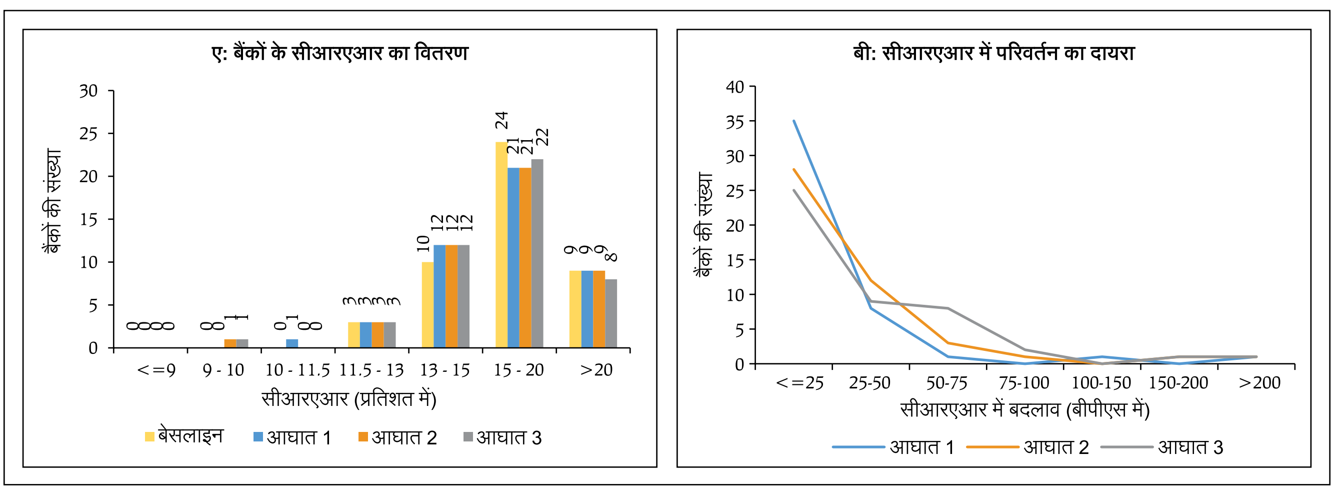

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
आघात 1: शीर्ष दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहता है।
आघात 2: शीर्ष 2 दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
आघात 3: शीर्ष 3 दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ता अपनी भुगतान संबंधी प्रतिबद्धता पूरा करने में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

[19] विफल होने की स्थिति में यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता अवमानक अथवा पुनर्संरचित श्रेणी से हानि श्रेणी में आ गया है।

सी. क्षेत्रवार ऋण जोखिम

2.23 उद्योग उप क्षेत्र-वार जीएनपीए अनुपात में उतार-चढ़ाव के आधार पर लगाए गए आघात विभिन्न उप-क्षेत्रों में बैंकों के जीएनपीए में बढ़ोतरी के बदलते परिमाण को दर्शाता है। ऊर्जा तथा धातु क्षेत्र को 2 एसडी का आघात दिये जाने की स्थिति में यह प्रणाली स्तर पर सीआरएआर को 16 बीपीएस कम करेगा (सारणी 2.2)।

डी. ब्याज दर जोखिम

2.24 सितंबर 2022 की स्थिति के अनुसार निवेश का बाजार मूल्य इन समीक्षाधीन नमूना एससीबी के लिए उचित मूल्य को ध्यान में रखते हुए ₹19.5 लाख करोड़ रहा (चार्ट 2.15)। निवेशों के लगभग 95.7 प्रतिशत को 'बिक्री के लिए उपलब्ध' (एएफएस) और शेष को व्यापार के लिए धारित(एचएफटी) के रूप में वर्गीकृत किया गया था। 2022-23 की पहली छमाही में पीएसबी द्वारा धारित एससीबी के कुल व्यापार बही पोर्टफोलियो का आधे से अधिक हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

2.25 जून 2022 की स्थिति की तुलना में पीएसबी के लिए एएफएस पोर्टफोलियो की संवेदनशीलता (पीवी01[20]) में कमी आई है जबकि पीवीबी और एफबी के लिए इसमें वृद्धि हुई है। पीवी01 वक्र की स्थिति के संदर्भ में पीएसबी के पोर्टफोलियो के अवधि-वार वितरण ने जून 2022 की तुलना में 5-10 साल की समयावधि और 10 साल से अधिक की समयावधि में उच्च आवंटन का संकेत दिया। पीएसबी के एएफएस पोर्टफोलियो का लगभग चौथा-पांचवां हिस्सा 1-5 साल और 5-10 साल की समयावधि में है। इसी तरह पीवीबी ने 10 साल से अधिक की समयावधि और 5-10 साल की समयावधि में अपनी स्थिति बनाई है, जबकि 1 साल से भी कम और 1-5 साल की समयावधि में आवंटन में कटौती की है। जबकि एफबी ने अन्य समयावधि में अपनी पकड़ बढ़ाते हुए 10 साल से अधिक की समयावधि को प्राथमिकता देना जारी रखा है। हालांकि उच्चतम परिपक्वता खंड में एफबी का पीवी01 एक्सपोजर पर्याप्त रहता है किंतु कुछ स्थिति में हेजिंग व्युत्पन्नी के लिए बचाव के रूप में रखे गए धारित बॉन्ड शामिल होने के कारण यह जोखिम के लिए सक्रिय योगदानकर्ता नहीं हो सकता है (सारणी 2.3)।

सारणी 2.2 : प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट

(आधार अंक, शीर्ष 10 सबसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए घटते क्रम में)

	1 एसडी	2 एसडी
मूलभूत धातु और धातु उत्पाद (389%)	9	16
अवसरंचना– ऊर्जा (172%	)	16
अवसरंचना – परिवहन (48%)	3	6
विनिर्माण (30%)	2	5
खाद्य प्रसंस्करण (28%)	2	4
अवसरंचना – संचार (104%)	1	3
रत्न और आभूषण (33%)	1	2
सीमेंट और सीमेंट उत्पाद (95%)	1	2
पेट्रोलियम (गैर-इंफ्रा), कोयला उत्पाद (गैर-खनन) और परमाणु ईंधन (203%)	1	2
खनन और उत्खनन (93%)	1	2

टिप्पणी: 46 चुनिंदा बैंक की प्रणाली के लिए।
कोष्ठकों में दिए गए आंकडे उस उप-क्षेत्र के जीएनपीए अनुपात में 1 एसडी आघात के कारण उसके जीएनपीए में हुई वृद्धि को दर्शाते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.15: व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार

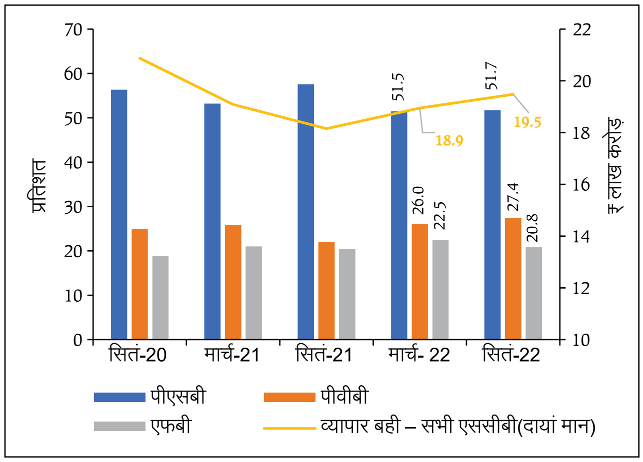

स्रोत: अलग-अलग बैंकों की प्रस्तुतियां और रिज़र्व बैंक स्टाफ गणना।

सारणी 2.3: एएफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण

	कुल (₹ करोड़ में)	शेयर (प्रतिशत में)			
		<1 वर्ष	1-5 वर्ष	5-10 वर्ष	>10 वर्ष
पीएसबी	191.9 (219.5)	8.6 (14.5)	36.9 (40.1)	46.9 (38.6)	7.7 (6.9)
पीवीबी	63.0 (55.1)	20.1 (32.5)	42.9 (43.5)	12.5 (7.6)	24.5 (16.4)
एफबी	138.6 (132.1)	4.1 (3.7)	17.4 (17.4)	17.9 (15.3)	60.6 (63.5)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए मूल्य जून 2022 के आंकड़े दर्शाते हैं।
स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और रिज़र्व बैंक स्टाफ गणना।

[20] पीवी01 ब्याज दर में एक आधार अंक के परिवर्तन से पोर्टफोलियो के संपूर्ण मूल्य की संवेदनशीलता का एक माप है।

2.26 7 दिसंबर 2022 की स्थिति में जून 2022 के सापेक्ष वक्र का छोटा अंत तेजी से बढ़ने के कारण सॉवरेन प्रतिफल वक्र समतल हो गया है। इसके साथ ही प्रणालीगत अधिशेष चलनिधि 1 अप्रैल 2022 को ₹ 6.35 लाख करोड़ रुपये से घटकर 7 दिसंबर 2022 को ₹ 1.62 लाख करोड़ रुपये हो गई है।

2.27 फिर भी मुद्रास्फीति में कमी और मजबूत कर राजस्व के मद्देनजर सरकारी उधार लेने की संभावना से बड़े पैमाने पर मदद मिलने के कारण प्रतिफल वक्र सितंबर 2022 में अपनी स्थिति की तुलना में 7 दिसंबर 2022 को नीचे चला गया है (चार्ट 2.16)।

2.28 2022-23 की पहली तिमाही में घाटे की रिपोर्टिंग करने के बाद पीएसबी और पीवीबी का व्यापारिक लाभ 2022-23 की दूसरी तिमाही में सकारात्मक क्षेत्र में लौट आया। हालांकि एफबी के लिए लगातार सातवीं तिमाही में व्यापारिक घाटा जारी रहा, लेकिन यह मार्च 2022 के स्तर से कम हो गया है। निवल परिचालन आय में व्यापारिक लाभ का हिस्सा पीएसबी और पीवीबी के लिए बहुत कम था जबकि इसने एफबी के लिए निवल परिचालन आय को कम कर दिया (सारणी 2.4)।

2.29 एचएफटी पोर्टफोलियो में पीवीबी और एफबी का ब्याज दर जोखिम पीएसबी की तुलना में अधिक रहा, लेकिन तीनों बैंक समूह अपनी व्यापारिक रणनीतियों और ब्याज दर दृष्टिकोण में अभिसरित हुए। पीएसबी ने जून 2022 में पूरी तरह से वर्गीकृत स्थिति होने के बाद 2022-23 की दूसरी तिमाही में अपने एचएफटी खातों में निवल सकारात्मक स्थिति प्रारंभ की है। पीवीबी और एफबी ने एचएफटी पोर्टफोलियो में अपनी संवेदनशीलता (पीवी01) को कम कर दिया है। पीएसबी ने जून तिमाही के दौरान उसी समयावधि में अपनी लघु स्थिति की तुलना में 5-10 साल की समयावधि में दीर्घ स्थिति बनाई है। उन्होंने 1 वर्ष से कम और 1–5 वर्ष की समयावधि में अपनी स्थिति को कम किया है। पीवीबी और एफबी ने 1-5 साल और 10 साल से ज्यादा के समयावधि में स्थिति बनाई है जबकि 5-10 साल के समयावधि में अपनी स्थिति घटाई है (सारणी 2.5)।

2.30 यह आकलन किया गया है कि प्रतिफल वक्र में 250 बीपीएस के समानांतर ऊपर की ओर उछाल प्रणाली स्तरीय सीआरएआर को 73 बीपीएस तक कम कर देगा। समान रूप से, प्रणाली स्तर सीईटी-I पूंजी में 76 बीपीएस की गिरावट आएगी

चार्ट 2.16: प्रतिफल वक्र और जून 2022 से सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन

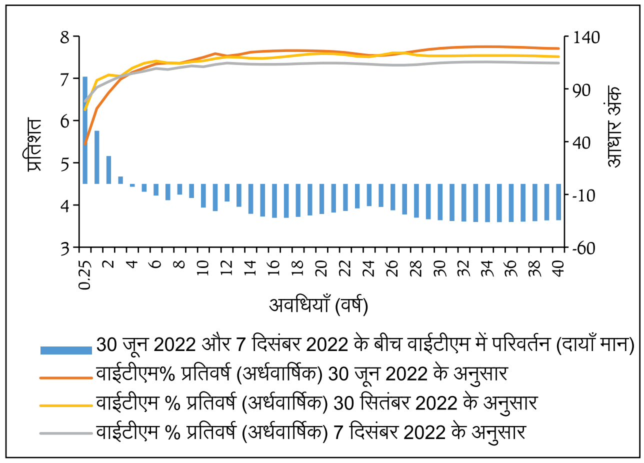

स्रोत: एफआईबीआईएल

सारणी 2.4: अन्य परिचालन आय (ओओआई) – प्रतिभूति कारोबार में लाभ/(हानि)

(₹ करोड में)

	ति2: 2021-22	ति3: 2021-22	ति4: 2021-22	ति1: 2022-23	ति2: 2022-23
पीएसबी	5765 (13.9)	3023 (6.4)	2457 (4.3)	-3465 (-8.0)	2376 (2.4)
पीवीबी	1996 (4.4)	573 (1.2)	1162 (2.3)	-643 (-1.3)	471 (0.4)
एफबी	-204 (-2.6)	-874 (-11.2)	-1668 (-13.9)	-903 (-9.5)	-233 (-1.3)

टिप्पणी: कोष्ठकों में दिए गए आंकडे निवल परिचालन आय के प्रतिशत के रूप में ओओआई-लाभ/(हानि) दर्शाते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ।

सारणी 2.5: एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि वार पीवी 01 वितरण

	कुल (₹ करोड़ में)	शेयर (प्रतिशत में)			
		<1 वर्ष	1-5 वर्ष	5-10 वर्ष	>10 वर्ष
पीएसबी	1.5 (0.0)	2.4 (148.6)	5.0 (192.7)	86.1 (-215.1)	6.4 (-26.2)
पीवीबी	15.0 (24.5)	1.2 (4.7)	22.6 (3.2)	44.4 (92.3)	31.7 (-0.2)
एफबी	8.3 (9.8)	8.4 (6.8)	34.4 (21.3)	31.9 (54.2)	25.3 (17.7)

नोट: कोष्ठक में दिये गए मान जून 2022 के आंकड़े दर्शाते हैं।
स्रोत: व्यक्तिगत बैंक प्रस्तुतियां और आरबीआई स्टाफ गणना।

(सारणी 2.6)। अलग-अलग स्तर पर किसी भी बैंक को ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा जिसमें सीआरएआर और सीईटी-I अनुपात विनियामक न्यूनतम से नीचे गिर जाते हैं, हालांकि कुछ विदेशी बैंकों को दबावग्रस्त परिदृश्य में अपनी पूंजी में पर्याप्त गिरावट का सामना करना पड़ सकता है।

2.31 पीएसबी ने सरकारी प्रतिभूतियों में अपने आवंटन को कम करने को प्राथमिकता दिया और एचटीएम श्रेणी में रखने योग्य एसडीएल और अन्य प्रतिभूतियों की अपनी धारिता बढ़ा दी (चार्ट 2.17)। पीवीबी ने एचटीएम श्रेणी में अन्य प्रतिभूतियों की धारिता घटाते हुए सरकारी प्रतिभूतियों और एसडीएल में अपनी धारिता बढ़ाई।

2.32 पीएसबी के अप्राप्त नुकसान बड़े पैमाने पर सरकारी प्रतिभूतियों में थे, हालांकि एचटीएम पोर्टफोलियो में उनके द्वारा धारित केंद्रीय और राज्य सरकार की प्रतिभूतियों का अनुपात कुल मिलाकर बराबर था। पीवीबी के घाटे को बड़े पैमाने पर उनकी धारिता के अनुपात में वितरित किया गया था (चार्ट 2.18)। यदि प्रतिफल वक्र के 250 बीपीएस समानांतर ऊपर की ओर उछाल और बैंकों के एचटीएम पोर्टफोलियो पर प्रभाव बाजार के लिए चिह्नित किया गया तो प्रणाली स्तर सीआरएआर 307 बीपीएस तक कम हो जाएगा।

2.33 सितंबर 2022 में एचटीएम श्रेणी में पीएसबी और पीवीबी द्वारा सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) प्रतिभूतियों की धारिता उनकी निवल मांग और मीयादी देयताएं (एनडीटीएल) के क्रमशः 21.4 प्रतिशत और 19.9 प्रतिशत थी जबकि यह एफबी के लिए 2.9 प्रतिशत थी। बैंकों द्वारा एचटीएम बही में ऋण वृद्धि में तेजी आने के कारण अपेक्षित कटौती नहीं हो पाई है। वास्तव में पीएसबी और पीवीबी ने अपने एचटीएम बही में मामूली वृद्धि की है।

2.34 पारंपरिक अंतराल विश्लेषण (टीजीए) का उपयोग करते हुए एक वर्ष तक की समयावधि के लिए बैंकिंग बही पर ब्याज दर जोखिम[21] (आईआरआरबीबी) का आकलन दर्शाता है कि पीएसबी और पीवीबी के लिए जोखिम पर आय (ईएआर) एनआईआई के 10 प्रतिशत से थोड़ा अधिक और ब्याज दर में 200 बीपीएस की वृद्धि से एफबी और लघु वित्त बैंकों (एसएफबी)

सारणी 2.6: ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह – आघात और प्रभाव
(250 आधार अंक के आघात के तहत भारतीय रुपए में प्रतिफल वक्र के समानांतर ऊपर की ओर बदलाव)

	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के बैंक		विदेशी बैंक		सभी अनुसूचित-वाणिज्यिक बैंक	
	एए-फएस	एचए-फटी	एए-फएस	एचए-फटी	एए-फएस	एचए-फटी	एए-फएस	एचए-फटी
संशोधित अवधि (वर्ष)	1.9	4.0	1.3	3.7	3.8	2.1	2.1	2.9
निवेश में कुल शेयर (प्रतिशत)	30.3	0.1	30.5	1.4	86.1	7.9	35.2	1.2
सीआरएआर में कटौती (बीपीएस)	67		34		280		73	
सीईटी-1 पूंजी में कटौती (बीपीएस)	70		35		286		76	

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक प्रस्तुतियां और आरबीआई स्टाफ गणना।

चार्ट 2.17: एचटीएम पोर्टफोलियो – संरचना

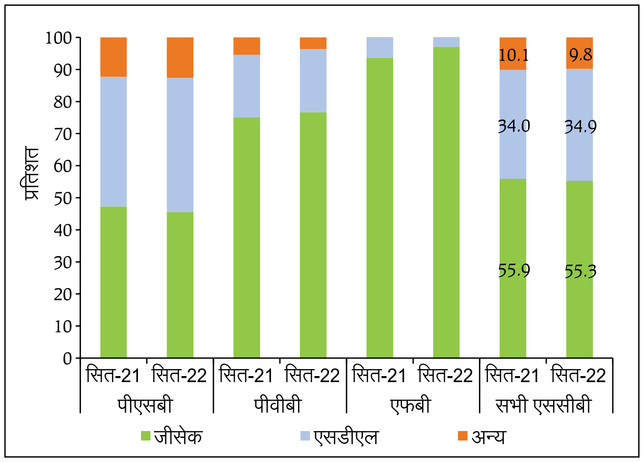

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक प्रस्तुतियां और आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 2.18: एचटीएम पोर्टफोलियो- 30 सितंबर 2022 को अप्राप्त लाभ/हानि

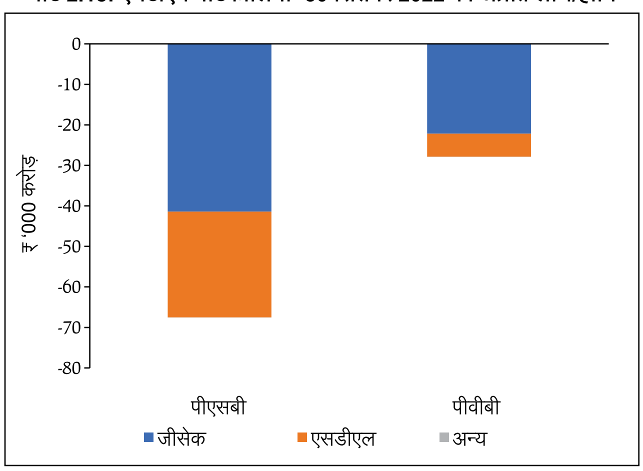

स्रोत: व्यक्तिगत बैंक सबमिशन और आरबीआई स्टाफ की गणना

[21] अग्रिम, एचटीएम निवेश, स्वैप/ विदेशी मुद्रा स्वैप, रिवर्स रेपो को दर संवेदनशील परिसंपत्ति (आरएसए) के रूप में माना जाता है जबकि जमा और स्वैप/ विदेशी मुद्रा स्वैप को बैंकिंग बुक में ब्याज दर जोखिम का आकलन करने के लिए दर संवेदनशील देयताएं (आरएसएल) के रूप में माना जाता है।

के लिए मामूली रूप से प्रभावित होगी (सारणी 2.7)। सितंबर 2022 तक बैंक समूह स्तर पर संचयी अंतर[22] सकारात्मक होने के कारण ब्याज दर में वृद्धि के लिए प्रभाव सकारात्मक है।

2.35 अवधि अंतराल विश्लेषण (डीजीए)[23] का उपयोग करते हुए आईआरआरबीबी विश्लेषण से पता चलता है कि पीवीबी और एफबी का इक्विटी का बाजार मूल्य (एमवीई) ब्याज दर में बढ़ोतरी के कारण मामूली रूप से कम हो जाएगा, जबकि इसका पीएसबी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। एसएफबी के एमवीई को विशेष रूप से ब्याज दर में वृद्धि से कम किया जाएगा (सारणी 2.8)।

इ. इक्विटी कीमत जोखिम

2.36 बैंकों के सीआरएआर पर इक्विटी कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट के प्रभाव का विश्लेषण दर्शाता है कि विनियामक सीमाओं की वजह से बैंकों के सीमित पूंजी बाजार एक्सपोज़र के कारण अध्ययन के अंतर्गत 46 बैंकों के लिए इक्विटी कीमत जोखिम अनुकूल है। इक्विटी कीमतों में 25 प्रतिशत, 35 प्रतिशत और 55 प्रतिशत की गिरावट के परिदृश्य के तहत, प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर में क्रमशः 22 बीपीएस, 30 बीपीएस और 48 बीपीएस की गिरावट आएगी (चार्ट 2.19)।

एफ. चलनिधि जोखिम

2.37 चलनिधि जोखिम विश्लेषण का उद्देश्य जमाराशियों पर किसी भी संभावित प्रभाव और स्वीकृत/ प्रतिबद्ध/ गारंटीकृत क्रेडिट लाइनों के अप्रयुक्त हिस्से के लिए बढ़ी हुई मांग का पता लगाना है। तदनुसार, दबाव परिदृश्यों में गैर-बीमाकृत जमाराशियों[24] की निकासी में वृद्धि और स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के अप्रयुक्त भागों के उपयोग में वृद्धि के साथ-साथ बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को प्रदान की गई ऋण प्रतिबद्धताओं और गारंटियों का उपयोग शामिल है।

सारणी 2.7 जोखिम पर आय (ईएआर)- पारंपरिक अंतराल विश्लेषण (टीजीए)

बैंक समूह	एनआईआई के प्रतिशत के रूप में जोखिम पर आय (एक वर्ष तक)	
	100 बीपीएस वृद्धि	200 बीपीएस वृद्धि
पीएसबी	5.7	11.3
पीवीबी	5.1	10.2
एफ़बी	1.9	3.8
एसएफ़बी	0.7	1.4

सारणी 2.8 इक्विटी का बाजार मूल्य (एमवीई) - अवधि अंतराल विश्लेषण (डीजीए)

बैंक समूह	इक्विटि के प्रतिशत के रूप में इक्विटी का बाजार मूल्य (एमवीई)	
	100 बीपीएस वृद्धि	200 बीपीएस वृद्धि
पीएसबी	1.0	2.0
पीवीबी	-0.3	-0.5
एफ़बी	-1.9	-3.9
एसएफ़बी	-5.7	-11.3

चार्ट 2.19 : इक्विटी कीमत जोखिम

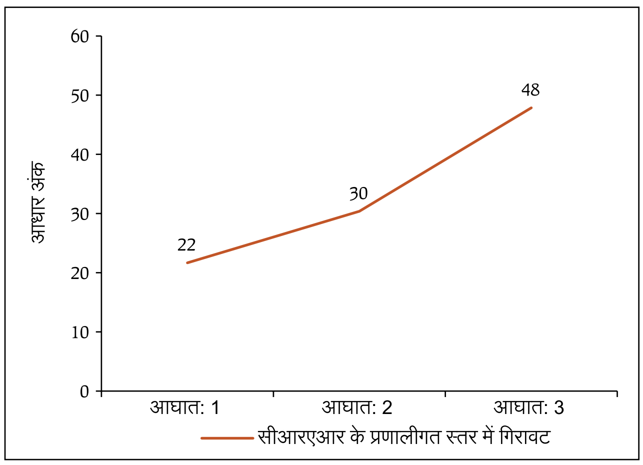

नोट: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।
आघात 1: इक्विटी की कीमतों में 25 फीसदी की गिरावट
आघात 2: इक्विटी की कीमतों में 35 फीसदी की गिरावट
आघात 3: इक्विटी की कीमतों में 55 फीसदी की गिरावट
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और स्टाफ की गणना।

[22] जोखिम संवेदनशील परिसंपत्तियां (आरएसए) घटा जोखिम संवेदनशील देयताएं (आरएसएल)

[23] डीजीए पद्धति में विभिन्न समय बैंड में अवशिष्ट परिपक्वता/पुनर्मूल्य निर्धारण तिथियों के अनुसार सभी आरएसए और आरएसएल की बकेटिंग और आशोधित अवधि अंतराल (एमडीजी) की गणना शामिल है।

[24] गैर-बीमाकृत जमा ₹ 5 लाख जमा बीमा सीमा के आधार पर कुल जमा राशि का लगभग 51 प्रतिशत होने का अनुमान है (स्रोत: डीआईसीजीसी वार्षिक रिपोर्ट, 2021-22)।

2.38 प्रतिबद्ध क्रेडिट लाइनों के अप्रयुक्त हिस्से के 75 प्रतिशत के उपयोग के साथ-साथ लगभग 15 प्रतिशत गैर- बीमाकृत जमा की अचानक और अप्रत्याशित निकासी के परिदृश्य में चल परिसंपत्ति[25] 21.4 प्रतिशत से घटकर कुल परिसंपत्तियों का 12.2 प्रतिशत हो जाएगी (चार्ट 2.20)।

चार्ट 2.20: चलनिधि जोखिम: आघात और परिणाम

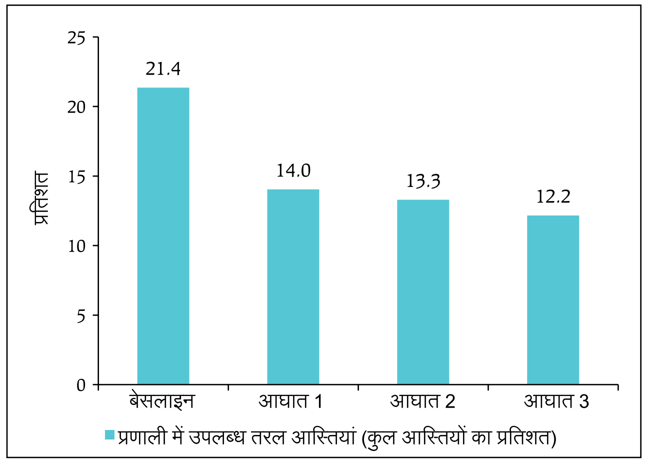

नोट: चलनिधि आघातों में प्रतिबद्ध क्रेडिट लाइनों के 75 प्रतिशत की मांग (स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के साथ-साथ क्रेडिट प्रतिबद्धताओं के अप्रयुक्त हिस्से शामिल हैं) और नीचे दिए गए अनुसार गैर-बीमाकृत जमाराशियां के एक हिस्से का आहरण भी शामिल है:

आघात	आघात 1	आघात 2	आघात 3
गैर-बीमाकृत जमाराशियों के आहरण का प्रतिशत	10	12	15

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी रिटर्न और कर्मचारी आकलन।

II.1.8 बॉटम-अप दबाव परीक्षण: व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो

2.39 30 सितंबर 2022 की संदर्भ तिथि के साथ चुनिंदा बैंकों के लिए व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो पर बॉटम-अप दबाव परीक्षण (संवेदनशीलता विश्लेषण) की एक श्रृंखला आयोजित की गई है। नमूने में बैंकों के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो को ब्याज और विदेशी मुद्रा दरों पर चार अलग-अलग आघातों के अधीन किया जाता है। ब्याज दरों पर आघात 100 से 250 आधार अंक तक थे, जबकि विदेशी मुद्रा दरों के मामले में 20 प्रतिशत वृद्धि / मूल्यह्रास के आघात माने जाते हैं। अलग-अलग आघातों के लिए दबाव परीक्षण स्टैंड-अलोन आधार पर किए जाते हैं।

2.40 अधिकांश एफबी सितंबर 2022 में सीईटी-1 पूंजी के अनुपात के रूप में काफी नकारात्मक निवल मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) स्थिति बनाए रखते हैं। कुल मिलाकर पीएसबी और पीवीबी के लिए एमटीएम प्रभाव कम है। समग्र प्रणाली के लिए ऋण समतुल्य में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद 2022-23 की दूसरी तिमाही में नकारात्मक एमटीएम स्थिति कम हो गई है (चार्ट 2.21)।

2.41 एक औसत स्तर पर नमूना बैंकों के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो को ब्याज दर में वृद्धि और इसके विपरीत परिस्थिति से लाभ प्राप्त करने की स्थिति में रखा गया है। मार्च 2022 की स्थिति की तुलना में सितंबर 2022 में ब्याज दरों में वृद्धि से संभावित एमटीएम लाभान्वित होता है। नमूनाकृत बैंकों को दोनों विदेशी

चार्ट 2.21: कुल व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो का एमटीएम, चुनिंदा बैंक – सितंबर 2022

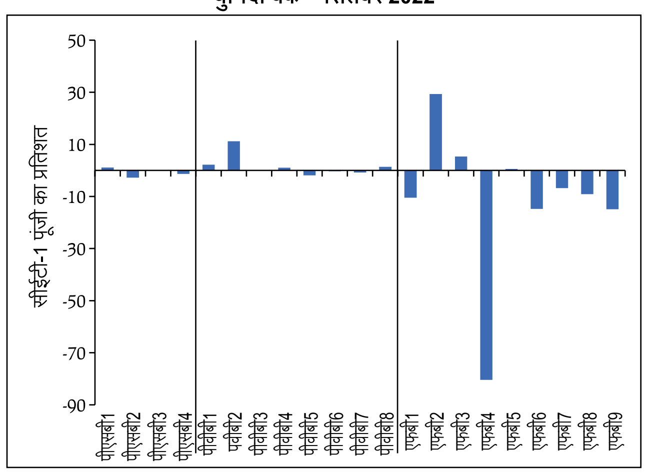

नोट: पीएसबी: सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक, पीवीबी: निजी क्षेत्र का बैंक, एफबी: विदेशी बैंक

स्रोत: चुनिंदा बैंक (व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो पर बॉटम-अप दबाव परीक्षण)।

[25] एचक्यूएलए की गणना अपेक्षित सीआरआर, अतिरिक्त एसएलआर निवेश, एनडीटीएल (एमएसएफ के तहत) के 3 प्रतिशत पर एसएलआर निवेश (5 फरवरी 2021 के परिपत्र डीओआर.बीसी.36/12.01.001/2020-21 के अनुसार) और एनडीटीएल के 15 प्रतिशत पर अतिरिक्त एसएलआर निवेश (17 अप्रैल 2020 के परिपत्र डीओआर.बीपी.बीसी. सं.65/21.04.098/2019-20 के अनुसार) से अधिक नकदी आरक्षित के रूप में की गई थी।

[26] प्रमुख सक्रिय प्राधिकृत डीलरों और ब्याज दर स्वैप प्रतिपकारों का गठन करने वाले 21 बैंकों के नमूने के लिए व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो पर दबाव परीक्षण किए गए थे। परीक्षण परिदृश्यों का विवरण अनुबंध-2 में दिया गया है।

मुद्रा दर के आघातों से कम लाभ प्राप्त करने के लिए तैनात किया गया है(चार्ट 2.22)।

चार्ट 2.22: चुनिन्दा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघात का प्रभाव

(आघात लगने पर नेट एमटीएम में बदलाव)

पूंजीगत निधि पर प्रतिशत

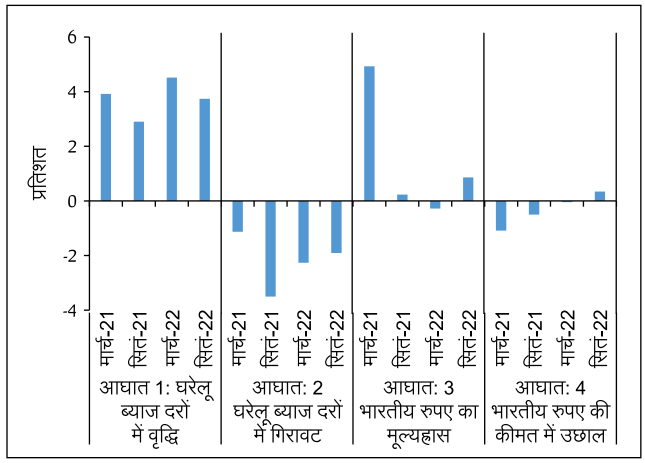

नोट: किसी लगाए गए आघात के कारण निवल एमटीएम में परिवर्तन बेसलाइन के संबंध में है।

स्रोत: चुनिंदा बैंक (डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर बॉटम-अप स्ट्रेस टेस्ट)

II.2 प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक[27]

2.42 प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (यूसीबी) की ऋण वृद्धि में मामूली वृद्धि हुई है[28] (चार्ट 2.23 ए)। अनुसूचित यूसीबी (एससीयूबी) और गैर-अनुसूचित यूसीबी (एनएसयूसीबी) दोनों ने 31 मार्च, 2023 का अपने बकाया ऋण का न्यूनतम 60 प्रतिशत ऋण प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को देने का लक्ष्य[29] प्राप्त कर लिया है (चार्ट 2.23 बी)। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में बढ़कर यूसीबी का सीआरएआर सितंबर 2022 में 16.1 प्रतिशत तक पहुंच गया। एसयूसीबी का सीआरएआर 14.3 प्रतिशत से बढ़कर 14.9 प्रतिशत और एनएसयूसीबी का 16.8 प्रतिशत से बढ़कर 17.1 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.23 सी)।

चार्ट 2.23 यूसीबी के ऋण पोर्टफोलियो और आस्ति गुणवत्ता संकेतक *(जारी)*

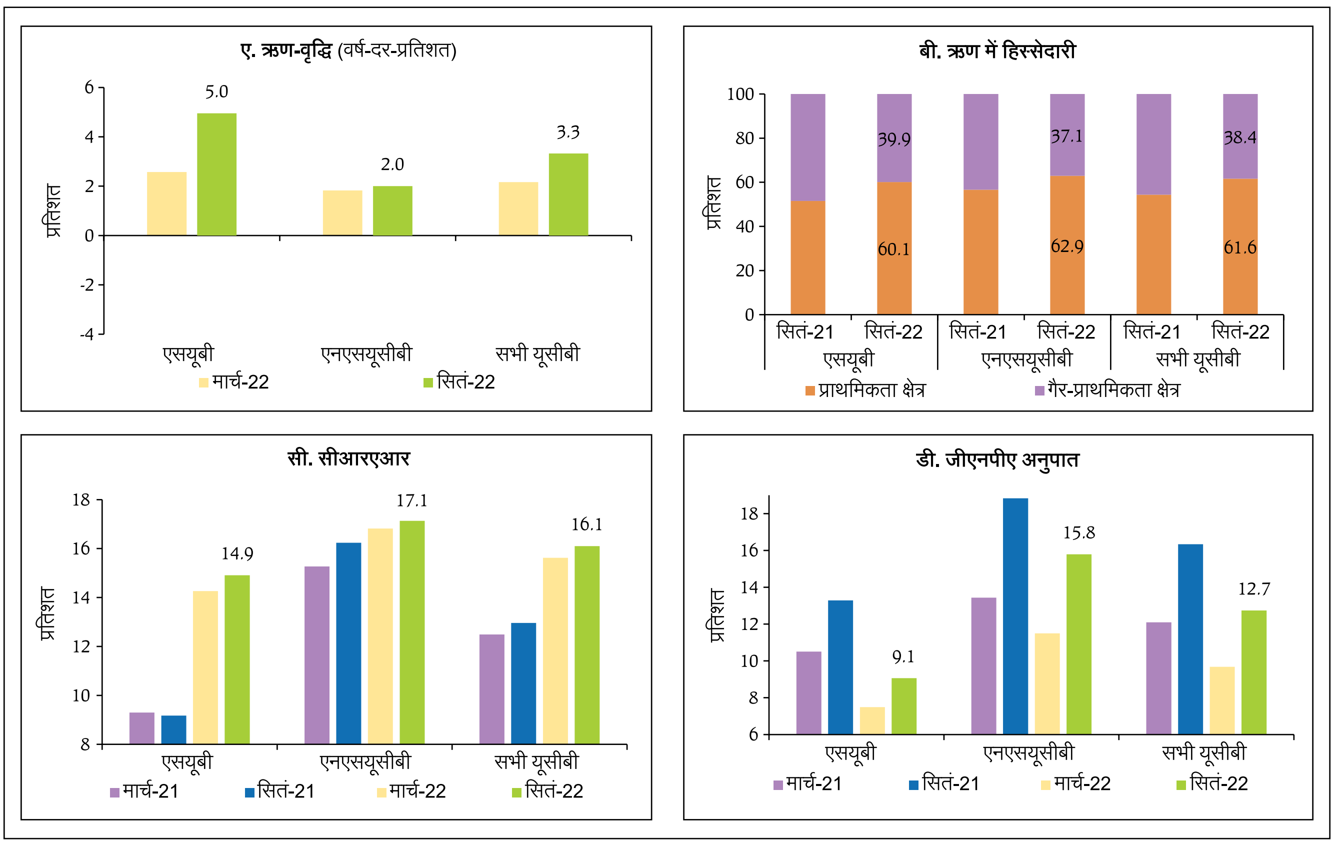

स्रोत: : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

[27] आंकड़े अनंतिम हैं और परोक्ष निगरानी(OSS) विवरणियों पर आधारित हैं। मार्च 2022 के बाद के आंकड़े में एक यूसीबी, जिसका एसएफ़बी में समामेलन हुआ था, शामिल नहीं है। कुछ यूसीबी से सितंबर 2022 के आंकड़े प्राप्त होना अभी शेष है, और इसलिए, प्राप्ति पर परिवर्तित हो सकते हैं।

[28] 1486 यूसीबी के साझा नमूने पर आधारित।

[29] मास्टर दिशानिर्देश – प्राथमिकता क्षेत्र उधार (पीएसएल)- लक्ष्य व वर्गीकरण (मास्टर दिशानिर्देश एफ़आईडीडी.सीओ.बीसी.5/04.09.01/2020-21)

चार्ट 2.23 यूसीबी के ऋण पोर्टफोलियो और आस्ति गुणवत्ता संकेतक (संपन्न)

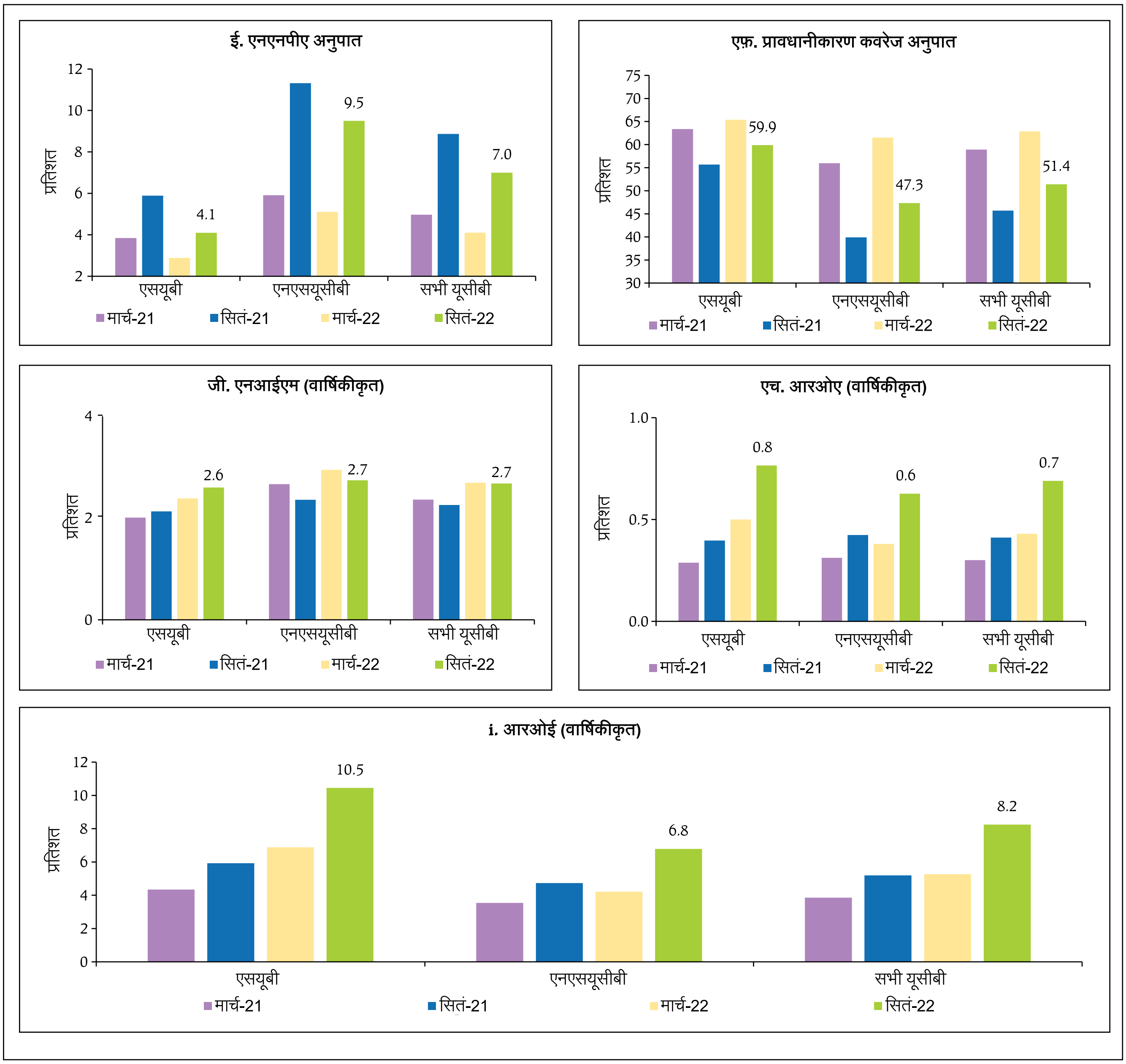

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

2.43 मार्च 2022 में काफी सुधार के बाद, यूसीबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2022 में एसयूसीबी (7.5 से 9.1 प्रतिशत तक) और एनएसयूसीबी (11.6 से 15.8 प्रतिशत तक) दोनों ही के मामले में फिर से खराब हो गया है। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में उनका एनएनपीए अनुपात भी बिगड़ गया है (चार्ट 2.23 डी और ई)। प्रावधानों में वृद्धि के बावजूद, एनएसयूसीबी और एसयूसीबी के पीसीआर में क्रमशः 47.3 प्रतिशत और 59.9 प्रतिशत तक गिरावट आई थी (चार्ट 2.23 एफ)। सीआरएआर की सहवर्ती वृद्धि और पीसीआर में गिरावट जीएनपीए के सापेक्ष कम प्रावधान का संकेत देती है। आगे, लाभप्रदता में सुधार के अभाव में, एनपीए में हुई वृद्धि को पूरा करने के लिए अतिरिक्त प्रावधान करने से पूंजी-स्तर में कमी आएगी।

2.44 आरओए और आरओई अनुपात के संदर्भ में मार्च 2021 से लाभप्रदता में लगातार सुधार हुआ है जबकि शुद्ध ब्याज मार्जिन (एनआईएम) सितंबर 2022 में स्थिर रहा(चार्ट 2.23 जी, एच और आई)।

II.2.1 दबाव परीक्षण

2.45 सितंबर 2022 तक रिपोर्ट की गई उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर क्रेडिट जोखिम (डिफ़ॉल्ट जोखिम और संकेंद्रण जोखिम), बाज़ार जोखिम (ट्रेडिंग बही और बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम) और चलनिधि जोखिम का आकलन करने के लिए यूसीबी[30] के चुनिंदा समूह पर दबाव परीक्षण किए गए हैं।

2.46 परिणाम दर्शाते हैं कि (ए) परीक्षण किए गए सभी पांच मापदंडों में, कुछ बैंक आधारभूत परिदृश्य में भी विफल रहे; (बी) सभी तीन परिदृश्यों में क्रेडिट डिफ़ॉल्ट जोखिम का प्रभाव क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम से अधिक है; (सी) ट्रेडिंग-बही पर आघात का प्रभाव न्यूनतम है; (डी) बैंकिंग-बही पर भारी दबाव बड़ी संख्या में यूसीबी की विफलता का कारण बनेगा और (ई) चलनिधि-आघात यूसीबी की सबसे बड़ी संख्या को प्रभावित करेंगे (चार्ट 2.24)। गंभीर दबाव-परिदृश्य के तहत, ट्रेडिंग-बही में क्रेडिट डिफ़ॉल्ट जोखिम, क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम और ब्याज दर जोखिम के लिए क्रमशः 349 बीपीएस, 337 बीपीएस और 90 बीपीएस तक प्रणाली स्तर का सीआरएआर कम हो जाता है; जबकि बैंकिंग-बही में ब्याज दर जोखिम के लिए गंभीर तनाव परिदृश्य के तहत एनआईआई में लगभग 20 प्रतिशत की गिरावट आई है।

चार्ट 2.24 यूसीबी का दबाव परीक्षण

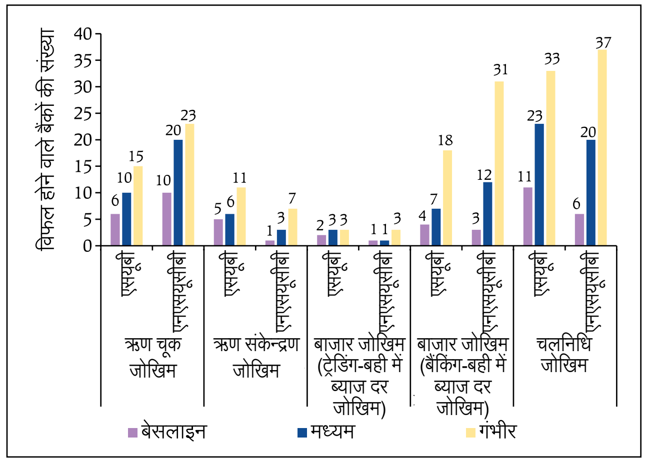

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

II.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी)[31]

2.47 सितंबर 2022 तक, ₹31.5 लाख करोड़ की कुल बकाया राशि के साथ एनबीएफसी द्वारा दिए गए ऋण में वृद्धि हो रही है। सेवा-क्षेत्र-ऋण (बकाया ऋण में हिस्सेदारी 14.7 प्रतिशत) और व्यक्तिगत ऋण (29.5 प्रतिशत हिस्सेदारी) में एक स्वस्थ विकास दर देखी गई। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही में क्रेडिट पोर्टफोलियो((37.5 प्रतिशत हिस्सेदारी) के सबसे बड़े खंड, उद्योग, में मंद वृद्धि देखी गई और सरकार के स्वामित्व वाली एनबीएफसी के ऋण पोर्टफोलियो में भी नरमी रिकॉर्ड की गई(चार्ट 2.25)।

चार्ट 2.25 एनबीएफसी की क्षेत्रवार ऋण-संवृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

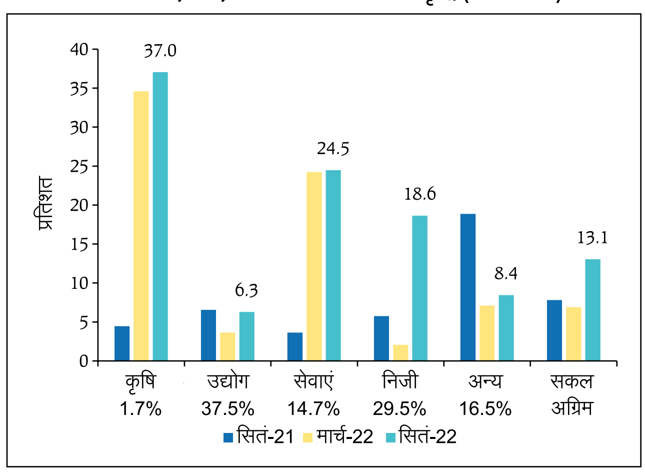

नोट: वर्ग में दिए गए आंकड़े सितंबर 2022 के बकाया ऋणों में क्षेत्रवार हिस्सेदारी दर्शाते हैं।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

2.48 एनबीएफसी का जीएनपीए अनुपात महामारी की दूसरी लहर के दौरान रिकॉर्ड किए गए 7.2 प्रतिशत के शीर्ष से गिरकर

[30] यह दबाव परीक्षण सितंबर 2022 की वित्तीय स्थिति के संदर्भ में, रिज़र्व बैंक के सर्व-समावेशी निर्देशों के अंतर्गत आने वाले तीन बैंकों के अतिरिक्त, ऐसी चुनिंदा 109 यूसीबी (46 एसयूसीबी, 63 एनएसयूसीबी) के लिए किया जाता है जिनका आस्ति आकार ₹ 1,000 करोड़ से अधिक है। दबाव परीक्षण के लिए प्रयुक्त विस्तृत प्रक्रिया-पद्धति को अनुबंध-2 में दिया गया है।

[31] इस खंड में किए गए विश्लेषण 24 नवंबर, 2022 तक जमाराशि स्वीकार करने वाली और जमाराशि नहीं लेने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी (कोर निवेश कंपनियों सहित) के उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित हैं, जो अनंतिम हैं।

चार्ट 2.26 एनबीएफ़सी का क्षेत्रवार जीएनपीए अनुपात

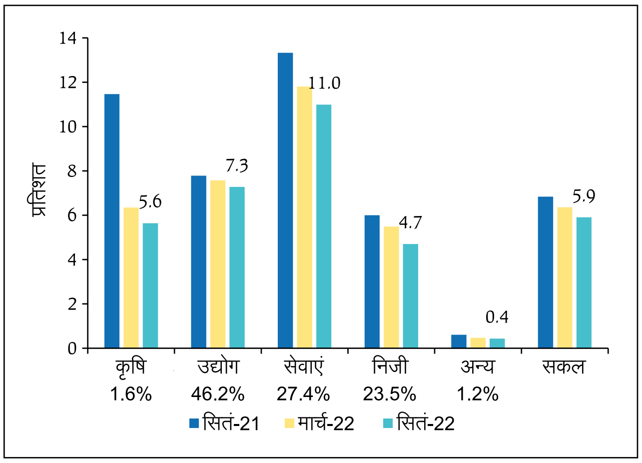

नोट : वर्ग में दिए गए आंकड़े सितंबर 2022 के बकाया ऋणों में क्षेत्रवार हिस्सेदारी दर्शाते हैं।
स्रोत: : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.27: एनबीएफ़सी का क्षेत्रवार एनएनपीए अनुपात

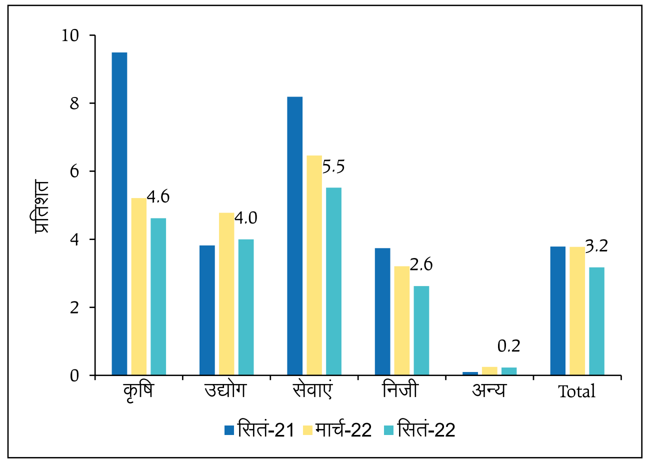

सितंबर 2022 में 5.9 प्रतिशत पर पहुंच गया, जो महामारी से पहले के स्तर के निकट था। हालांकि यह नरमी सभी क्षेत्रों में देखी गई (चार्ट 2.26), सेवा क्षेत्र का जीएनपीए अनुपात दो अंकों में बना हुआ है। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान एनबीएफसी का कुल एनएनपीए अनुपात 60 बीपीएस से घटकर सितंबर 2022 में 3.2 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.27)।

2.49 सितंबर 2022 के अंत तक 27.4 प्रतिशत के सीआरएआर के साथ एनबीएफसी की पूंजी-स्थिति मजबूत बनी रही। मार्च 2022 से, 20 बीपीएस की गिरावट काफी हद तक ऋण में तेजी आने के कारण आरडब्ल्यूए में हुई वृद्धि के कारण थी। आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए) में उत्तरोत्तर छमाहियों में सुधार हुआ है (चार्ट 2.28)।

2.50 एनबीएफसी के लिए धन का सबसे बड़ा स्रोत उधार है, हालांकि मार्च 2020 से उनकी हिस्सेदारी में कमी आई है (सारणी 2.9)। वर्ष 2022-23 की पहली छमाही के दौरान

चार्ट 2.28 पूंजी पर्याप्तता और लाभप्रदता

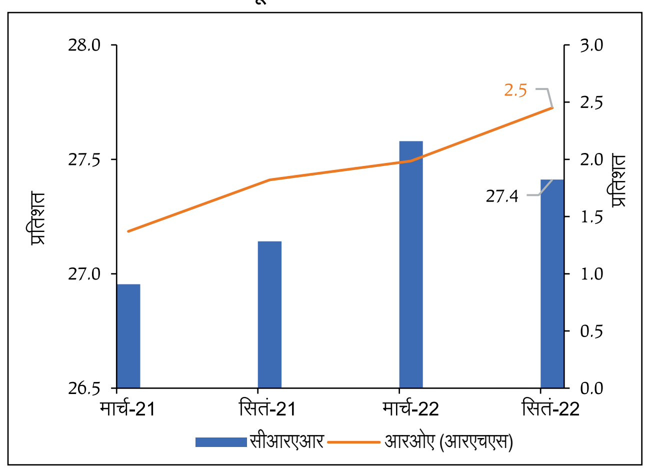

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

सारणी 2.9 : एनबीएफ़सी की निधियों के स्रोत

(प्रतिशत)

मद-विवरण	मार्च-20	सितं-20	मार्च-21	सितं-21	मार्च-22	सितं-22
1. शेयर पूंजी आरक्षित निधि और अधिशेष	24.2	24.4	26.4	28.9	28.7	28.5
2. कुल उधार	66.4	65.3	63.4	60.6	61.3	61.0
जिसका :						
2(i) बैंकों से उधार	20.3	19.7	19.9	18.5	20.5	21.3
2(ii) बैंकों दवारा अभिदत्त सीपी	0.5	0.5	0.4	0.3	0.4	0.7
2(iii) बैंकों द्वारा अभिदत्त डिबेंचर	2.5	3.0	3.0	2.9	2.8	3.1
बैंकों के कुल	23.2	23.2	23.3	21.7	23.7	25.1
3. अन्य	9.3	10.3	10.2	10.5	10.0	10.5
कुल	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

निधियों के लिए बैंकों पर उनकी निर्भरता बढ़ी थी। बैंकों से लिया गया उधार (ज्यादातर सावधि ऋण) बैंक-निधियन का प्रमुख हिस्सा था।

2.51 एनबीएफसी के लिए शुरू किया गया स्केल आधारित विनियमन (एसबीआर) उन्हें मूल-पटल (एनबीएफसी-बीएल), मध्य-पटल (एनबीएफसी-एमएल), ऊपरी-पटल (एनबीएफसी-यूएल) और शीर्ष-पटल (एनबीएफसी-टीएल) के चार पटलों में, उनके आकार, गतिविधि और कथित जोखिम के आधार पर, वर्गीकृत करता है। हाल ही में, उक्त संरचना के तहत एनबीएफसी-यूएल सकल प में वर्गीकरण के लिए सोलह संस्थाओं की पहचान की गई है। यह देखा गया है कि एनबीएफसी-यूएल समूह ने समग्र एनबीएफसी क्षेत्र की तुलना में सितंबर 2022 तक 17.2 प्रतिशत की उच्च ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) और 4.2 प्रतिशत का बेहतर जीएनपीए अनुपात दर्ज किया।

II.3.1 दबाव परीक्षण[32] - ऋण जोखिम

2.52 एनबीएफसी क्षेत्र का क्रेडिट जोखिम आघात के प्रति लचीलापन आकने हेतु प्रणालीगत स्तर का दबाव परीक्षण 152[33] एनबीएफसी के नमूने के लिए किया गया है। एक बेसलाइन और क्रमशः 1 एसडी और 2 एसडी तक गिरावट-अनुपात में वृद्धि के साथ, दो दबाव परिदृश्यों - मध्यम और उच्च जोखिम के तहत यह परीक्षण किए गए। सितंबर 2022 में नमूना एनबीएफसी का पूंजी-पर्याप्तता-अनुपात 26.0 प्रतिशत और जीएनपीए अनुपात 4.0 प्रतिशत था। बेसलाइन परिदृश्य को एक वर्ष आगे के लिए अनुमानित किया गया है, जो सामान्य परिस्थितियों में व्यवसाय के जारी रहने की धारणाओं पर आधारित है।

2.53 बेसलाइन परिदृश्य के तहत, नौ एनबीएफसी का सीआरएआर - जिसमें नमूना कंपनियों के कुल अग्रिमों का 4.7 प्रतिशत शामिल है - 15 प्रतिशत की न्यूनतम विनियामकीय आवश्यकता से कम पाया गया है। गिरावट अनुपात में 1 एसडी वृद्धि के मध्यम-जोखिम-आघात के तहत, जीएनपीए अनुपात 6.9 प्रतिशत तक बढ़ जाता है और परिणामी आय-हानि और

चार्ट 2.29 एनबीएफ़सी में ऋण जोखिम – प्रणाली-स्तर पर

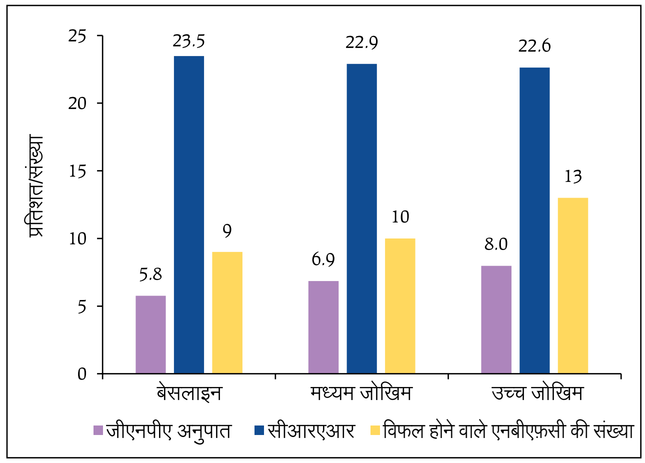

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

अतिरिक्त प्रावधानीकरण आवश्यकताएं बेसलाइन के सापेक्ष सीआरएआर को 58 बीपीएस कम कर देती हैं। 2 एसडी के उच्च जोखिम वाले आघात के तहत, इस क्षेत्र का पूंजी पर्याप्तता अनुपात बेसलाइन के सापेक्ष 85 बीपीएस घटकर 22.6 प्रतिशत हो गया। 15 प्रतिशत की न्यूनतम विनियामकीय पूंजी आवश्यकता को पूरा करने में विफल रहने वाली एनबीएफसी की संख्या, क्रमशः मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्यों के तहत, 10 और 13 तक बढ़ जाती है (चार्ट 2.29)।

II.3.2 दबाव परीक्षण - चलनिधि जोखिम

2.54 नकदी प्रवाह में अनुमानित वृद्धि और कमी[34] के संयोजन के प्रभाव को ग्रहण करके एनबीएफसी क्षेत्र की चलनिधि संबंधी आघात-सहनीयता का आकलन किया गया है। बेसलाइन परिदृश्य सितंबर 2022 की स्थिति के अनुसार अनुमानित बहिर्वाह और अंतर्वाह का उपयोग करता है। एक आधार रेखा और दो दबाव परिदृश्य लागू होते हैं - एक मध्यम जोखिम परिदृश्य जिसमें अंतर्वाह में 5 प्रतिशत संकुचन और बहिर्वाह में 5 प्रतिशत वृद्धि शामिल है; और अंतर्वाह में 10 प्रतिशत की गिरावट और बहिर्वाह में 10 प्रतिशत की बढ़त के आघात वाला एक उच्च जोखिम परिदृश्य। परिणामों से संकेत मिलता है कि बेसलाइन, मध्यम और उच्च जोखिम वाले परिदृश्यों में अगले

[32] एनबीएफ़सी के लिए दबाव परीक्षण हेतु प्रयुक्त विस्तृत प्रक्रिया-पद्धति को अनुबंध-2 में दिया गया है।

[33] इस नमूने में, सितंबर 2022 की स्थिति-अनुसार कुल ₹ 15.64 लाख करोड़ अग्रिम की जमाराशि स्वीकार करने वाली 8 एनबीएफ़सी और जमाराशि नहीं स्वीकार करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण (एनडीएसआई) 144 एनबीएफ़सी शामिल हैं, जो कि इस क्षेत्र में गैर-सरकारी एनबीएफ़सी के कुल अग्रिम का 92 प्रतिशत है। दबाव परीक्षण के नमूने में सरकारी एनबीएफ़सी, विघटन के अधीन कंपनियाँ और निवेश-केंद्रित कंपनियाँ शामिल नहीं हैं।

[34] चलनिधि जोखिम पर आधारित दबाव परीक्षण 198 एनबीएफ़सी के नमूने पर किया गया था। उक्त नमूने में जमाराशि स्वीकार करने वाली 7 एनबीएफ़सी और 191 एनडीएसआई एनबीएफ़सी शामिल हैं। नमूने का कुल आस्ति-आकार ₹ 19.64 लाख करोड़ था जिसमें गैर-सरकारी एनबीएफ़सी का 87.2 प्रतिशत है।

एक वर्ष में चलनिधि में नकारात्मक-संचयी-असंतुलन का सामना करने वाली एनबीएफसी की संख्या क्रमशः 8 (नमूने के आस्ति आकार के 1.9 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व), 26 (9.3 प्रतिशत) और 47 (24.0 प्रतिशत) थी (सारणी 2.10)।

II.3.3 ब्याज दर जोखिम

2.55 जोखिम पर अर्जन (ईएआर) का अनुमान लगाने हेतु एनबीएफसी[35] के लिए ब्याज दर जोखिम का पारंपरिक अंतर विश्लेषण (टीजीए) के तहत विश्लेषण किया गया है। समूह के स्तर पर, एनबीएफसी ने दर-संवेदनशील देयताओं की तुलना में उनकी दर-संवेदनशील आस्तियां अधिक होने के कारण ब्याज दर में वृद्धि के परिदृश्य के तहत, अर्जन पर सकारात्मक प्रभाव प्रदर्शित किया है। इकाई के स्तर पर, जमाराशि लेने वाली 4 और 35 एनडीएसआई एनबीएफसी की आय पर ब्याज दर के प्रतिकूल उतार-चढ़ाव से कुछ हद तक नकारात्मक प्रभाव पड़ने का अनुमान है।

II.4 बीमा क्षेत्र

2.56 बीमा कंपनियों का ऋणशोधन-क्षमता अनुपात पॉलिसीधारकों के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए बीमाकर्ता की क्षमता का आकलन करता है। यह संबंधित क्षेत्र की वित्तीय स्थिरता का एक प्रभावी संकेतक है - ऋणशोधन-क्षमता अनुपात जितना अधिक होगा, बीमाकर्ता की अपनी देयताओं को पूरा करने की क्षमता उतनी ही अधिक होगी। चूंकि भविष्य में आकस्मिक घटनाओं के होने का अनुमान बीमा देयताओं में शामिल होता है, अतएव उच्च ऋणशोधन-क्षमता अनुपात का अर्थ, भविष्य की अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए बीमाकर्ता की उच्च आघात-सहनीयता का होना है। भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) ने सभी बीमाकर्ताओं के लिए न्यूनतम सीमा के रूप में 150 प्रतिशत का ऋणशोधन-क्षमता अनुपात निर्धारित किया है।

2.57 पिछली चार तिमाहियों में जीवन और गैर-जीवन दोनों बीमा क्षेत्रों में सभी बीमाकर्ताओं के लिए समेकित ऋणशोधन-क्षमता अनुपात न्यूनतम सीमा (सारणी 2.11) से ऊपर बना हुआ है।

II.5 म्यूचुअल फंड का दबाव परीक्षण

2.58 जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को मजबूत करने के लिए और अप्रत्याशित घटनाओं के कारण संभव होने वाली कमजोरियों

सारणी 2.10 एनबीएफ़सी में चलनिधि जोखिम

एक वर्ष के बहिर्वाहों के प्रतिशत के रूप में संचयी-अंतर	चलनिधि-अंतर रखने वाले एनबीएफ़सी की संख्या		
	बेसलाइन	मध्यम	उच्च
50 प्रतिशत से अधिक	2 (0.4)	2 (0.4)	2 (0.4)
20 और 50 प्रतिशत के बीच	0 (0.0)	2 (0.5)	6 (1.5)
20 प्रतिशत और उससे नीचे	6 (1.5)	22 (8.4)	39 (22.1)

नोट: कोष्ठक में दिए गए आंकड़े नमूने के आस्ति आकार में प्रतिशत हिस्सेदारी को दर्शाते हैं।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

का मूल्यांकन करने व प्रारंभिक चेतावनी-संकेत प्रदान करने हेतु एक ठोस ढांचा विकसित करने के लिए, सेबी ने सभी असीमित अवधि वाली ऋण योजनाओं (एक दिन की योजनाओं को छोड़कर) में भारतीय पारस्परिक निधि संघ(एएमएफआई) के सर्वश्रेष्ठ प्रथाएं अभ्यास दिशानिर्देशों के अनुसार दबाव परीक्षण करने का अधिदेश दिया।

2.59 एएमसी द्वारा सभी असीमित अवधि वाली ऋण योजनाओं (एकदिवसीय योजनाओं को छोड़कर) विभिन्न जोखिम मापदंडों, जैसे कि ब्याज दर जोखिम, ऋण जोखिम, चलनिधि जोखिम और ऐसी योजनाओं पर उनके शुद्ध आस्ति मूल्यों (एनएवी) पर आया मोचन जोखिम, के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए मासिक आधार पर दबाव परीक्षण किया जा रहा है। मार्च 2022 और सितंबर 2022 के महीनों के लिए शीर्ष 10 म्यूचुअल फंड (एयूएम पर आधारित) द्वारा सभी असीमित अवधि वाली योजनाओं (एकदिवसीय फंड, गिल्ट फंड और 10 साल की निरंतर अवधि वाले गिल्ट फंड को छोड़कर) के लिए किए गए दबाव परीक्षण विश्लेषण से पता चला इन जोखिमों से संबंधित सीमाओं का कोई उल्लंघन नहीं हुआ है।

सारणी 2.11 सभी बीमाकर्ताओं के लिए समेकित ऋण-शोधन क्षमता अनुपात

(प्रतिशत)

ऋण-शोधन क्षमता अनुपात	जीवन बीमा क्षेत्र	सामान्य और स्वास्थ बीमा क्षेत्र
जून 22 में	200	180
मार्च 22 में	194	173
दिसंबर 21 में	189	172
सितंबर 21 में	194	167

स्रोत: आईआरडीएआई

[35] जमाराशि स्वीकार करने वाली 17 एनबीएफ़सी और 197 एनडीएसआई एनबीएफ़सी पर आधारित (कोर निवेश कंपनियों को छोड़कर)।

2.60 असीमित अवधि वाली ऋण योजनाओं के लिए चलनिधि जोखिम प्रबंधन के एक भाग के रूप में, दो प्रकार के चलनिधि अनुपातों का उपयोग किया जा रहा है, (i) जोखिम पर मोचन (आरएआर) जो एक निश्चित विश्वास अंतराल पर संभावित बहिर्वाह को दर्शाता है और

(ii) जोखिम पर किए गए सशर्त मोचन (सीआरएआर), जो दिए गए विश्वास अंतराल पर निचले स्तर पर स्थित योजनाओं के व्यवहार को दर्शाता है, का उपयोग किया जा रहा है। सभी एएमसी को इन चलनिधि अनुपातों (एलआर-आरएआर और एलआर-सीआरएआर) को प्रारंभिक सीमा से ऊपर बनाए रखने के लिए अधिदेशित किया गया है, जो कि योजना प्रकार, योजना आस्ति संरचना और संभावित बहिर्वाह (योजना में निवेशक संकेंद्रण के प्रतिदर्श पर) पर आधारित हैं। म्युचुअल फंड द्वारा मासिक आधार पर सभी असीमित अवधि वाली ऋण योजनाओं (एकदिवसीय फंड, गिल्ट फंड और 10 साल की निरंतर अवधि वाले गिल्ट फंड को छोड़कर) के लिए इन चलनिधि अनुपातों की बैक-टेस्टिंग किया जाना आवश्यक है।

2.61 सितंबर 2022 के लिए असीमित अवधि वाली ऋण योजनाओं की 13 श्रेणियों हेतु शीर्ष 10 म्युचुअल फंड (एयूएम पर आधारित) द्वारा परिकलित एलआर-आरएआर और एलआर-सीआरएआर अनुपात अधिकांश म्युचुअल फंड के लिए संबंधित सीमा से काफी ऊपर थे। हालांकि, कुछ उदाहरणों में, मुख्य रूप से मोचन के कारण अनुपात प्रारंभिक सीमा से नीचे थे, जिन्हें संबंधित एएमसी द्वारा कुछ दिनों के भीतर ठीक कर दिया गया था (चार्ट 2.30 और चार्ट 2.31)।

II.6. दबाव परीक्षण विश्लेषण - समाशोधन निगम

2.62 समाशोधन निगमों (सीसी) में जोखिम प्रबंधन संरचना की मजबूती बढ़ाने के लिए, सेबी ने मूल निपटान गारंटी फंड (एसजीएफ), तनाव परीक्षण और डिफ़ॉल्ट प्रक्रियाओं से संबंधित विस्तृत मानदंड जारी किए हैं। मूल एसजीएफ के न्यूनतम आवश्यक कॉर्पस (एमआरसी) को निर्धारित करने के लिए सीसी में दबाव परीक्षण पद्धति का उपयोग किया जाता है।

2.63 दबाव परीक्षण के आधार पर कोर एसजीएफ के एमआरसी का खंडवार निर्धारण मासिक आधार पर किया जाता है। नकद और इक्विटी डेरिवेटिव खंड हेतु एमआरसी का निर्धारण करने के लिए, शीर्ष दो समाशोधन सदस्यों (सीएम) के अनुमानित समक्षणिक डिफ़ॉल्ट से उत्पन्न होने वाले क्रेडिट एक्सपोजर की गणना सीसी द्वारा की जाती है। प्रत्येक सीएम के

चार्ट 2.30 एएमएफ़आई द्वारा निर्धारित सीमाओं पर एएमसी द्वारा सुस्थापित रेंज (अधिशेष (+)/चूक (-)) एलआर-आरएआर

(प्रतिशत)

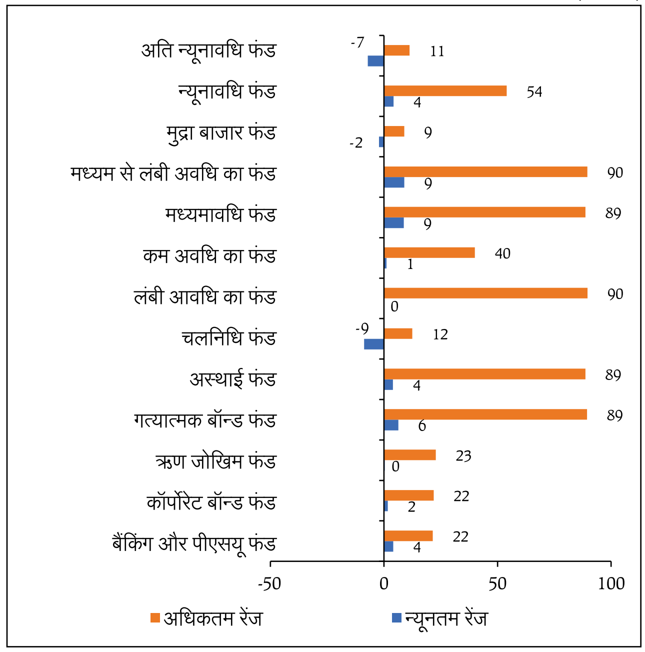

नोट: यह आंकड़े एयूएम पर आधारित शीर्ष 10 एएमसी पर आधारित हैं
स्रोत: सेबी

चार्ट 2.31 एएमएफ़आई द्वारा निर्धारित सीमाओं पर एएमसी द्वारा सुस्थापित रेंज (अधिशेष (+)/चूक (-)) एलआर-सीआरएआर

(प्रतिशत)

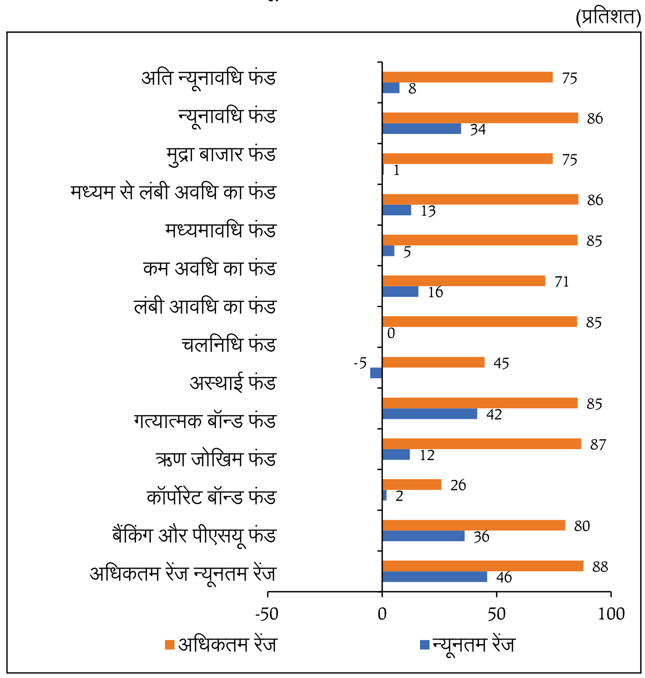

नोट: यह आंकड़े एयूएम पर आधारित शीर्ष 10 एएमसी पर आधारित हैं
स्रोत: सेबी

लिए क्रेडिट एक्सपोजर का निर्धारण खुली स्थितियों को बंद करने (दबाव परीक्षण परिदृश्यों के तहत) से उत्पन्न होने वाले नुकसान का और आवश्यक मार्जिन पर सीएम की शुद्ध पे-इन/पे-आउट आवश्यकता व सीएम की अन्य अनिवार्य जमाराशियों का आकलन करके किया जाता है। इसके अलावा, महीने के एमआरसी को महीने के सभी दैनिक बदतरीन हालातों में हुई हानि के परिदृश्यों के औसत के रूप में निर्धारित किया जाता है और किसी भी महीने के लिए वास्तविक एमआरसी को महीने के एमआरसी व अतीत में किसी भी समय आए एमआरसी के उच्चतम के रूप में निर्धारित किया जाता है।

2.64 इसलिए सेबी की सिफारिश के अनुसार, हालांकि तनाव परीक्षण विश्लेषण के आधार पर एक प्रमुख समाशोधन निगम में एमआरसी {नकदी के साथ-साथ वायदा और विकल्प (एफएंडओ) खंड} की मासिक परिकलित राशि जुलाई-अक्टूबर 2022 की अवधि के दौरान, सीएम के क्रेडिट एक्सपोजर में बदलाव के अनुसार, अलग-अलग थी, पर वास्तविक एमआरसी की आवश्यकता (नकद और एफ एंड ओ खंड के लिए) सभी महीनों में स्थिर रही (सारणी 2.12)।

II.7 अंतर्संबंध

2.65 एक वित्तीय प्रणाली को एक ऐसे नेटवर्क के रूप में देखा जा सकता है जिसमें वित्तीय संस्थान नोड्स के रूप में और द्विपक्षीय एक्सपोजर इन नोड्स को जोड़ने वाले लिंक के रूप में होते हैं। ये लिंक जो दिए गए ऋण, किए गए निवेश या एक दूसरे के साथ जमा के रूप में हो सकते हैं, धन, चलनिधि, निवेश और जोखिम विविधीकरण के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं, लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों में आघातों को प्रसारित कर देने वाले चैनल में भी बदल सकते हैं, फलतः अग्रणी प्रणालीगत आघातों का प्रवर्धन और संक्रमण होता है। व्यापक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा के लिए ऐसे नेटवर्क की बारीकियों को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

सारणी : 2.12 एक बड़े समाशोधन निगम में दबाव परीक्षण विश्लेषण पर आधारित कोर एसजीएफ़ की न्यूनतम आवश्यक आधारभूत निधि

(राशि करोड़ रुपये में)

खंड	जुलाई 2022	अगस्त 2022	सितंबर 2022	अक्तूबर 2022
नकदी बाजार (सीएम)	172	148	149	155
इक्विटी व्युत्पन्नी खंड (एफ़ओ)	961	991	1,147	1,296
कुल (सीएम+एफ़ओ)	1,132	1,139	1,297	1,451
वास्तविक एमआरसी आवश्यकता (सीएम+एफ़ओ)	1,558	1,558	1,558	1,558

स्रोत : सेबी

II.7.1 वित्तीय प्रणाली नेटवर्क[36 37]

2.66 वित्तीय प्रणाली की संस्थाओं के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर[38] ने स्थिर वृद्धि बनाए रखी। सितंबर 2022 तिमाही में वृद्धि एससीबी और अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों (एआईएफआई) की उच्च उधार आवश्यकता (चार्ट 2.32 ए) द्वारा संचालित थी।

[36] विश्लेषण में उपयोग किए गए नेटवर्क-मॉडल को वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिजर्व बैंक के सहयोग से प्रोफेसर शेरी मार्कोस (एसेक्स विश्वविद्यालय) और डॉ. सिमोन गियानसांटे (बाथ विश्वविद्यालय) द्वारा विकसित किया गया है।

[37] यहां और बाद के भाग में प्रस्तुत विश्लेषण निम्नलिखित आठ समूहों से 225 संस्थाओं के आंकड़ों पर आधारित है: एससीबी, अनुसूचित यूसीबी (एसयूसीबी), एएमसी-एमएफ, एनबीएफसी, एचएफसी, बीमा कंपनियां, पेंशन फंड और एआईएफआई। समाविष्ट की गई इन 225 संस्थाओं में 77 एससीबी शामिल हैं; 11 छोटे वित्त बैंक (एसएफबी); 20 एसयूसीबी; 25 एएमसी-एमएफ (जो म्यूचुअल फंड क्षेत्र के एयूएम के 98 प्रतिशत से अधिक को समाविष्ट करते हैं); 40 एनबीएफसी (जमाराशि स्वीकार करने वाली और जमाराशि न लेने वाली दोनों तरह की व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण कंपनियां, जो कुल एनबीएफसी संपत्ति का लगभग 70 प्रतिशत दर्शाती हैं); 22 बीमा कंपनियां (जो इस क्षेत्र की 90 प्रतिशत से अधिक आस्ति को समाविष्ट करती हैं); 18 एचएफसी (जो कुल एचएफसी आस्ति के 95 प्रतिशत से अधिक का प्रतिनिधित्व करते हैं); 7 पेंशन फंड (पीएफ) और 5 एआईएफआई (नाबार्ड, एक्जिम, एनएचबी, सिडबी और एनएबीएफआईडी)।

[38] इसमें एक ही समूह की संस्थाओं के बीच एक्सपोजर शामिल हैं। ये एक्सपोजर 30 सितंबर 2022 तक बकाया-स्थिति में हैं और मोटे तौर पर फंड-आधारित और गैर-फंड-आधारित एक्सपोजर में विभाजित हैं। फंड-आधारित एक्सपोजर में मुद्रा बाजार लिखत, जमा, ऋण और अग्रिम, लंबी अवधि के ऋण लिखत और इक्विटी निवेश शामिल हैं। गैर-निधि-आधारित जोखिम में साख पत्र, बैंक गारंटी और व्युत्पन्नी लिखत(सीसीआईएल द्वारा गारंटी-प्राप्त निपटान को छोड़कर) शामिल हैं।

चार्ट 2.32: वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर

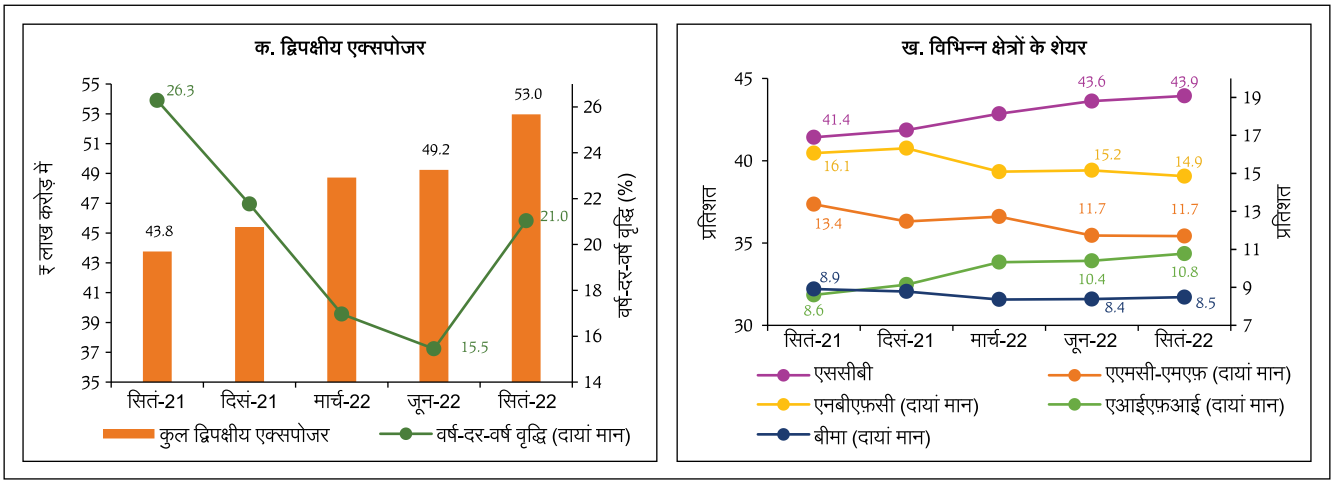

टिप्पणी: एक ही समूह की संस्थाओं के बीच के एक्सपोजर को शामिल किया गया है।
स्रोत: विभिन्न नियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं आरबीआई स्टाफ गणनाएं।

2.67 एससीबी ने भारतीय वित्तीय प्रणाली में सबसे बड़ा द्विपक्षीय एक्सपोजर रखना जारी रखा, जो सितंबर 2022 में महामारी से पहले के स्तर पर पहुंच गया। एनबीएफसी और एएमसी-एमएफ की हिस्सेदारी में साल-दर-साल आधार पर गिरावट आई, जबकि एआईएफआई की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई (चार्ट 2.32 बी)।

2.68 अंतर-क्षेत्रीय एक्सपोजर[39] के मामले में, जिसके बाद बीमा कंपनियां एएमसी-एमएफ प्रणाली में सबसे बड़े निधि प्रदाता थे, जबकि एनबीएफसी और एचएफसी निधि के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता थे, इसके बाद पीवीबी थे। बैंक समूहों में, पीएसबी, एफबी और यूसीबी संपूर्ण वित्तीय क्षेत्र की तुलना में निवल प्राप्तकर्ता स्थिति में थे जबकि पीवीबी और एसएफबी निवल देय स्थिति में थे (चार्ट 2.33)।

2.69 सितंबर 2021 से सितंबर 2022 की अवधि के दौरान वित्तीय प्रणाली से एएमसी-एमएफ और बीमा कंपनियों (आईसी) की शुद्ध प्राप्तियों में बढ़ोत्तरी हुई। जबकि, इस अवधि के दौरान पीवीबी, एनबीएफसी और एचएफसी के शुद्ध देय में वृद्धि हुई। प्रणाली के लिए निधि प्रदाता के रूप में पीएसबी की भूमिका कम हो गई क्योंकि पीएसबी के मामले में ऋण वृद्धि ने जमा वृद्धि को पीछे छोड़ दिया (चार्ट 2.34)।

चार्ट 2.33 : वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लाट- सितंबर 2022

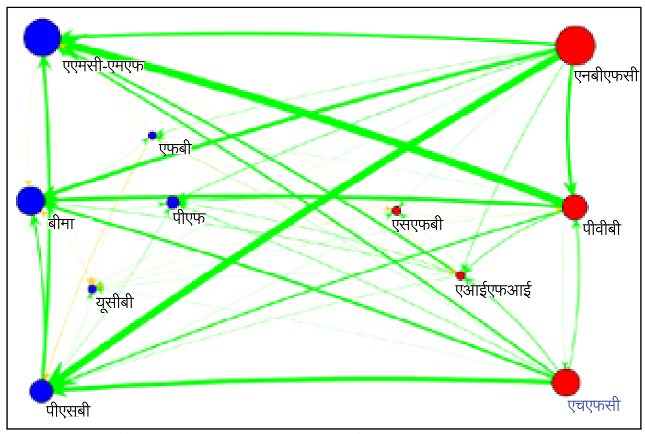

टिप्पणी: प्राप्य और देय में एक ही समूह की संस्थाओं के बीच के लेनदेन शामिल नहीं हैं। लाल रंग के गोले निवल देय वाली संस्थाएं हैं और नीले रंग के गोले निवल प्राप्य वाली संस्थाएं हैं।
स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं आरबीआई स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 2.34 संस्थाओं की निवल प्राप्य राशियां (+) / देय राशियां (-)

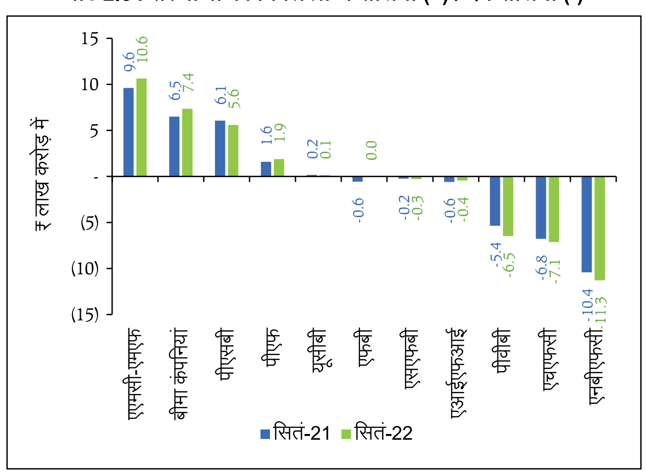

टिप्पणी: प्राप्य और देय में एक ही समूह की संस्थाओं के बीच के लेनदेन शामिल नहीं हैं।
स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं आरबीआई स्टाफ गणनाएं।

[39] अंतर क्षेत्रीय जोखिम में वित्तीय प्रणाली में शामिल एक ही क्षेत्र की संस्थाओं के बीच के लेन-देन शामिल नहीं हैं।

ए. अंतर-बैंक बाजार

2.70 मार्च 2022 तक बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों का 3.3 प्रतिशत अंतर-बैंक एक्सपोजर था, जिसमें निधि-आधारित एक्सपोज़र का प्रमुख हिस्सा (2.5 प्रतिशत) था। संपूर्ण रूप से, निधि-आधारित[40] और गैर-निधि-आधारित एक्सपोज़र[41] दोनों में ही वृद्धि जारी रही (चार्ट 2.35)।

2.71 पीएसबी ने अंतर-बैंक बाजार में अपना दबदबा बनाए रखा, हालांकि 2022-23 की दूसरी तिमाही में उनकी हिस्सेदारी में मामूली कमी आई, जबकि पीवीबी और एफबी की हिस्सेदारी में इसी अवधि में मामूली वृद्धि हुई (चार्ट 2.36)।

2.72 निधि-आधारित अंतर-बैंक बाजार का लगभग 74 प्रतिशत अल्पकालिक (एसटी) प्रकृति का था, जिसमें एसटी जमा का हिस्सा सबसे अधिक था, इसके बाद एसटी ऋण और मांग मुद्रा बाजार एक्सपोजर था। दीर्घकालिक (एलटी) ऋण एलटी निधि-आधारित अंतर-बैंक एक्सपोजर में प्रमुख थे (चार्ट 2.37)।

चार्ट 2.35 अंतर-बैंक बाजार

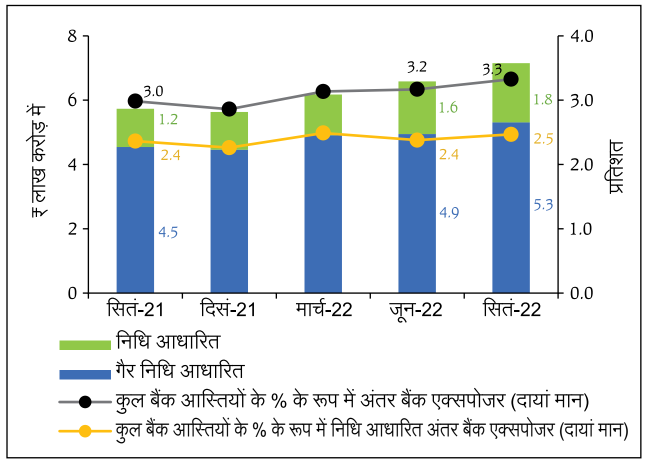

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.36: अंतर-बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह – सितंबर 2022

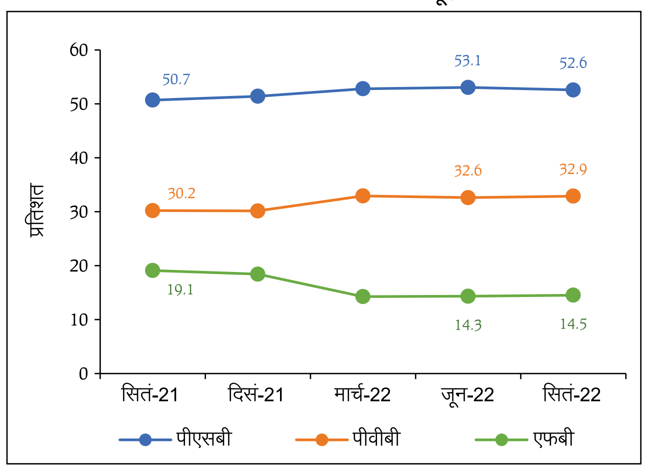

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.37: निधि आधारित अंतर-बैंक बाज़ार की संरचना

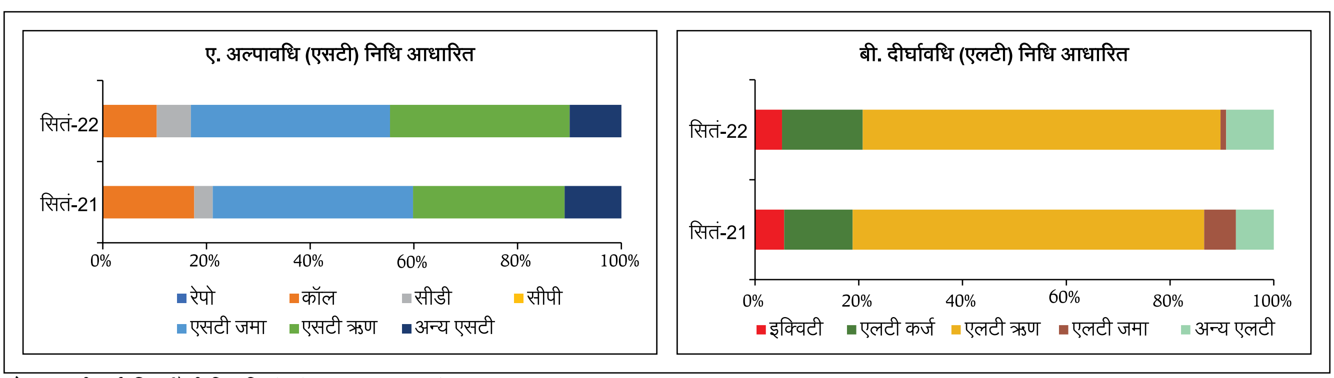

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

[40] निधि-आधारित एक्सपोजर में अल्पावधिक और दीर्घावधिक दोनों तरह के एक्सपोज़र शामिल हैं। अल्पावधि एक्सपोज़र पर सभी सात श्रेणियों के आंकड़े एकत्र किए गए हैं - अर्थात रिपो (नॉन-सेंट्रली क्लियर्ड); मांग मुद्रा; वाणिज्यिक पत्र; जमा प्रमाणपत्र; अल्पावधि ऋण; अल्पावधि जमा और अन्य अल्पावधि एक्सपोज़र। दीर्घावधि एक्सपोजर से संबंधित सभी पांच श्रेणियों के आँकड़े एकत्र किए गए हैं – इक्विटी; दीर्घावधि कर्ज; दीर्घावधि ऋण; दीर्घावधि जमाराशियां और अन्य दीर्घावधि देयताएं।

[41] गैर-निधि आधारित जोखिम में, बकाया बैंक गारंटी, बकाया साख पत्र और डेरिवेटिव बाजार में धनात्मक मार्क-टू-मार्केट पोजीशन (उन एक्सपोजर को छोड़कर जिनके लिए सीसीआईएल द्वारा निपटान की गारंटी है) शामिल हैं।

बी. अंतर-बैंक बाजार : नेटवर्क संरचना और कनेक्टिविटी

2.73 अंतर-बैंक बाजार में आमतौर पर एक कोर-परिधि नेटवर्क संरचना होती है[42 43]। सितंबर 2022 के अंत तक, चार बैंक सबसे भीतरी कोर और सात बैंक मध्यवर्ती-कोर सर्कल में थे। सबसे भीतरी कोर के चार बैंकों में एक बड़ा सार्वजनिक और तीन निजी क्षेत्र के बैंक शामिल थे। मध्यवर्ती-कोर में पीएसबी और पीवीबी बैंक थे। एफबी, एसयूसीबी और एसएफबी के साथ अधिकांश पुराने पीवीबी परिधि क्षेत्र में रहे (चार्ट 2.38)।

2.74 कनेक्टिविटी अनुपात[44] द्वारा मापी गई बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) में अंतःसंबद्धता की डिग्री में , मार्च 2022 से सितंबर 2022 तक मामूली वृद्धि हुई है। हालांकि, क्लस्टर गुणांक[45] मार्च

चार्ट 2.38: भारतीय बैंकिंग प्रणाली की नेटवर्क संरचना (एससीबी+एसएफबी + एसयूसीबी) – सितंबर 2022

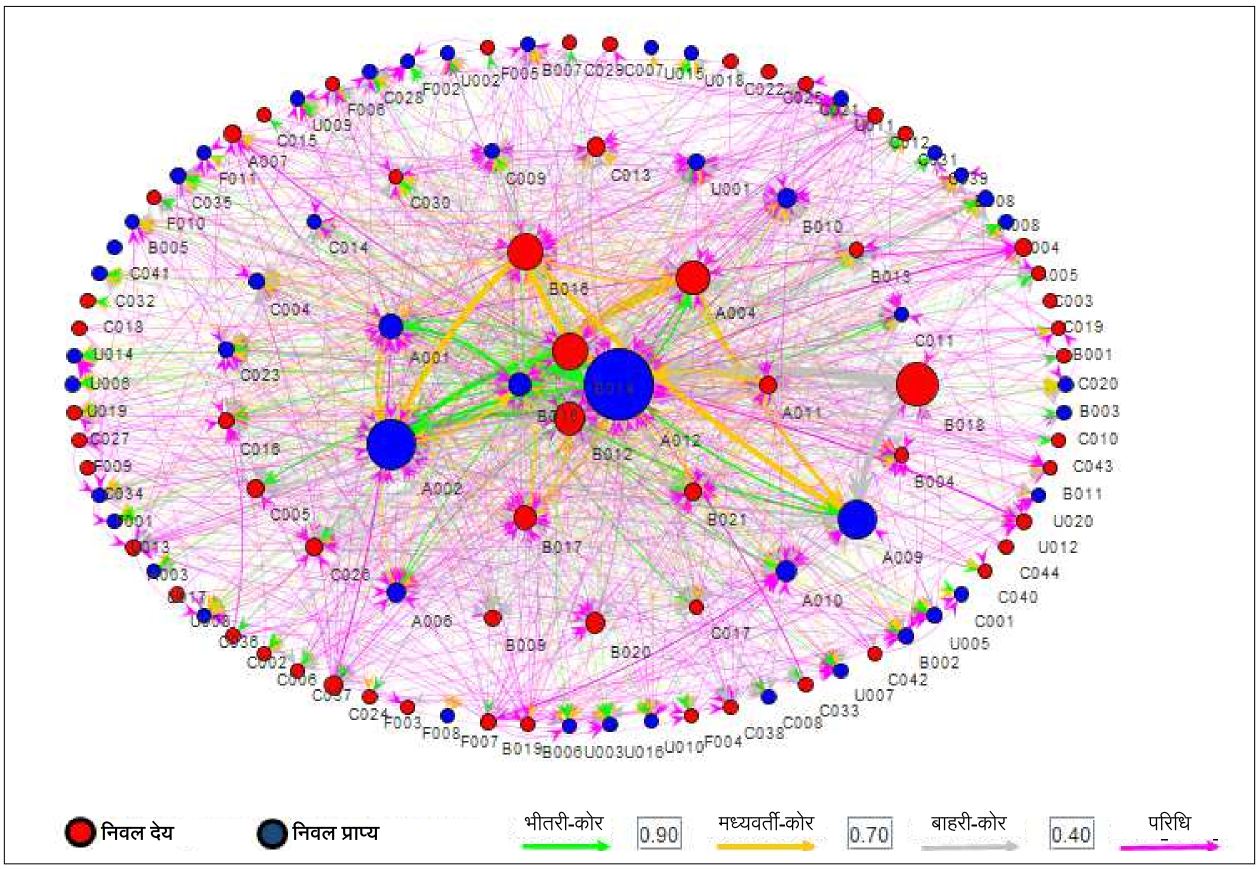

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

[42] बैंकिंग प्रणाली के नेटवर्क का आरेखीय प्रतिनिधित्व एक ऐसी टीयर वाली संरचना है, जहां नेटवर्क में एक-दूसरे के साथ विभिन्न बैंकों की अलग-अलग मात्रा एवं स्तर की संबद्धता है। सबसे अधिक जुड़े हुए बैंक सबसे भीतरी कोर (नेटवर्क आरेख के केंद्र में) में हैं। बैंकों को बाद में उनकी सापेक्ष संबद्धता के स्तर के आधार पर मध्यवर्ती कोर, बाहरी कोर और परिधि (आरेख में केंद्र के आसपास संकेंद्रित वृत्त) पर रखा गया है। टियर नेटवर्क आरेख में लिंक का कलर कोडिंग नेटवर्क में विभिन्न टीयर से उधार को दर्शाता है (उदाहरण के लिए, हरा लिंक आंतरिक कोर में बैंकों से उधार को दर्शाता है)। प्रत्येक गोलाकृति एक बैंक का प्रतिनिधित्व करता है और प्रणाली में अन्य सभी बैंकों की तुलना में उनकी निवल स्थितियों के अनुसार उन्हें भार प्रदान किया गया है। प्रत्येक बैंक को जोड़ने वाली रेखाओं को बकाया एक्सपोजर के आधार पर भार प्रदान किया गया है।

[43] इस विश्लेषण के लिए 77 एससीबी, 11 एसएफबी और 20 एसयूसीबी पर विचार किया गया है।

[44] संबद्धता अनुपात संपूर्ण नेटवर्क में सभी संभावित जुड़ाव के सापेक्ष नोड के बीच जुड़ाव की वास्तविक संख्या को मापता है।

[45] *क्लस्टर गुणांक*: नेटवर्क में क्लस्टरिंग मापता है कि प्रत्येक नोड परस्पर कितने जुड़े हुए हैं। विशेष रूप से, इस बात की संभावना बढ़नी चाहिए कि नोड के दो समीपस्थ (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंकों के प्रतिपक्ष) भी स्वयं समीपस्थ हैं। नेटवर्क के लिए एक उच्च क्लस्टर गुणांक सिस्टम में प्रचलित उच्च स्थानीय अंतर्संबंध से मेल खाता है।

2022 में 42.6 प्रतिशत से घटकर सितंबर 2022 में 41.3 प्रतिशत हो गया (चार्ट 2.39)।

सी. एएमसी-एमएफ एक्सपोज़र

2.75 एएमसी-म्युचुअल फंडों की सकल प्राप्तियां 11.49 लाख करोड़ रुपये (उनके औसत एयूएम का लगभग 33 प्रतिशत) थीं, जबकि सितंबर 2022 के अंत में उनकी सकल देय राशि 0.85 लाख करोड़ रुपये थी। एससीबी उनके वित्त पोषण के प्रमुख प्राप्तकर्ता थे। एआईएफआई से उनकी प्राप्तियों में भी वृद्धि हुई, हालांकि एनबीएफसी और एचएफसी से प्राप्तियों में गिरावट आई (चार्ट 2.40 ए)।

2.76 एएमसी-एमएफ की आस्ति संरचना में, इक्विटी होल्डिंग्स की हिस्सेदारी में वृद्धि जारी रही क्योंकि एमएफ में इक्विटी प्रवाह उत्साहजनक रहा, जबकि सीडी और सीपी के शेयरों ने क्रमिक रूप से स्थिर वृद्धि बनाए रखी। इसके अलावा, दीर्घकालिक (एलटी) ऋण की हिस्सेदारी में गिरावट जारी रही (चार्ट 2.40 बी)।

डी. बीमा कंपनियों का एक्सपोजर

2.77 सितंबर 2022 में बीमा कंपनियों की सकल प्राप्य राशि ₹7.90 लाख करोड़ और सकल देय राशि ₹0.55 लाख करोड़

चार्ट 2.39: बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी

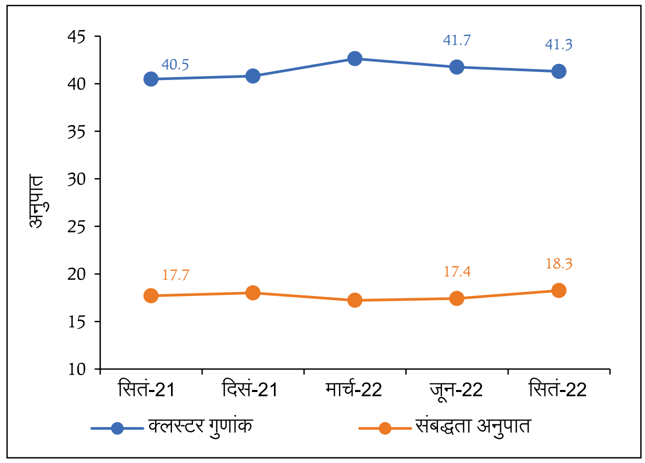

स्रोत: रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.40: वित्तीय प्रणाली से एएमसी-एमएफ को सकल प्राप्य राशि

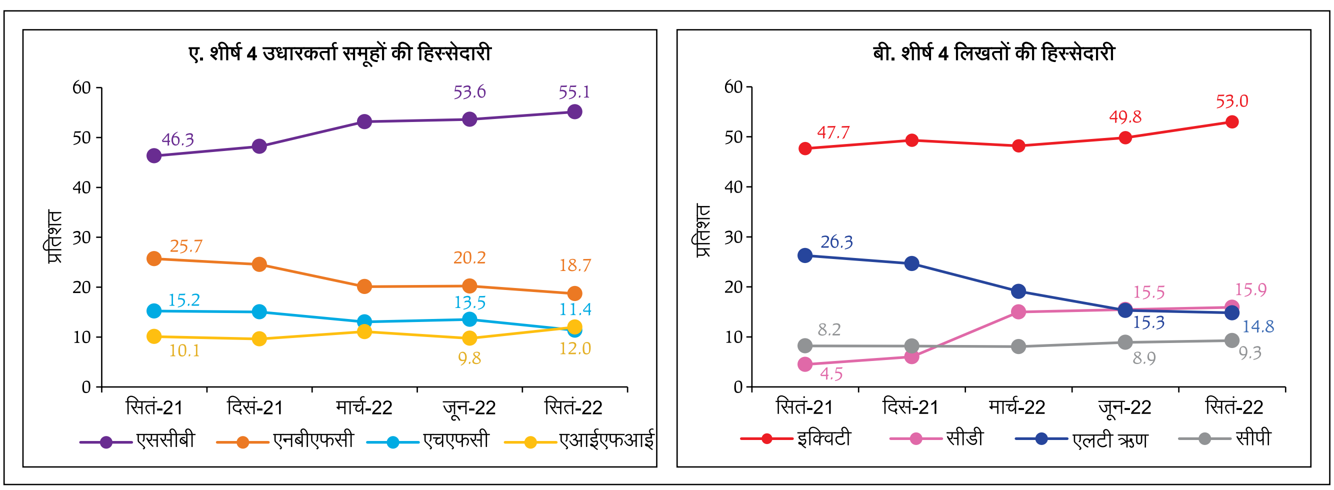

स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं रिज़र्व बैंक की स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 2.41: वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों को सकल प्राप्तियां

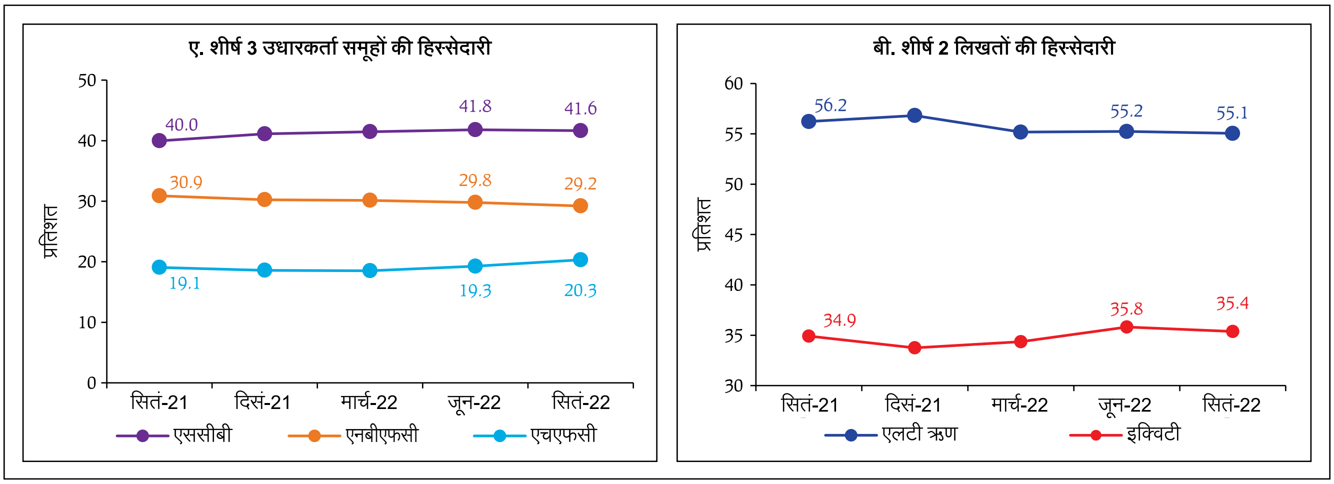

स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं रिज़र्व बैंक की स्टाफ गणनाएं।

थी। एससीबी उनकी निधि के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता थे, जिसके बाद एनबीएफसी और एचएफसी थे। उनकी 90 प्रतिशत से अधिक आस्तियां एलटी ऋण और इक्विटी के रूप में थी (चार्ट 2.41 ए और बी)।

ई. एनबीएफ़सी के लिए एक्सपोजर

2.78 सितंबर 2022 के अंत तक ₹13.22 लाख करोड़ की सकल देय राशि और ₹1.93 लाख करोड़ के सकल प्राप्य राशियों के साथ एनबीएफसी वित्तीय प्रणाली से धन के सबसे बड़े निवल उधारकर्ता थे। उनका आधे से अधिक उधार एससीबी से था और 2022-23 की दूसरी तिमाही के दौरान यह हिस्सा संतुलित रहा क्योंकि एएमसी-एमएफ से फंडिंग पर उनकी निर्भरता कम होती रही। (चार्ट 2.42ए)। लिखतवार, एनबीएफसी फंडिंग मिक्स में एलटी लोन और एलटी डेट लिखतों में मामूली वृद्धि देखी गई, जबकि 2022-23 की दूसरी तिमाही के दौरान सीपी की हिस्सेदारी में गिरावट आई (चार्ट 2.42 बी)।

एफ़. एचएफ़सी के लिए एक्सपोजर

2.79 सितंबर 2022 के अंत तक ₹ 7.70 लाख करोड़ की सकल देय राशि और ₹0.57 लाख करोड़ की सकल प्राप्तियों के साथ एचएफसी वित्तीय प्रणाली से धन के दूसरे सबसे बड़े निवल उधारकर्ता थे। एनबीएफसी के समान, एससीबी से वित्त पोषण पर एचएफसी की निर्भरता अधिक रही है, हालांकि तिमाही के दौरान इसमें मामूली गिरावट आई। सितंबर तिमाही में एएमसी-म्युचुअल फंडों से उधार लेने का उनका हिस्सा घट रहा है जबकि बीमा कंपनियों की हिस्सेदारी में काफी वृद्धि हुई है (चार्ट 2.43 ए)। एलटी ऋणों के माध्यम से संसाधन जुटाने के

चार्ट 2.42: वित्तीय प्रणाली को एनबीएफ़सी की सकल देयता

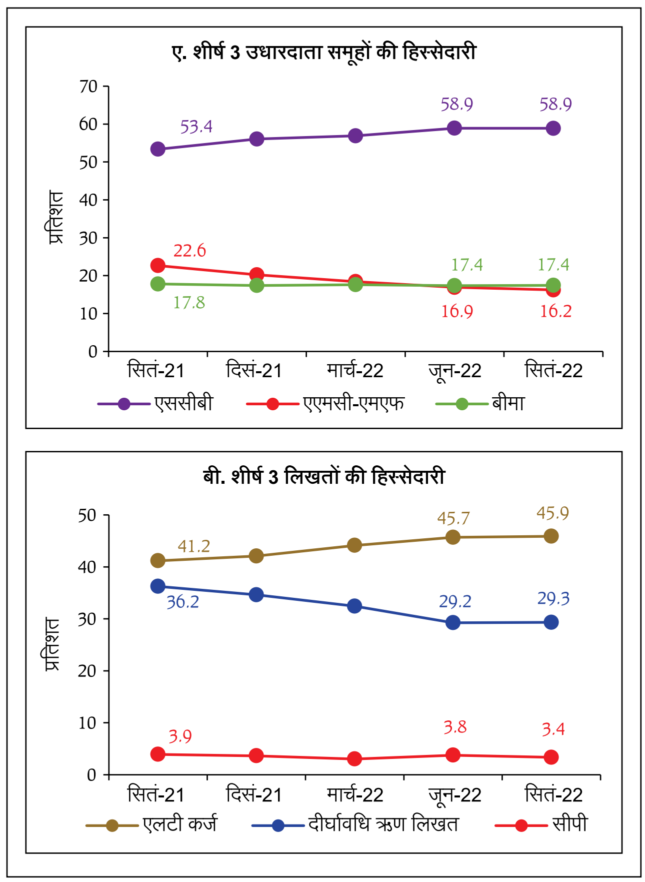

स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं रिज़र्व बैंक की स्टाफ गणनाएं।

चार्ट 2.43: वित्तीय प्रणाली को एचएफ़सी की सकल देयता

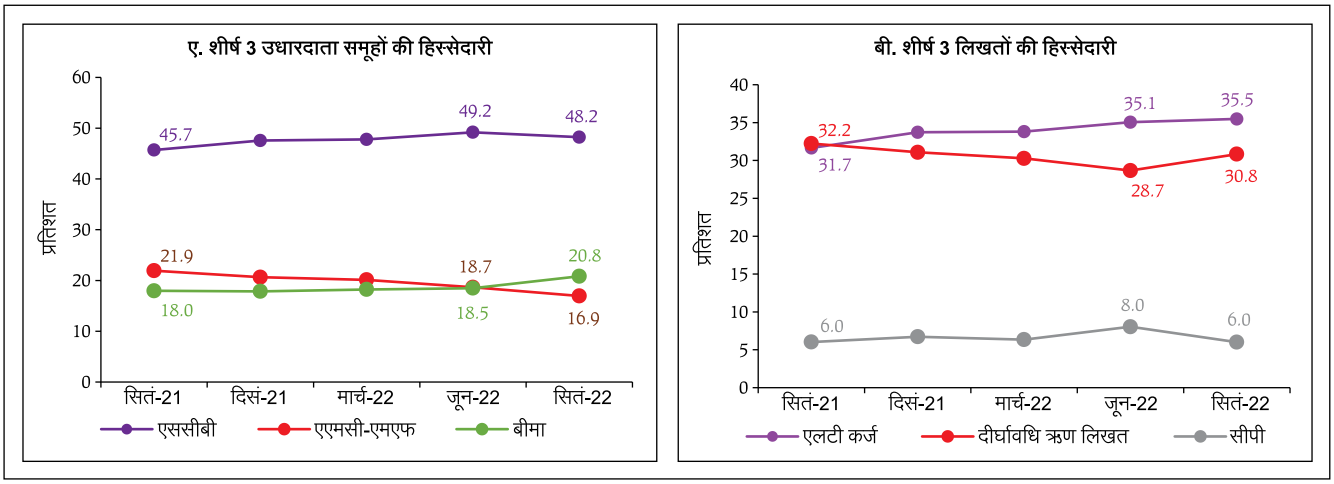

स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं रिज़र्व बैंक की स्टाफ गणनाएं।

अनुपात ने क्रमिक रूप से स्थिर वृद्धि बनाए रखी। एलटी ऋण लिखत और सीपी के माध्यम से जुटाए गए धन का हिस्सा वर्ष के दौरान बदलता रहा (चार्ट 2.43 बी)।

जी. एआईएफ़आई का एक्सपोजर

2.80 एआईएफआई वित्तीय प्रणाली से धन के निवल उधारकर्ता थे, जिनकी सकल देय राशि और सकल प्राप्तियां सितंबर 2022 में क्रमशः 5.91 लाख करोड़ रुपये और 5.47 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ गईं। उन्होंने मुख्य रूप से एससीबी (प्राथमिक रूप से पीवीबी), एएमसी-एमएफ और बीमा कंपनियों (चार्ट 2.44 ए) से निधियां जुटाईं। उनके संचालन की प्रकृति को देखते हुए, एलटी ऋण, एलटी कर्ज और एलटी जमाराशि; निधियों को जुटाने के लिए उनके पसंदीदा लिखत बने रहे, लेकिन इन लिखतों का संयुक्त हिस्सा एक साल पहले के 68.7 प्रतिशत से घटकर 59.7 प्रतिशत हो गया, और सीपी के माध्यम से निधि जुटाने में 2022-23 की दूसरी तिमाही में वृद्धि हुई (चार्ट 2.44 बी)।

II.7.2 संक्रमण विश्लेषण

2.81 संक्रमण विश्लेषण वैयक्तिक बैंकों के प्रणालीगत महत्व का आकलन करने के लिए नेटवर्क तकनीक का प्रयोग करता है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण किसी बैंक की विफलता का परिणाम बैंकिंग प्रणाली के लिए ऋण-शोधन क्षमता और चलनिधि हानियों के रूप में होता है। इस हानि का पैमाना बैंकों की पूंजी और चलनिधि की स्थिति के अलावा विफल होने वाले बैंक के एक्सपोज़र की मात्रा और प्रकार (उधारदाता है या

चार्ट 2.44: वित्तीय प्रणाली को एचएफसी की सकल देयता

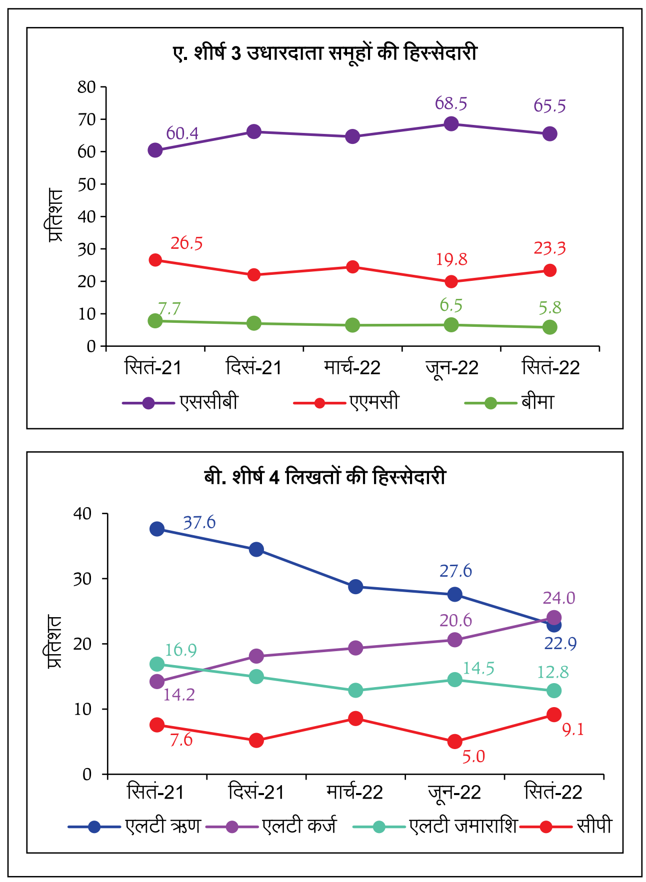

स्रोत: विभिन्न विनियामकों की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं रिज़र्व बैंक की स्टाफ गणनाएं।

उधारकर्ता) तथा शेष बैंकिंग प्रणाली के साथ उसका जुड़ाव कितना है, इस पर निर्भर करता है।

ए. बैंक की विफलता के कारण एससीबी को होने वाली संयुक्त ऋण-शोधन क्षमता[46]- चलनिधि[47] संक्रमण हानियां

2.82 सितंबर 2022 के अंत की स्थिति पर आधारित बैंकिंग नेटवर्क का संक्रमण विश्लेषण यह दर्शाता है कि सबसे अधिक संक्रमण हानि उत्पन्न करने की क्षमता वाले बैंक के विफल होने पर यह एससीबी की कुल टियर-1 पूंजी की 2.49 प्रतिशत (मार्च 2022 में 2.83 प्रतिशत की तुलना में) ऋण-शोधन क्षमता हानि तथा बैंकिंग प्रणाली के कुल एचक्यूएलए (उच्च गुणवत्ता वाली चल आस्तियां) की 0.31 प्रतिशत चलनिधि की हानि होगी (जो कि मार्च 2022 में 0.02 प्रतिशत थी)। विश्लेषण यह भी दिखाता है कि अधिकतम संक्रमण हानि क्षमता वाले पांच सबसे बड़े बैंकों की विफलता किसी अन्य बैंक को विफल नहीं करेगी (सारणी 2.13)।

बी. एनबीएफसी/एचएफसी की विफलता के कारण एससीबी को होने वाले ऋण-शोधन क्षमता संक्रमण हानियां

2.83 किसी भी एनबीएफसी या एचएफसी की विफलता उनके ऋणदाताओं के लिए भी आघात होगा जो उनके एक्सपोज़र की मात्रा के आधार पर होगा। ऋण-शोधन क्षमता हानियां संक्रमण से फैल सकती हैं।

2.84 सितंबर 2022 के अंत तक, बैंकिंग प्रणाली को ऋण-शोधन क्षमता हानि पहुंचाने की अधिकतम क्षमता वाली एनबीएफसी की विशेष प्रकृति की विफलता के कारण बैंकों की कुल टियर -1 पूंजी का 2.63 प्रतिशत (मार्च 2022 में 2.40 प्रतिशत की तुलना में) प्रभावित हो सकता था। इसी तरह से एचएफसी विफलता के परिदृश्य में, कुल टियर- I पूंजी पर प्रभाव 5.90 प्रतिशत (मार्च 2022 में 5.88 प्रतिशत) होता। हालांकि, दोनों ही मामलों में यह किसी भी बैंक की विफलता का कारण नहीं होगा (सारणी 2.14 और 2.15)।

सारणी 2.13: बैंक की विफलता के कारण संक्रमण हानियां – सितंबर 2022

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर-1 पूंजी का %	एचक्यूएलए का %	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या	चलनिधि हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
बैंक 1	2.49	0.31	0	0
बैंक 2	2.18	0.09	0	0
बैंक 3	2.11	0.07	0	0
बैंक 4	2.04	0.01	0	0
बैंक 5	2.00	0.02	0	0

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानियों के आधार पर शीर्ष "ट्रिगर बैंकों" का चयन किया गया है।
स्रोत: रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

सारणी 2.14: एनबीएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ – सितंबर 2022

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर 1 पूंजी के % के रूप में ऋण-शोधन क्षमता हानियां	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एनबीएफसी 1	2.63	0
एनबीएफसी 2	2.33	0
एनबीएफसी 3	1.83	0
एनबीएफसी 4	1.79	0
एनबीएफसी 5	1.54	0

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानियों के आधार पर शीर्ष 5 "ट्रिगर एनबीएफ़सी" का चयन किया गया है।
स्रोत: रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

सारणी 2.15: एचएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ– सितंबर 2022

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर 1 पूंजी के % के रूप में ऋण-शोधन क्षमता हानियां	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एचएफसी 1	5.90	0
एचएफसी 2	4.70	0
एचएफसी 3	1.74	0
एचएफसी 4	1.74	0
एचएफसी 5	1.14	0

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानि के आधार पर शीर्ष 5 "ट्रिगर बैंकों" का चयन किया गया है।
स्रोत: रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

[46] ऋण-शोधन संक्रमण विश्लेषण में, एक अथवा एक से अधिक उधारकर्ता बैंक के विफल होने के दूरगामी प्रभाव (डोमिनो इफेक्ट) के कारण बैंकिंग प्रणाली के लिए सकल निर्धारित की जाती है। संक्रमण विश्लेषण के लिए विफलता के मानदंड को टियर 1 पूंजी के 7 प्रतिशत से नीचे गिर जाने के रूप में लिया गया है।

[47] चलनिधि संक्रमण विश्लेषण में, किसी बैंक को तब विफल माना जाता है, जब उसकी चल आस्तियां एक बड़े निवल ऋणदाता की विफलता से उत्पन्न चलनिधि दबाव को झेलने के लिए पर्याप्त नहीं होती हैं। चल आस्तियों को एनडीटीएल के 18 प्रतिशत+अधिशेष एसएलआर+ अधिशेष सीआरआर के रूप में मापा जाता है।

सी. एससीबी को समष्टि-आर्थिक आघातों के बाद ऋण शोधन क्षमता का संक्रमण प्रभाव[48]

2.85 समष्टि आर्थिक आघातों के परिणामस्वरूप बैंकिंग प्रणाली को परेशानी होती है, तो बैंक की विफलता से संक्रमण बढ़ने की संभावना है। ऐसी स्थिति में, इसी तरह के आघात कुछ एससीबी को ऋण-शोधन क्षमता मानदंड को विफल करने का कारण बन सकते हैं, जो बाद में ऋण-शोधन क्षमता की हानि के लिए एक शुरुआती कारक के रूप में कार्य कर सकते हैं।

2.86 पिछली मूल्यांकन प्रक्रिया में ऐसी इकाई पर आघात किया गया जिसके कारण अधिकतम ऋण-शोधन क्षमता संक्रमण हानियां पैदा हो सकती थीं । एक अन्य प्रक्रिया में, जिसमें एक व्यक्तिगत बैंक की पूंजी पर इस तरह के आघात का प्रारंभिक प्रभाव समष्टि-दबाव परीक्षणों[49] से लिया गया, समष्टि-आर्थिक आघातों के कारण आधारभूत, मध्यम और तीव्र दबाव परिदृश्यों के लिए, आरंभिक पूंजीगत हानि टियर-I पूंजी का क्रमशः 5.64 प्रतिशत, 10.98 प्रतिशत और 16.67 प्रतिशत रही। इनमें से किसी भी परिदृश्य में कोई भी बैंक 7 प्रतिशत टियर-I पूंजी पर्याप्तता अनुपात बनाए रखने में असफल नहीं हुआ। परिणामस्वरूप, संक्रमण के कारण बैंकिंग प्रणाली को कोई अतिरिक्त ऋण शोधन क्षमता की हानि नहीं हुई (समष्टि आघातों के कारण पूंजी की आरंभिक हानि को छोड़कर) (चार्ट 2.45)।

निष्कर्ष और संभावनाएं

2.87 आंतरिक आर्थिक गतिविधि की अंतर्निहित गति के साथ सामंजस्य रखते हुए, वित्तीय क्षेत्र की संस्थाएं निधि की मांग का समर्थन करने के लिए सक्रिय मध्यस्थता में लगी हुई हैं। ऋण ने एक लंबी छलांग लगाई है और यह व्यापक हो गया है। पूंजी की स्थिति मजबूत बनी हुई है। बैंकों और एनबीएफसी की आस्ति गुणवत्ता में और सुधार हुआ है, लेकिन यूसीबी के लिए कुछ गिरावट स्पष्ट है। समष्टि दबाव परीक्षण से संकेत मिलता है कि एससीबी किसी प्रकार की ठोस पूंजी हानि के बिना मध्यम से गंभीर स्तर की प्रतिकूल समष्टि आर्थिक परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं।

2.88 संवेदनशीलता विश्लेषण से पता चलता है कि यदि ऋण जोखिम होता है, और ऋण संकेंद्रण जोखिम अधिक नहीं है, तो पीवीबी और एफबी को पीएसबी की तुलना में सीआरएआर में कम क्षरण का सामना करना पड़ेगा। नेटवर्क विश्लेषण के परिणाम बताते हैं कि 2022-23 की पहली छमाही के दौरान संक्रामक नुकसान में मामूली गिरावट आई है। समष्टि आर्थिक आघातों के मामले में, संक्रमण के कारण बैंकिंग प्रणाली को कोई अतिरिक्त ऋण-शोधन क्षमता हानि नहीं होती है।

चार्ट 2.45: समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता)

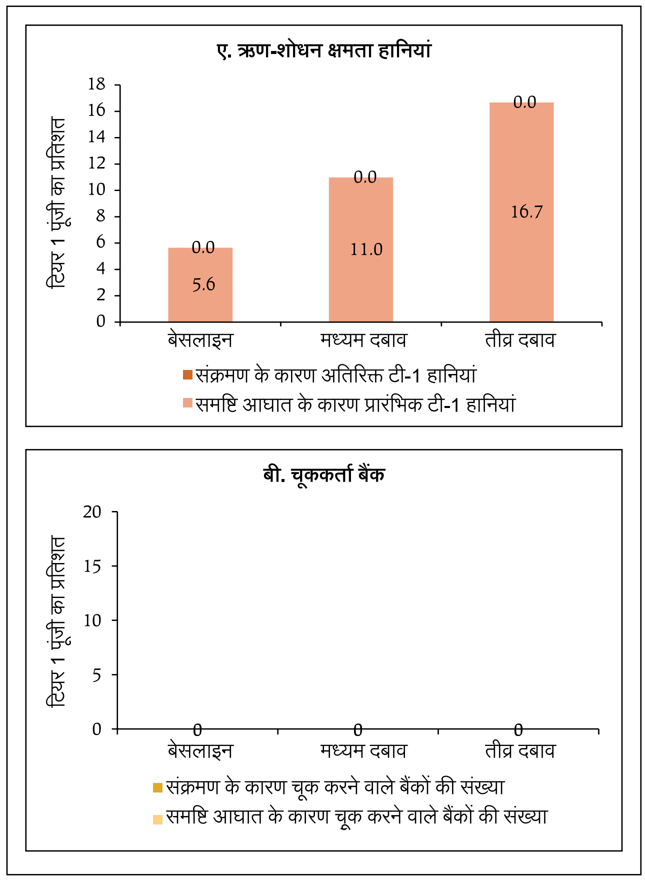

टिप्पणी: सितंबर 2023 की अनुमानित पूंजी के सबंध में संरक्षी दृष्टिकोण अपनाते हुए यह कल्पना की गई है कि आरक्षित पूंजी में 25 प्रतिशत न्यूनतम लाभ अंतरण है। हितधारकों द्वारा जोड़ी गई किसी पूजी को गणना में नहीं शामिल किया गया है।
स्रोत: रिज़र्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियाँ एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

---

[48] पीएसबी और पीवीबी दोनों के लिए विफलता मानदंड को टियर -1 सीआरएआर 7 प्रतिशत से कम होने के रूप में लिया गया है।

[49] संक्रमण विश्लेषण ने समष्टि -दबाव परीक्षणों के परिणामों का उपयोग किया और निम्नलिखित धारणाएं बनाईं:

ए) समष्टि परिदृश्य के तहत अनुमानित नुकसान (सितंबर 2022 में वास्तविक मूल्य के संबंध में सितंबर 2023 में प्रतिशत के संदर्भ में अनुमानित टियर -1 सीआरएआर में कमी के रूप में गणना की गई) सितंबर 2022 और सितंबर 2023 दोनों के लिए आनुपातिक रूप से समान तुलन-पत्र संरचनाओं को मानते हुए सितंबर 2022 पूंजी स्थिति पर लागू किया गया था।

बी) वित्तीय संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर सितंबर 2022 और सितंबर 2023 के लिए समान माना जाता है।

अध्याय III

वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल

वैश्विक विनियामकीय प्राथमिकताएं वापस विनियामकीय फ्रेमवर्क के समेकन तथा अनिश्चित, अस्थिर और शत्रुतापूर्ण मैक्रोइकॉनॉमिक वातावरण के प्रभाव से वित्तीय प्रणाली को सुरक्षित रखने की तरफ स्थानांतरित हो गई हैं। क्रिप्टो आस्तियों पर वैश्विक सुसंगत नीति विकसित करना, जलवायु जोखिम को मौजूदा फ्रेमवर्क में एकीकृत करना और बढ़ते साइबर जोखिमों को कम करना ध्यान केन्द्रित करने के प्रमुख क्षेत्र हैं। घरेलू स्तर पर, वित्तीय मध्यस्थों की आघात सहनीयता में सुधार, ग्राहक और निवेशक सुरक्षा को बढ़ाने, डिजिटलीकरण में तेजी लाने, वित्तीय बाजारों को विकसित करने और निगरानी तंत्र को मजबूत करने पर जोर दिया जा रहा है। वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफ़एसडीसी) और इसकी उप-समिति भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक मजबूत और कुशल वित्तीय प्रणाली विकसित करने के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्ध है।

परिचय

3.1 जैसे-जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था विभिन्न तरह के जोखिमों के दौर से गुजर रही है, विनियामकीय प्रयास वित्तीय प्रणाली की आघात-सहनीयता के निर्माण पर फिर से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। विशेष रूप से, वैश्विक विनियामकीय पहलों का उद्देश्य गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता और वित्तीय बाजारों के कुछ क्षेत्रों, लीवरेज्ड लेंडिंग, साइबर जोखिम और क्रिप्टो आस्तियों की कमजोरियों को दूर करना है। जलवायु आधारित जोखिमों को विनियामकीय फ्रेमवर्क के साथ एकीकृत करने के प्रयास भी जारी हैं।

3.2 इस पृष्ठभूमि में, यह अध्याय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और दक्षता को मजबूत करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भारत में हाल ही में किए गए विनियामकीय प्रयासों की समीक्षा करता है।

III.1 वैश्विक विनियामकीय उपाय और आकलन

III.1.1 बाजार और वित्तीय स्थिरता

3.3 राष्ट्रिक ऋण बाजारों में उतार-चढ़ावों के प्रकाश में, एफएसबी ने मुख्य सरकारी बांड बाजारों में चलनिधि की उपलब्धता, संरचना और आघात-सहनीयता की जांच की और पाया कि दबाव[97] की अवधि के दौरान बाजार संरचना में परिवर्तन इन बाजारों को चलनिधि असंतुलन के प्रति अतिसंवेदनशील बना देता है। एफएसबी के अनुसार, विशेषतः दबाव के समय के दौरान मध्यस्थता में सहायक डीलरों की जोखिम वहन क्षमता व्यापार प्रवाह की मात्रा से कम होती है और गैर-बैंक चलनिधि स्रोत बाजार निर्माण में वृद्धि नहीं करते हैं। उच्च ऋण स्तर और व्यापार, हेजिंग और चलनिधि प्रबंधन रणनीतियों के लिए कुछ निवेशकों द्वारा सरकारी बॉन्ड के बढ़ते उपयोग ने कुछ निवेशकों को जोखिमों के लिए अधिक संवेदनशील बना दिया है।हालांकि, केंद्रीय बैंक का हस्तक्षेप बाजार के दबाव को कम करने में प्रभावी होता हैं, पर यह कीमत के साथ आता है और इसलिए इन्हें बाजार सहभागियों को अपने स्वयं के जोखिमों के प्रबंधन की जिम्मेदारी को प्रतिस्थापित नहीं करना चाहिए। बाजार की आघात सहनीयता में सुधार के लिए, एफएसबी नीतिगत उपाय भी सुझाता है जैसे कि नकद और रेपो लेनदेन के लिए केंद्रीय समाशोधन का उपयोग बढ़ाना और डीलर मध्यस्थता को कम करने के लिए ऑल-टू-ऑल (ए2ए) ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग करना।

3.4 मार्च 2020 में अनुभव की गई बाजार की अस्थिरता के कारण वित्तीय प्रणाली के केंद्रीय और गैर-केंद्रीय रूप से समाशोधित दोनों बाजारों के लिए मार्जिन कॉल में तेजी आई। आस्तियों की श्रेणियों में और उनके भीतर प्रारंभिक मार्जिन (आईएम) की वृद्धि के आकार में महत्वपूर्ण फैलाव था। साक्ष्य बताते हैं कि आईएम मॉडल में पारदर्शिता सीसीपी और अधिकार क्षेत्र में भिन्न है। इस संदर्भ में, बीआईएस और प्रतिभूति आयोगों के अंतरराष्ट्रीय संगठन (आईओएससीओ) ने मार्जिनिंग प्रथाओं[98] की समीक्षा की तथा आगे नीतिगत कार्यों के लिए क्षेत्रों

[1] एफएसबी (2022), " लिक्विडिटी इन कोर गवर्नमेंट बॉन्ड मार्केट्स ", अक्टूबर।

[2] बीआईएस/आईओएससीओ (2022), "रिव्यू ऑफ मार्जिनिंग प्रैक्टिस ", सितंबर।

का सुझाव दिया जैसे कि निरंतर मैट्रिक्स तथा प्रचक्रीयता से संबंधित प्रकटीकरण के माध्यम से केंद्रीय रूप से समाशोधित बाजारों में पारदर्शिता बढ़ाना। साथ ही उन्होनें चलनिधि के आंकड़ों के प्रकटीकरण में सुधार करने, विनियामकीय रिपोर्टिंग में डेटा अंतराल की पहचान करने और केंद्रीय और गैर-केंद्रीय रूप से समाशोधित बाजारों में भिन्नता मार्जिन (वीएम) प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने की भी सिफारिश की।

3.5 आर्थिक अनिश्चितता[99] के दौरान वित्तीय रिपोर्टिंग और प्रकटीकरण पर अपने बयान में, आईओएससीओ ने जोर देकर कहा है कि लेखा परीक्षकों के पास वित्तीय रिपोर्टिंग पर प्रभावी आंतरिक नियंत्रण स्थापित करने और बनाए रखने और आर्थिक अनिश्चितता के वर्तमान और भविष्य के प्रभावों के बारे में निवेशकों को पारदर्शी, इकाई-विशिष्ट प्रकटीकरण प्रदान करने की जिम्मेदारी है।

3.6 एफएसबी ने गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई)[100] की आघात-सहनीयता को बढ़ाने पर एक प्रगति रिपोर्ट प्रकाशित की। इसका उद्देश्य विशिष्ट एनबीएफआई क्षेत्रों में उन कमजोरियों का आकलन करना और उन्हें हल करना था, जिन्होंने चलनिधि की उपलब्धत्ता में असंतुलन के निर्माण और दबाब के समय में उनके प्रवर्धन में योगदान दिया हो। इन क्षेत्रों में मनी मार्केट फंड्स, ओपन-एंडेड फंड्स, मार्जिनिंग प्रैक्टिस, बॉन्ड मार्केट लिक्विडिटी और यूएसडी क्रॉस-बॉर्डर फंडिंग की कमजोरियां शामिल हैं। नीतिगत प्रस्तावों का लक्ष्य है: चलनिधि मांग की तेजी को कम करना; दबाब में चलनिधि आपूर्ति की आघात-सहनीयता में वृद्धि; और जोखिम निगरानी तथा प्राधिकारियों और बाजार सहभागियों की तैयारी को बढ़ाना। पहले से ही उपलब्ध व्यापक सूक्ष्म-विवेकपूर्ण और निवेशक सुरक्षा टूलकिट को देखते हुए, वे ज़्यादातरनए टूल बनाने के बजाय मौजूदा नीतिगत साधनों को पुनरूद्देशित करते हैं। एफएसबी यथा समय प्राधिकारियों द्वारा उपयोग के लिए मूल्यांकन करेगा कि क्या ऐसे साधनों को पुनरूद्देशित करना एनबीएफआई में प्रणालीगत जोखिम को हल करने के लिए पर्याप्त है, अतिरिक्त उपकरण विकसित करने की आवश्यकता सहित।

III.1.2 जलवायु संबंधी जोखिम और वित्तीय स्थिरता

3.7 जलवायु से संबंधित जोखिमों[101] के लिए विनियामकीय दृष्टिकोण पर एफएसबी की अंतिम रिपोर्ट ने नीति प्राधिकारियों के लिए जलवायु से संबंधित डेटा और संकेतकों को परिभाषित करने, पहचानने और इकट्ठा करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है जो जलवायु जोखिम की निगरानी और आकलन करने के साथ-साथ विभिन्न जोखिमों के लिए सामान्य परिभाषाओं पर पहुंचने में मदद कर सकते हैं।

3.8 रिपोर्ट में यह भी नोट किया गया है कि अकेले माइक्रोप्रूडेंशियल टूल्स जलवायु से संबंधित जोखिमों के क्रॉस-सेक्टोरल, वैश्विक और प्रणालीगत आयामों को पर्याप्त रूप से हल नहीं कर सकते हैं। प्राधिकारियों को वित्तीय प्रणाली पर जलवायु से संबंधित जोखिमों के संभावित व्यापक प्रभावों को ध्यान में रखना चाहिए और विनियामकीय ढांचे में उचित वृद्धि पर अनुसंधान और विश्लेषण के साथ जलवायु परिदृश्य विश्लेषण और दबाब परीक्षण के उपयोग का विस्तार करके मैक्रोप्रूडेंशियल टूल विकसित करना चाहिए।

III.1.3 क्रिप्टो आस्तियां और वित्तीय स्थिरता

3.9 एफ़एसबी ने क्रिप्टो आस्तियों से संबंधित गतिविधियों[102] के अंतरराष्ट्रीय विनियमन के लिए एक फ्रेमवर्क प्रस्तुत किया है। यह देखा गया कि क्रिप्टो आस्ति बाजार में उथल-पुथल ने उसकी आंतरिक अस्थिरता और संरचनात्मक कमजोरियों को उजागर किया, जबकि पारंपरिक वित्तीय प्रणाली के साथ उनकी परस्पर संबद्धता बढ़ रही है। इसकी सिफारिशें विनियामकीय और पर्यवेक्षी दृष्टिकोणों पर अंतरराष्ट्रीय निरंतरता को बढ़ावा देना चाहती हैं, जो "समान गतिविधि, समान जोखिम, समान विनियमन" के सिद्धांत पर आधारित हैं। फ्रेमवर्क का प्रस्ताव है कि प्राधिकारियों के पास घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रिप्टो आस्ति संबंधी गतिविधियों और बाजारों को विनियमित करने, पर्यवेक्षण करने और निगरानी करने के लिए उपयुक्त शक्तियां, उपकरण और संसाधन होने चाहिए, जो उनसे संबंधित वित्तीय स्थिरता जोखिम के समानुपात में हो। इसके साथ ही,

[3] आईओएससीओ (2022), "आईओएससीओ स्टेटमेंट ऑन फ़ाइनेंसियल रिपोर्टिंग एंड डिस्क्लोजर ड्यूरिंग इकनॉमिक अनसर्टेनिटी", नवंबर।

[4] एफएसबी (2022), "इनहेंसिंग रेजीलिएंस ऑफ नॉन-बैंक फ़ाइनेंशियल इंटरमेडिएशन – प्रोग्रेस रिपोर्ट", नवंबर।

[5] एफएसबी (2022), "सुपरवाईजरी एंड रेग्युलेटरी अप्रोच टू क्लाइमेट रिलेटेड रिस्क ", अप्रैल।

[6] एफएसबी (2022), "रेग्युलेशन, सुपरविजन एंड ओवरसाइट ऑफ क्रिप्टो-एसेट एक्टिविटीज एंड मार्केट्स ", अक्टूबर।

व्यापक प्रशासन और प्रभावी जोखिम प्रबंधन फ्रेमवर्क को बढ़ावा देना, अंतरसंबद्धता से पैदा हुए वित्तीय स्थिरता जोखिमों को हल करना और एक उचित प्रकटीकरण फ्रेमवर्क का विकास भी सिफ़ारिशों में शामिल है।

3.10 बासेल समिति ने क्रिप्टो आस्तियों के जोखिम को कम करने के लिए बैंकों की क्रिप्टो आस्तियों संबंधी जोखिम हेतु वैश्विक न्यूनतम विवेकपूर्ण ट्रीटमेंट निर्धारित किया, जिसे 16 दिसंबर, 2022[103] को गवर्नरों और पर्यवेक्षण के प्रमुखों (जीएचओएस) द्वारा अनुमोदित किया गया। नए मानक के तहत, बैंकों को क्रिप्टो आस्तियों को निम्नलिखित दो समूहों में निरंतर आधार पर वर्गीकृत करने की आवश्यकता है, जहां समूह 2 के लोग 1 जनवरी, 2025 से प्रभावी नए निर्धारित रूढ़िवादी पूंजी ट्रीटमेंट के अधीन होंगे:

ए. समूह 1:

- वे जिनमें टोकनीकृत पारंपरिक आस्तियां शामिल हैं; और
- प्रभावी स्थिरीकरण तंत्र वाले वे जो मौजूदा बेसल फ्रेमवर्क में निर्धारित अंतर्निहित एक्स्पोजरों के जोखिम भार के आधार पर पूंजी आवश्यकताओं के अधीन हैं; और

बी. समूह 2:

- वे जो समूह 1 की तुलना में अतिरिक्त जोखिम पैदा करते हैं। इसमें सभी गैर-समर्थित क्रिप्टो आस्तियों के साथ-साथ किसी भी टोकन वाली पारंपरिक आस्ति और स्थिर मुद्राएं शामिल हैं जो विशिष्ट वर्गीकरण शर्तों को पूरा नहीं करती हैं।

3.11 नए मानक में यह वर्णन शामिल है कि परिचालन जोखिम, चलनीधि, लीवरेज अनुपात और बडी जोखिम आवश्यकताओं को बैंकों के क्रिप्टो आस्ति जोखिमों पर कैसे लागू किया जाएगा।

III.1.4 वित्तीय नवाचार और वित्तीय स्थिरता

3.12 नवाचार सुविधाप्रदाताओं (आईएफ) पर आईओएससीओ रिपोर्ट ने जोखिम प्रबंधन, अनुपालन और पर्यवेक्षण[104] को बढ़ाने के लिए वित्तीय प्रौद्योगिकी के उपयोग पर प्रकाश डाला है। इसमें तीन प्रकार के आईएफ शामिल हैं, अर्थात्, नवाचार केंद्र, विनियामकीय सैंडबॉक्स और विनियामकीय त्वरक । नवाचार हब और विनियामकीय सैंडबॉक्स, विनियामकों को अतिरिक्त बाजार आसूचना प्रदान कर सकते हैं और संभावित जोखिमों को समझने और उन्हें कम करने वाले तत्वों के लिए एक स्रोत का गठन कर सकते हैं। आईएफ की स्थापना करते समय प्राधिकारियों को निवेशक संरक्षण, बाजार की ईमानदारी और वित्तीय स्थिरता पर संभावित प्रभाव के साथ-साथ इनके कार्य, दायरे और संरचना का व्यापक विश्लेषण करना चाहिए। परीक्षण परिदृश्यों, अपेक्षित परिणामों और लक्षित दर्शकों को ठीक से परिभाषित किया जाना चाहिए, और प्राधिकारियों को लाभकारी नवाचारों से संबंधित विनियामकीय बाधाओं को दूर करने के लिए प्रमुख हितधारकों, उद्योग संघों और अन्य प्रासंगिक प्राधिकारियों से जुड़ना चाहिए।

III.1.5 साइबर जोखिम और वित्तीय स्थिरता

3.13 साइबर घटना रिपोर्टिंग पर एफएसबी के परामर्शी दस्तावेज ने वित्तीय प्रणाली[105] की साइबर आघात सहनीयता को बढ़ाने के लिए साइबर घटना रिपोर्टिंग (सीआईआर) में अधिक अभिसरण का प्रस्ताव दिया है। इसने सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया के साथ-साथ कई प्राधिकारियों को साइबर घटनाओं की रिपोर्ट करने से उत्पन्न परिचालन चुनौतियों से निपटने के लिए सिफारिशें निर्धारित की हैं, खासकर साइबर घटना के शुरुआती चरणों के दौरान जब घटना के कारण और संभावित प्रभाव के बारे में विश्वास कम होता है। परामर्श में साइबर घटनाओं से संबंधित सामान्य शब्दावली स्थापित करना और घटना रिपोर्टिंग एक्सचेंज (एफ़आईआरई) के लिए एक सामान्य प्रारूप विकसित करने का प्रस्ताव भी शामिल है। सामंजस्यपूर्ण सीआईआर योजनाओं के लिए एक समान भाषा और सामान्य परिभाषा और साइबर घटना की समझ की आवश्यकता होती है, ताकि घटनाओं की ओवररिपोर्टिंग से बचा जा सके। घटना

[7] बीआईएस (2022), "प्रूडेंशियल ट्रीटमेंट ऑफ क्रिप्टोएसेट एक्सपोजर", दिसंबर।

[8] आईओएससीओ (2022), "द यूज ऑफ इनोवेशन फेसीलिटेटर इन ग्रोथ एंड इमरजिंग मार्केट्स", जुलाई।

[9] एफएसबी (2022), "अचीविंग ग्रेटर कन्वर्जेंस इन साइबर इंसिडेंट रिपोर्टिंग", अक्तूबर।

रिपोर्टिंग टेम्प्लेट की समीक्षा और प्राधिकरणों की साइबर घटना रिपोर्टिंग व्यवस्थाओं के स्टॉकटेक ने साइबर घटना रिपोर्टों के लिए सूचना आवश्यकताओं में उच्च स्तर की समानता का संकेत दिया। इस पर आधारित, एक सामान्य रिपोर्टिंग प्रारूप विकसित करने का प्रस्ताव है जिस पर आगे वित्तीय संस्थानों में विचार किया जा सकता है।

3.14 केंद्रीय बैंकिंग में साइबर जोखिम पर बीआईएस वर्किंग पेपर ने फिशिंग और सोशल इंजीनियरिंग को केंद्रीय बैंकों से संबंधित साइबर हमलों के सबसे आम तरीकों के रूप में उजागर किया है। क्लाउड आधारित सेवाओं को अपनाने के साथ-साथ दूरस्थ तरीके से कार्य करने में साइबर सुरक्षा रणनीतियों[106] के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। एक अच्छी तरह से परिभाषित परिधि की अनुपस्थिति में, क्लाउड अपनाने की चुनौतियों में से एक लगातार लागू सुरक्षा नियंत्रणों की कमी से सूचना सुरक्षा को खतरे में डालने से संबंधित है। बीआईएस सर्वेक्षण से पता चलता है कि केंद्रीय बैंकों ने 2020 के बाद से साइबर सुरक्षा में अपने निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि की है, तकनीकी सुरक्षा नियंत्रण और आघात सहनीयता को प्राथमिकता दी है और घटना प्रतिक्रिया योजनाओं को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया है। जबकि एकीकृत परिचालन जोखिम प्रबंधन और अन्य-पक्ष विक्रेता प्रबंधन उन्नत अर्थव्यवस्था(एई) केंद्रीय बैंकों के लिए प्रमुख चिंताएं हैं, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं(ईएमई) में केंद्रीय बैंकों के बीच साइबर सुरक्षा कौशल की कमी को हल करना महत्वपूर्ण है।

3.15 वित्तीय स्थिरता के दृष्टिकोण से, साइबर जोखिम में सूक्ष्म और समष्टि विवेकपूर्ण चिंताएं शामिल हैं क्योंकि यह वित्तीय मध्यस्थता को कमजोर कर सकता है। बड़े साइबर आघातों से चलनिधि जोखिम बढ़ सकता है और इसके परिणामस्वरूप फर्मों द्वारा बहुत कम कीमत पर आस्तियों की बिक्री हो सकती है। इस प्रकार, साइबर सुरक्षा उपायों और विनियमों पर नीति निर्माताओं द्वारा अधिक ध्यान दिया जा रहा है (बॉक्स 3.1)।

बॉक्स 3.1: साइबर सुरक्षा तैयारी को मजबूत करना

दुनिया भर में साइबर हमले बढ़ रहे हैं (चार्ट 1), क्योंकि खतरे के कारक साइबर अपराधों को अंजाम देने के लिए तेजी से उन्नत और दुर्भावनापूर्ण रणनीति का उपयोग करते हैं।

चार्ट 1: वैश्विक साइबर हमले की घटनाएं: देश-वार (2020-22)

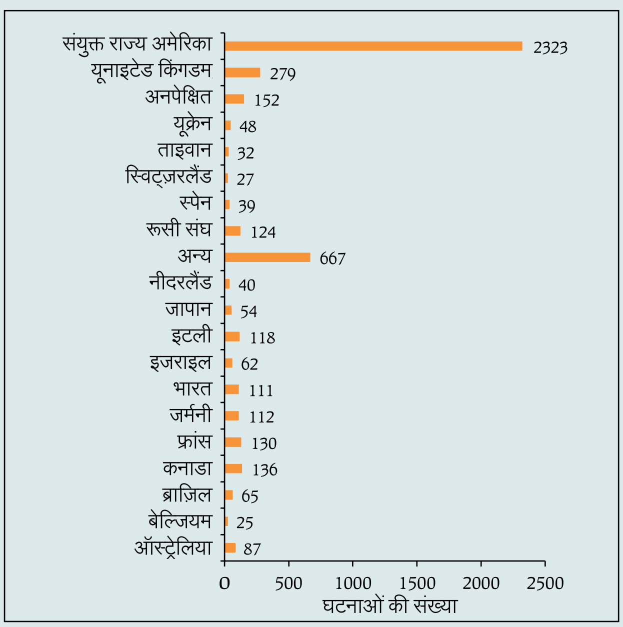

नोट: डेटा 18 नवंबर, 2022 तक अद्यतनकिया गया।
स्रोत: मैरीलैंड विश्वविद्यालय सीआईएसएसएम साइबर अटैक डेटाबेस

साइबर घटनाओं के कई आयाम हैं और मोटे तौर पर प्रकार, मकसद और उद्योग द्वारा वर्गीकृत किया जा सकता है। यूरोपीय संघ की साइबर सुरक्षा एजेंसी (ENISA) "थ्रेट लैंडस्केप 2022" ने पाया है कि हमले ज्यादातर सार्वजनिक प्रशासन और डिजिटल सेवा प्रदाताओं को लक्षित करते हैं। इसके अलावा, बैंक विवरण और व्यक्तिगत डेटा चोरी करने के लिए वित्त और स्वास्थ्य क्षेत्र पर लगातार हमले देखे जाते हैं। सेंटर फॉर इंटरनेशनल सिक्योरिटी स्टडीज एट मैरीलैंड (सीआईएसएसएम) के वैश्विक डेटाबेस से पता चलता है कि साइबर हमले सार्वजनिक प्रशासन, वैज्ञानिक और तकनीकी सेवाओं, स्वास्थ्य देखभाल और शैक्षिक सेवाओं से जुड़े केंद्रों में केंद्रित हैं, जहां जासूसी, वित्तीय लाभ और तोड़फोड़ कुछ सामान्य उद्देश्य हैं (चार्ट 2)।

भारत में, वित्तीय प्रेरणा को साइबर हमलों की प्राथमिक प्रेरक शक्ति के रूप में देखा जाता है, जबकि एप्लिकेशन सर्वर का दोहन और डेटा हमले सबसे अधिक प्रकार के होते हैं (चार्ट 3, 4 और 5)। कई मामलों में, हमले का मूल/स्रोत अज्ञात रहता है, जो डेटा अंतराल, घटना की रिपोर्टिंग और खतरे के परिदृश्य के अपूर्ण निर्णय के बारे में चिंताओं को उजागर करता है।

प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण नोड्स की पहचान करने के लिए प्रणालीगत साइबर आघात सहनीयता तनाव परीक्षण और साइबर मैपिंग का

(जारी)

[10] बीआईएस (2022), "साइबर रिस्क इन सेंट्रल बैंकिंग", सितंबर।

चार्ट 2: वैश्विक साइबर हमले की घटनाएं: उद्योगों के आधार पर (2020-22)

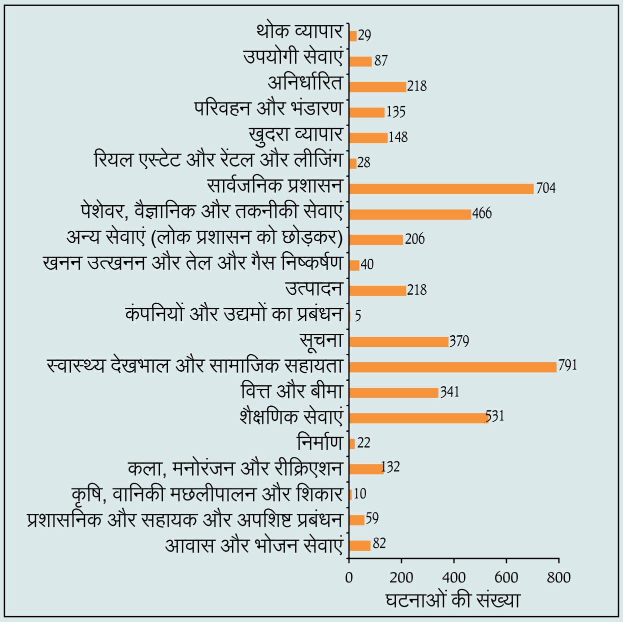

नोट: डेटा 18 नवंबर, 2022 तक अद्यतन किया गया।
स्रोत: मैरीलैंड विश्वविद्यालय सीआईएसएसएम साइबर अटैक डेटाबेस

चार्ट 4: भारत में साइबर हमलों की घटनाएं: उद्देश्यों के आधार पर (2020-22)

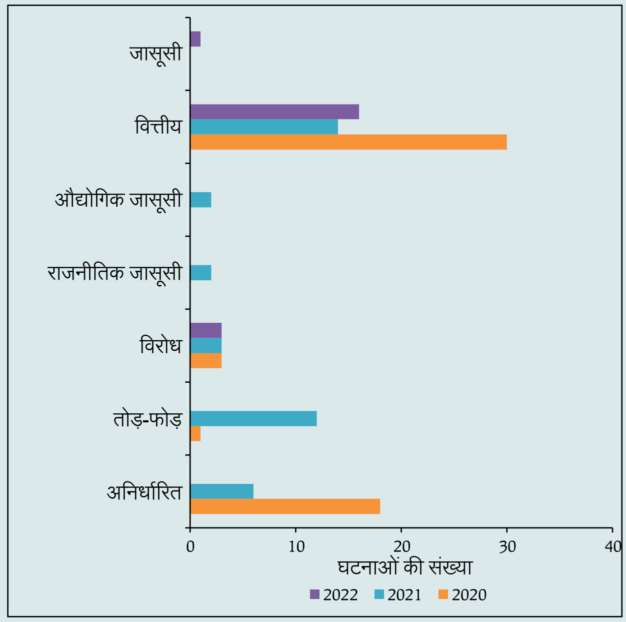

नोट: डेटा 18 नवंबर, 2022 तक अद्यतन किया गया।
स्रोत: मैरीलैंड विश्वविद्यालय सीआईएसएसएम साइबर अटैक डेटाबेस

उपयोग उद्योगों में साइबर आघात सहनीयता में सुधार के लिए किया जा सकता है जब सूचना को साइबर आघात सहनीयता सूचकांक (सीआरआई) में एकत्रित किया जाता है। दूरस्थ कार्य और वित्तीय संस्थानों द्वारा क्लाउड आधारित सेवाओं को अपनाने से अतिरिक्त सुरक्षा चुनौतियाँ पैदा हुई हैं।

भारतीय संदर्भ में, रिज़र्व बैंक ने संस्थागत और प्रणालीगत दोनों स्तरों पर साइबर आघात सहनीयता बढ़ाने के लिए कई पहल की हैं, जिसमें पर्यवेक्षित संस्थाओं (एसई) को निर्देश जारी करना, उभरती साइबर सुरक्षा चुनौतियों और खतरों से निपटने के लिए समय पर मार्गदर्शन शामिल है:

चार्ट 3: भारत में साइबर हमले की घटनाएं: उद्योगों के आधार पर (2020-22)

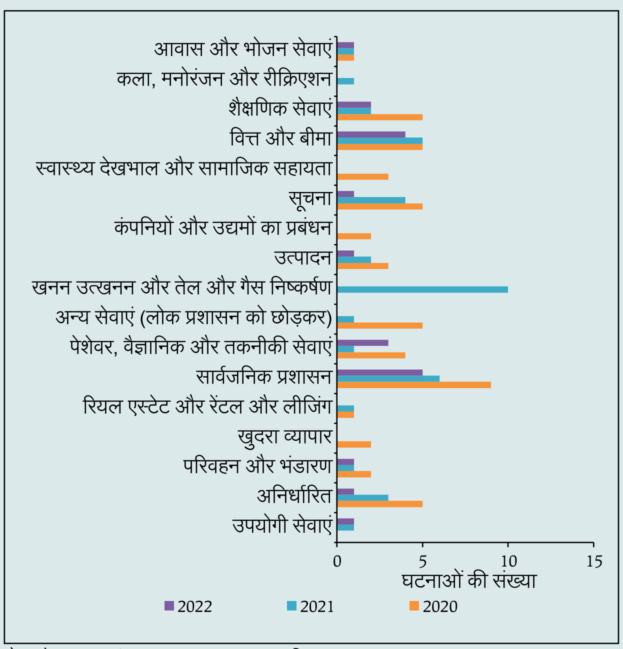

नोट: डेटा 18 नवंबर, 2022 तक अद्यतन किया गया।
स्रोत: मैरीलैंड विश्वविद्यालय सीआईएसएसएम साइबर अटैक डेटाबेस

चार्ट 5: भारत में साइबर हमलों की घटनाएं: प्रकार के आधार पर (2020-22)

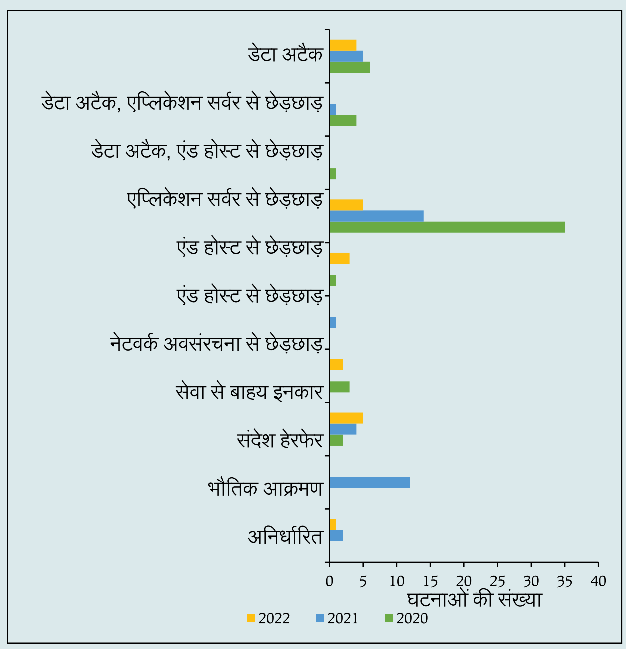

नोट: डेटा 18 नवंबर, 2022 तक अद्यतन किया गया।
स्रोत: मैरीलैंड विश्वविद्यालय सीआईएसएसएम साइबर अटैक डेटाबेस

(जारी)

(i) विनियमित संस्थाओं (आरई) को 18 फरवरी, 2021 को डिजिटल भुगतान सुरक्षा नियंत्रण पर एक मास्टर निर्देश (एमडी) जारी किया गया था, जो डिजिटल लेनदेन से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करने के लिए डिजिटल भुगतान उत्पादों और सेवाओं के लिए सुरक्षा नियंत्रण के न्यूनतम मानक प्रदान करता है;

(ii) 23 जून, 2022 को आईटी गतिविधियों/सेवाओं की आउटसोर्सिंग के कारण वित्तीय संस्थानों को सेवा प्रदाताओं के जोखिम से उत्पन्न जोखिमों पर मास्टर निर्देश(एमडी) का मसौदा सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए जारी किया गया था और प्राप्त फीडबैक की जांच की जा रही है;

(iii) परिचालन जोखिम प्रबंधन के हिस्से के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी प्रशासन, जोखिम, नियंत्रण और आश्वासन प्रथाओं पर 20 अक्टूबर, 2022 को जारी एमडी के मसौदे पर भी सार्वजनिक टिप्पणियां मांगी गई हैं और प्राप्त फीडबैक की जांच की जा रही है।

इसी तरह, साइबर सुरक्षा घटना प्रतिक्रिया टीम-वित्त क्षेत्र (सीएसआईआरटी-फिन) भी घटना विश्लेषण के माध्यम से कमियों और प्रणालीगत जोखिमों की पहचान कर रहा है और वित्तीय क्षेत्र की आघात सहनीयता को बढ़ाने के लिए सिफारिशें प्रदान कर रहा है।

चूंकि साइबर हमलों की आवृत्ति और परिष्कृत रूप बढ़ते हुए डिजिटलीकरण के अनुरूप बढ़ रहे हैं, उभरते जोखिमों की निरंतर निगरानी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, भारत की G20 अध्यक्षता के तहत, वित्तीय क्षेत्र की साइबर आघात सहनीयता को मजबूत करने के लिए वैश्विक सहयोग के लिए रिपोर्टिंग रूपरेखा एक प्राथमिकता बनी हुई है।

संदर्भ:

1) साइबर सुरक्षा के लिए यूरोपीय संघ एजेंसी (2022), "ईएनआईएसए थ्रेट लैंडस्केप", नवंबर।

2) हैरी, सी., और गलाघेर, एन. (2018), "क्लासीफाइंग साइबर इवेंट्स"। जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन वारफेयर, 17(3), 17-31, नवंबर।

3) बीआईएस (2022), "सेंट्रल बैंकिंग में साइबर जोखिम", सितंबर।

III.2 घरेलू विनियामकीय गतिविधियां

3.16 एफएसआर के जून 2022 अंक के प्रकाशन के बाद, केंद्रीय वित्त मंत्री की अध्यक्षता में वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) की 15 सितंबर, 2022 को एक बार बैठक हुई। परिषद ने अर्थव्यवस्था के लिए पूर्व चेतावनी संकेतकों, मौजूदा वित्तीय/ऋण सूचना प्रणालियों की दक्षता में सुधार, एफएमआई सहित प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थानों (एसआईएफआई) में शासन और प्रबंधन के मुद्दों, वित्तीय क्षेत्र में साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क को मजबूत करने, सभी वित्तीय सेवाओं और संबंधित मामलों के लिए एक समान अपने ग्राहक को जानें (केवाईसी), खाता एग्रीगेटर (एए) फ्रेमवर्क की स्थिति, ऊर्जा क्षेत्र के वित्तपोषण से संबंधित मुद्दे, भारत में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससी) की रणनीतिक भूमिका, गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट) - आईएफएससी से संबंधित अंतर-विनियामकीय मुद्दे और सभी सरकारी विभागों द्वारा पंजीकृत मूल्यांकनकर्ताओं की सेवाओं के उपयोग की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया। परिषद ने कहा कि वित्तीय स्थिरता को मजबूत करने के लिए उचित और समय पर कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए निरंतर आधार पर वित्तीय क्षेत्र के जोखिमों और बाजार गतिविधियों की निगरानी करने की आवश्यकता है। परिषद ने भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान उठाए जाने वाले वित्तीय क्षेत्र के मुद्दों के संबंध में तैयारियों पर भी ध्यान दिया।

3.17 नवंबर 2022 में आयोजित अपनी 29 वीं बैठक में, एफएसडीसी उप-समिति ने प्रमुख वैश्विक और घरेलू गतिविधियों के साथ-साथ वित्तीय प्रणाली के विभिन्न क्षेत्रों की भी समीक्षा की। विचार-विमर्श में विनियामकीय मुद्दे, उप-समिति के तहत तकनीकी समूहों की गतिविधियों और विभिन्न राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य स्तरीय समन्वय समितियों (एसएलसीसी) के कामकाज को शामिल किया गया। सदस्यों ने यह सुनिश्चित करने के लिए सतर्क और सक्रिय रहने का संकल्प लिया कि वित्तीय बाजार और वित्तीय संस्थान अस्थिर वैश्विक स्पिलओवर के बीच आघात सहनीय बने रहें।

III.3 विनियामकों/प्राधिकारणों की पहल

3.18 विनियामकों ने भारतीय वित्तीय प्रणाली की मजबूती और लचीलेपन में सुधार के लिए कई पहलें कीं (अनुबंध 3)।

III.3.1 भारतीय रिजर्व बैंक (गैर-बचत विदेशी मुद्रा एक्सपोजर) निदेश, 2022

3.19 वे संस्थाएं जो अपने विदेशी मुद्रा एक्सपोजरों की हेजिंग नहीं करती हैं, विदेशी मुद्रा दरों में अत्यधिक अस्थिरता की

अवधि के दौरान काफी नुकसान उठा सकती हैं। ये नुकसान उनके द्वारा बैंकों से लिए गए ऋणों को चुकाने की उनकी क्षमता को कम कर सकते हैं और उनकी चूक की संभावना को बढ़ा सकते हैं जिससे बैंकिंग प्रणाली की सेहत प्रभावित हो सकती है।

3.20 अरक्षित विदेशी मुद्रा एक्सपोजर (यूएफसीई) वाली संस्थाओं के लिए बैंकों के एक्सपोजर से उत्पन्न होने वाले जोखिम को दूर करने के लिए, अक्टूबर 1999 से कई दिशानिर्देश/अनुदेश लागू किए गए थे। इन दिशानिर्देशों की समीक्षा की गई और सभी वाणिज्यिक बैंकों (भुगतान बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को छोड़कर) के लिए मास्टर निदेश के रूप में समेकित किया गया। स्पष्टता प्रदान करने/अनुपालन के बोझ को कम करने के लिए पूर्वोक्त दिशा-निर्देशों में शामिल किए गए कुछ प्रमुख परिवर्तन निम्नानुसार हैं:

क) यूएफसीई दिशानिर्देशों से छूट: डेरिवेटिव लेनदेन से बैंकों को संस्थाओं के प्रति उत्पन्न होने वाले एक्सपोजर को छूट दी गई थी, बशर्ते कि ऐसी संस्थाओं का भारत में बैंकों के लिए कोई अन्य एक्सपोजर न हो। फैक्टरिंग लेनदेन को शामिल करने के लिए इस छूट का विस्तार किया गया है।

ख) छोटी इकाइयों के प्रति एक्सपोजर के लिए वैकल्पिक तरीका: अनुपालन बोझ को कम करने के लिए, बैंकिंग प्रणाली से कुल एक्सपोजर के आधार पर 'छोटी संस्थाओं' के लिए सीमा को संशोधित कर `50 करोड़ (` 25 करोड़ से ऊपर) कर दिया गया है। ऐसी इकाइयों के लिए, बैंकों को समय-समय पर हेजिंग जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होगी।

III.3.2 एआरसी के लिए विनियामकीय ढांचे की समीक्षा

3.21 आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियां (एआरसी) बैंकों और वित्तीय संस्थानों की संकटग्रस्त वित्तीय आस्तियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। रिज़र्व बैंक द्वारा उनके कामकाज की व्यापक समीक्षा करने के लिए गठित एक समिति की सिफारिशों के आधार पर, शासन मानदंडों को सुदृढ़ करने, पारदर्शिता और प्रकटीकरण को बढ़ाने, विवेकपूर्ण आवश्यकता को मजबूत करने और एआरसी की प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिए मौजूदा विनियामकीय फ्रेमवर्क में संशोधन किया गया है। दिशानिर्देशों में अन्य बातों के साथ-साथ बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में एक स्वतंत्र निदेशक, प्रबंध निदेशक (एमडी)/मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और पूर्णकालिक निदेशकों के लिए अधिकतम 15 वर्षों का निरंतर कार्यकाल, एक लेखापरीक्षा समिति, एक नामांकन समिति और पारिश्रमिक समिति का गठन अनिवार्य किया गया है। एआरसी को पिछले आठ वर्षों में उनके द्वारा शुरू की गई योजनाओं के ट्रैक रिकॉर्ड, रेटिंग माइग्रेशन और रेटिंग एजेंसी के साथ जुड़ाव के बारे में जानकारी का प्रकटीकरण करना आवश्यक है।

3.22 विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से एआरसी की न्यूनतम निवल स्वामित्व निधि (एनओएफ) को बढ़ाकर 300 करोड़ रुपये कर दिया गया है। उन्हें एसआर में हस्तांतरणकर्ताओं के निवेश के उच्चतर 15 प्रतिशत के न्यूनतम या जारी किए गए कुल एसआर का 2.5 प्रतिशत सुरक्षा प्राप्तियों (एसआर) में निवेश करना आवश्यक है। एआरसी को कुछ शर्तों के अधीन दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता(आईबीसी), 2016 के तहत समाधान आवेदक के रूप में कार्य करने की भी अनुमति है। ऋणदाता अब सभी श्रेणियों के विशेष उल्लेख खातों को एआरसी को हस्तांतरित कर सकते हैं। इसके अलावा, अधिशेष निधियों के परिनियोजन के तरीकों को विस्तृत किया गया है। प्रबंधन शुल्क/प्रोत्साहन के संग्रह को अंतर्निहित वित्तीय परिसंपत्तियों से की गई वसूली से जोड़ने से एआरसी का ध्यान प्रबंधन शुल्क मानसिकता से समाधान मानसिकता पर स्थानांतरित होने की उम्मीद है।

III.3.3 विनियम समीक्षा प्राधिकरण 2.0

3.23 विनियम समीक्षा प्राधिकरण 2.0 (आरआरए) की स्थापना रिज़र्व बैंक द्वारा 2021 में अन्य बातों सहित विनियमित संस्थाओं (आरई) के लिए अनुपालन में आसानी बढ़ाने के उद्देश्य से की गई। आंतरिक और बाहरी समीक्षा प्रक्रिया के आधार पर, आरआरए ने विनियामकीय बोझ को कम करने, रिपोर्टिंग तंत्र को तर्कसंगत बनाने और विनियामकीय निर्देशों और संचार को सुव्यवस्थित करने की सिफारिशें कीं। सूचनाओं तक पहुंच में और आसानी के लिए, आरबीआई की वेबसाइट के भीतर एक 'नियामक रिपोर्टिंग' पोर्टल बनाया गया है, जिसमें एक ही स्रोत पर वैधानिक, विनियामकीय और पर्यवेक्षी रिटर्न से संबंधित जानकारी शामिल है। आरई और हितधारकों के बीच प्रचार-प्रसार के लिए, कुछ विनियामकीय अनुदेशों को वापस

लेने और रिटर्न को बंद करने / विलय / ऑनलाइन जमा करने की सिफारिश करने वाली प्रेस विज्ञप्तियां जारी की गई।

III.3.4I शहरी सहकारी बैंकों के संबंध में किए गए विनियामकीय परिवर्तन

3.24 रिज़र्व बैंक ने 2021 में यूसीबी पर एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया। प्राप्त फीडबैक को ध्यान में रखते हुए कार्यान्वयन के लिए समिति की सिफारिशों की जांच की गई। जिन प्रमुख सिफारिशों को स्वीकार/संशोधन के साथ स्वीकार किया गया है उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

(ए) मौजूदा यूसीबी की वित्तीय सुदृढ़ता को मजबूत करने के उद्देश्य से विभेदित विनियामकीय निर्देशों के साथ एक सरल चार-स्तरीय विनियामकीय ढांचे को अपनाना। विशेष रूप से, एक जिले में संचालित टियर 1 यूसीबी के लिए ` 2 करोड़ की न्यूनतम निवल संपत्ति और अन्य सभी यूसीबी (सभी स्तरों के) के लिए `5 करोड़ न्यूनतम निवल संपत्ति निर्धारित की गई है। यूसीबी जो आवश्यकताओं को पूरा नहीं करते हैं, उन्हें मध्यवर्ती लक्ष्य के साथ एक ग्लाइड पाथ प्रदान किया गया है ताकि संशोधित मानदंडों में सुचारू रूप से परिवर्तन हो।

(बी) टीयर 2, टीयर 3 और टीयर 4 यूसीबी की पूंजी संरचना को सुदृढ़ करने के लिए न्यूनतम सीआरएआर को 12 प्रतिशत तक संशोधित करना। यूसीबी जो संशोधित सीआरएआर को पूरा नहीं करते हैं, उन्हें चरणबद्ध तरीके[107] से इसे प्राप्त करने के लिए एक ग्लाइड पाथ प्रदान किया गया। टीयर 1 यूसीबी के लिए, सीआरएआर को 9 प्रतिशत पर बनाए रखा गया।

(सी) संशोधित वित्तीय रूप से सुदृढ़ और सुप्रबंधित (एफएसडब्ल्यूएम) मानदंडों को पूरा करने वाले यूसीबी के लिए शाखा विस्तार के लिए स्वचालित मार्ग की शुरुआत और उन्हें पिछले वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर शाखाओं की संख्या के 10 प्रतिशत तक नई शाखाएं खोलने की अनुमति देना, जहां, न्यूनतम एक शाखा और अधिकतम पाँच शाखाओं की अनुमति होगी। उपरोक्त के अलावा, मौजूदा ढांचे के तहत अनुमोदन मार्ग के माध्यम से शाखा विस्तार भी जारी रहेगा।

(डी) केवल मूल्य के सापेक्ष ऋण (एलटीवी) अनुपात के आधार पर आवास ऋण के लिए जोखिम भार का निर्धारण, जिसके परिणामस्वरूप पूंजी बचत होगी।

(ई) अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की तर्ज पर लागू छूट के अधीन टियर- I पूंजी में पुनर्मूल्यांकन रिज़र्व को शामिल करना।

III.3.5 ऋण आसूचना कंपनीयों (सीआईसी) द्वारा आंतरिक लोकपाल की नियुक्ति

3.25 ऋण आसूचना कंपनीयों (सीआईसी) के आंतरिक शिकायत निवारण तंत्र की दक्षता को सुदृढ़ करने और सुधारने की दृष्टि से, सीआईसी को आंतरिक लोकपाल (आईओ) फ्रेमवर्क के तहत लाने का निर्णय लिया गया है। निदेशों में अन्य बातों के साथ-साथ आईओ के लिए नियुक्ति/कार्यकाल, भूमिका और जिम्मेदारियां, प्रक्रियात्मक दिशानिर्देश और निरीक्षण तंत्र शामिल हैं। इस व्यवस्था के तहत सीआईसी के अंतिम निर्णय से शिकायतकर्ता को अवगत कराए जाने से पूर्व सीआईसी द्वारा आंशिक रूप से या पूरी तरह से खारिज की गई सभी शिकायतों की समीक्षा आईओ द्वारा की जाएगी। आईओ जनता के सदस्यों से सीधे किसी भी शिकायत पर विचार नहीं करेगा। आईओ तंत्र के कार्यान्वयन की निगरानी सीआईसी की आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली द्वारा की जाएगी, इसके अलावा रिजर्व बैंक द्वारा विनियामकीय निरीक्षण किया जाएगा।

III.3.6 डिजिटल ऋण पर दिशानिर्देश

3.26 डिजिटल ऋण पर कार्य समूह द्वारा की गई सिफारिशों के आधार पर, रिजर्व बैंक ने सभी वाणिज्यिक बैंकों, प्राथमिक

[11] टियर 1 - सभी इकाई यूसीबी और वेतन भोगी यूसीबी (जमा आकार के बावजूद), और ₹100 करोड़ तक की जमा राशि वाले अन्य सभी यूसीबी;
टियर 2 - ₹100 करोड़ से अधिक और ₹1000 करोड़ तक की जमाराशियों वाले शहरी सहकारी बैंक;
टीयर 3 - ₹1000 करोड़ से अधिक और ₹10,000 करोड़ तक की जमाराशियों वाले शहरी सहकारी बैंक;
टियर 4 - ₹10,000 करोड़ से अधिक जमा वाले यूसीबी।

(शहरी) सहकारी बैंकों, राज्य सहकारी बैंकों, जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां सहित आवास वित्त कंपनियों (सामूहिक रूप से आरई के रूप में संदर्भित) को डिजिटल ऋण पर दिशानिर्देश जारी किए। ।

अन्य बातों के साथ-साथ दिशानिर्देश निम्नलिखित द्वारा पारदर्शिता और निष्पक्षता से कार्य करने का प्रयास करते हैं (ए) किसी तीसरे पक्ष के पास-थ्रू खाते/पूल खाते के बिना केवल उनके बैंक खातों के माध्यम से उधारदाताओं और उधारकर्ताओं के बीच धन के प्रवाह को अनिवार्य करना; (बी) यह सुनिश्चित करना कि ऋण सेवा प्रदाता सीधे ग्राहक से कोई शुल्क/प्रभार न वसूलें; (सी) उधारकर्ता के लिए सभी समावेशी लागत सहित उधार व्यवस्था के प्रमुख तथ्यों को पारदर्शी करना; (डी) ग्राहक की स्पष्ट सहमति द्वारा समर्थित ऑडिट ट्रेल्स के साथ डेटा का आवश्यकता आधारित संग्रह सुनिश्चित करना; और (ङ) ग्राहक डेटा के संबंध में उचित गोपनीयता नीति स्थापित करना।

3.27 इसके अलावा इस बात को दोहराया गया है कि आरई द्वारा ऋण सेवा प्रदाता (एलएसपी)/डिजिटल लेंडिंग ऐप (डीएलए) के साथ की गई आउटसोर्सिंग व्यवस्था आरई के दायित्वों को कम नहीं करती है और वे आउटसोर्सिंग पर मौजूदा दिशानिर्देशों का पालन करते रहेंगे। आरई यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके द्वारा नियुक्त एलएसपी और डीएलए (या तो आरई के या उनके द्वारा नियुक्त एलएसपी के) दिशानिर्देशों का पालन करते हैं।

III.3.7 विदेशी मुद्रा प्रवाह का उदारीकरण

3.28 भारतीय रिज़र्व बैंक विदेशी मुद्रा बाजार में चलनिधि की स्थिति की लगातार निगरानी कर रहा है ताकि बाजार के व्यवस्थित कामकाज को सुनिश्चित किया जा सके। विदेशी मुद्रा प्रवाह को बढ़ाने और विदेशी मुद्रा निधि के स्रोतों में विविधता लाने, अस्थिरता को कम करने और वैश्विक स्पिलओवर को कम करने के लिए निम्नलिखित उपायों की घोषणा की गई थी: (ए) वृद्धिशील विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक) खातों (एफसीएनआर (बी)) अनिवासी (बाह्य) खाता (एनआरई) सावधि जमा[12] पर सीआरआर और एसएलआर छूट; (बी) एफसीएनआर (बी) और अनिवासी (बाह्य) खाता (एनआरई) जमा पर ब्याज दरों के संबंध में प्रतिबंधों में अस्थायी छूट (सी) ऋण लिखतों में एफपीआई निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए विनियामक परिवर्तन; (डी) उधारकर्ताओं के एक बड़े समूह को विदेशी मुद्रा उधार लेने की सुविधा देने के लिए अधिकृत डीलर (एडी) बैंकों को अंतिम उपयोग प्रयोजनों के व्यापक सेट के लिए उधार देने की अनुमति देना; और (ई) ईसीबी के स्वचालित मार्ग के तहत सीमा को दोगुना करना और निवेश ग्रेड रेटिंग उधारकर्ताओं के लिए समग्र लागत सीमा में वृद्धि करना। 31 दिसंबर 2022 तक उपलब्ध रहने वाले ईसीबी के उपाय को छोड़कर यह उपाय 31 अक्तूबर 2022 को समाप्त हो गए।

III.3.8 भारतीय रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता

3.29 भारत से निर्यात पर जोर देते हुए व्यापार को बढ़ावा देने के लिए और भारतीय रुपये में वैश्विक व्यापारिक समुदाय की बढ़ती रुचि को समर्थन देने के लिए भारतीय रुपये में निर्यात/आयात के बीजक बनाने तथा उसके भुगतान और निपटान के लिए एक अतिरिक्त व्यवस्था स्थापित की गई है। विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम, (फेमा), 1999 के तहत आईएनआर में सीमापार व्यापार लेनदेन के लिए निम्नानुसार व्यापक ढांचा है: (ए) इस व्यवस्था के तहत सभी निर्यात और आयात भारतीय रुपये में मूल्यवर्गित और बीजक किए जा सकते हैं; (बी) दो व्यापारिक साझेदार देशों की मुद्राओं के बीच विनिमय दर बाजार निर्धारित हो सकती है; और (सी) इस व्यवस्था के तहत व्यापार लेनदेन का निपटान भारतीय रुपये में होगा। तदनुसार रिज़र्व बैंक से पूर्व अनुमोदन के बाद भारत में प्राधिकृत व्यापारी (एडी) बैंकों को व्यापार लेनदेन के निपटान के लिए भागीदार व्यापारिक देश के प्रतिनिधि बैंक/बैंकों के विशेष रुपया वोस्ट्रो खाते खोलने की अनुमति है और भारतीय निर्यातक इस चैनल के माध्यम से विदेशी आयातकों से निर्यात के समक्ष आईएनआर में अग्रिम भुगतान प्राप्त कर सकते हैं।

[12] सीआरआर/एसएलआर छूट 04 नवंबर 2022 तक की जमा राशियों पर मान्य थी।

III.3.9 ऋण एक्सपोजर के हस्तांतरण और मानक आस्तियों के प्रतिभूतिकरण पर मास्टर निर्देश (संशोधन)

3.30 मास्टर निदेश में अन्य बातों के साथ-साथ ऋण एक्सपोजर के हस्तांतरण पर विनिर्दिष्ट उधारदाताओं की विदेशी शाखाओं को निम्नलिखित के लिए अनुमति देने के लिए संशोधन किया गया था (ए) मेजबान अधिकार क्षेत्र में एक बैंक के रूप में संचालित और विनियमित वित्तीय इकाई से केवल 'कोई चूक नहीं' ऋण एक्सपोजर प्राप्त करें; (बी) मेजबान क्षेत्राधिकार में एक बैंक के रूप में संचालित और विनियमित एक वित्तीय इकाई में निवासी संस्थाओं से संबंधित 'डिफॉल्ट में' के साथ-साथ 'डिफॉल्ट में नहीं' एक्सपोजर का स्थानांतरण; और (सी) मेजबान क्षेत्राधिकार में वित्तीय क्षेत्र के विनियामक द्वारा विनियमित किसी भी संस्था को अनिवासियों से संबंधित 'डिफॉल्ट में' और साथ ही 'डिफॉल्ट में नहीं' एक्सपोजर का हस्तांतरण। न्यूनतम धारण अवधि (एमएचपी), प्रतिभूति रसीदों (एसआर) के मूल्य निर्धारण, एआरसी को तनावग्रस्त ऋणों के हस्तांतरण और ऋणदाताओं के ऋण/निवेश जोखिम से संबंधित कुछ प्रावधानों में भी संशोधन किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, 'आर्थिक हित' जो ऋण एक्सपोजर की अवधि के दौरान ऋण एक्सपोजर से उत्पन्न हो सकने वाले 'जोखिम और प्रतिफल' के रूप में परिभाषित किया गया है।

3.31 दिसंबर 2022 में रिज़र्व बैंक ने 365 दिनों से कम की अवशिष्ट परिपक्वता वाले ऋणों के प्रतिभूतिकरण की अनुमति नहीं दी। इसके अलावा यह स्पष्ट किया गया था कि वाणिज्यिक या आवासीय अचल संपत्ति बंधक के लिए न्यूनतम धारण अवधि (एमएचपी) की गणना ऋण के पूर्ण संवितरण या भारत के प्रतिभूतिकरण परिसंपत्ति पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित की केंद्रीय रजिस्ट्री (सीईआरएसएआई) के साथ प्रतिभूति हित के पंजीकरण की तारीख से, जो भी बाद में हो, की जाएगी। इन निर्देशों के प्रयोजन के लिए उक्त संशोधन में आगे स्पष्ट किया गया है कि प्रतिभूतिकरण नोट जारी करने के लिए न्यूनतम टिकट का आकार एकल निवेशक द्वारा निवेश के आकार को संदर्भित करता है और यह 1 करोड़ होगा।

III.3.10 वित्तीय सेवाओं की आउटसोर्सिंग - वसूली एजेंटों को नियुक्त करने वाली विनियमित संस्थाओं की जिम्मेदारियां

3.32 भारतीय रिज़र्व बैंक आरई द्वारा लगाए गए वसूली एजेंटों (आरए) से संबंधित मुद्दों का समाधान करता रहा है। आरए द्वारा अपनाई जाने वाली अस्वीकार्य प्रथाओं की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए रिज़र्व बैंक ने आरई को अतिरिक्त निर्देश जारी किए जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ अधिक आरई को कवर करने के लिए दिशानिर्देशों का दायरा बढ़ाया गया और अतिदेय ऋणों की वसूली के लिए उधारकर्ताओं को कॉल करने के अनुमत घंटों को निर्दिष्ट किया गया। आरई को यह भी सख्ती से सुनिश्चित करने की सलाह दी गई थी कि वे या उनके आरए अपने ऋण वसूली के प्रयासों में किसी भी व्यक्ति के खिलाफ मौखिक या शारीरिक रूप से किसी भी प्रकार की धमकी या उत्पीड़न का सहारा न लें, जिसमें सार्वजनिक रूप से अपमानित करने या उनके परिवार के सदस्य, रेफरी और दोस्त की गोपनीयता में दखल देने के इरादे से किए गए कार्य, देनदारों के मोबाइल पर या सोशल मीडिया आदि के माध्यम से अनुचित संदेश भेजना आदि शामिल हैं।

ये निर्देश सभी वाणिज्यिक बैंकों (भुगतान बैंकों को छोड़कर), एआईएफआई, एनबीएफसी, यूसीबी, एसटीसीबी, सीसीबी और एआरसी पर लागू किए गए थे। हालांकि, यह निर्देश 14 मार्च 2022 के 'मास्टर निर्देश- भारतीय रिज़र्व बैंक (माइक्रोफाइनेंस ऋण के लिए नियामक ढांचा) निर्देश, 2022' के तहत कवर किए गए माइक्रोफाइनेंस ऋणों पर लागू नहीं हैं।

III.3.11 ऊपरी लेयर में एनबीएफसी की पहचान

3.33 एनबीएफसी के विकास को ध्यान में रखते हुए रिज़र्व बैंक ने 22 अक्टूबर 2021 को वित्तीय क्षेत्र के भीतर आकार, जटिलता और परस्पर संबद्धता के संदर्भ में 'स्केल आधारित विनियमन (एसबीआर): एनबीएफसी के लिए संशोधित विनियामक ढांचा' जारी किया था ताकि एनबीएफसी विनियमों को उनके बदलते जोखिम प्रोफाइल के साथ संरेखित किया जा सके। फ्रेमवर्क ने एनबीएफसी को बेस लेयर (एनबीएफसी-बीएल), मिडिल लेयर (एनबीएफसी-एमएल), अपर लेयर (एनबीएफसी-यूएल) और टॉप लेयर (एनबीएफसी-टीएल) में वर्गीकृत किया और कहा कि ऊपरी परत में वे एनबीएफसी

शामिल होंगे जिन्हें फ्रेमवर्क में दिए गए मापदंडों और स्कोरिंग पद्धति के एक सेट के आधार पर रिज़र्व बैंक द्वारा विशेष रूप से निर्धारित किया जाएगा। अपने आस्ति आकार के संदर्भ में जो शीर्ष दस एनबीएफसी हैं, वे हमेशा ऊपरी परत में रहेंगे। तदनुसार 30 सितंबर 2022 को एनबीएफसी-यूएल के रूप में वर्गीकृत 16 एनबीएफसी की सूची जारी की गई।

III.3.12 एनबीएफसी के लिए विनियामक ढांचा - खाता समूहक (संशोधन)

3.34 एमएसएमई को नकद प्रवाह-आधारित उधार देने की सुविधा की दृष्टि से खाता एग्रीगेटर (एए) ढांचे के तहत माल और सेवा कर नेटवर्क (जीएसटीएन) को वित्तीय सूचना प्रदाता (एफआईपी) के रूप में शामिल करने का निर्णय लिया गया है। राजस्व विभाग इस विशिष्ट उद्देश्य के लिए जीएसटीएन का विनियामक होगा और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) रिटर्न अर्थात फॉर्म जीएसटीआर-1 और फॉर्म जीएसटीआर-3बी वित्तीय जानकारी होगी।

III.3.13 डिजिटल रुपया (ई ₹) - थोक और खुदरा

3.35 भारत की सीबीडीसी डिजिटल रुपया (ई₹), कानूनी मुद्रा होने के मामले में भौतिक मुद्रा के समान है जो कि भुगतान के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है और मूल्य का एक सुरक्षित भंडार है। ई₹ जनता द्वारा उपयोग किए जाने वाले धन का एक अतिरिक्त रूप बनेगा।

3.36 1 नवंबर 2022 को सरकारी प्रतिभूतियों में द्वितीयक बाजार लेनदेन के निपटान के लिए थोक खंड (ई₹-डबल्यू) में ई₹ को प्रायोगिक तौर पर 9 बैंकों की भागीदारी के साथ शुरू किया गया था। इससे अंतर-बैंक बाजार को अधिक कुशल बनाने और निपटान जोखिम को कम करने के लिए निपटान गारंटी इनफ्रास्ट्रक्चर या संपार्श्विक की आवश्यकता को समाप्त कर लेनदेन लागत को कम करने की उम्मीद है। इस प्रयोग से मिली सीख के आधार पर भावी प्रयोगों को अन्य थोक लेनदेन और सीमा पार भुगतानों पर केन्द्रित किया जाएगा।

3.37 खुदरा खंड (ई₹-आर) में पहला प्रयोग ई₹ 1 दिसंबर 2022 को देश भर के ग्राहकों और व्यापारियों के बंद उपयोगकर्ता समूह में चुनिंदा स्थानों पर प्रारम्भ किया गया था। पहला चरण चार बैंकों के साथ शुरू हुआ और बाद में और बैंक इस प्रायोगिक योजना में शामिल होंगे। ई₹-आर पायलट जनता को विनिमय का एक जोखिम-मुक्त माध्यम प्रदान करेगा क्योंकि यह डिजिटल लेनदेन में विश्वास, सुरक्षा और तत्काल निपटान अंतिमता जैसी भौतिक नकदी की विशेषताओं के साथ केंद्रीय बैंक की प्रत्यक्ष देयता का प्रतिनिधित्व करता है। इस पायलट के दौरान बंद उपयोगकर्ता समूह में व्यक्ति-से-व्यक्ति (पी2पी) और व्यक्ति-से-व्यापारी (पी2एम) लेनदेन के मामलों का परीक्षण किया जा रहा है। यह वास्तविक समय में डिजिटल रुपये के निर्माण, वितरण और खुदरा उपयोग की पूरी प्रक्रिया की मजबूती का भी परीक्षण करेगा। वर्तमान प्रयोग से मिली सीख के आधार पर भावी प्रयोगों में ई₹ टोकन और आर्किटेक्चर की अन्य विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण किया जा सकता है।

III. 3.14 घर्षण रहित क्रेडिट की ओर - किसान क्रेडिट कार्ड के डिजिटलीकरण पर पायलट

3.38 भारत में ग्रामीण ऋण से जुड़ी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, इसके विभिन्न पहलुओं का डिजिटलीकरण रिज़र्व बैंक के लिए एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में उभरा है। रिज़र्व बैंक के मार्गदर्शन में रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब (आरबीआईएच) द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) ऋण के संपूर्ण डिजिटलीकरण एक पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए विकसित किया गया है। डिजिटल केसीसी पायलट का उद्देश्य भूमि रिकॉर्ड डेटा के वास्तविक समय में सत्यापन कर सकने के लिए एप्लिकेशन प्रोग्राम इंटरफेस (एपीआई) के माध्यम से बैंक की ऋण उत्पत्ति प्रणाली (एलओएस) के स्वचालन और राज्य सरकार के भूमि रेकॉर्ड डाटा के साथ इसके एकीकरण जैसी प्रमुख प्रक्रियाओं के एंड-टू-एंड डिजिटलीकरण को स्वचालित और सक्षम करके केसीसी अनुप्रयोगों के टर्न अराउंड टाइम (टीएटी) को काफी कम करना है।

3.39 पायलट मध्य प्रदेश और तमिलनाडु के दो राज्यों के चुनिंदा जिलों में किया जा रहा है। इन दो राज्यों के अन्य जिलों के साथ-साथ अन्य राज्यों में भी अन्य बैंकों के साथ साझेदारी में पायलट को आगे बढ़ाने का काम चल रहा है।

3.40 केसीसी, उधार पर इस पायलट परियोजना के डिजिटलीकरण द्वारा क्रेडिट प्रक्रिया को तेज और अधिक कुशल

बनाकर सेवा-रहित और सेवा वाली ग्रामीण आबादी में ऋण प्रवाह को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। जब पूरी तरह से लागू किया जाएगा तो उम्मीद है कि यह देश की ग्रामीण ऋण वितरण प्रणाली को बदल देगा।

III.3.15 नियामक सैंडबॉक्स के लिए समर्थकारी ढांचा

3.41 रिज़र्व बैंक ने इंटरऑपरेबल रेगुलेटरी सैंडबॉक्स (आईओआरएस) के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) जारी की ताकि उन नवीन उत्पादों/सेवाओं के परीक्षण की सुविधा मिल सके जिनके व्यवसाय मॉडल/गतिविधियाँ/विशेषताएँ एक से अधिक वित्तीय क्षेत्र विनियामकों के विनियामक दायरे में आती हैं। आईओआरएस के लिए एसओपी फिनटेक पर अंतर-विनियामक तकनीकी समूह (फिनटेक पर आईआरटीजी) द्वारा तैयार किया गया है। जिस विनियामक के तहत उत्पाद की 'प्रमुख विशेषता' आती है, उसका विनियामक सैंडबॉक्स ढांचा 'प्रमुख विनियामक (पीआर)' के रूप में शासित करेगा। वो/वे विनियामक जिसके/जिनके अधीन उत्पाद की प्रमुख विशेषता के अलावा अन्य विशेषताएं आती हैं, वे 'एसोसिएट रेगुलेटर (एआर)' होंगे। परीक्षण डिजाइन को एआर के परामर्श से पीआर द्वारा अंतिम रूप दिया जाएगा।

III.3.16 ग्राहक संरक्षण

3.42 रिज़र्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना (आरबी-आईओएस) 2021 के तहत पिछली दो तिमाहियों में भारतीय रिज़र्व बैंक लोकपाल (ओआरबीआईओ) के कार्यालयों द्वारा प्राप्त शिकायतों की संख्या इंगित करती है कि ऋण और अग्रिम से संबंधित शिकायतें (क्रेडिट कार्ड सहित) 2022-23 की पहली और दूसरी तिमाही के दौरान प्राप्त कुल शिकायतों का लगभग 40 प्रतिशत है (सारणी 3.1)। मोबाइल/इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, जमा खाते, स्वचालित टेलर/नकद जमा मशीन और डेबिट कार्ड से संबंधित शिकायतों की भी काफी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी थी। हालांकि कुल लेनदेन/व्यवसाय के प्रतिशत के रूप में शिकायतों की संख्या नगण्य थी।

सारणी 3.1 आरबी-आईओएस, 2021 के तहत प्राप्त शिकायतों की श्रेणी

	शिकायत के आधार	अप्रैल से जून 2022		जुलाई से सितंबर 2022	
		संख्या	शेयर (प्रतिशत में)	संख्या	शेयर (प्रतिशत में)
1	ऋण और अग्रिम और एफपीसी का पालन न करना	14,794	27.7	13,179	25.8
2	मोबाइल / इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग	8,584	16.1	8,377	16.4
3	जमा खाते खोलना/परिचालन करना	8,155	15.3	8,264	16.2
4	क्रेडिट कार्ड	7,190	13.4	7,493	14.7
5	एटीएम/सीडीएम/डेबिट कार्ड	7,685	14.4	7,135	14.0
6	अन्य उत्पाद और सेवाएं	3,743	7.0	3,748	7.4
7	पेंशन	1,295	2.4	1,056	2.1
8	पैरा-बैंकिंग	652	1.2	635	1.2
9	प्रेषण और लिखतों का संग्रह	784	1.5	632	1.2
10	अन्य	605	1.1	493	1.0
कुल		**53,487**	**100.0**	**51,012**	**100.0**

स्रोत: आरबीआई

3.43 ग्राहकों और आम जनता को साइबर और डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी की बढ़ती संख्या से बचाने के लिए रिज़र्व बैंक ने आरबी-आईओएस 2021 के तहत अपनी जागरूकता पहल को बढ़ावा दिया है। इनमें स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं में मल्टी-मीडिया चैनलों पर ओम्बड्समैन स्पीक प्रोग्राम, मीडिया के साथ टॉकाथन और पूरे देश में गहन जागरूकता अभियान शामिल हैं लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है।

III.3.17 प्रवर्तन

3.44 जून-नवंबर 2022 के दौरान रिज़र्व बैंक ने 105 विनियमित संस्थाओं (4 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक; 3 निजी क्षेत्र के बैंक; 88 सहकारी बैंक; 2 विदेशी बैंक; 1 लघु वित्त बैंक; 1 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक; और 6 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां) के विरुद्ध प्रवर्तन कार्रवाई की और रिज़र्व बैंक द्वारा जारी वैधानिक प्रावधानों और/या निर्देशों के गैर-अनुपालन/उल्लंघन के लिए ₹24.57 करोड़ का कुल जुर्माना लगाया।

III.3.18 REITs और InvITs – निधि जुटाना तथा भावी परिदृश्य

3.45 रियल एस्टेट निवेश ट्रस्ट (आरईआईटी) में वाणिज्यिक अचल आस्तियों के पोर्टफोलियो शामिल हैं जिनमें से एक बड़ा हिस्सा पहले से ही पट्टे पर दिया गया है, जबकि इंफ्रास्ट्रक्चर इंवेस्टमेंट ट्रस्ट (आईएनवीआईटी) में राजमार्ग और बिजली पारेषण आस्ति जैसी बुनियादी ढांचा आस्ति के पोर्टफोलियो शामिल हैं। REITs और InvITs देश में रियल एस्टेट और बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण और निवेश की सुविधा प्रदान करते हैं।

3.46 30 नवंबर 2022 तक सेबी के पास पांच पंजीकृत आरईआईटी और 19 पंजीकृत InvIT हैं। 30 नवंबर 2022 तक InvIT ने ₹79,483 करोड़ जुटाए जबकि REIT ने ₹15,250 करोड़ जुटाए (सारणी 3.2)। बुनियादी ढांचे के लिए 2022-23 के केंद्रीय बजट में 7.5 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं जो पिछले वर्ष के आवंटन से 35.4 प्रतिशत अधिक हैं। भारत सरकार ने पीएम गति शक्ति, नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन, समावेशी विकास और निवेश के वित्तपोषण जैसी पहलों पर अपना ध्यान केंद्रित करने के साथ बुनियादी ढांचे के विकास पर अतिरिक्त जोर दिया है।

III.4 अन्य विकास

III.4.1 जमा बीमा

3.47 जमाकर्ताओं के लिए सभी वाणिज्यिक और सहकारी बैंकों में डिपॉजिट इंश्योरेंस एवं क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन (डीआईसीजीसी) का बीमा कवर उनका बैंकिंग प्रणाली में विश्वास पैदा करता है जिससे वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। 30 सितंबर 2022 तक पंजीकृत बीमाकृत बैंकों की संख्या 2034 थी जिसमें 141 वाणिज्यिक बैंक शामिल थे {43 आरआरबी, 2 स्थानीय क्षेत्र बैंक (एलएबी), 6 भुगतान बैंक और 12 छोटे वित्त बैंक (एसएफबी) सहित} और 1,893 सहकारी बैंक शामिल थे। जमा बीमा ₹5 लाख की वर्तमान सीमा के चलते सितंबर 2022 के अंत तक 267.1 करोड़ पूरी तरह से संरक्षित जमा खाते (कुल का 98.0 प्रतिशत) थे। मूल्य के संदर्भ में ₹80.95 लाख करोड़ की कुल निर्धारणीय जमाराशियों में से बीमाकृत जमा राशि 46.2 प्रतिशत थी।

3.48 डीआईसीजीसी ने 2022-23 की पहली छमाही में जमा बीमा प्रीमियम के रूप में बैंकों से ₹10,512.8 करोड़ प्राप्त किए जिसमें से 93.9 प्रतिशत वाणिज्यिक बैंकों का और शेष सहकारी बैंकों का योगदान था। 2022-23 की पहली छमाही के अंत में डिपॉजिट इंश्योरेंस फंड (डीआईएफ) ₹1.55 लाख करोड़ था जो 1.92 प्रतिशत (सारणी 3.3 और 3.4) का रिज़र्व अनुपात (यानी, बीमाकृत जमाओं के लिए डीआईएफ का अनुपात) दर्शाता है।

सारणी 3.3 जमा बीमा प्रीमियम

(राशि करोड़ रुपये में)

अवधि	वाणिज्यिक बैंक	सहकारी बैंक
2021-22 (H1)	8,939.1	621.6
2022-23 (H1)	9,872.1	640.7

स्रोत: निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी)

सारणी 3.2 आरईआईटी और आईएनवीआईटी द्वारा निधि जुटाना (राशि करोड़ रुपये में)

विवरण	2019-20		2020-21		2021-22		2022-23^		कुल
	संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	संख्या	राशि	
आरईआईटी द्वारा जुटाई गई कुल धनराशि	**-**	**-**	**3**	**14,300**	**2**	**950**	**-**	**-**	**15,250**
सूचीबद्ध आरईआईटी	-	-	3	14,300	2	950	-	-	15,250
आईएनवीआईटी द्वारा जुटाई गई कुल धनराशि	**4**	**11,496**	**2**	**40,432**	**9**	**21,195**	**6**	**6,360**	**79,483**
सूचीबद्ध आईएनवीआईटी	3	7,744	1	25,215	7	16,025	3	2,596	51,580
असूचीबद्ध आईएनवीआईटी	1	3,753	1	15,217	2	5,170	3	3,764	27,904
आरईआईटी और आईएनवीआईटी द्वारा जुटाई गई कुल धनराशि*	**4**	**11,496**	**5**	**54,732**	**11**	**22,145**	**6**	**6,360**	**94,733**

नोट: * सार्वजनिक निर्गम, निजी प्लेसमेंट, अधिमानी निर्गम, संस्थागत प्लेसमेंट, अधिकार शेयरों के निर्गम के जरिए जुटाई गई राशि शामिल है।

^ आंशिक वित्तीय वर्ष 2022-23 (1 अप्रैल, 2022 से 30 नवंबर, 2022)।

स्रोत: सेबी

सारणी 3.4 जमा बीमा निधि (डीआईएफ)

अवधि	जमा बीमा निधि (रुपए करोड़ में)	आरक्षित निधि अनुपात (प्रतिशत)
अंत-मार्च 2022	1,46,842	1.81
अंत-सितंबर 2022	1,55,459	1.92

स्रोत: निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी)

3.49 2022-23 की पहली छमाही में परिसमाप्त बैंकों और सर्व समावेशी निदेश (एआईडी) के तहतआने वाले बैंकों के दावों के निपटान के मामले ₹479.8 करोड़ रूपयर के थे, जिसमें एआईडी के तहत बैंकों की राशि ₹397.9 करोड़ थी। पिछले वर्ष की इसी अवधि में ₹267 करोड़ की तुलना में 2022-23 की पहली छमाही के दौरान प्राप्त ₹58.1 करोड़ का नकद पुनर्भुगतान (वसूली में से) प्राप्त हुआ था। 22 दिसंबर 2022 तक एआईडी के तहत बैंकों की बीमाकृत जमा राशि ₹2,242 करोड़ थी।

III.4.2 कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी)

3.50 दिसंबर 2016 में दिवाला और ऋण शोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) की शुरुआत के पश्चात सितंबर 2022 के अंत तक 5,893 सीआईआरपी शुरू हो गए थे जिनमें से 67 प्रतिशत को बंद कर दिया गया है। इनमें से लगभग 21 प्रतिशत अपील या समीक्षा या निपटारे के बाद बंद कर दिए गए थे, 19 प्रतिशत वापस ले लिए गए थे, 46 प्रतिशत परिसमापन के आदेश में समाप्त हो गए थे और 14 प्रतिशत समाधान योजनाओं के अनुमोदन में समाप्त हो गए थे (सारणी 3.5)।

3.51 30 सितंबर 2022 तक 553 सीआईआरपी का समाधान हो चुका है। जहां संहिता की धारा 7 के तहत प्रक्रिया शुरू की गई थी वहां समाधान योजनाओं के तहत वित्तीय लेनदारों (एफसी) द्वारा परिसमापन मूल्य की तुलना में वसूली 201 प्रतिशत थी, जबकि उनके द्वारा की गई वसूली उनके दावों का 33 प्रतिशत थी। सीआईआरपी 46 प्रतिशत परिसमापन आदेश के साथ बंद हुए जबकि उसकी तुलना में 14 प्रतिशत समाधान योजना के साथ समाप्त हुए। हालांकि, परिसमापन से समाप्त होने वाले सीआईआरपी में से 76 प्रतिशत से अधिक (1774 में से 1349 जिसके लिए डेटा उपलब्ध हैं) पहले औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड (बीआईएफआर) के पास थे और/या निष्क्रिय हैं। जो परिसमापन से समाप्त हो गए अधिकांश कॉर्पोरेट देनदारों का आर्थिक मूल्य, उनके सीआईआरपी में भर्ती होने से पहले ही लगभग पूरी तरह से हार

सारणी 3.5 कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया

वर्ष/तिमाही	अवधि की शुरुआत में सीआईआरपी	स्वीकृत	द्वारा समापन				अवधि के अंत में सीआईआरपी
			अपील करना/ समीक्षा / निपटारा	धारा 12ए के तहत वापस लिया गया	समाधान योजना का अनुमोदन	परिसमापन की शुरुआत	
2016 - 17	0	37	1	0	0	0	36
2017 - 18	36	707	94	0	19	91	539
2018 - 19	539	1157	153	97	77	305	1064
2019 - 20	1064	1989	344	217	136	541	1815
2020 - 21	1815	536	91	162	121	350	1627
अप्रैल - जून 2021	1627	141	12	36	34	75	1611
जुलाई - सितंबर 2021	1611	192	26	40	18	67	1652
अक्तूबर - दिसंबर 2021	1652	263	19	48	52	114	1682
जनवरी - मार्च 2022	1682	289	46	47	39	84	1755
अप्रैल - जून 2022	1755	361	34	59	34	96	1893
जुलाई - सितंबर 2022	1893	221	26	34	23	84	1947
कुल	**NA**	**5893**	**846**	**740**	**553**	**1807**	**1947**

नोट: 1. ये सीआईआरपी 5721 सीडी के संबंध में हैं।

2. डेटा में 1 सीडी शामिल नहीं है जो सीधे बीआईएफआर से रिज़ॉल्यूशन में चली गई।

3. डेटा में दीवान हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड डेटा, श्रेई इक्विपमेंट फाइनेंस लिमिटेड, श्रेई इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस लिमिटेड और रिलायंस कैपिटल लिमिटेड शामिल हैं, जिसमें रिजर्व बैंक द्वारा दायर आवेदन को संहिता के वित्तीय सेवा प्रदाता नियमों के साथ पढ़ी जाने वाली धारा 227 के तहत स्वीकार किया गया था।

स्रोत: एनसीएलटी की वेबसाइट से संकलन और आईपीएस द्वारा फाइलिंग।

गया था। इन सीडी में औसतन, बकाया ऋण राशि के 8 प्रतिशत से भी था (सारणी 3.6)।

3.52 परिचालन लेनदारों (ओसी) द्वारा शुरू किए गए सीआईआरपी के 53 प्रतिशत अपील, समीक्षा, या वापस लिए जाने के बाद बंद कर दिए गए थे। इस प्रकार बंद किए गए मामले अपील, समीक्षा या वापस ले लिए जाने से बंद किए गए मामलों (सारणी 3.7 और सारणी 3.8) का लगभग 72 प्रतिशत हिस्सा है।

III.4.3 बीमा

3.53 जीवन बीमा क्षेत्र प्रीमियम में लगातार उच्च वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि दर्ज कर रहा है। अप्रैल-अक्टूबर 2022 की अवधि के दौरान जीवन बीमा क्षेत्र द्वारा एकत्र किया गया कुल प्रीमियम 4,11,474 करोड़ रुपये था जो पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान प्रीमियम संग्रह से 21 प्रतिशत अधिक था। इसी अवधि के दौरान सामान्य और स्वास्थ्य बीमा क्षेत्र द्वारा प्रीमियम संग्रह ₹1,46,152 करोड़ रहा, जो 2021-22 की इसी अवधि की तुलना में 16 प्रतिशत अधिक था। व्यावसायिक क्षेत्रों में मोटर और स्वास्थ्य बीमा खंडों में क्रमश: 18 प्रतिशत और 21 प्रतिशत की वृद्धि हुई और अन्य खंडों ने भी अच्छी वृद्धि दर्ज की।

सारणी 3.6. 30 सितंबर 2022 तक परिसमापन के आदेश के साथ समाप्त होने वाले सीआईआरपी

सीआईआरपी के प्रारंभ में कॉर्पोरेट देनदार की स्थिति	द्वारा शुरू किए गए सीआईआरपी की संख्या			
	वित्तीय लेनदार	परिचालनगत ऋणदाता	कॉर्पोरेट देनदार	कुल
बीआईएफआर में या गैर-कार्यात्मक या दोनों में	585	619	145	1349
संकल्प मूल्य> परिसमापन मूल्य	105	60	38	203
रिज़ॉल्यूशन वैल्यू ≤ लिक्विडेशन वैल्यू*	692	730	149	1571

नोट: 1. ऐसी 99 सीआईआरपी थी जहां सीडी बीआईएफआर में या गैर-कार्यात्मक थे लेकिन परिसमापन मूल्य से समाधान मूल्य अधिक था।
2. *इसमें ऐसे मामले शामिल हैं जहां कोई समाधान योजना प्राप्त नहीं हुई और ऐसे मामले जहां परिसमापन मूल्य शून्य है या अनुमानित नहीं है।
3. 33 सीआईआरपी के आंकड़े प्रतीक्षित हैं।

सारणी 3.7 30 सितंबर 2022 तक शुरू किए गए सीआईआरपी के हितधारक-वार परिणाम

नतीजा	विवरण	द्वारा शुरू किया गया सीआईआरपी			
		वित्तीय ऋणदाता	परिचालन ऋणदाता	कॉर्पोरेट देनदार	कुल
सीआईआरपी की स्थिति	अपील/समीक्षा/निपटान द्वारा समापन	234	605	7	846
	धारा 12ए के अंतर्गत वापस लिए जाने द्वारा समापन	198	535	7	740
	समाधान योजना के अनुमोदन से समापन #	313	188	51	552
	परिसमापन की शुरुआत द्वारा समापन	812	803	192	1807
	जारी #	974	877	93	1944
	संपूर्ण	**2531**	**3008**	**350**	**5889**
समाधान योजना वाले सीआईआरपी	परिसमापन मूल्य के प्रतिशत के रूप में एफसी द्वारा वसूली	201.0	123.5	147.2	177.6
	एफसी द्वारा उनके दावों के प्रतिशत के रूप में वसूली	33.0	16.5	18.3	30.8
	सीआईआरपी को बंद करने में लगने वाला औसत समय (दिन)	567	561	521	561
सीआईआरपी उपज परिसमापन	दावों के प्रतिशत के रूप में परिसमापन मूल्य	6.6	9.2	9.2	7.3
	सीआईआरपी को बंद करने में लगने वाला औसत समय (दिन)	457	429	388	437

नोट: # इस डेटा में संहिता के वित्तीय सेवा प्रदाता नियमों के साथ पठित धारा 227 के तहत स्वीकृत वित्तीय सेवा प्रदाताओं के संबंध में डेटा शामिल नहीं है।

सारणी 3.8 30 सितंबर 2022 तक सीआईआरपी का क्षेत्रीय वितरण

क्षेत्र	सीआईआरपी की संख्या						
	स्वीकृत	समाप्त					जारी
		अपील/समीक्षा/निपटान	धारा 12 ए के तहत वापस लिए गए	समाधान योजना का अनुमोदन	परिसमापन की शुरुआत	कुल	
उत्पादन	2324	296	295	279	779	1649	675
खाद्य, पेय पदार्थ और तंबाकू उत्पाद	303	33	37	32	96	198	105
रसायन और रासायनिक उत्पाद	244	37	38	33	69	177	67
विद्युत मशीनरी और उपकरण	169	22	14	9	75	120	49
निर्मित धातु उत्पाद	120	16	23	13	43	95	25
यंत्रावली और उपकरण	262	41	41	20	80	182	80
कपड़ा, चमड़ा और परिधान उत्पाद	399	50	50	35	158	293	106
लकड़ी, रबर, प्लास्टिक और कागज उत्पाद	269	32	37	36	86	191	78
मूल धातुएँ	387	44	31	77	124	276	111
अन्य	171	21	24	24	48	117	54
रियल एस्टेट, किराए पर लेना और व्यावसायिक गतिविधियां	1227	230	181	73	313	797	430
रियल एस्टेट गतिविधियां	311	70	38	14	40	162	149
कंप्यूटर और संबंधित गतिविधियाँ	171	25	29	6	59	119	52
अनुसंधान और विकास	6	2	1	1	0	4	2
अन्य व्यावसायिक गतिविधियाँ	739	133	113	52	214	512	227
निर्माण	653	118	85	59	122	384	269
थोक और खुदरा व्यापार	588	72	55	36	230	393	195
होटल और रेस्टोरेंट	130	23	20	15	30	88	42
बिजली और अन्य	177	17	11	30	56	114	63
परिवहन, भंडारण और संचार	163	19	19	12	67	117	46
अन्य	631	71	74	49	210	404	227
संपूर्ण	**5893**	**846**	**740**	**553**	**1807**	**3946**	**1947**

स्रोत: भारतीय दिवाला और ऋण शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई)

III.4.4 पेंशन निधि

3.54 31 अक्टूबर 2022 तक राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) ने ग्राहकों की संख्या और उनकी आधारभूत निधि में क्रमशः 24.2 प्रतिशत और 21.1 प्रतिशत की वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) दर्ज की (चार्ट 3.1 और 3.2))।

3.55 एनपीएस और एपीवाई दोनों ने ग्राहकों की कुल संख्या और एयूएम के संदर्भ में प्रगति जारी रखी है। उनका संयुक्त ग्राहक आधार और एयूएम क्रमशः 5.82 करोड़ और 8,18,840 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है जिसमें एपीवाई के ग्राहकों की संख्या में 71.6 प्रतिशत हिस्सेदारी (4.17 करोड़) और एयूएम में 2.9 प्रतिशत हिस्सेदारी (23,970 करोड़ रुपये) है।

चार्ट 3.1 एनपीएस और एपीवाई अभिदाता - क्षेत्रवार

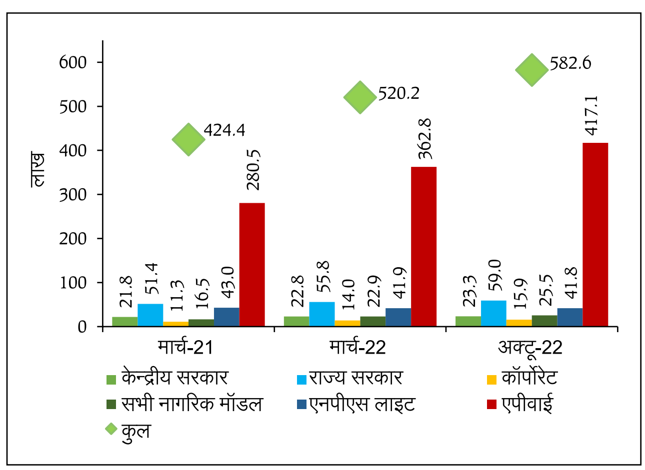

स्रोत: पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए)

चार्ट 3.2: एनपीएस और एपीवाई एयूएम - क्षेत्रवार (₹ लाख करोड़ में)

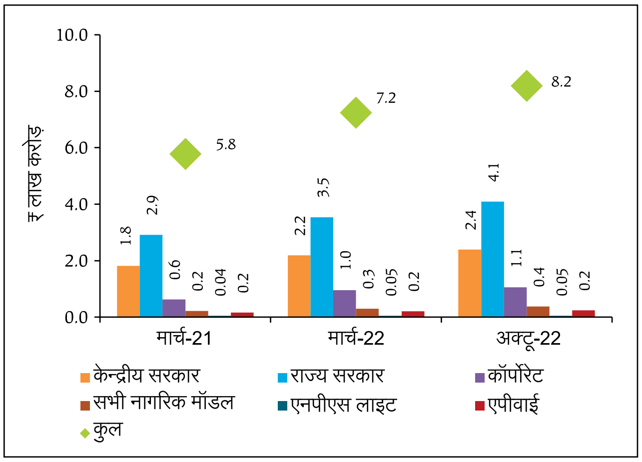

स्रोत: पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए)

सारांश और परिदृश्य

3.56 वित्तीय क्षेत्र के विनियमन में सक्रिय नीति प्रतिक्रियाओं के साथ जोखिमों का निरंतर मूल्यांकन शामिल है। वर्तमान चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिवेश में विनियामक प्रयास गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता और वित्तीय बाजारों के मुख्य क्षेत्रों में कमजोरियों को दूर करने पर केंद्रित हैं। जलवायु जोखिम के दुष्प्रभाव से वित्तीय प्रणाली की रक्षा करना विनियामकों के लिए एक प्रमुख नीतिगत लक्ष्य है। संस्थागत और प्रणालीगत स्तरों पर जोखिम बढ़ने की क्षमता को देखते हुए साइबर जोखिम का बढ़ता खतरा विनियामकों के लिए ध्यान केन्द्रित करने का एक अन्य प्रमुख क्षेत्र है।

3.57 घरेलू मोर्चे पर यह लक्ष्य है कि ग्राहकों की सुरक्षा और वित्तीय स्थिरता बनाए रखते हुए वित्तीय प्रणाली को आंतरिक और बाहरी झटकों से बचाना। इस संदर्भ में विनियामक उपायों का उद्देश्य वित्तीय मध्यस्थों के लचीलेपन में सुधार करना, अनुपालन को आसान बनाना, विनियामक लागतों को कम करना, डिजिटलीकरण को बढ़ावा देना, ग्राहक सुरक्षा और उनकी वित्त तक पहुंच में सुधार करना है। इसकी दक्षता बढ़ाने और इसकी मजबूती और स्थिरता सुनिश्चित करने की दृष्टि से विनियामक तेजी से बदलती वित्तीय पारिस्थिति के प्रति सतर्क रहते हैं।

अनुबंध 1
प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण के 23वें चक्र में, वैश्विक प्रभाव-विस्तार और वित्तीय बाजार की अस्थिरता से जोखिम और बढ़ गया और 'उच्च' जोखिम श्रेणी में बना रहा। यह माना जा रहा था कि सामान्य जोखिमों में वृद्धि होगी, हालांकि वे 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बने रहे। समष्टि-आर्थिक अनिश्चितता में कमी का आकलन किया गया था लेकिन यह 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बनी हुई है। इतना ही नहीं, उत्तरदाताओं की 'वित्तीय स्थिरता के जोखिमों' के बारे में धारणाएं इस प्रकार रही हैं: (क) अमेरिकी डॉलर का मजबूत होना और विनिमय दर में अस्थिरता; (ख) कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि; (ग) वैश्विक आर्थिक मंदी; (ङ) वैश्विक मौद्रिक और चलनिधि स्थितियों में सख्ती; (च) खपत में कमी और कमजोर बाहरी मांग के कारण कॉर्पोरेट वृद्धि में कमी; (छ) चालू खाते के घाटे और पूंजी के बहिर्वाह में वृद्धि; (ज) पण्यों की ऊंची कीमतों के कारण बढ़ा हुआ मूल्य दबाव; (झ) कच्चे माल की लागत में वृद्धि के कारण कॉर्पोरेट मार्जिन में गिरावट; (ञ) यूक्रेन में जारी युद्ध के कारण भू-राजनीतिक जोखिम। आधे से अधिक उत्तरदाताओं की यह राय थी कि एक वर्ष की कालावधि में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में सुधार हुआ है।

भारतीय वित्तीय प्रणाली के समक्ष आने वाले प्रमुख जोखिमों पर, बाजार सहभागियों और शिक्षाविदों की धारणा जानने के लिए रिज़र्व बैंक के प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) का 23वां चक्र नवंबर 2022 में आयोजित किया गया था। अपने नियमित प्रारूप के अलावा, सर्वेक्षण के इस दौर में इन बिंदुओं को भी शामिल किया गया था: (i) बाह्य क्षेत्र के विकास से वित्तीय स्थिरता के जोखिम पर उत्तरदाताओं की धारणा; और (ii) उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा मौद्रिक नीति की आक्रामक सख्ती से भारतीय वित्तीय प्रणाली के वे खंड जिनके प्रभावित होने की संभावना है और (iii) 2023 में वैश्विक मंदी की संभावना पर उत्तरदाताओं के विचार ।

48 उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया नीचे प्रस्तुत की गई हैं :

- वैश्विक प्रभाव-विस्तार और वित्तीय बाजार की अस्थिरता से जोखिम बढ़ने की धारणा और भी बढ़ गई और 'उच्च' जोखिम श्रेणी में बनी रही। सामान्य जोखिमों में वृद्धि हुई है, हालांकि वे 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बने रहे। संस्थागत जोखिम स्थिर बने हुए हैं। समष्टि-आर्थिक अनिश्चितता में कमी होने का अनुमान लगाया गया था, हालांकि यह 'मध्यम' जोखिम श्रेणी में बनी हुई है, (आंकड़े-1)।

आंकड़े 1 : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण: प्रमुख जोखिम समूह

प्रमुख जोखिम समूह	मई -22	नवंबर-22	जोखिम धारणा में परिवर्तन[1]
क. वैश्विक जोखिम	6.8	6.9	वृद्धि
ख. समष्टि-आर्थिक जोखिम	5.6	5.4	गिरावट
ग. वित्तीय बाजार जोखिम	6.3	6.5	वृद्धि
घ. संस्थागत जोखिम	5.3	5.3	अपरिवर्तित
ङ. सामान्य जोखिम	4.8	5.2	वृद्धि

स्रोत : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (मई 2022 और नवंबर 2022)

टिप्पणी:

जोखिम श्रेणी

8-10 से ऊपर	6-8 से ऊपर	4-6 से ऊपर	2-4 से ऊपर	0-2
बहुत उच्च	**उच्च**	**मध्यम**	**निम्न**	**बहुत कम**

[1] जोखिम की धारणा, जैसा कि यह अलग-अलग समय अवधि (मई और नवंबर में छमाही आधार पर) में किए गए प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण से उत्पन्न होती है, एक जोखिम श्रेणी से दूसरे में स्थानांतरित हो सकती है, जिसे रंग में बदलाव से दर्शाया गया है। हालांकि, एक ही जोखिम श्रेणी (अर्थात, समान रंग वाले बॉक्स) के भीतर, जोखिम धारणा भी बढ़/घट या समान रह सकती है, तदनुसार औसत संख्यात्मक मूल्यों के माध्यम से तदनुसार बदलाव इंगित किया जा रहा है।

- उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक सख्ती, भू-राजनीतिक जोखिम, वैश्विक विकास अनिश्चितता और निधीयन के जोखिम को वैश्विक जोखिमों में वृद्धि के प्रमुख संचालक माना गया (आंकड़े 2)।
- वित्तीय स्थितियों के सख्त होने से उत्पन्न वित्तीय बाजार जोखिम में वृद्धि: विदेशी मुद्रा दबाव और चलनिधि में सख्ती (आंकड़े 2)।
- मुख्य रूप से क्रिप्टोकरेंसी जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद से उपजे सामान्य जोखिमों में वृद्धि (आंकड़े 2)।
- घरेलू विकास और मुद्रास्फीति, पूंजी प्रवाह, राजकोषीय घाटे और शासकीय क्रेडिट रेटिंग के संबंध में जोखिम धारणा में गिरावट के परिणामस्वरूप समग्र समष्टि-आर्थिक जोखिमों में कमी आई, हालांकि जोखिम धारणा चालू खाता घाटे की ओर बढ़ी रही (आंकड़े 2)।

आंकड़े 2 : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण : पहचाने गए जोखिम

जोखिम मद		मई-22	नवं-22	जोखिम धारणा में परिवर्तन
क. वैश्विक जोखिम	वैश्विक विकास	7.0	7.6	वृद्धि
	राष्ट्रिक जोखिम/संक्रमण	5.1	5.4	वृद्धि
	निधीयन का जोखिम (बाह्य/विदेशी उधार)	5.5	5.9	वृद्धि
	पण्य मूल्य जोखिम (कच्चे तेल की कीमतों सहित)	8.0	6.9	गिरावट
	भू-राजनैतिक जोखिम	7.4	7.6	वृद्धि
	उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मौद्रिक तंगी	7.7	7.9	वृद्धि
ख. समष्टि-आर्थिक जोखिम	घरेलू विकास	गिरावट	5.7	गिरावट
	घरेलू मुद्रास्फीति	7.7	6.4	गिरावट
	चालू खाता घाटा	6.6	6.7	वृद्धि
	पूंजी अंतर्वाह / बहिर्वाह (एफआईआई का उत्क्रमण, एफडीआई में मंदी)	6.6	6.4	गिरावट
	राष्ट्रिक रेटिंग में अवनति	4.4	4.3	गिरावट
	राजकोषीय घाटा	6.0	5.5	गिरावट
	कॉर्पोरेट क्षेत्र जोखिम	5.1	5.2	वृद्धि
	बुनियादी संरचना के विकास की गति	4.5	4.7	वृद्धि
	अचल संपत्ति की कीमतें	4.7	4.9	वृद्धि
	घरेलू बचत	5.5	5.4	गिरावट
	राजनीतिक अनिश्चितता/अभिशासन/नीति कार्यान्वयन	4.3	4.3	अपरिवर्तित
ग. वित्तीय बाजार जोखिम	विदेशी मुद्रा दर जोखिम	6.3	6.6	वृद्धि
	इक्विटी मूल्य अस्थिरता	6.6	6.5	गिरावट
	ब्याज दर जोखिम	6.7	6.5	गिरावट
	चलनिधि जोखिम	5.6	6.2	वृद्धि
घ. संस्थागत जोखिम	विनियामक जोखिम	4.4	4.6	वृद्धि
	आस्ति-गुणवत्ता में गिरावट		5.4	गिरावट
	बैंकों की अतिरिक्त पूंजी आवश्यकताएं	5.3	5.3	अपरिवर्तित
	बैंकों की निधीयन तक पहुंच	4.7	4.8	वृद्धि
	ऋण वृद्धि का स्तर	5.4	4.9	गिरावट
	साइबर जोखिम	6.0	6.5	वृद्धि
	परिचालनात्मक जोखिम	5.4	5.6	वृद्धि
ङ. सामान्य जोखिम	आतंक	3.9	4.2	वृद्धि
	जलवायु संबंधी जोखिम	5.7	5.9	वृद्धि
	सामाजिक अशांति (बढ़ती असमानता)	5.2	5.2	अपरिवर्तित
	क्रिप्टोकरेंसी	4.4	5.5	वृद्धि

टिप्पणी:

जोखिम श्रेणी

8-10 से ऊपर	6-8 से ऊपर	4-6 से ऊपर	2-4 से ऊपर	0-2
बहुत उच्च	**उच्च**	**मध्यम**	**निम्न**	**बहुत कम**

- अल्पावधि के साथ-साथ मध्यम अवधि में वैश्विक वित्तीय प्रणाली में एक उच्च प्रभाव वाली घटना के घटित होने की 'मध्यम' से 'उच्च' संभावना है (चार्ट 1 ए और बी)।
- लघु अवधि और मध्यम अवधि दोनों में घरेलू वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव वाली घटना के घटित होने की 'मध्यम' से 'निम्न' संभावना है (चार्ट 1 सी और डी) ।

चार्ट 1: वित्तीय प्रणालियों में उच्च प्रभाव वाली घटनाओं के घटित होने पर धारणा

उत्तरदाताओं का हिस्सा (प्रतिशत)

I. वैश्विक वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव घटना की संभावना

ए. अल्पावधि में

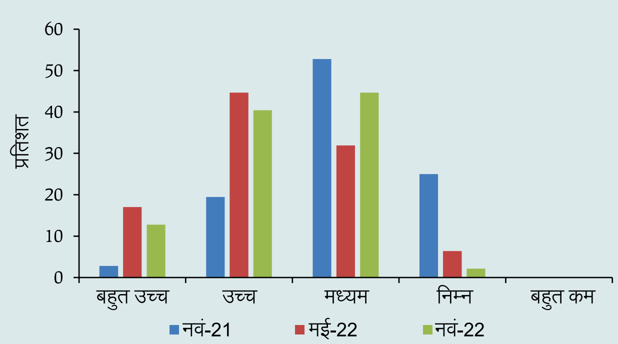

बी. मध्यावधि में

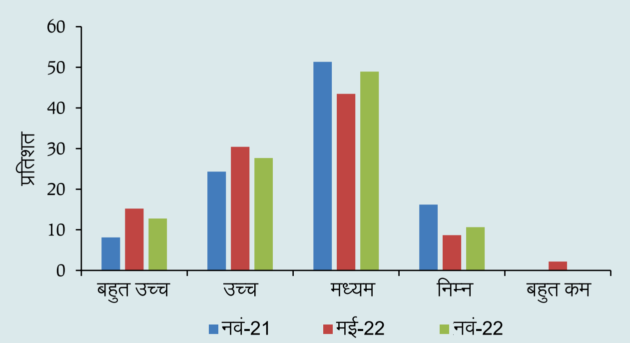

II. घरेलू वित्तीय प्रणाली में उच्च प्रभाव घटना की संभावना

सी. अल्पावधि में

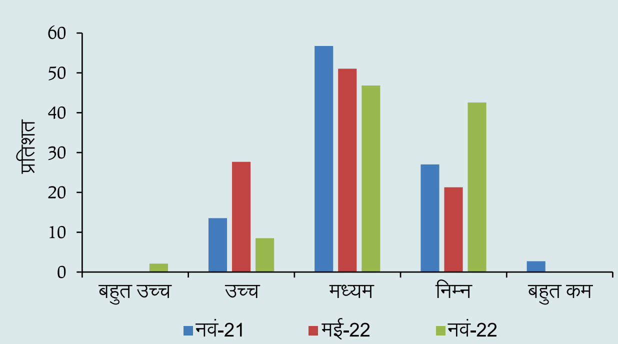

डी. मध्यावधि में

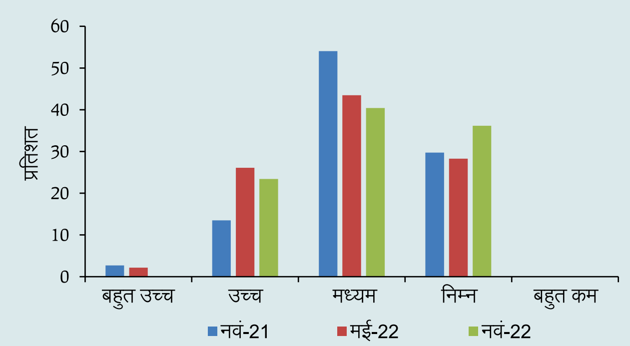

ई. वैश्विक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता

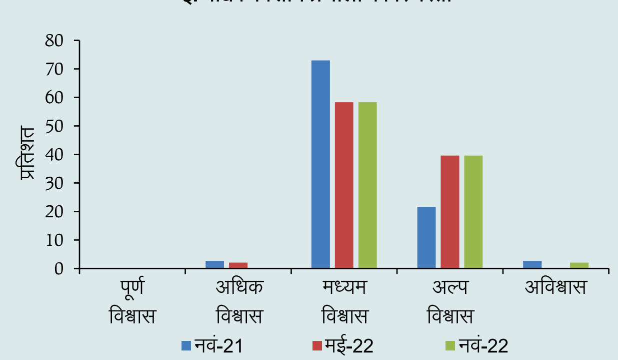

एफ. भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता

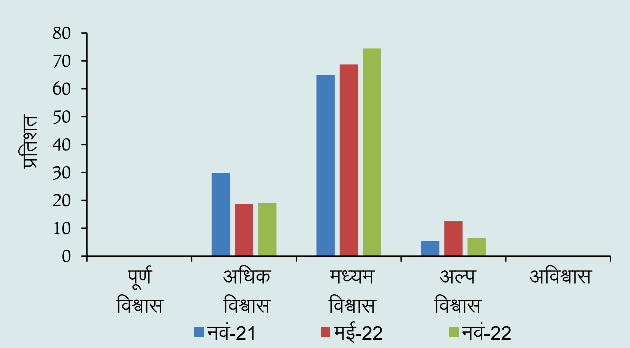

- पिछले छह महीनों के दौरान वैश्विक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के प्रति विश्वास में मामूली गिरावट आई है। इसके विपरीत, 93.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं का भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के प्रति पर्याप्त/अधिक विश्वास के साथ भारतीय वित्तीय प्रणाली के विश्वास में और सुधार हुआ है (चार्ट 1 ई और एफ)।
- 52.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं का अनुमान है कि भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक प्रभाव-विस्तार से कुछ हद तक सीमा तक प्रभावित होगी (चार्ट 2) ।
- घरेलू समष्टि-आर्थिक स्थितियों के लिए जोखिम पैदा करने वाली वैश्विक विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, बाहरी क्षेत्र के विकास का प्रभाव मध्यम रहा क्योंकि 53.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे मध्यम प्रभाव माना (चार्ट 3)।
- तीन-चौथाई से अधिक उत्तरदाताओं ने माना कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा आक्रामक मौद्रिक नीति को सख्त करने से विनिमय दर, पूंजी प्रवाह, विदेशी मुद्रा भंडार और बॉन्ड प्रतिफल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। 40 प्रतिशत से कम उत्तरदाताओं का विचार था कि बैंकों की लाभप्रदता और बाहरी ऋण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा (चार्ट 4)।

चार्ट 2 : भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली वैश्विक वित्तीय प्रणाली में अस्थिरता का अनुमान

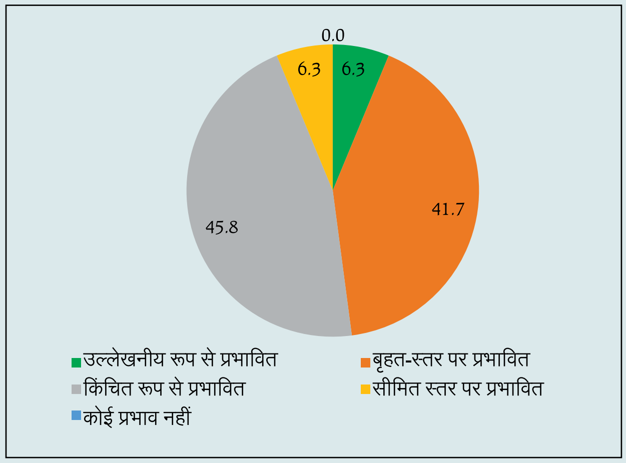

चार्ट 3 : बाह्य क्षेत्र विकास से वित्तीय स्थिरता को जोखिम

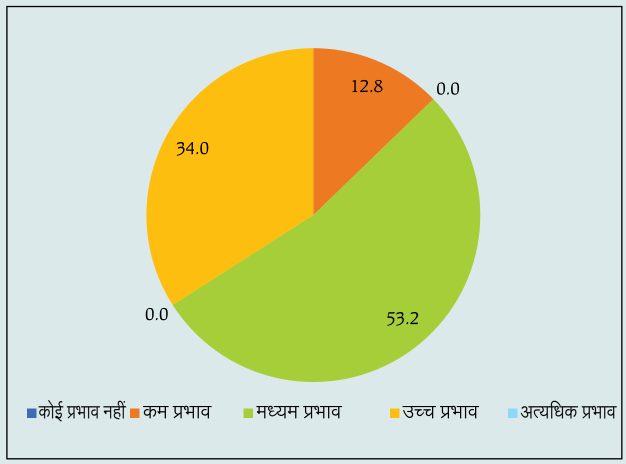

चार्ट 4: उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा मौद्रिक नीति की आक्रामक सख्ती का प्रभाव

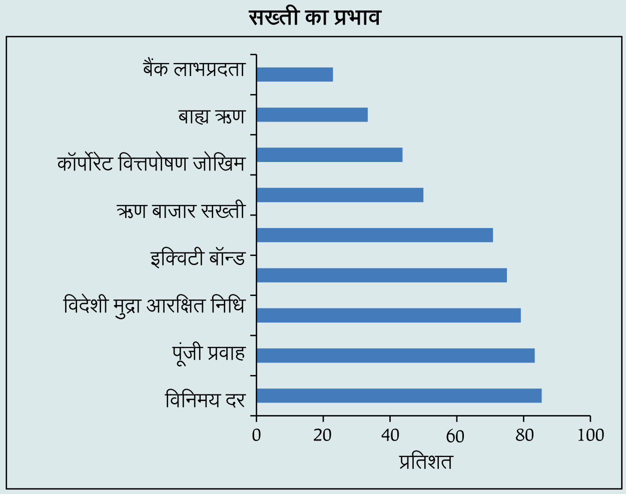

- 57.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आकलन किया कि एक वर्ष की कालावधि में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में सुधार हुआ है और अन्य 33.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसके अपरिवर्तित रहने की अपेक्षा की (चार्ट 5)।
- लगभग 31.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आर्थिक सुधार, क्रेडिट वृद्धि में तेजी, बैंकों के बेहतर हामीदारी मानकों, कॉरपोरेट्स के क्रेडिट प्रोफाइल में सुधार, कार्यशील नकदी प्रवाह में सुधार और छोटे उद्यमों को क्रेडिट गारंटी जैसे कारकों के फलस्वरूप अगले छह महीनों में बैंकिंग क्षेत्र की संपत्ति की गुणवत्ता में मामूली सुधार की उम्मीद की, और अन्य 42.2 प्रतिशत ने इसके अपरिवर्तित रहने की उम्मीद की है (चार्ट 6 ए)।
- 66.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने आर्थिक गतिविधियों में सुधार, निवेश चक्र में सुधार, कारोबारी भावनाओं में मजबूती, कार्यशील पूंजी ऋणों की मांग में वृद्धि, अवसंरचना क्षेत्र में उच्च सार्वजनिक निवेश और सरकार द्वारा निर्यात को बढ़ावा देने वाली उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के कारण अगले छह महीनों में ऋण मांग में मामूली से पर्याप्त सुधार की उम्मीद की। (चार्ट 6 बी)।

चार्ट 5 : भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाएं- अगले एक वर्ष में

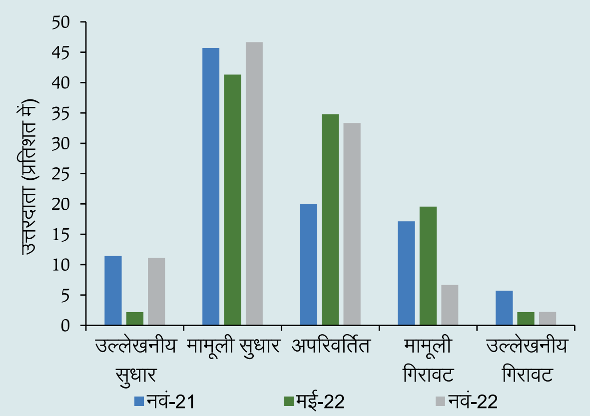

चार्ट 6 : भारतीय बैंकिंग क्षेत्र – परिदृश्य

ए. औसत क्रेडिट गुणवत्ता : अगले छह महीनों में संभावित बदलाव।

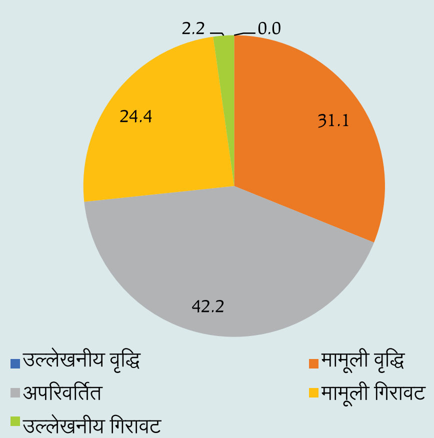

बी. क्रेडिट की मांग: अगले छह महीनों में संभावित बदलाव।

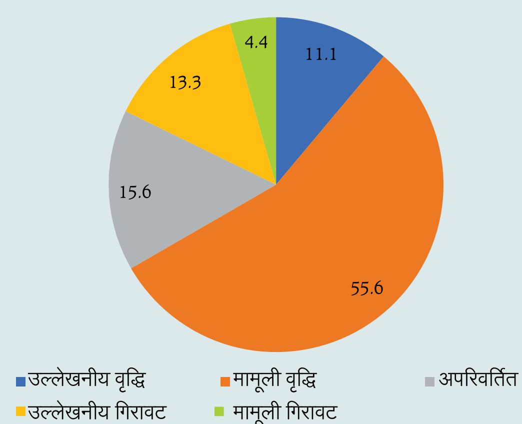

- वैश्विक आर्थिक दृष्टिकोण अस्पष्ट है क्योंकि अधोगामी जोखिमों की संख्या अधिक बनी हुई है, यद्यपि बाजार भविष्य में नीतिगत दरों में मध्यम बढ़ोतरी के आधार पर मूल्य निर्धारण कर रहे हैं। सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था 2023 में मंदी के खतरे का सामना कर रही है। 89 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने 2023 में मध्यम से उच्च और अत्यधिक उच्च वैश्विक मंदी की संभावना प्रकट की है (चार्ट7)।

चार्ट 7 : 2023 में वैश्विक मंदी की संभावना

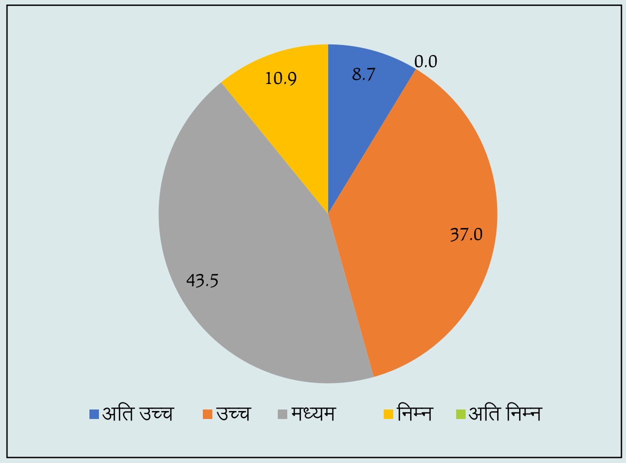

वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम

इसके अतिरिक्त, उत्तरदाताओं ने वित्तीय स्थिरता के लिए निम्नलिखित प्रमुख जोखिमों की पहचान की है:

- विनिमय दर में अस्थिरता और अमेरिकी डॉलर की मजबूती;
- कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि;
- वैश्विक आर्थिक मंदी;
- वैश्विक मौद्रिक और चलनिधि सख्ती और ब्याज दर जोखिम;
- खपत में कमी और कमजोर बाह्य मांग के कारण कम कॉर्पोरेट विकास;
- चालू खाता घाटा और पूंजी बहिर्प्रवाह में वृद्धि;
- पण्यों की ऊंची कीमतों के कारण कीमतों में वृद्धि का दबाव;
- कच्चे माल की लागत में वृद्धि के कारण कॉर्पोरेट मार्जिन में गिरावट;
- यूक्रेन में जारी युद्ध के कारण भू-राजनीतिक जोखिम।

अनुबंध 2

कार्यविधियाँ

2.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक

(ए) बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक

बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक, ऐसी अंतर्निहित स्थितियों और जोखिम कारकों में परिवर्तन का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं जो एक निर्धारित अवधि के दौरान बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता को प्रभावित करते हैं। छह समग्र सूचकांक अब इन छह आयामों में जोखिम को दर्शाते हैं- सुदृढ़ता, आस्ति-गुणवत्ता, लाभप्रदता, चलनिधि, दक्षता और बाजार जोखिम के प्रति संवेदनशीलता। प्रत्येक संयुक्त सूचकांक इसके निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली नमूना अवधि के दौरान जोखिम का एक सापेक्ष माप है, जहां एक उच्च मूल्य का मतलब उस आयाम में उच्च जोखिम होगा।

प्रत्येक संयुक्त सूचकांक के निर्माण के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले वित्तीय अनुपात सारणी 1 में दिए गए हैं। प्रत्येक वित्तीय अनुपात को पहले निम्न सूत्र का उपयोग करके नमूना अवधि के लिए सामान्यीकृत किया जाता है:

$$Y_t = \frac{X_t - min\,(X_t)}{max(X_t) - min(X_t)}$$

जहाँ Xt, समय t पर अनुपात का मान है। यदि एक चर नकारात्मक रूप से जोखिम से संबंधित है, तो 1-Yt का उपयोग करके सामान्यीकरण किया जाता है। प्रत्येक आयाम के समग्र सूचकांक की गणना उस आयाम में सामान्यीकृत अनुपात के साधारण औसत के रूप में की जाती है। अंत में, बैंकिंग स्थिरता संकेतक का निर्माण इन छह समग्र सूचकांकों के साधारण औसत के रूप में किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक समग्र सूचकांक या समग्र बैंकिंग स्थिरता संकेतक के मान शून्य और एक के बीच रहते हैं।

सारणी 1: बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक के निर्माण के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले अनुपात

आयाम	अनुपात			
दृढ़ता	सीआरएआर #	पूंजी की तुलना में प्रावधानों के अनर्जक ऋणों का निवल	आस्तियों की तुलना में टियर 1 पूंजी #	
आस्ति-गुणवत्ता	कुल अग्रिम की तुलना में सकल एनपीए	अनर्जक ऋणों की तुलना में प्रावधानों का अनुपात	सकल एनपीए की तुलना में उप-मानक अग्रिम #	मानक अग्रिमों की तुलना में पुनर्रचित मानक अग्रिम
लाभप्रदता	आस्तियों पर प्रतिलाभ #	निवल ब्याज मार्जिन #	कर पूर्व लाभ में वृद्धि #	सकल आय की तुलना में ब्याज मार्जिन #
चलनिधि	कुल संपत्ति की तुलना में अर्थसुलभ संपत्ति #	चलनिधि कवरेज अनुपात #	कुल आस्तियों की तुलना में ग्राहक जमा #	ग्राहक-जमा की तुलना में गैर-बैंक अग्रिम
दक्षता	आय की तुलना में लागत	स्टाफ व्यय की तुलना में व्यवसाय (क्रेडिट + जमा)#	कुल व्यय की तुलना में स्टाफ व्यय	
बाजार जोखिम के प्रति ग्रहणशीलता	पूंजी की तुलना में आरडब्ल्यूए (बाजार जोखिम)	सकल आय की तुलना में ट्रेडिंग आय		

नोट: # नकारात्मक रूप से जोखिम से संबंधित।

(बी) समष्टि दबाव परीक्षण

समष्टि-दबाव परीक्षण प्रमुख अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (वर्तमान में 46 बैंक) के एक समूह की पूंजी पर्याप्तता पर समष्टि आघात के प्रभाव का आकलन करके समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रतिबैंकों की आघात-सहनीयता का पता लगाता है। समष्टि-दबाव परीक्षण एक साल की कालावधि पर पूंजी अनुपातों को आधारभूत और दो प्रतिकूल (मध्यम और गंभीर) परिदृश्यों के तहत अनुमानित करने का प्रयास करता है। समष्टि-दबाव परीक्षण फ्रेमवर्क में (i) समष्टि परिदृश्यों को डिजाइन करना, (ii) जीएनपीए अनुपात का अनुमान, (iii) कर के बाद लाभ का अनुमान (पीएटी), (iv) चूक की क्षेत्रवार संभावना(पीडी) का अनुमान और (v) पूंजी अनुपातों का अनुमान शामिल हैं।

I. समष्टि परिदृश्यों को डिज़ाइन करना

समष्टि परिदृश्यों को वास्तविक और सांकेतिक जीडीपी वृद्धि, सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, डब्ल्यूपीआई मुद्रास्फीति, चालू खाता शेष तथा जीडीपी अनुपात (सीएबी/जीडीपी), सकल राजकोषीय घाटा तथा जीडीपी अनुपात(जीएफडी/जीडीपी), निर्यात तथा जीडीपी (ईएक्सपी/जीडीपी) अनुपात, भारित औसत उधार दर (डबल्यूएएलआर), 10-वर्ष और 5-वर्ष एएए/बीबीबी कॉर्पोरेट बॉन्ड स्प्रेड, 10-वर्ष और 5-वर्ष की अवधि का स्प्रेड, निफ्टी-50 विकास, वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (आरईईआर), तेल की कीमत में वृद्धि , बैंक-समूह वार डबल्यूएएलआर, ब्याज व्याप्ति अनुपात (आईसीआर), बिक्री से निवल लाभ, बिक्री से परिचालन लाभ, घर कीमत एवं आय का अनुपात, निजी अंतिम खपत व्यय (पीएफसीई) वृद्धि, साख वृद्धि, क्षेत्रवार जीवीए विकास आदि जैसे कई व्यापक आर्थिक और समष्टिवित्तीय चरों का उपयोग करके डिज़ाइन किया गया है। आधारभूत परिदृश्य समष्टि चरों के अनुमानित मूल्यों से लिया गया है। मध्यम और गंभीर प्रतिकूल परिदृश्य समष्टि चरों के लिए प्रत्येक तिमाही में क्रमिक रूप से 25 आधार अंकों की वृद्धि करते हुए क्रमशः 0.25 से एक मानक विचलन (एसडी) आघात और 1.25 से दो एसडी आघात लागू करके प्राप्त किए गए हैं।

II. जीएनपीए अनुपातों का अनुमान

जीएनपीए अनुपात तीन बैंक समूहों यानी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी), निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी) और विदेशी बैंक (एफबी) में से प्रत्येक के लिए अनुमानित हैं। इन बैंक-समूहों के जीएनपीए अनुपातों के प्राकृतिक लॉग को दो पूरक अर्थमितीय मॉडलों का उपयोग करके तैयार किया गया है जैसे; (i)स्वप्रतिगामी वितरित लैग (एडीएल) मॉडल और (ii) वेक्टर ऑटोरिग्रेशन (वीएआर) मॉडल। इन दोनों मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों को प्रत्येक बैंक-समूह के लिए जीएनपीए अनुपात के अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए औसत किया जाता है। प्रत्येक बैंक समूह के जीएनपीए अनुपात के प्राकृतिक लॉग निम्नानुसार तैयार किए गए हैं:

II.1 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

II.1ए एडीएल मॉडल

$$LGNPA_t = \alpha_1 + \beta_1\, LGNPA_{t-1} - \beta_2\, \Delta \mathrm{NGDP}_{t-2} + \beta_3\, RWALR_PSB_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5\, \mathrm{5y_BBB_Spread}_{t-1} - \beta_6 ICR_{t-4} + \beta_7 \mathrm{Dummy}$$

जहां, $\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4, \beta_5, \beta_6 \text{ and } \beta_7 > 0$

II.1बी वीएआर मॉडल

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के लॉग जीएनपीए अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके समष्टि चरों जैसे; सांकेतिक जीडीपी वृद्धि और 5-वर्षीय बीबीबी बांड स्प्रेड के साथ तैयार किया जाता है।

II.2 निजी क्षेत्र के बैंक

II.2ए एडीएल मॉडल

$$LGNPA_t = \alpha_1 + \beta_1\, LGNPA_{t-1} - \beta_2\, \Delta GDP_{t-2} + \beta_3\, RWALR_PVB_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_5\, 10y_BBB_Spread_{t-3} - \beta_6 \left(\frac{Net\ Profit}{Sales}\right)_{t-3} - \beta_7\, \Delta NIFTY_{t-3}$$

II.2बी वीएआर मॉडल

निजी क्षेत्र के बैंकों (पीवीबी) के लॉग जीएनपीए अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके समष्टि चरों जैसे; निजी क्षेत्र के बैंकों(पीवीबी) का आरडबल्यूएएलआर, 10-वर्षीय बीबीबी बॉन्ड स्प्रेड, परिचालन लाभ- से-बिक्री अनुपात और निफ्टी 50 वार्षिक वृद्धि के साथ तैयार किया जाता है।

II.3 विदेशी बैंक

II.3ए एडीएल मॉडल

$$LGNPA_t = \alpha_1 + \beta_1\, LGNPA_{t-1} + \beta_2\, \Delta Oil_{t-1} + \beta_3\, WALR_FB_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5\, 10y_BBB_Spread_{t-2} - \beta_6 ICR_{t-3} + \beta_7 Dummy$$

II.3बी वीएआर मॉडल

विदेशी बैंकों (एफबी) के लॉग जीएनपीए अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके समष्टि चरों जैसे; विदेशी बैंकों(एफबी) का डब्ल्यूएएलआर, निर्यात एवं जीडीपी अनुपात, तेल कीमत वृद्धि और सीपीआई मुद्रास्फीति के साथ तैयार किया जाता है।

II.4 सभी एससीबी

प्रणाली-स्तरीय जीएनपीए अनुपातों को भारित औसत का उपयोग करके भारित औसत के साथ सकल ऋण और अग्रिमों को भार के रूप में उपयोग करके बैंक-समूह स्तर के अनुमानों को जोड़कर अनुमानित किया जाता है। अनुमान आधारभूत और प्रतिकूल परिदृश्यों के तहत किए जाते हैं।

III. पीएटी का अनुमान

पीएटी के घटक जैसे, निवल ब्याज आय (एनआईआई), अन्य परिचालन आय (ओओआई), परिचालन व्यय (ओई) और प्रावधान निम्नलिखित मॉडलों का उपयोग करके प्रत्येक बैंक-समूह के लिए अनुमानित हैं।

III.1 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

III.1.1 निवल ब्याज आय(एनआईआई) का अनुमान

एनआईआई ब्याज आय और ब्याज व्यय के बीच का अंतर है। पीएसबी की कुल औसत आस्तियों से एनआईआई का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों का औसत निकाला जाता है।

III.1.1ए एडीएल मॉडल

$$NII_t = -\alpha_1 + \beta_1\, NII_{t-1} + \beta_2\, 5y_TermSpread_{t-1} + \beta_3\, \Delta NGDP_{t-4} + \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5\, Spread_PSB_t - \beta_6 GNPA_PSB_{t-1}$$

$$\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4, \beta_5 \text{ and } \beta_6 > 0$$

यहां, 5 वर्ष_मियादी स्प्रेड 5 साल की सरकारी प्रतिभूति प्रतिफल और 3 महीने की टी-बिल दर के बीच का अंतर है। स्प्रेड_पीएसबी$_t$ ब्याज अर्जित करने वाली आस्तियों द्वारा अर्जित औसत ब्याज दर और ब्याज वहन करने वाली देयताओं पर भुगतान किए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है।

III.1.1बी वीएआर मॉडल

एनआईआई-से-कुल औसत आस्ति अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; पीएसबी का वृद्धिशील जीएनपीए अनुपात, निफ्टी 50 वार्षिक विकास दर, 5 साल की अवधि का प्रसार और पीएसबी का वृद्धिशील ब्याज दर प्रसार के साथ मिलकर तैयार किया गया है।

III.1.2 अन्य परिचालन आय(ओओआई) का अनुमान

पीएसबी की कुल औसत आस्तियों के लिए ओओआई का अनुपात निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OOI_t = \alpha_1 + \beta_1\, OOI_{t-1} + \beta_2\, 10y_AAASpread_{t-1} + \beta_3\, \Delta GDP_{t-2} + \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-1}$$

III.1.3 परिचालन व्यय(ओई) का अनुमान

ओई की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि को निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OE_t = \alpha_1 + \beta_1\, OE_{t-1} + \beta_2\, OE_{t-2} + \beta_3\, OE_{t-3} + \beta_4\, \Delta CPI_{t-1}$$

III.1.4 प्रावधानों का अनुमान

पीएसबी के सकल ऋण और अग्रिम के प्रावधानों का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों का औसत निकाला जाता है।

III.1.4ए एडीएल मॉडल

$$Provisions_t = \beta_1\, Provisions_{t-1} + \beta_2\, GNPA_PSB_{t-1} - \beta_3\, \Delta GDP_{t-2} + \beta_4 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3}$$

III.1.4बी वीएआर मॉडल

सकल ऋण और अग्रिमों के लिए किए गए प्रावधानों के अनुपात को क्रम 2 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; पीएसबी का जीएनपीए अनुपात, 5 साल का मियादी स्प्रेड और सकल राजकोषीय घाटा के साथ तैयार किया गया है।

III.2 निजी क्षेत्र के बैंक

III.2.1 निवल ब्याज आय का अनुमान

पीवीबी के लिए एनआईआई और कुल औसत आस्ति का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों को अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए औसत किया जाता है।

III.2.1ए एडीएल मॉडल

$$NII_t = \alpha_1 + \beta_1\, NII_{t-1} + \beta_2\, 5y_TermSpread_{t-1} + \beta_3 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1} +$$

$$\beta_4\, Spread_PVB_t - \beta_5 GNPA_PVB_{t-1}$$

$$\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4 \text{ and } \beta_5 > 0$$

स्प्रेड_पीवीबी$_t$ ब्याज अर्जित करने वाली आस्तियों द्वारा अर्जित औसत ब्याज दर और पीवीबी की ब्याज वहन करने वाली देयताओं पर भुगतान किए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है।

III.2.1बी वीएआर मॉडल

एनआईआई-से-कुल औसत आस्ति अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; पीवीबी का जीएनपीए अनुपात, निफ्टी 50 वार्षिक वृद्धि दर और पीवीबी का ब्याज दर प्रसार के साथ तैयार किया जाता है।

III.2.2 अन्य परिचालन आय का अनुमान

पीवीबी की कुल औसत आस्तियों के लिए ओओआई का अनुपात निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OOI_t = \alpha_1 + \beta_1\, OOI_{t-1} + \beta_2\, \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-1}$$

III.2.3 परिचालन व्यय(ओई) का अनुमान

ओई की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि को निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OE_t = \alpha_1 + \beta_1\, OE_{t-1} + \beta_2\, OE_{t-2} + \beta_3\, OE_{t-3} + \beta_4\, OE_{t-4} + \beta_5\, \Delta WPI_{t-1}$$

III.2.4 प्रावधानों का अनुमान

पीवीबी के सकल ऋणों और अग्रिमों के लिए किए गए प्रावधानों का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों का औसत निकाला जाता है।

III.2.4ए एडीएल मॉडल

$$Provisions_t = -\alpha_1 + \beta_1\, Provisions_{t-1} + \beta_2\, GNPA_PVB_{t-1} - \beta_3\, \Delta GDP_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1}$$

III.2.4बी वीएआर मॉडल

सकल ऋण और अग्रिमों के लिए किए गए प्रावधानों के अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; पीवीबी का जीएनपीए अनुपात, निर्यात-से-जीडीपी अनुपात और 5 साल के मियादी प्रसार के साथ तैयार किया गया है।

III.3 विदेशी बैंक

III.3.1 निवल ब्याज आय का अनुमान

एफबी के लिए एनआईआई का कुल औसत आस्ति का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों को अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए औसत किया जाता है।

III.3.1ए एडीएल मॉडल

$$NII_t = \alpha_1 + \beta_1\, NII_{t-1} + \beta_2\, \Delta \mathrm{NGDP}_{t-2} - \beta_3 REER_{t-3} + \beta_4\, Spread_FB_t - \beta_5 GNPA_FB_{t-1}$$

$$\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4 \text{ and } \beta_5 > 0$$

स्प्रेड_एफबी ब्याज अर्जित करने वाली आस्तियों द्वारा अर्जित औसत ब्याज दर और एफबी की ब्याज वहन करने वाली देयताओं पर भुगतान किए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है।

III.3.1बी वीएआर मॉडल

एनआईआई-से-कुल औसत आस्ति अनुपात को क्रम 2 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; एफबी का जीएनपीए अनुपात और एफबी का ब्याज दर प्रसार के साथ तैयार किया जाता है।

III.3.2 अन्य परिचालन आय का अनुमान

एफबी की कुल औसत आस्ति के लिए ओओआई का अनुपात निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OOI_t = \alpha_1 + \beta_1\, OOI_{t-1} + \beta_2\, \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2}$$

III.3.3 परिचालन व्यय(ओई) का अनुमान

ओई की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि को निम्नलिखित एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है:

$$OE_t = \alpha_1 + \beta_1\, OE_{t-1} + \beta_2\, OE_{t-2} + \beta_3\, \Delta WPI_{t-1}$$

III.3.4 प्रावधानों का अनुमान

एफबी के सकल ऋण और अग्रिम के प्रावधानों का अनुपात निम्नलिखित एडीएल और वीएआर मॉडल का उपयोग करके तैयार किया गया है और अंतिम अनुमानों पर पहुंचने के लिए इन मॉडलों के आधार पर अनुमानित मूल्यों का औसत निकाला जाता है।

III.3.4ए एडीएल मॉडल

$$Provisions_t = -\alpha_1 + \beta_1\, Provisions_{t-1} + \beta_2\, GNPA_FB_{t-1} - \beta_3\, \Delta GDP_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1}$$

III.3.4बी वीएआर मॉडल

प्रावधान-से-सकल ऋण और अग्रिम अनुपात को क्रम 1 के वीएआर मॉडल का उपयोग करके चरों जैसे; एफबी और जीडीपी वृद्धि का जीएनपीए अनुपात के साथ तैयार किया जाता है।

प्रत्येक बैंक समूह के लिए पीएटी का अनुमान निम्नलिखित पहचान का उपयोग करते हुए इसके घटकों के अनुमानित मूल्यों से प्राप्त होता है:

$$PAT = NII + OOI - OE - Provisions \,\&\, Writeoff - Income\ Tax$$

पीएटी का अनुमान आधारभूत और प्रतिकूल परिदृश्यों में किया जाता है। लागू आयकर को कर पूर्व लाभ के 35 प्रतिशत के रूप में माना जाता है, जो कि कर पूर्व लाभ के लिए आयकर के अनुपात की पिछली प्रवृत्ति पर आधारित है।

बैंक-वार कर के बाद लाभ (पीएटी) निम्नलिखित चरणों का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है:

- प्रत्येक बैंक-समूह के लिए, पीएटी के घटकों का आधारभूत और प्रतिकूल परिदृश्यों के अंतर्गत अनुमान किया जाता है।
- प्रत्येक बैंक के पीएटी(आयकर को छोड़कर) के घटकों के उनके संबंधित बैंक-समूह में शेयर की गणना की जाती है।
- प्रत्येक बैंक के लिए, संबंधित बैंक-समूह में उस घटक के अनुमानित मूल्य पर पीएटी के घटक में उस बैंक के शेयर को लागू करके पीएटी(आयकर को छोड़कर) के एक घटक का अनुमान लगाया जाता है।
- अंत में, पिछले चरण में प्राप्त घटकों के अनुमानित मूल्यों पर पूर्वोक्त पहचान को उचित रूप से लागू करके बैंक-वार पीएटी का अनुमान लगाया जाता है।

IV. क्षेत्रवार पीडी का अनुमान

18 क्षेत्रों/उप-क्षेत्रों के क्षेत्रीय प्राथमिक व्यापारियों को एडीएल मॉडल का उपयोग करके तैयार किया जाता है और अनुमानित आधार रेखा के साथ-साथ प्रतिकूल परिदृश्यों के तहत चार तिमाहियों के लिए अनुमानित किया जाता है।

सारणी 2: चयनित क्षेत्रों/उप-क्षेत्रों की सूची

क्रम संख्या	क्षेत्र	क्रम संख्या	क्षेत्र
1	अभियांत्रिकी	10	मूल धातु और धातु उत्पाद
2	ऑटो	11	खनन
3	सीमेंट	12	कागज़
4	रसायन	13	पेट्रोलियम
5	विनिर्माण	14	कृषि
6	कपड़ा	15	रिटेल-आवास
7	खाद्य प्रसंस्करण	16	रिटेल -अन्य
8	रत्न और आभूषण	17	सेवाएं
9	बुनियादी संरचना	18	अन्य

क्षेत्रवार पीडी के अनुमानों के लिए एडीएल मॉडल इस प्रकार हैं:

1. *अभियांत्रिकी*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_4 RWALR_{t-1} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 REER_{t-1} + \beta_7 Dummy_t$$

2. *ऑटोमोबाइल*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta PD_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_4 Dummy_t$$

3. *सीमेंट*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta Credit_{t-1} + \beta_3 WALR_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

4. ***रसायन और रासायनिक उत्पाद***

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_4 WALR_{t-1} + \beta_5 REER_{t-2} + \beta_6 Dummy_t$$

5. *विनिर्माण*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-3} + \beta_4 RWALR_{t-1} - \beta_5 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 REER_{t-3} + \beta_7 Dummy_t$$

6. *कपड़ा*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-3} + \beta_4 \Delta REER_{t-2} - \beta_5 \Delta NIFTY50_{t-1} + \beta_6 Dummy_t$$

7. *खाद्य प्रसंस्करण*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta REER_t - \beta_3 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_4 ICR_{t-1} + \beta_5 \Delta WPI_{t-1} + \beta_6 Dummy_t$$

8. *रत्न और आभूषण*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-4} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 REER_{t-1} - \beta_5 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_6 RWALR_{t-2}$$

9. *बुनियादी संरचना*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-4} - \beta_3 \Delta GDP_{t-2} + \beta_4 REER_{t-2} + \beta_5 RWALR_{t-3} + \beta_6 Dummy_t$$

10. *मूल धातु*

$$PD_t = \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_4 REER_{t-3} - \beta_5 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 \Delta WALR_t + \beta_7 Dummy_t$$

11. *खनन और उत्खनन*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GVA(Mining)_{t-2} + \beta_3 REER_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_5 \Delta Credit_{t-1}$$

12. *कागज एवं कागज उत्पाद*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta PD_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_4 \Delta WALR_t + \beta_5 Dummy_t$$

13. *पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पाद*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta Oilprice_{t-1} - \beta_3 \Delta Credit_{t-2} + \beta_4 RWALR_{t-4} - \beta_5 \Delta PFCE_{t-2}$$

14. *कृषि*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-2} - \beta_3 \Delta PFCE_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-1} + \beta_6 \Delta WALR_t$$

15. *सेवाएं*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GVA(Services)_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{Exp}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta NIFTY50_{t-1}$$

16. *रिटेल-आवास*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 (House\ price.to.Income)_{t-1} - \beta_3 NGDP_{t-4} + \beta_4 \Delta WALR_t$$

17. *रिटेल -आवास के अलावा*

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-3} + \beta_3 \Delta CPI_{t-3}$$

18. *अन्य क्षेत्र*

$$PD_t = -\alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 PD_{t-3} - \beta_3 \Delta GVA(Industry)_{t-4} + \beta_4 RWALR_{t-1} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-4}$$

V. पूंजी अनुपातों का अनुमान

आधारभूत और प्रतिकूल दबाव परिदृश्यों के तहत 46 बैंकों में से प्रत्येक के लिए पूंजी के अनुमान लगाए जाते हैं। चूंकि न्यूनतम नियामक अपेक्षाओं के अनुसार, पीएटी का केवल 25 प्रतिशत ही अनुवर्ती अवधि में पूंजी निधियों में स्थानांतरित किया जा सकता है, इसलिए पूंजी अनुमान रूढ़िवादी धारणा के अंतर्गत आंतरिक रेटिंग आधारित (आईआरबी) फॉर्मूले का उपयोग करते हुए जोखिम-भारित आस्तियों (आरडब्ल्यूए) का प्राक्कलन करते हुए किया जाता है।

सीआरएआर और सामान्य इक्विटी टियर 1 (सीईटी 1) पूंजी अनुपात के अनुमान के लिए प्रयुक्त सूत्र नीचे दिए गए हैं:

$$CRAR_{t+1} = \frac{Total\ Capital_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWA(credit\ risk)_{t+1} + RWA(others)_{t+1}}$$

$$CET1\ Capital\ Ratio_{t+1} = \frac{CET1_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWA(credit\ risk)_{t+1} + RWA(others)_{t+1}}$$

पिछले खंड में सूचीबद्ध मॉडलों का उपयोग करके पीएटी का अनुमान लगाया गया है। आरडब्ल्यूए (अन्य), कुल आरडब्ल्यूए और ऋण जोखिम के आरडब्ल्यूए के अंतर को दर्शाता है, जिनका अनुमान पिछले एक वर्ष में देखी गई औसत वृद्धि दर के आधार पर लगाया गया है। नीचे दिए गए आईआरबी फॉर्मूले का उपयोग करके आरडब्ल्यूए (ऋण जोखिम) का अनुमान लगाया जाता है:

आईआरबी फॉर्मूला: ऋण जोखिम के लिए बैंक-वार आरडब्ल्यूए का अनुमान निम्नलिखित आईआरबी फॉर्मूले का उपयोग करके लगाया गया था;

$$RWAs(credit\ risk) = 12.5 \times \left(\sum_{i=1}^{n} EAD_i \times K_i \right)$$

(जहां, EAD_i क्षेत्र में किसी बैंक के एक्सपोज़र में चूक को दर्शाता है i (i=1,2….n)।

K_i क्षेत्र i के लिए न्यूनतम पूंजी अपेक्षा है जिसकी गणना निम्न सूत्र का उपयोग करके की जाती है:

पूंजी की आवश्यकता (K_i)

$$= \left[LGD_i \times N \left[(1 - R_i)^{-0.5} \times G(PD_i) + \left(\frac{R_i}{1 - R_i} \right)^{0.5} \times G(0.999) \right] - PD_i \times LGD_i \right]$$
$$\times \left(1 - 1.5 \times b(PD_i)\right)^{-1} \times \left(1 + (M_i - 2.5) \times b(PD_i)\right)$$

जहां, LGDi क्षेत्र i में चूक के कारण हुआ नुकसान है, PDi क्षेत्र i में चूक होने की प्रायकिता है, , N(..) मानक सामान्य वितिरण का संचयी वितिरण फलन है, G(..) मानक सामान्य वितिरण के संचयी वितिरण फलन का प्रतलिोम है, Mi क्षेत्र i के ऋण की औसत परपिक्वता है (जो इस मामले में सभी क्षेत्रों के लिए 2.5 लयिा गया है), b(PDi) सुचारू परपिक्वता समायोजन है और Ri अर्थव्यवस्था की सामान्य स्थति के साथ क्षेत्र i का सहसंबंध है। b(PD) और R दोनों की गणना PD पर नरि्भर करती है।

पूर्वोक्त आईआरबी फॉर्मूले के लिए तीन प्रमुख आंकड़ों की आवश्यकता होती है, जैसे; क्षेत्रीय पीडी, ईएडी और एलजीडी। यहाँ, क्षेत्रों की वार्षिक गिरावट को क्षेत्रवार पीडी के समरूपी चूकों के रूप में मान लिया जाता है। एक क्षेत्र विशेष का पीडी, 46 चयनित बैंकों में से प्रत्येक के लिए एक समान माना जाता है। किसी क्षेत्र विशेष के लिए बैंक के ईएडी को उस क्षेत्र में बैंक के कुल बकाया ऋण (एनपीए के निवल) के रूप में माना जाता है। बेसलाइन परिदृश्य के तहत एलजीडी को 60 प्रतिशत (मोटे तौर पर, 'पूंजी पर्याप्तता – ऋण जोखिम के लिए पूंजीगत अपेक्षाओं की गणना के लिए आईआरबी दृष्टिकोण' पर आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार), मध्यम दबाव परिदृश्य के तहत 65 प्रतिशत और गंभीर दबाव परिदृश्य के तहत 70 प्रतिशत माना जाता है।

इन सूत्रों, धारणाओं और आंकड़ों का प्रयोग करते हुए, प्रत्येक बैंक के पूंजी अनुपात का आकलन किया जाता है। अंतिम पूंजी अनुपात संबंधी अनुमानों पर पहुंचने के लिए, नवीनतम तिमाही और बेसलाइन परिदृश्य के तहत प्रदर्शित आगामी तिमाहियों के लिए अनुमानित आईआरबी-आधारित पूंजी अनुपात के बीच अंतर और बेसलाइन से दुष्कर परिदृश्यों की तरफ बदलाव के दौरान उक्त अनुपातों में वृद्धिशील परिवर्तन नवीनतम संप्रेक्षित पूंजी अनुपातों पर (मानकीकृत दृष्टिकोण के तहत) उचित रूप से लागू किया जाता है।

(सी) एकल कारक संवेदनशीलता विश्लेषण-दबाव परीक्षण

त्रैमासिक निगरानी के एक भाग के रूप में, ऋण जोखिम, ब्याज दर जोखिम, चलनिधि जोखिम आदि को शामिल करते हुए दबाव परीक्षण किए जाते हैं और इन आघातों के जवाब में वाणिज्यिक बैंकों की आघातसहनीयता का अध्ययन किया जाता है। विश्लेषण प्रथक रूप से अलग- अलग एससीबी के साथ-साथ प्रणाली स्तर पर भी किया जाता है।

I. ऋण जोखिम (संकेंद्रण जोखिम सहित)

बैंकों की आघातसहनीयता का पता लगाने के लिए, संपूर्ण पोर्टफोलियो के लिए जीएनपीए अनुपात बढ़ाकर ऋण पोर्टफोलियो को आघात दिया गया था। ऋण संकेंद्रण जोखिम का परीक्षण करने के लिए, यह मान लिया गया कि शीर्ष व्यक्तिगत उधारकर्ता(ओं) और सबसे बड़ा समूह उधारकर्ता(ओं) द्वारा चूक हुई है। विश्लेषण संकलित स्तर के साथ-साथ व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया था । जीएनपीए में कल्पित वृद्धि को अवमानक, संदिग्ध और हानि श्रेणियों के उसी अनुपात में वितरित किया गया था जैसा कि एनपीए के मौजूदा स्टॉक में प्रचलित है। हालांकि, ऋण संकेंद्रण जोखिम (एक्सपोजर आधारित) के लिए कल्पित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए को माना गया कि वे अवमानक श्रेणी में और ऋण संकेंद्रण जोखिम (दबावग्रस्त अग्रिमआधारित) के लिए माना गया कि दबावग्रस्त अग्रिमों को हानि श्रेणी में वर्गीकृत किया जाएगा । अवमानक, संदेहास्पद और हानि अग्रिमों के लिए क्रमशः 25 प्रतिशत, 75 प्रतिशत और 100 प्रतिशत प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाएं निर्धारित की गईं। एक दबाव परिदृश्य के तहत गणना में लिए गए अतिरिक्त जीएनपीए पर इन मानदंडों को ही लागू किया गया। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, वृद्धिशील जीएनपीए पर हुई आय की हानि को एक तिमाही के लिए प्रावधानीकरण की अतिरिक्त आवश्यकताओं के अलावा कुल हानियों में भी शामिल किया गया। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

II. क्षेत्रगत जोखिम

अलग- अलग बैंक के क्षेत्रगत ऋण जोखिम का पता लगाने के लिए क्षेत्र विशेष के जीएनपीए अनुपात को बढ़ा कर उस क्षेत्र के ऋण पोर्टफोलियो को आघात दिया गया । यह विश्लेषण संकलित स्तर के साथ-साथ वैयक्तिक बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया पर किया गया । एक क्षेत्र के जीएनपीए अनुपातों के मानक विचलन पर आधारित क्षेत्र विशेष आघात का प्रयोग वैयक्तिक बैंक पर हुए प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है । यह माना गया कि कल्पित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए अवमानक श्रेणी में ही आएंगे । जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, एक तिमाही में अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय में हानि को भी कुल हानियों में शामिल किया गया । इसके अलावा प्रावधानीकरण आवश्यकता में भी वृद्धि की गई । इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई ।

III. ब्याज दर जोखिम

भारतीय रुपए के प्रतिफल वक्र में आने वाले अंतर के कारण कल्पित आघात के तहत, पोर्टफोलियो की कीमत में होने वाली कमी या आय में होने वाली गिरावट के कारण हानियां हो सकती हैं। बैंकों की पूंजी में से इन अनुमानित हानियों को कम कर दिया गया ताकि दबावग्रस्त सीआरएआर को प्राप्त किया जा सके।

ट्रेडिंग पोर्टफोलिओ (एचएफटी+एएफएस) और एचटीएम पोर्टफोलिओ में ब्याज दर जोखिम के लिए कालावधि विश्लेषण पद्धति पर विचार किया गया ताकि, कीमत के प्रभाव (पोर्टफोलियो हानियों) की गणना के लिए लागू किए गए आघातों के आधार पर प्रत्येक कालावधि के लिए (एचएफ़टी+एएफ़एस) या समग्र (एचटीएम) निवेशों पर पोर्टफोलियो हानियों की गणना की गई। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त हानियों/लाभों का प्रयोग इससे प्रभावित सीआरएआर निकालने के लिए किया गया।

बैंकिंग बुक में ब्याज दर जोखिम (आईआरआरबीबी) बैंक की पूंजी और ब्याज दरों में प्रतिकूल उतार-चढ़ाव से उत्पन्न होने वाले जोखिम को दर्शाता है जो बैंकिंग बुक स्थिति को प्रभावित करता है। आय पर प्रभाव को पारंपरिक अंतर विश्लेषण (टीजीए) का उपयोग करके मापा जाता है और पूंजी प्रभाव को अवधि अंतर विश्लेषण (डीजीए) द्वारा मापा जाता है। टीजीए का उद्देश्य एक वर्ष के आधार पर ब्याज दर के उतार-चढ़ाव के प्रति बैंक की शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) की संवेदनशीलता के संदर्भ में ब्याज दर जोखिम के जोखिम स्तर को मापना है। इसमें सभी दर-संवेदनशील आस्तियों (आरएसए), दर-संवेदनशील देनदारियों (आरएसएल), और तुलनपत्रेतर मदों को अवशिष्ट परिपक्वता/पुनर्मूल्य निर्धारण तिथि के अनुसार, विभिन्न समय बैंडों में और जोखिम पर आय (ईएआर) की गणना करना शामिल है अर्थात एक वर्ष की अवधि में विभिन्न ब्याज दर परिदृश्यों के तहत आय की हानि । अग्रिम, एचटीएम निवेश, स्वैप / विदेशी मुद्रा स्वैप, रिवर्स रेपो आरएसए के प्रमुख योगदानकर्ता हैं जबकि जमा, स्वैप / विदेशी मुद्रा स्वैप और रेपो आरएसएल के तहत मुख्य तत्व हैं। डीजीए में विभिन्न समय बैंडों में अवशिष्ट परिपक्वता/पुनर्मूल्य निर्धारण तिथियों के अनुसार सभी आरएसए और आरएसएल की बकेटिंग और इक्विटी के बाजार मूल्य (एमवीई) पर प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए संशोधित अवधि अंतराल (एमडीजी) की गणना करना शामिल है। एमडीजी की गणना निम्न सूत्र के साथ की जाती है: एमडीजी = [एमडीए - एमडीएल * (आरएसएल / आरएसए)], जहां एमडीए और एमडीएल क्रमशः आरएसए और आरएसएल की संशोधित अवधि (एमडी) के भारित औसत हैं। इसके बाद, एमवीई में परिवर्तन की गणना $\Delta E / E = -[MDG]*RSA* \Delta i / E$, के रूप में की जाती है, जहां Δi ब्याज दर में परिवर्तन है और ई इक्विटी है।

IV. इक्विटी मूल्य जोखिम

इक्विटी मूल्य जोखिम के अंतर्गत इक्विटी मूल्य सूचकांक में निश्चित प्रतिशत अंकों की गिरावट के आघात का बैंक की पूंजी और लाभ पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। पोर्टफोलियो के मूल्य में गिरावट या इक्विटी मूल्य में बदलाव के कारण आय की हानि को कल्पित आघात के कारण बैंक की कुल हानि को हिसाब में लिया जाता है। इस प्रकार निकली हुई कुल हानि को बैंक की पूंजी में से कम किया गया।

V. चलनिधि जोखिम

चलनिधि दबाव परीक्षण का उद्देश्य यह है कि चलनिधिमें अप्रत्याशित रूप से क्षरण होने पर, बाह्य चलनिधि की सहायता के बिना, बैंक की उसे वहन करने की क्षमता का पता लगाया जा सके। जमाकर्ताओं द्वारा अचानक विश्वास खो देने के कारण विभिन्न प्रकार के परिदृश्य विभिन्न अनुपातों में जमाराशि अप्रत्याशित रूप से निकासी को (जमाराशि की प्रकृति के अनुसार) प्रदर्शित करते हैं और साथ ही स्वीकृत/प्रतिबद्ध/गारंटीशुदा क्रेडिट (कार्यशील पूंजी की स्वीकृत अप्रयुक्त सीमा, प्रतिबद्ध क्रेडिट और क्रेडिट पत्रों तथा गारंटियों की अप्रयुक्त सीमा को ध्यान में रखते हुए) सीमाओं के अप्रयुक्त हिस्से के लिए मांग भी प्रदर्शित करते हैं। दबाव परीक्षण इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया कि क्रेडिट के लिए अतिरिक्त और अप्रत्याशित मांग को बैंकों की केवल चलनिधि युक्त आस्तियों की सहायता से पूरा करने की उनकी क्षमता का पता लगाया जा सके।

चलनिधि दबाव परीक्षण की मान्यताएं इस प्रकार हैः

- यह माना गया कि बैंक केवल चलनिधियुक्त आस्तियों की बिक्री के जरिए जमाराशियों की दबावग्रस्त निकासी या क्रेडिट की अतिरिक्त मांग को पूरा कर लेगा।
- किए गए निवेशों की बिक्री उनके बाजार मूल्य में दस प्रतिशत के हेयरकट पर कर ली जाएगी।
- दबाव परीक्षण "स्टैटिक मोड" के अंतर्गत किया गया।

(डी) बॉटम-अप दबाव परीक्षण: चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो

दबाव परीक्षण को शीर्ष 21 बैंकों के प्रतिनिधि प्रतिदर्श समूह के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के संबंध में केंद्रित किया गया और इसके लिए डेरिवेटिव पोर्टफोलियो की अनुमानित कीमत ली गई। प्रतिदर्श में शामिल प्रत्येक बैंक से कहा गया कि वे अपने संबंधित डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के संबंध में दबाव परिस्थितियों के प्रभाव का आकलन करें।

घरेलू बैंकों के मामले में, घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो को शामिल किया गया। विदेशी बैंकों के मामले में, इस प्रक्रिया में केवल भारतीय स्थिति पर विचार किया गया। व्युत्पन्नी व्यापार के लिए जहां हेजिंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई थी, उन्हें दबाव परीक्षण से छूट प्रदान की गई, जबकि अन्य सभी प्रकार के व्यापार को इसमें शामिल किया गया।

दबाव परिस्थितियों में चार संवेदनशीलता परीक्षणों को शामिल किया गया जिसमें स्पॉट यूएस डॉलर/ भारतीय रुपया की दर और घरेलू ब्याज दरों को मापदंड बनाया गया।

सारणी 3: संवेदनशीलता विश्लेषण के लिए आघात

	घरेलू ब्याज दरें	
आघात 1	एक दिवसीय	+2.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष तक	+1.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष से अधिक	+1.0 प्रतिशतता अंक
	घरेलू ब्याज दरें	
आघात 2	एक दिवसीय	-2.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष तक	-1.5 प्रतिशतता अंक
	1 वर्ष से अधिक	-1.0 प्रतिशतता अंक
		विनिमय दरें
आघात 3	यूएस/डालर	+20 प्रतिशत
		विनिमय दरें
आघात 4	यूएस/डालर	-20 प्रतिशत

2.2 प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक

एकल कारक संवेदनशीलता विश्लेषण – दबाव परीक्षण

सितम्बर 2022 को रिपोर्ट की गई स्थिति के अनुसार शहरी सहकारी बैंकों का दबाव परीक्षण किया गया। बैंकों के ऋण जोखिम, बाजार जोखिम और चलनिधि जोखिम के क्षेत्रों में आधारभूत, मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्यों के अधीन रखकर यह परीक्षण किया गया जो कि निम्नानुसार है:

I. ऋण डिफ़ॉल्ट जोखिम

- ऋण डिफ़ॉल्ट जोखिम के तहत, मॉडल का उद्देश्य किसी बैंक के सीआरएआर पर दबावग्रस्त क्रेडिट पोर्टफोलियो के प्रभाव का आकलन करना है।

- वर्ष 2009 और 2020 के बीच समग्र रूप से यूसीबी क्षेत्र के लिए रिपोर्ट किए गए एनपीए के आंकड़ों के आधार पर वार्षिक वृद्धि दर के अंकगणितीय माध्य की गणना की गई थी। वार्षिक वृद्धि दर की गणना प्रत्येक एनपीए वर्ग (उप-मानक, संदिग्ध 1 डी1, संदिग्ध 2 डी2, संदिग्ध 3 डी3 और आस्ति हानि) के लिए अलग से की गई। इस वार्षिक वृद्धि दर ने आधारभूत दबाव परिदृश्य का निर्माण किया, जिसे प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग मध्यम और गंभीर दबाव परिदृश्य उत्पन्न करने के लिए 1.5 (एसडी) और 2.5 एसडी के आघातों का प्रयोग करके उस पर और अधिक दबाव आरोपित किया गया था। इन्हें और आगे उनके एनपीए विचलन स्तर के आधार पर बैंकवार समायोजित किया गया था।
- उपरोक्त कार्यप्रणालियों के आधार पर, तीन दबाव परिदृश्यों के तहत प्राप्त वार्षिक एनपीए वृद्धि दर मैट्रिक्स को नीचे दिया गया था।

(प्रतिशत)

	अवमानक आस्तियों में वृद्धि	डी1 आस्तियों में वृद्धि	डी2 आस्तियों में वृद्धि	डी3 आस्तियों में वृद्धि	हानि आस्तियों में वृद्धि
आधारभूत दबाव	23.38	18.41	16.72	14.58	32.12
मध्यम दबाव	64.52	47.58	40.84	50.77	176.56
भयंकर दबाव	91.94	67.03	56.92	74.90	272.86

II. क्रेडिट संकेन्द्रण जोखिम

यह माना गया कि तीन दबाव परिदृश्यों के तहत शीर्ष 1, 2 और 3 एकल उधारकर्ता एक्सपोजर क्रमशः 'मानक अग्रिम' श्रेणी से 'हानि अग्रिम' श्रेणी में चले जाते हैं जिसके कारण 100 प्रतिशत प्रावधानीकरण करना पड़ता और परिणामस्वरूप सीआरएआर प्रभावित होता है।

III. व्यापार बही में ब्याज दर जोखिम

- शहरी सहकारी बैंकों के एएफएस और एचएफटी पोर्टफोलियो की ब्याज दरों में वृद्धि का विश्लेषण करने के लिए कालावधि विश्लेषण दृष्टिकोण अपनाया गया।
- यूसीबी के लिए संशोधित अवधि (एमडी) के संबंध में डेटा की अनुपलब्धता के कारण, इस मॉडल के तहत छोटे वित्त बैंकों (एसएफबी) के भारित औसत संशोधित अवधि एमडी का इस्तेमाल किया, और एसएफबी और यूसीबी के बीच संरचनात्मक समानता को देखते हुए, रूढ़िवादी दृष्टिकोण से 50 आधार अंकों की वृद्धि को शामिल किया गया।
- तीन दबाव परिदृश्यों के तहत ब्याज दरों में 100 बीपीएस, 150 बीपीएस और 250 बीपीएस की वृद्धि का अनुमान लगाया गया और सीआरएआर पर प्रावधानीकरण के प्रभाव का आकलन किया गया।

IV. बैंकिंग बही में ब्याज दर जोखिम

- शहरी सहकारी बैंकों की बैंकिंग बही को तीन दबाव परिदृश्यों के तहत 100 बीपीएस, 150 बीपीएस और 250 बीपीएस के ब्याज दर के आघातों के अधीन टक्कर परीक्षण किया गया और शुद्ध ब्याज आय पर प्रभाव का पता लगाया गया।

V. चलनिधि जोखिम

(प्रतिशत)

दबाव परिदृश्य	अंतर्वाहों में कमी	बहिर्वाहों में बढ़ोत्तरी
बेसलाइन	5	25
माध्यम	5	50
गंभीर	5	100

परिपत्र संख्या आरबीआई/2008-09/174 यूबीडी पीसीबी.परि. सं.12/12.05.001/2008-09 दिनांक 17 सितंबर 2008 के आधार पर ऐसे बैंक जिसमें बहिर्वाह के 20 प्रतिशत से अधिक नकारात्मक संचयी असंतुलन (नकदी बर्हिवाह घटाकर नकदी अंतर्प्रवाह) था उनको दबावग्रस्त माना गया जो यह निर्धारित करता है कि सामान्य स्थिति में 1-14 दिवसीय तथा 15-28 दिवसीय कालावधि के दौरान असंतुलन (नकदी अंतर्वाह और बहिर्वाह के बीच नकारात्मक अंतर) प्रत्येक समय सीमा में नकदी बहिर्वाह के 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

2.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ

दबाव परीक्षण - एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण

एनबीएफसी के लिए ऋण और चलनिधि जोखिम दबाव परीक्षण बेसलाइन, मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों के तहत किए गए है।

I. ऋण जोखिम

बेसलाइन और दो दबाव परिदृश्यों के तहत सीआरएआर की भविष्यवाणी करने में मॉडल की सटीकता को बढ़ाने के लिए ऋण जोखिम के आघातों के लिए एनबीएफसी क्षेत्र के लचीलेपन का आकलन करने के लिए कार्यप्रणाली को जून 2022 में संशोधित किया गया है। संशोधित मॉडल के आधार पर संपत्ति, कुल संपत्ति अनुपात में अग्रिम, कुल संपत्ति अनुपात से ईबीपीटी, जोखिम भार घनत्व और स्लिपेज अनुपात अगले एक वर्ष की अवधि में अनुमानित किया गया था। इसके बाद, आधारभूत परिदृश्य के लिए नई स्लिपेज, प्रावधान, ईबीपीटी, जोखिम भारित संपत्ति और पूंजी की गणना की गई। मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों के लिए, बेसलाइन परिदृश्य के तहत स्लिपेज में 1 एसडी और 2 एसडी की वृद्धि की गई थी और तदनुसार नई पूंजी और सीआरएआर की गणना की गई थी।

II. चलनिधि जोखिम

दबावग्रस्त नकदी प्रवाह और चलनिधि की स्थिति में असंतुलन की गणना अगले एक वर्ष के दौरान विभिन्न समयावधियों में समग्र नकदी अंतर्वाहों और बहिर्वाहों को पूर्वनिर्धारित दबाव प्रतिशत निर्दिष्ट करके की गई थी। बेसलाइन परिदृश्य के तहत चलनिधि असंतुलन की गणना के लिए अगले एक वर्ष में सितम्बर 2022 की स्थिति के अनुसार अनुमानित बहिर्वाह और अंतर्वाह पर विचार किया गया। नमूना एनबीएफसी के बहिर्वाह और अंतर्वाह को अगले एक वर्ष में मध्यम और उच्च जोखिम वाले परिदृश्यों के लिए क्रमशः 5 प्रतिशत और 10 प्रतिशत का आघात लगाया गया था। ऐसे आघातों के कारण संचयी चलनिधि असंतुलन की गणना संचयी बहिर्वाह के प्रतिशत के रूप में की गई और नकारात्मक संचयी असंतुलन प्रदर्शित करने वाली एनबीएफसी की पहचान की गई।

2.4 अंतर-संबद्धता- नेटवर्क विश्लेषण

मैट्रिक्स अल्जेब्रा नेटवर्क विश्लेषण के केन्द्र में है, जिसमें वित्तीय क्षेत्र में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोज़रों का उपयोग किया जाता है। वित्तीय प्रणाली में एक संस्था की सभी अन्य संस्थाओं को दी गई उधारियों अथवा ली गई उधारियों को वर्ग (स्कवायर) मैट्रिक्स में रखा जाता है और तब उन्हें एक नेटवर्क ग्राफ में चिह्नित किया जाता है। प्रणाली में अतंर-संबंद्धता के स्तर को मापने के लिए नेटवर्क मॉडल में विभिन्न सांख्यिकीय तरीकों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं :

I. *संबद्धता अनुपात* : यह एक सांख्यिकी होती है जो एक पूर्ण ग्राफ में सभी संभव शृंखलाओं से संबंधित नोड्स के बीच शृंखलाओं की सीमा को मापती है। एक निर्देशित ग्राफ में $K = \sum_{i}^{N} k_i$ के बराबर बाहरी अंशों की कुल संख्या दर्शाती है और N नोड्स की कुल संख्या के रूप में है, ग्राफ की संबद्धता $\frac{K}{N(N-1)}$ के रूप में दी गई है।

II. *क्लस्टर गुणांक* : नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह माप करती है कि प्रत्येक नोड आपस में किस प्रकार अंतर-संबद्ध है। विशेष रूप से, इस बात की प्रबल संभावना होती है कि किसी नोड के दो पड़ोसी (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंक के प्रतिपक्षी) आपस में भी पड़ोसी होंगे। किसी नेटवर्क के लिए उच्च क्लस्टरिंग गुणांक का अर्थ यह होता है कि प्रणाली में उच्च स्थानिक अंतर-संबद्धता मौजूद है। k_i, निकटवर्ती/पड़ोसियों वाले प्रत्येक बैंक हेतु उनके बीच सभी प्रकार के संभावित जुड़ावों की कुल संख्या $k_i (k_i-1)$ द्वारा दर्शायी जाती है। मान लेते हैं कि E_i एजेंट *i* बैंक के k_i निकटवर्तियों के बीच वास्तविक संबद्धता को प्रदर्शित करता है अर्थात जो *i* के k_i निकटवर्ती हैं वो आपस में भी निकटवर्ती हैं। *i* बैंक के लिए क्लस्टरिंग गुणांक C_i को इस सर्वसमिका (सूत्र) द्वारा व्यक्त गया है:-

$$C_i = \frac{E_i}{k_i(k_i-1)}$$

समग्र रूप में नेटवर्क का क्लस्टरिंग गुणांक (सी) सभी C_i का औसत निम्नलिखित है:

$$C = \frac{\sum_{i=1}^{N} C_i}{N}$$

III. *परतदार नेटवर्क संरचना :* सामान्यतः वित्तीय नेटवर्क में परतदार संरचना की प्रवृत्ति देखी जाती है। परतदार संरचना एक ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें विभिन्न संस्थाओं की अन्य नेटवर्क के साथ विविध अंशों पर या स्तरों पर संबद्धता होती है। मौजूदा विश्लेषण में सर्वाधिक संबद्ध बैंक सबसे भीतरी केंद्र में होते हैं। इसके बाद बैंकों को मध्य-केंद्र, बाहरी केंद्र और परिधि में (चित्र में केंद्र के चारों ओर संबंधित संकेंद्रिक चक्रों में) उनकी संगत संबद्धता के आधार पर रखा जाता है। बैंकों की संबद्धता की रेंज को प्रत्येक बैंक के आंतरिक डिग्री तथा बाह्य डिग्री अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे सर्वाधिक संबद्ध बैंक के अनुपात से विभाजित किया जाता है। इस अनुपात के शीर्ष 10 प्रतिशत में आने वाले बैंक भीतरी केंद्र का निर्माण करते हैं। 90 और 70 प्रतिशत के बीच आने वाले बैंक मध्य-केंद्र में आते हैं और 40 तथा 70 प्रतिशत के बीच वाले बैंकों की एक तीसरी सतह/परत होती है। 40 प्रतिशत से कम संबद्धता प्राप्त करने वाले बैंकों को परिधि के रूप में श्रेणीकृत/वर्गीकृत किया जाता है।

IV. *नेटवर्क चार्ट में रंग संकेत:* नेटवर्क चार्ट में नीली और लाल गेंदें क्रमश: निवल उधारदाता और निवल उधारकर्ता को निरूपित करती हैं। परतदार नेटवर्क चित्र में श्रृंखलाओं के रंग संकेत नेटवर्क में मौजूद विभिन्न कतारों/परतों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं (उदाहरण के लिए हरे रंग की श्रृंखलाएं मूल कोर में स्थिति बैंकों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं)।

ए) ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता का विश्लेषण

संक्रामकता विश्लेषण दबाव परीक्षण प्रकृति का होता है जिसमें एक या अधिक बैंकों के असफल हो जाने के कारण उत्पन्न दूरगामी प्रभावों के चलते बैंकिंग प्रणाली को होने वाले सकल घाटे का पता लगाया जाता है। इसके लिए हम राउंड बाई राउंड या अनुक्रमिक (सीक्वेंशियल) अल्गोरथिम का उपयोग करते हैं ताकि अनुरूपता संक्रामकता, जिसे अब फरफाइन (2003) के नाम से जाना जाता है, का पता लगाया जा सके। यदि एक ट्रिगर बैंक i से प्रारंभ करें जो 0 समय पर असफल होता है तो प्रत्येक चक्र या पुनरावृति में जो बैंक दबाव में आते हैं उन्हें Dq, q = 1,2, … के रूप में निरूपित किया जा सकता है। इस विश्लेषण के लिए, किसी बैंक को दबावग्रस्त तब माना जाता है जब इसका टियर-I सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे चला जाए। प्राप्तकर्ता बैंक के लिए निवल प्राप्तियों को घाटे के रूप में माना जाता है।

बी) चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण

जहां ऋण शोधनक्षमता संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारकर्ता के विफल हो जाने की स्थिति में वित्तीय प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का आकलन करता है वहीं चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारदाता के विफल हो जाने की स्थिति में इस प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का अनुमान व्यक्त करता है। यह विश्लेषण बैंकों के बीच होने वाले सकल

एक्सपोज़र के संबंध में किया जाता है। एक्सपोज़र में निधि आधारित और व्युत्पन्नी दोनों प्रकार के एक्सपोज़र शामिल होते हैं। इस विश्लेषण का मूलभूत आकलन यह होता है कि किसी बड़े उधारदाता के विफल होने की स्थिति से उत्पन्न होने वाले चलनिधि दबाव से निपटने के लिए (किसी) बैंक की चलनिधि आरक्षित निधि या बफर में पहले तो गिरावट आएगी। चलनिधि आरक्षित निधियों के तहत विचारणीय मदें इस प्रकार हैं : (क) सीआरआर का अतिरिक्त अधिशेष; (ख) एसएलआर का अतिरिक्त अधिशेष और (ग) निवल मांग और मीयादी देयताओं का 18 प्रतिशत। यदि बैंक केवल चलनिधि बफर की मदद से ही दबाव से निपटने में सक्षम होता है तो ऐसी स्थिति में इसमें आगे कोई और संक्रमण नहीं होता है।

तथापि, यदि केवल चलनिधि बफर पर्याप्त नहीं होते हैं तो बैंक को उन सभी ऋणों को वापस लेना होगा जो 'वापस लिए जाने योग्य' हैं, जिसके परिणामस्वरूप संक्रामकता होती है। यदि विश्लेषण करने के लिए देखा जाए तो केवल अल्पावधि की आस्तियां जैसे कि कॉल मार्केट में उधार दी गई राशि और अन्य बहुत ही अल्पावधि के लिए दिए गए ऋणों को ही वापसी योग्य कहा जा सकता है। इसके पश्चात किसी बैंक का अस्तित्व या तो बना रह सकता है अथवा उसका परिसमापन किया जाना होगा। इस मामले में इस प्रकार के उदाहरण हो सकते हैं कि जहां ऋणों की वापसी होने से बैंक का अस्तित्व बच गया हो परंतु इसके परिणामस्वरूप इससे आगे संक्रामकता हो सकती है जिससे अन्य बैंक दबाव में आ सकते हैं। दूसरा आकलन यह किया गया है कि जब किसी बैंक का परिसमापन किया जाता है तो उस बैंक द्वारा उधार दिए गए ऋणों को सकल गणना के आधार पर वापस मांगा जाता है, जबकि परिसमापन किए बगैर जब बैंक द्वारा दिए गए अल्पावधि ऋणों को वापस मांगा जाता है तो ऋण को निवल आधार पर वापस मांगा जाता है (इस अनुमान के अनुसार, प्रतिपक्षी अपने उसी प्रतिपक्षी के प्रति पहले अपनी अल्पावधि देयताओं को कम करना चाहेगा। इसे द्वितीयक परिसमापन के रूप में जाना जाता है)।

सी) संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता का विश्लेषण

औसतन किसी बैंक की कुछ बैंकों के प्रति सकारात्मक निवल ऋण प्रदान करने की स्थितियां और कुछ अन्य बैंकों के प्रति ऋणात्मक निवल उधार की स्थितियां दोनों ही होती हैं। इस प्रकार ऐसे किसी बैंक के विफल हो जाने पर ऋणशोधन तथा चलनिधि संक्रामकता दोनों साथ-साथ उत्पन्न हो जाएंगी। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित फ्लोचार्ट द्वारा बताया गया है:

किसी बैंक के दबाव में आने के कारण संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता संबंधी फ्लोचार्ट

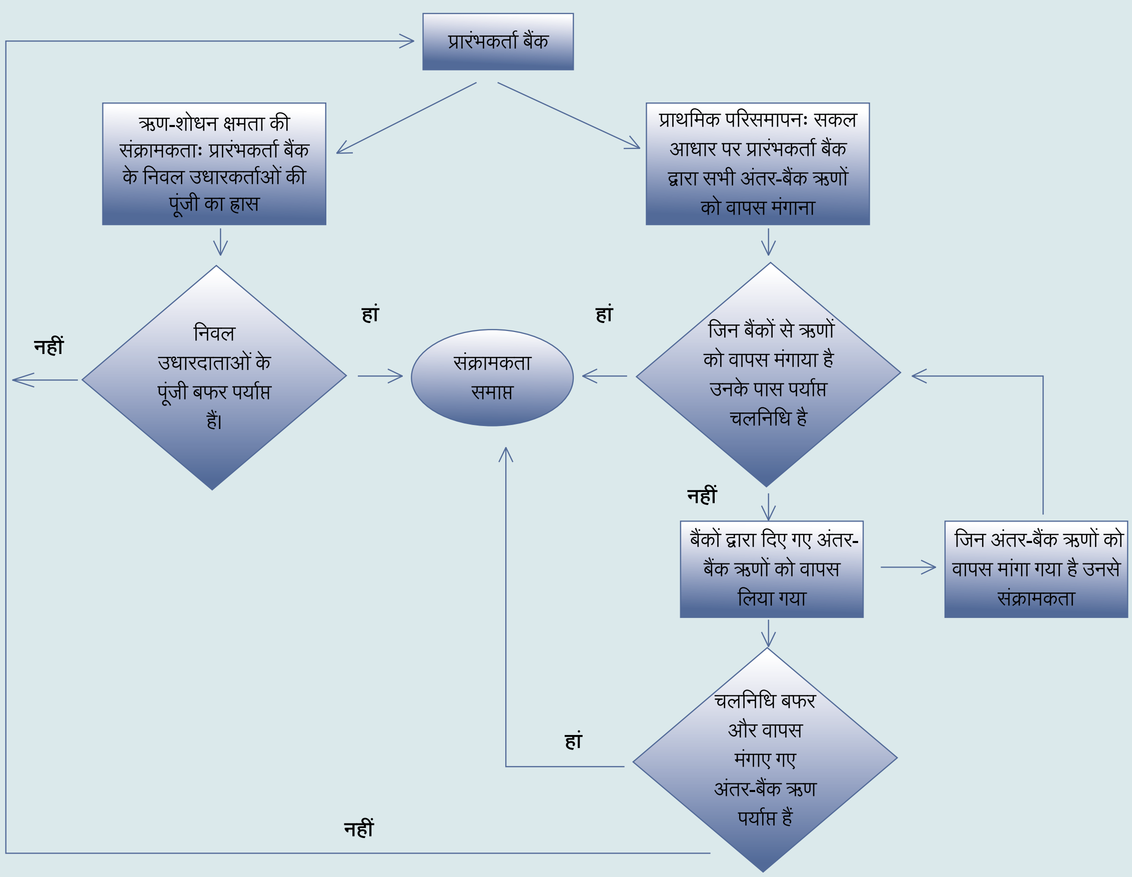

यह माना गया कि प्रारंभकर्ता बैंक कुछ अंतर्जात कारण से विफल हुआ अर्थात यह निश्चित रूप से दिवालिया हो जाता है और इस प्रकार सभी उधारकर्ता बैंकों को प्रभावित करता है। उसी समय, यह अपनी आस्तियों को भी बेचना प्रारंभ करता है ताकि जहां तक संभव हो यह अपने दायित्वों को पूरा कर सके। परिसमापन प्रक्रिया एक चलनिधि संकट उत्पन्न करती है क्योंकि प्रारंभकर्ता बैंक अपने दिए गए ऋणों को वापस मंगाना प्रारंभ कर देता है।

चूंकि इक्विटी और लंबी अवधि के ऋण विफल संस्थाओं के प्रतिपक्षकारों के लिए चलनिधि बहिर्वाह के रूप में परिलक्षित नहीं हो सकते हैं, इसलिए उन्हें प्राथमिक परिसमापन के मामले में प्रतिदेय नहीं माना जाता है। साथ ही, जैसा कि 30 मार्च, 2021 का आरबीआई दिशानिर्देश प्रतिपक्ष स्तर पर डेरिवेटिव के मामले में एमटीएम मूल्यों के द्विपक्षीय नेटिंग की अनुमति देता है, प्राथमिक परिसमापन के मामले में डेरिवेटिव बाजारों से संबंधित एक्सपोजर को निवल आधार पर कॉल करने योग्य माना जाता है।

उधारदाता/उधारकर्ता बैंक जो कि भली प्रकार पूंजीकृत होते हैं, वे आघात सहन कर लेते हैं और वे दूसरों को संक्रमित नहीं करते हैं। दूसरी तरफ, वे उधारदाता बैंक जिनकी पूंजी एक न्यूनतम सीमा से कम हो जाती है वो एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं। इसी प्रकार ऐसे उधारकर्ता जिनकी चलनिधि बफर पर्याप्त होती है वे भी आगे कोई संक्रामकता फैलाए बिना दबाव सहन कर लेते हैं। परंतु कुछ बैंक ऐसे होते हैं जो चलनिधि दबाव का सामना करने में तभी सक्षम हो पाते हैं जब वो अपनी अल्पावधि आस्तियों को वापस ले लेते हैं। अल्पावधि आस्तियों को वापस लेने की प्रक्रिया से वे पुनः एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं।

ऋणशोधन और चलनिधि दोनों कारणों से उत्पन्न संक्रामकता तभी रुक पाएगी/स्थिर हो पाएगी जब, प्रणाली हानि/आघातों को पूर्णतः अवशोषित कर सके और भविष्य में विफलताएं न हों।

अनुबंध 3

महत्वपूर्ण विनियामकीय उपाय

1. भारतीय रिज़र्व बैंक

दिनांक	विनियमन	औचित्य
7 जून, 2022	**इंडिया इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज आईएफ़एससी लिमिटेड (आईआईबीएक्स) के व्यावसायिक समाशोधन सदस्य (पीसीएम) के रूप में कार्यरत भारतीय बैंकों की जीआईएफ़टी -आईएफ़एससी शाखाएँ** : यह अनुदेश घरेलू अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (भारत में निगमित पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के माध्यम से परिचालन करने वाले विदेशी बैंकों सहित) पर लागू होते हैं, जो विदेशी मुद्रा में लेनदेन करने के लिए अधिकृत हैं और जिनकी जीआईएफ़टी -आईएफ़एससी में एक शाखा है।	आईआईबीएक्स (पीसीएम के रूप में) पर समाशोधन और निपटान सेवाएं प्रदान करने के लिए जीआईएफ़टी -आईएफ़एससी में भारतीय बैंकों की शाखाओं की भागीदारी के लिए एक विनियामक ढांचा प्रदान करना।
16 जून, 2022	**आवर्ती लेनदेन के ई-मैंडेट का प्रसंस्करण:** भुगतान की बदलती जरूरतों और कार्ड लेनदेन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, कार्ड, प्रीपेड भुगतान लिखत और एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस पर ई-मैंडेट/स्थायी अनुदेशों के मामले में पहले लेनदेन के प्रसंस्करण के समय अन्य बातों के साथ-साथ प्रमाणीकरण के एक अतिरिक्त कारक (एएफए) के साथ ई-मैंडेट फ्रेमवर्क की अनुमति देने का निर्णय लिया गया था। समीक्षा के बाद के लेनदेन (एएफए के बिना) के लिए प्रति लेनदेन सीमा को ₹5,000 से बढ़ाकर ₹15,000 कर दिया गया।	ग्राहक अनुभव को आसान बनाने और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए।
जून 24, 2022	**वास्तविक कार्ड डेटा के भंडारण पर प्रतिबंध [अर्थात, कार्ड-ऑन-फाइल (सीओएफ)]:** कार्ड जारीकर्ता और कार्ड नेटवर्क को छोड़कर कार्ड लेनदेन/ भुगतान श्रृंखला में सभी संस्थाओं को 1 अक्टूबर, 2022 से पहले सीओएफ़ डेटा को परिशोधित करना आवश्यक था। इसके अलावा, लेन-देन के संबंध में एक वैकल्पिक प्रणाली में संक्रमण को निर्बाध बनाने के लिए, जहां कार्डधारक लेन-देन के समय मैन्युअल रूप से कार्ड विवरण दर्ज करने का निर्णय लेते हैं, कुछ अंतरिम उपायों की अनुमति दी गई है। किसी भी गैर-अनुपालन के मामले में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा व्यापार प्रतिबंध लगाने सहित उचित दंडात्मक कार्रवाई पर विचार किया जाएगा।	ग्राहक डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, दिशानिर्देश जारी किए गए थे क्योंकि विभिन्न संस्थाओं के पास कार्ड विवरण की उपलब्धता कार्ड डेटा की सुरक्षा के जोखिम को बढ़ा देती है।

दिनांक	विनियमन	औचित्य
जुलाई 06, 2022	**विदेशी मुद्रा प्रवाह का उदारीकरण**: रिज़र्व बैंक ने विदेशी मुद्रा प्रवाह को बढ़ाने के लिए उपाय किए, जिनमें शामिल हैं- (क) वृद्धिशील एफसीएनआर (बी) और एनआरई सावधि जमा पर नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) और सांविधिक तरलता अनुपात (एसएलआर) से छूट; (ख) नए एफसीएनआर (बी) और एनआरई जमाराशियों पर ब्याज दरों में छूट; (ग) ऋण में एफपीआई निवेश के लिए विनियमन में परिवर्तन; (घ) प्राधिकृत डीलर श्रेणी-I (एडी कैट-1) बैंकों द्वारा भारत में संघटकों को विदेशी मुद्रा उधार को उदार बनाना; और (ङ) बाह्य वाणिज्यिक उधारों (ईसीबी) की सीमा में वृद्धि।	अस्थिरता को कम करने और वैश्विक स्पिल ओवर को कम करने के लिए विदेशी मुद्रा वित्त पोषण के स्रोतों में और विविधता लाने और विस्तार करने के लिए।
जुलाई 07, 2022	**केंद्र सरकार की प्रतिभूतियों (जी-सेक) में गैर-निवासियों द्वारा निवेश के लिए पूरी तरह से सुलभ मार्ग (एफएआर) - अतिरिक्त निर्दिष्ट प्रतिभूतियां:** यह निर्णय लिया गया है कि 7-वर्ष और 14-वर्षीय अवधि के जी-सेक के सभी नए निर्गम, जिनमें 7.10% जीएस 2029 और 7.54% जीएस 2036 के मौजूदा निर्गम शामिल हैं, को एफएआर के तहत निर्दिष्ट प्रतिभूतियों के रूप में नामित किया जाएगा।	एफएआर के तहत अनिवासी निवेशकों द्वारा निवेश के लिए उपलब्ध जी-सेक की पसंद को बढ़ाना और साथ ही सरकारी उपज वक्र में तरलता को बढ़ाना।
11 जुलाई, 2022	**भारतीय रुपये में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार निपटान (INR):** भारतीय रुपयेमें निर्यात/आयात के चालान, भुगतान और निपटान के लिए एक अतिरिक्त व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया है।	भारत से निर्यात पर जोर देने के साथ वैश्विक व्यापार के विकास को बढ़ावा देना और भारतीय रुपये में वैश्विक व्यापार समुदाय की बढ़ती रुचि का समर्थन करना।
अगस्त 5, 2022	**रिज़र्व बैंक - एकीकृत लोकपाल योजना, 2021 (आरबी-आईओएस, 2021) का सीआईसी तक विस्तार:** क्रेडिट सूचना संबंधी शिकायतों और विवादों को दूर करने के लिए सीआईसी को 1 सितंबर, 2022 से रिज़र्व बैंक- एकीकृत लोकपाल योजना (आरबी-आईओएस), 2021 के दायरे में लाया गया है।	आरबीआईओएस, 2021 के तहत कवर किए गए आरई के ग्राहकों को लागत मुक्त वैकल्पिक शिकायत निवारण के लिए एक अवसर प्रदान करना।
अगस्त 08, 2022	**लघु वित्त बैंकों के लिए अधिकृत डीलर श्रेणी -1 लाइसेंस पात्रता:** यह निर्णय लिया गया है कि सभी अनुसूचित एसएफबी प्राधिकृत डीलर श्रेणी-II के रूप में प्रचालन के कम से कम दो वर्ष पूरे होने के बाद अधिकृत डीलर श्रेणी-I लाइसेंस के लिए पात्र होंगे, जो पात्रता मानदंडों के अनुपालन के अधीन होगा।	एसएफबी को अपने ग्राहकों की विदेशी मुद्रा व्यापार आवश्यकता को पूरा करने के लिए अधिक लचीलापन देना।

दिनांक	विनियमन	औचित्य
अगस्त 08, 2022	**रुपया ब्याज दर डेरिवेटिव्स (रिज़र्व बैंक) निदेश – समीक्षा:** स्टैंडअलोन प्राइमरी डीलर्स (एसपीडी) भी बैंकों की तरह ऑनशोर ओवरनाइट इंडेक्स्ड स्वैप (ओआईएस) मार्केट में मार्केट मेकर्स हैं। यह निर्णय लिया गया है कि फेमा, 1999 की धारा 10(1) के तहत अधिकृत एसपीडी, एडी संवर्ग-1 बैंकों की तरह, भारत में निवासी नहीं होने वाले व्यक्तियों के साथ-साथ अन्य एडी संवर्ग-1 बैंकों और पात्र एसपीडी विदेशी मुद्रा ओवरनाइट इंडेक्स्ड स्वैप (एपसिएस-ओआईएस) के लिए भी पात्र होंगे।	तटवर्ती और अपतटीय ओआईएस बाजारों के बीच विभाजन को दूर करने और मूल्य खोज की दक्षता में सुधार करने के लिए।
अगस्त 12, 2022	वित्तीय सेवाओं की आउटसोर्सिंग - वसूली एजेंटों (आरएएस) को नियोजित करने वाली विनियमित संस्थाओं की जिम्मेदारियां: आरए द्वारा अपनाई जाने वाली अस्वीकार्य प्रथाओं की बढ़ती घटनाओं को ध्यान में रखते हुए, आरबीआई ने मौजूदा दिशानिर्देशों के दायरे को बढ़ाकर और अतिदेय ऋणों की वसूली के लिए उधारकर्ताओं को फोन पर कॉल करने के घंटों को सीमित करके (सुबह 8:00 बजे से पहले और शाम 7:00 बजे के बाद नहीं) आरई को कुछ अतिरिक्त निर्देश जारी किए हैं। ये निर्देश सभी वाणिज्यिक बैंकों (भुगतान बैंकों को छोड़कर), सहकारी बैंकों, एनबीएफसी, एआरसी और एआईएफआई पर लागू होंगे। हालांकि, ये निर्देश 14 मार्च, 2022 के 'मास्टर निदेश - भारतीय रिज़र्व बैंक (माइक्रोफाइनेंस ऋण के लिए नियामक ढांचा) निर्देश, 2022' के तहत कवर किए गए माइक्रोफाइनेंस ऋणों पर लागू नहीं होते हैं।	इस बात पर फिर से जोर देने के लिए कि आरई या उनके आरए को किसी भी प्रकार की धमकी या उत्पीड़न का सहारा नहीं लेना चाहिए, उधारकर्ताओं को फोन पर कॉल करने के घंटों को सीमित करना चाहिए और अधिक आरई को कवर करने के लिए निर्देशों का दायरा भी बढ़ाना चाहिए।
15 सितंबर, 2022	**रुपया आहरण व्यवस्था - सीमा पार इनबाउंड बिल भुगतान को संसाधित करने के लिए भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस) को सक्षम करना:** बीबीपीएस के माध्यम से प्राप्त विदेशी आवक प्रेषण को रुपया आहरण व्यवस्था (आरडीए) के तहत बिलर (लाभार्थी) के केवाईसी अनुपालन बैंक खाते में अंतरित करने की अनुमति दी गई है।	अनिवासी भारतीयों को भारत में अपने परिवारों की ओर से उपयोगिता, शिक्षा और अन्य बिल भुगतान करने की सुविधा प्रदान करना।

दिनांक	विनियमन	औचित्य
सितम्बर 19, 2022	**अनुपालन कार्य और मुख्य अनुपालन अधिकारी (सीसीओ) की भूमिका - शहरी सहकारी बैंक:** टियर 4 श्रेणी (10,000 करोड़ रुपये से अधिक की जमा राशि) के तहत यूसीबी 1 अप्रैल, 2023 तक मुख्य अनुपालन अधिकारी (सीसीओ) की नियुक्ति सहित बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीति और अनुपालन कार्य लागू करेंगे। टियर 3 श्रेणी (10,000 करोड़ रुपये तक की 1000 करोड़ रुपये की जमा) श्रेणी के तहत यूसीबी 1 अक्टूबर, 2023 तक इसे लागू करेंगे।	कॉर्पोरेट गवर्नेंस की समग्र संरचना की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के भाग के रूप में यूसीबी में अनुपालन कार्य में सुधार करना।
3 अक्टूबर, 2022	**भारतीय रिज़र्व बैंक ने (दक्ष) - रिज़र्व बैंक की उन्नत पर्यवेक्षी निगरानी प्रणाली शुरू की:** दक्ष एक वेब-आधारित एंड-टू-एंड वर्कफ़्लो एप्लिकेशन है जिसके माध्यम से आरबीआई अधिक केंद्रित तरीके से अनुपालन आवश्यकताओं की निगरानी करेगा। एप्लिकेशन एक मंच के माध्यम से निर्बाध संचार, निरीक्षण योजना और निष्पादन, साइबर घटना रिपोर्टिंग और विश्लेषण, विभिन्न एमआईएस रिपोर्टों आदि के प्रावधान को सक्षम करेगा, जो किसी भी समय-कहीं भी सुरक्षित पहुंच को सक्षम बनाता है।	पर्यवेक्षित संस्थाओं में अनुपालन संस्कृति में और सुधार करना।
6 अक्टूबर, 2022	**सीआईसी द्वारा आंतरिक लोकपाल (आईओ) की नियुक्ति:** क्रेडिट सूचना कंपनी (विनियमन) अधिनियम, 2005 की धारा 5 की उप-धारा (2) के तहत पंजीकरण प्रमाण पत्र रखने वाले सभी सीआईसी को 1 अप्रैल, 2023 तक भारतीय रिजर्व बैंक (क्रेडिट सूचना कंपनियां - आंतरिक लोकपाल) निर्देश, 2022 का पालन करना होगा।	सीआईसी के आंतरिक शिकायत निवारण तंत्र की प्रभावीता को मजबूत करना और सुधारना।
11 अक्टूबर, 2022	**स्टैंडअलोन प्राथमिक डीलरों (एसपीडी) द्वारा गतिविधियों का विविधीकरण – अनुमेय गैर-प्रमुख गतिविधियों की समीक्षा:** एसपीडी को विवेकपूर्ण दिशा-निर्देशों के अधीन श्रेणी-I प्राधिकृत डीलरों को वर्तमान में अनुमति दी गई सभी विदेशी मुद्रा बाजार बनाने वाली सुविधाओं की पेशकश करने की अनुमति देने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा, 01 जनवरी, 2023 से एसपीडी की संबंधित संस्थाओं द्वारा विश्व स्तर पर किए गए भारतीय रुपये से जुड़े सभी वित्तीय लेनदेन लेनदेन की तारीख के बाद कार्य दिवस के 12:00 बजे से पहले क्लियरिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (सीसीआईएल) ट्रेड रिपॉजिटरी को सूचित किए जाएंगे।	प्राथमिक डीलर व्यवसाय करने वाले बैंकों के समान बाजार निर्माताओं के रूप में एसपीडी की भूमिका को मजबूत करना। यह उपाय विदेशी मुद्रा ग्राहकों को अपने मुद्रा जोखिम के प्रबंधन में बाजार निर्माताओं का एक व्यापक स्पेक्ट्रम देगा, जिससे भारत में विदेशी मुद्रा बाजार का विस्तार बढ़ेगा।

दिनांक	विनियमन	औचित्य
11 अक्टूबर, 2022	**भारतीय रिज़र्व बैंक (अनहेज्ड फॉरेन करेंसी एक्सपोजर) निदेश, 2022:** रिज़र्व बैंक ने अनहेज्ड फॉरेन करेंसी एक्सपोजर (यूएफसीई) पर मौजूदा दिशानिर्देशों की समीक्षा की, जो 01 जनवरी, 2023 से लागू होंगे। मुख्य परिवर्तन निम्नलिखित से संबंधित हैं: (क) इकाई की परिभाषा; (ख) यूएफसीई के दिशा-निर्देशों से छूट; (ग) छोटी संस्थाओं को लाभ पहुंचाने के लिए वैकल्पिक विधि; और (घ) वृद्धिशील पूंजी आवश्यकता।	बिना हेज किए गए विदेशी मुद्रा एक्सपोजर पर मौजूदा दिशानिर्देशों की समीक्षा करना।
11 अक्टूबर, 2022	**भारतीय रिज़र्व बैंक (वित्तीय विवरण - प्रस्तुति और प्रकटीकरण) निर्देश, 2021 -** **आस्ति वर्गीकरण और प्रावधान में विचलन का प्रकटीकरण:** वाणिज्यिक बैंकों (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को छोड़कर} को परिसंपत्ति वर्गीकरण और प्रावधान में विचलन के विवरण का खुलासा करना आवश्यक है जहां रिज़र्व बैंक द्वारा मूल्यांकन किया गया ऐसा विचलन कुछ निर्दिष्ट सीमाओं से अधिक है। वाणिज्यिक बैंकों की तरह, प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (यूसीबी) के लिए प्रकटीकरण आवश्यकताएं शुरू की गई हैं। ये निर्देश 31 मार्च, 2023 को समाप्त होने वाले वर्ष के वार्षिक वित्तीय विवरणों के नोट्स में खुलासे के लिए लागू होंगे। इसके अलावा, वार्षिक वित्तीय विवरणों में प्रकटीकरण के लिए वाणिज्यिक बैंकों के लिए निर्दिष्ट सीमा को संशोधित किया गया है और यह 31 मार्च, 2024 को समाप्त होने वाले वर्ष और उसके बाद से प्रभावी होगा।	आय निर्धारण, आस्ति वर्गीकरण और प्रावधानीकरण मानदंडों के अनुपालन को मजबूत करना।
11 अक्टूबर, 2022	**आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (एआरसी) के लिए विनियामक ढांचे की समीक्षा:** एआरसी के लिए संशोधित दिशानिर्देशों में *अन्य बातों के साथ-साथ* एक व्यापक कॉरपोरेट गवर्नेंस फ्रेमवर्क और उधारकर्ताओं के साथ एकमुश्त निपटान पर दिशानिर्देश, प्रबंधन शुल्क, न्यूनतम एनओएफ आवश्यकता, अधिशेष निधियों की तैनाती, एआरसी द्वारा जारी एसआर में निवेश, आईबीसी के तहत समाधान आवेदक के रूप में कार्य करने की अनुमति, उधारदाताओं द्वारा तनावग्रस्त ऋणों का हस्तांतरण शामिल है।	एआरसी को एआरसी क्षेत्र में कुछ संरचनात्मक मुद्दों को संबोधित करके तनावग्रस्त आस्तियों के समाधान में अधिक सार्थक भूमिका निभाने में सक्षम बनाना।
12 अक्टूबर, 2022	**इंटर-ऑपरेबल रेगुलेटरी सैंडबॉक्स (आईओआरएस) के लिए मानक संचालन प्रक्रिया:** वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद - उप समिति (एफएसडीसी-एससी) के तत्वावधान में	उन अभिनव उत्पादों/सेवाओं के परी-क्षण की सुविधा प्रदान करना जिनके व्यापार मॉडल/गतिविधियां/विशेषताएं

दिनांक	विनियमन	औचित्य
	फिनटेक (फिनटेक पर आईआरटीजी) पर एक अंतर-विनियामक तकनीकी समूह का गठन किया गया था। फिनटेक पर आईआरटीजी के विचारार्थ विषयों (टीओआर) में विनियामक सैंडबॉक्स (आरएस) में प्रवेश के लिए विभिन्न वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों के विनियामक दायरे में आने वाले हाइब्रिड उत्पाद/सेवा से संबंधित मुद्दों पर चर्चा और हाइब्रिड उत्पादों/सेवाओं के लिए आईओआरएस के लिए मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करना शामिल है।	एक से अधिक वित्तीय क्षेत्र के विनियामक के दायरे में आती हैं। फिनटेक पर आईआरटीजी द्वारा आईओआरएस के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार की गई है।
31 अक्टूबर, 2022	**सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी-होलसेल (ई ₹-डब्ल्यू) पायलट का परिचालन:** रिज़र्व बैंक ने 1 नवंबर, 2022 को डिजिटल रुपया - थोक सेगमेंट (ई ₹-डब्ल्यू) में पहला पायलट लॉन्च करने की घोषणा की। इस पायलट परियोजना का उपयोग केंद्रीय बैंक के धन से सरकारी प्रतिभूतियों में द्वितीयक बाजार लेनदेन का निपटान है जो निपटान जोखिम को कम करने के लिए निपटान गारंटी बुनियादी ढांचे या संपार्श्विक की आवश्यकता को समाप्त करते हुए लेनदेन लागत को कम करेगा।	अंतर-बैंक बाजार को और अधिक कुशल बनाने के लिए और सीमा पार भुगतान और अन्य थोक लेनदेन सहित ई ₹ के विभिन्न उपयोग-मामलों के लिए भविष्य के पायलटों के लिए इस परीक्षण-मामले का उपयोग करना।
नवम्बर 01, 2022	**क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा इंटरनेट बैंकिंग सुविधा प्रदान करने के लिए पात्रता मानदंड, 2022:** इंटरनेट बैंकिंग सुविधा की प्रस्तुति हेतु आरआरबी के लिए संशोधित पात्रता मानदंड प्रदान करता है।	ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल बैंकिंग के प्रसार को बढ़ावा देना।
23 नवंबर, 2022	**खाता एग्रीगेटर (एए) फ्रेमवर्क के तहत वित्तीय सूचना प्रदाता (एफआईपी) के रूप में माल और सेवा कर नेटवर्क (जीएसटीएन) का समावेश:** जीएसटीएन और जीएसटी रिटर्न, जैसे फॉर्म जीएसटीआर -1 और फॉर्म जीएसटीआर -3 बी को एए फ्रेमवर्क के तहत क्रमशः एफआईपी और वित्तीय सूचना के रूप में शामिल किया गया है।	एमएसएमई को नकदी प्रवाह आधारित ऋण की सुविधा प्रदान करना।
29 नवंबर, 2022	सेंट्रल बैंक डिजिटल मुद्रा का परिचालन - खुदरा (ई ₹-आर) पायलट: रिज़र्व बैंक ने 01 दिसंबर, 2022 को खुदरा डिजिटल रुपये (ई ₹-आर) के लिए पहला पायलट लॉन्च करने की घोषणा की। पायलट चयनित उपयोगकर्ता समूह (सीयूजी) में चुनिंदा स्थानों को कवर करेगा जिसमें भाग लेने वाले ग्राहक और व्यापारी शामिल होंगे। ई ₹-आर एक डिजिटल टोकन के रूप में होगा जो कानूनी निविदा का प्रतिनिधित्व करता है। यह कागजी मुद्रा और सिक्कों के समान मूल्यवर्ग में जारी किया जाएगा। यह मध्यस्थों, यानी बैंकों के माध्यम से वितरित किया जाएगा।	डिजिटल प्रारूप में विश्वास, सुरक्षा और निपटान अंतिमता जैसी भौतिक नकदी की सुविधाओं को प्रस्तुत करना। नकदी के मामले में, यह कोई ब्याज अर्जित नहीं करेगा और इसे बैंकों के साथ जमा जैसे धन के अन्य रूपों में परिवर्तित किया जा सकता है।

2. भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड

दिनांक	विनियम	औचित्य
जून 24, 2022	**रियल एस्टेट निवेश ट्रस्ट (आरईआईटी) और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) के लिए एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) तंत्र की शुरुआत।**	व्यक्तिगत निवेशकों को 5 लाख रुपये तक के आवेदन मूल्य के लिए यूपीआई तंत्र के माध्यम से फंड ब्लॉक करने की सुविधा के साथ एक अतिरिक्त विकल्प प्रदान करना।
9 और 30 जून, 2022 5 जुलाई, 2022	**मध्यस्थों को ऐसी घटनाओं को नोटिस करने / पता लगाने के 6 घंटे के भीतर साइबर घटनाओं की रिपोर्ट करनी होगी।**	साइबर घटनाओं के लिए रिपोर्टिंग समय सीमा को कम करना ताकि सेबी/ स्टॉक एक्सचेंज / डिपॉजिटरीज इस पर तुरंत कार्रवाई कर सकें।
27 जुलाई, 2022	**ट्रेडिंग सदस्य के पास पड़े ग्राहक के धन के सक्रिय खाते का निपटान।**	ग्राहक के धन के दुरुपयोग के जोखिम को कम करने के लिए।
18 अगस्त, 2022	**बिक्री लेनदेन करने वाले ग्राहकों के डीमैट खाते में ब्लॉक तंत्र।**	ग्राहक के खाते से स्टॉक ब्रोकर के पूल खाते में ग्राहकों की प्रतिभूतियों की आवाजाही को रोकने और निवेशकों का समय और लागत बचाने के लिए।
25 अगस्त, 2022	**क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों (सीआरए) द्वारा वर्धित प्रकटीकरण और रेटिंग निकासी पर मानदंड।**	लगातार दो रेटिंग कार्यों के बीच रेटिंग परिवर्तन 3 डिग्री से अधिक या उसके बराबर होने की स्थिति में तीव्र रेटिंग कार्रवाई का प्रकटीकरण।
2 सितंबर 2022	व्यापार के लिए एल्गोरिथम कार्यनीतियों को प्रस्तुत करने वाले अविनियमित प्लेटफार्मों द्वारा दावा किया गया कार्यनिष्पादन / प्रतिफल	अविनियमित संस्थाओं द्वारा गलत बिक्री के किसी भी कार्य और उदाहरणों को रोकने और प्रतिभूति बाजार में निवेशकों के हितों की रक्षा करने के लिए।
19 सितंबर 2022	**सोशल स्टॉक एक्सचेंज की रूपरेखा**	सेबी (पूंजी और प्रकटीकरण आवश्यकताओं का निर्गम) विनियम, 2018, सेबी (लिस्टिंग दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएं) विनियम, 2015 और सेबी (वैकल्पिक निवेश निधि) विनियम, 2012 में संशोधन के अनुसरण में सोशल स्टॉक एक्सचेंज के लिए विस्तृत ढांचे को निर्दिष्ट करना।

दिनांक	विनियम	औचित्य
30 सितंबर, 2022	**म्यूचुअल फंड में लेनदेन के लिए टू-फैक्टर अधिप्रमाणन।**	तीसरे पक्ष के भुगतान को रोकने, जोखिम को कम करने और म्यूचुअल फंड निवेशकों के लिए सुरक्षित वातावरण को बढ़ावा देने के लिए।
13 अक्टूबर, 2022	**सोशल स्टॉक एक्सचेंज के लिए शासी परिषद**	सोशल स्टॉक एक्सचेंज की शासी परिषद से संबंधित पहलुओं को निर्दिष्ट करना।
28 अक्टूबर, 2022	**ऋण प्रतिभूतियों और गैर-परिवर्तनीय भुनाने योग्य अधिमानी शेयरों के मूल्यवर्ग को 10 लाख रुपये से घटाकर 1 लाख रुपये कर दिया गया।**	कॉर्पोरेट बांडों के लिए द्वितीयक बाजार को गति प्रदान करना, अर्थात्, भागीदारी में वृद्धि और तरलता में वृद्धि।
31 अक्टूबर, 2022	**एक वित्तीय वर्ष के दौरान परिपक्व होने वाली निजी प्लेसमेंट के आधार पर जारी ऋण प्रतिभूतियों की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभूति पहचान संख्या (आईएसआईएन) की संख्या पर प्रतिबंध।**	कॉर्पोरेट बॉन्ड बाजार में विखंडन को कम करने और तरलता को गहन करने के लिए।
31 अक्टूबर, 2022	**सीआरए द्वारा उपयोग किए जाने वाले रेटिंग स्केल का मानकीकरण।**	'रेटिंग वॉच' और 'रेटिंग आउटलुक' निर्दिष्ट करने के लिए उपयोग किए जाने वाले रेटिंग स्केल और डिस्क्रिप्टर के उपयोग को मानकीकृत करना।

3. भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

दिनांक	विनियम	औचित्य
अगस्त 01, 2022	**धन शोधन विरोधी/आतंकवाद वित्तपोषण प्रतिषेध (एएमएल/सीएफटी) पर मास्टर दिशानिर्देश, 2022**: ये दिशानिर्देश सभी बीमाकर्ताओं को खाता-आधारित संबंध प्रारंभ होने पर और साथ ही समय-समय पर ग्राहक के बारे में यथोचित कर्मठता बरतने का आदेश देते हैं। यह *अन्य बातों के साथ-साथ* रिकॉर्ड रखने, रिपोर्टिंग दायित्वों, केवाईसी मानदंडों, लेनदेन की निगरानी से संबंधित आवश्यकताओं को भी निर्धारित करता है।	पूर्व में जारी विभिन्न परिपत्रों/ दिशानिर्देशों को समेकित करना। **आईएफ़एससीए (धन शोधन विरोधी/ आतंकवाद वित्तपोषण प्रतिषेध और अपने ग्राहक को जानिए) दिशानिर्देश, 2022:**

दिनांक	विनियम	औचित्य
अगस्त 03, 2022	**निवेश मानदंडों में संशोधन:** "अनुमोदित निवेश" के लिए पात्रता मानदंड संशोधित किए गए; सभी प्रकार के म्यूच्युअल फंड जैसे गिल्ट/ जी-सेक/ तरल/ ऋण/ आय के माध्यम से बीमाकर्ताओं के निवेश पोर्टफोलियो में विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए म्यूच्युअल फंड में निवेश के लिए मानदंडों को संशोधित किया गया; एक्सपोजर को बैंकिंग तक सीमित करना, बीमाकर्ताओं को अधिक नम्यता प्रदान करने के लिए वित्तीय सेवाएं और बीमा को बढ़ाया गया; आरईआईटी और आईएनवीआईटी में निवेश की सीमा बढ़ाई गई।	मौजूदा निवेश मानदंडों को उदार बनाना और पॉलिसीधारक प्रतिलाभ को बढ़ाना

4. पेंशन निधि नियामक एवं विकास प्राधिकरण

दिनांक	विनियम	औचित्य
27 जुलाई, 2022	**डिजिलॉकर के माध्यम से अभिदाता केंद्रित सेवाएं:** राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के हितधारकों को डिजिलॉकर निम्नलिखित लाभ प्रदान करता है- (i) मौजूदा ग्राहकों के लिए डिजिलॉकर के माध्यम से ई-पीआरएएन कार्ड की पहुंच; (ii) मौजूदा ग्राहकों के लिए डिजिलॉकर के माध्यम से खाता विवरण तक पहुंच; और (iii) संभावित अभिदाताओं के एनपीएस खाता खोलने के लिए केवाईसी करना।	अभिदाता केंद्रित सेवाएं प्रदान करने के लिए, पीएफ़आरडीए द्वारा नियुक्त सेंट्रल रिकॉर्ड कीपिंग एजेंसियों ने अपने सिस्टम को डिजिलॉकरके साथ एकीकृत किया है।
28 जुलाई, 2022	**विनियामक सैंडबॉक्स के माध्यम से उत्तरदायित्वपूर्ण नवाचार:** यह बाजार सहभागियों / हितधारकों के लिए एक वातावरण में उपयोगकर्ताओं के साथ नए उत्पादों / संशोधित वेरिएंट, सेवाओं, या रचनात्मक व्यवसाय मॉडल का परीक्षण करने के लिए एक औपचारिक नियामक कार्यक्रम है, जो कुछ सुरक्षा उपायों, उचित सावधानी और पर्याप्त निरीक्षण के अधीन है।	वित्तीय/ पेंशन /सेवानिवृत्ति आयोजना सेवाओं में उत्तरदायित्वपूर्ण नवाचार को पोषित करके दक्षता को बढ़ावा देना, जिससे अंततः निवेशकों, ग्राहकों, उपभोक्ताओं और उपयोगकर्ताओं को लाभ होता है।
अगस्त 01, 2022	**सरकारी क्षेत्र के ग्राहकों के लिए ई-निवेश विकल्प:** केंद्र सरकार के एनपीएस ग्राहक निम्नलिखित में से पेंशन फंड (पीएफ) और निवेश विकल्प चुन सकते हैं: (ए) एक्टिव चॉइस - सरकारी प्रतिभूतियों में 100 प्रतिशत आवंटन; (बी) कंजर्वेटिव ऑटो चॉइस - 25 प्रतिशत आवंटन इक्विटी एसेट क्लास; और (सी) मॉडरेट ऑटो चॉइस - इक्विटी एसेट क्लास में 50 प्रतिशत आवंटन।	अभिदाताओं के हित में प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए, यह निर्णय लिया गया है कि ऑनलाइन निवेश विकल्प में परिवर्तन की अनुमति दी जाए, जिसमें अभिदाता सीआरए लॉगिन में सीधे अनुरोध कर सकते हैं।

दिनांक	विनियम	औचित्य
11 अगस्त, 2022	**यूपीआई द्वारा समर्थित प्रत्यक्ष विप्रेषण के माध्यम से स्वैच्छिक अंशदान:** पीएफआरडीए ने ग्राहकों के लाभ के लिए डी-रेमिट के माध्यम से अंशदान जमा करने के लिए यूपीआई हैंडल लॉन्च किया। वर्तमान में, अभिदाता आईएमपीएस/ एनईएफ़टी/ आरटीजीएस का उपयोग करके अभिदाता के बैंक खाते के नेट बैंकिंग खाते से डी-रेमिट के तहत टीयर I/II में अपना स्वैच्छिक अंशदान जमा करते हैं।	अंशदान जमा करने की प्रक्रिया को और आसान बनाने के लिए।
25 अगस्त, 2022	**सरकार/कॉर्पोरेट क्षेत्र के अभिदाताओं के लाभ के लिए ई-नामांकन की प्रक्रिया प्रवाह में परिवर्तन:** पीएफआरडीए ने एनपीएस अभिदाताओं के लाभ के लिए एक ई-नामांकन सुविधा शुरू की थी। एनपीएस के मौजूदा अभिदाता जो अपने पीआरएएन में अपना नामांकन बदलना चाहते हैं, वे अपने लॉगिन क्रेडेंशियल के माध्यम से 'ई नामांकन' का उपयोग कर सकते हैं।	प्राधिकरण में लंबितता को कम करने के लिए ई-नामांकन अनुरोधों के संबंध में प्रक्रिया प्रवाह को संशोधित करना।
सितम्बर 19, 2022	**अभिदाताओं के लाभ के लिए आहरण की समय-सीमा को टी+4 से टी+2 तक घटाना:** निकासी के समय अभिदाताओं के आहरण अनुरोधों को अब तक टी+4 कार्य/निपटान दिवसों पर निष्पादित किया जाता था (टी नोडल कार्यालय/ पीओपी/ अभिदाता द्वारा आहरण अनुरोध के प्राधिकरण का दिन है) और अब समयसीमा को घटाकर टी+2 कर दिया गया है।	संबंधित सीआरए से जुड़े ग्राहकों के लाभ के लिए एनपीएस से अंतिम निकास की समयसीमा को कम करना।
सितम्बर 29, 2022	**सरकार और कॉरपोरेट अंशदाताओं को उनके मौजूदा योजना विकल्प को जारी रखने में सक्षम बनाना:** ऐसे कई उदाहरण हैं जहां कॉर्पोरेट और सरकारी क्षेत्रों के अंतर्गत अभिदाताओं ने अपना रोजगार छोड़ने के बाद अंतर क्षेत्र स्थानांतरण (आईएसएस) का प्रयोग नहीं किया है, क्योंकि जो योजना/निवेश विकल्प ग्राहक को उनके रोजगार के दौरान उपलब्ध कराया गया है वह अब उपलब्ध नहीं हो सकता है यदि वे “सभी-नागरिक” क्षेत्र में स्थानांतरित हो जाते हैं। यह निर्णय लिया गया है कि ऐसे अंशदाताओं को उनके ‘सभी-नागरिक’ क्षेत्र में स्थानांतरित होने पर उनके मौजूदा निवेश पैटर्न को जारी रखने की अनुमति दी जाए।	अभिदाताओं के लिए उपलब्ध योजनाओं/निवेश विकल्पों के विस्तार के लिए।

दिनांक	विनियम	औचित्य
19 अक्टूबर, 2022	**वार्षिकी की खरीद के लिए मृत अभिदाताओं के एनपीएस कॉर्पस को संभालना।**	यह देखा गया कि कुछ मामलों में, एकमुश्त भुगतान प्राप्त करने के बाद लेकिन वार्षिकी जारी करने से पहले अभिदाता की मृत्यु हो गई और वार्षिकी के लिए निर्धारित राशि सीआरए प्रणाली में थी। ऐसे मामलों के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए थे।
20 अक्टूबर, 2022	**टीयर I में आस्ति ई (इक्विटी) में ग्राहक के योगदान का 75 प्रतिशत और टीयर II में 100 प्रतिशत आवंटित करने के विकल्प की अनुमति:** इससे पहले, 75 प्रतिशत आस्ति श्रेणी की सीमा प्रति वर्ष 2.5 प्रतिशत कम हो जाती थी और अभिदाताओं के 51 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर सरकारी प्रतिभूतियों को पुनः आबंटित किया जाता है। प्राधिकरण द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि टीयर-I में आस्ति श्रेणी ई (इक्विटी) में ग्राहकों के अंशदान का 75 प्रतिशत आवंटित करने के विकल्प को 51 वर्ष की आयु से कम करने की किसी भी शर्त के बिना सक्रिय विकल्प के तहत अनुमति दी जाए। यह भी निर्णय लिया गया है कि बिना किसी शर्त के एक्टिव चॉइस के तहत टीयर- II में आस्ति श्रेणी ई (इक्विटी) में अभिदाता के 100 प्रतिशत योगदान की अनुमति देना टेपरिंग है।	ग्राहकों के लाभ के लिए नियामक ढांचे में सुधार करना।

5. भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड

दिनांक	विनियम	औचित्य
4 जुलाई, 2022	**आईबीबीआई ((दिवाला व्यावसायिक एजेंसियां) (संशोधन) विनियम, 2022**	उक्त विनियमों के तहत अनुशासनात्मक कार्यवाही आईबीबीआई (निरीक्षण और जांच) विनियम, 2017 के प्रावधानों के अनुसार की जाएगी।
4 जुलाई, 2022	**आईबीबीआई (दिवाला व्यावसायिक) (संशोधन) विनियम, 2022:** *अन्य बातों के साथ-साथ* संशोधन विनियम में शामिल हैं कि:- (ए) आईबीबीआई (निरीक्षण और जांच) विनियम, 2017 के प्रावधानों के अनुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी; (बी) इन्सॉल्वेंसी प्रोफेशनल (आईपी) इनसॉल्वेंसी प्रोफेशनल एजेंसी (आईपीए) जिसके साथ वह नामांकित है;	आईपी द्वारा लगाए गए व्यावसायिक शुल्क की सूचना प्रकटीकरण आवश्यकताओं और चालान आवश्यकताओं में सुधार करके बोर्ड की आईपी निगरानी गतिविधियों को सुविधाजनक बनाना।

दिनांक	विनियम	औचित्य
	समयबद्ध तरीके से सभी संबंधों के प्रकटीकरण को दर्ज करेगा, (सी) इन्सॉल्वेंसी प्रोफेशनल (आईपी) या इन्सॉल्वेंसी प्रोफेशनल एंटिटी (आईपीई) शुल्क के लिए अपने नाम से चालान बनाएगी, और ऐसी फीस का भुगतान बैंकिंग चैनल के माध्यम से किया जाएगा; और (डी) एक आईपी संहिता के तहत दिवाला समाधान प्रक्रिया लागत (आईआरपीसी) या परिसमापन लागत में विभिन्न प्रक्रियाओं का संचालन करते समय कानूनों के किसी भी प्रावधान के गैर-अनुपालन के कारण खर्च की गई कोई भी राशि शामिल नहीं होगी।	
13 सितंबर, 2022	***आईबीबीआई (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) (तीसरा संशोधन) विनियम*, 2022:** *अन्य बातों के साथ-साथ संशोधन विनियम* में शामिल हैं (ए) *एक मामले में स्वीकार किए गए दावों की मात्रा पर निर्भर आईपी को देय न्यूनतम शुल्क की एक सीमा या मैट्रिक्स*; (*बी*) *कॉर्पोरेट देनदार की कुछ विशेषताओं के आधार पर देय न्यूनतम शुल्क से अधिक शुल्क का भुगतान*; (*सी*) ₹5 *करोड़ से अनधिक आईपी को देय प्रदर्शन से जुड़ा प्रोत्साहन शुल्क ढांचा*; *और* (*डी*) कॉर्पोरेट लेनदारों की निधि *या अंतरिम वित्त या* आवेदनकर्ता अथवा ऋणदाताओं की समिति से *इस तरह के शुल्क के भुगतान* उपलब्ध कराने का *तरीका*।	संहिता के तहत प्रक्रियाओं के संचालन के लिए आईपी द्वारा लिए जाने वाले शुल्क को नियंत्रित करने के लिए।
13 सितंबर, 2022	**आईबीबीआई (दिवाला व्यावसायिक (*दूसरा संशोधन*) *विनियम*, 2022:** *संशोधन विनियम आईपी को प्रक्रियाओं के तहत नियुक्त किए गए किसी* व्यावसायिक *और/या सहायक सेवा प्रदाता से कोई शुल्क या* प्रभार *स्वीकार करने/साझा करने से रोकते हैं।*	संहिता के तहत प्रक्रियाओं के संचालन के लिए आईपी द्वारा लिए जाने वाले शुल्क को विनियमित करना और उसकी पारदर्शिता में सुधार करना।
16 सितंबर, 2022	*आईबीबीआई (कॉर्पोरेट व्यक्तियों के* **लिए दिवाला समाधान प्रक्रिया) (चौथा संशोधन) *विनियम*, 2016:** *अन्य बातों के साथ-साथ संशोधन विनियम प्रदान करते हैं*: (ए) ऐसे मामले जहां पर *समग्र रूप से कॉर्पोरेट* ऋणी *से* कोई समाधान योजना प्राप्त नहीं हुई है वहां एक या अधिक आस्तियों की बिक्री के लिए अनुरोध का पुनः प्रस्तुतीकरण करना। (*बी*) एक समाधान योजना की अनुमति दें जिसमें कॉर्पोरेट ऋणी की एक या आस्तियों का ऐसी आस्तियों के लिए योजना प्रस्तुत करने वाले एक या अधिक सफल समाधान आवेदक शामिल हो;	कॉर्पोरेट दिवाला समाधान को सुव्यवस्थित करने, देरी को कम करने और हितधारकों के लिए वसूली को अधिकतम करने के लिए।

दिनांक	विनियम	औचित्य
	(*सी*) *कॉर्पोरेट* ऋणी की संपत्ति के विपणन के लिए एक रणनीति तैयार करना; और (डी) सीओसी को समझौते या व्यवस्था के विकल्प का पता लगाने और परिसमापन आदेश के लिए एए को आवेदन करते समय एए के साथ ऐसी सिफारिश दर्ज करने में सक्षम बनाना।	
16 सितंबर, 2022	**आईबीबीआई (परिसमापन प्रक्रिया) (दूसरा संशोधन) विनियम, 2022 और आईबीबीआई (स्वैच्छिक परिसमापन प्रक्रिया) (दूसरा संशोधन) विनियम, 2022:** संशोधन विनियम *अन्य बातों के साथ-साथ* निम्नलिखित के लिए उपलब्ध हैं: (ए) पहले 60 दिनों में सीआईआरपी के दौरान गठित सीओसी हितधारकों परामर्श समिति (एससीसी) के रूप में कार्य करेगी। इस अवधि के बाद, स्वीकृत दावों के आधार पर एससीसी का पुनर्गठन किया जाएगा; (बी) यदि सीओसी ने सीआईआरपी के दौरान इसे ठीक नहीं किया तो एससीसी परिसमापक को एए में बदलने का प्रस्ताव दे सकता है और परिसमापक की फीस तय कर सकता है; (सी) यदि सीओसी तय करती है कि परिसमापन प्रक्रिया के दौरान समझौते या व्यवस्था की प्रक्रिया का पता लगाया जा सकता है, तो परिसमापक परिसमापन के आदेश के तीस दिनों के भीतर एए के समक्ष उसी के लिए आवेदन दाखिल करेगा; और (ङ) एससीसी परिसमापक को सलाह देगा कि परिसमापन कार्यवाही बंद होने के बाद परिहार लेनदेन के संबंध में कार्यवाही किस तरीके से की जाएगी।	विलंब को कम करने और हितधारकों की भागीदारी में सुधार करने के लिए कॉर्पोरेट और स्वैच्छिक परिसमापन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना।
सितम्बर 20, 2022	**आईबीबीआई (दिवाला व्यावसायिक) (तीसरा संशोधन) विनियम, 2022:** संशोधन विनियम निम्नलिखित के लिए हैं: - (ए) आईपी और इन्सॉल्वेंसी प्रोफेशनल एंटिटी (आईपीई) द्वारा बोर्ड को देय पंजीकरण (एक बार) और वार्षिक शुल्क (5 वर्षीय) के लिए आवेदन शुल्क बढ़ाना; (बी) पिछले वित्तीय वर्ष में आईपी/आईपीई के रूप में प्रदान की गई सेवाओं के लिए अर्जित व्यावसायिक शुल्क के प्रतिशत के रूप में आईपी या आईपीई द्वारा बोर्ड को देय वार्षिक शुल्क बढ़ाना; और (सी) आईपी द्वारा बोर्ड को देय विनियामक शुल्क प्रदान करने के लिए, आईआरपी /आरपी के शुल्क को छोड़कर, आईआरपीसी के एक प्रतिशत की दर से गणना, और एक लाभकारी संस्थान के रूप में कॉर्पोरेट ऋणी के व्यवसाय को चलाने के लिए कोई भी लागतें ।	बोर्ड के वित्तीय संसाधनों को बढ़ाने के लिए आईपी और आईपीई द्वारा बोर्ड को भुगतान की जाने वाली विभिन्न फीस बढ़ाने और सीआईआरपी के संचालन के लिए बोर्ड को देय नियामक शुल्क शुरू करना।

दिनांक	विनियम	औचित्य
सितम्बर 28, 2022	**आईबीबीआई (दिवाला व्यावसायिक) (चौथा संशोधन) विनियम, 2022:** संशोधनों की मुख्य विशेषताएं हैं (ए) एक आईपीई, जिसे बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है, बोर्ड के साथ एक आईपी के रूप में पंजीकरण की मांग कर सकता है; और (बी) एक आईपीई जो एक आईपी के रूप में पंजीकृत है, केवल उसके भागीदार या निदेशक को अनुमति देगा, जैसा भी मामला हो, जो आईपी है और समनुदेशन के लिए वैध प्राधिकरण (एएफए) रखता है, उसकी ओर से हस्ताक्षर करने और कार्य करने के लिए।	आईपीई के व्यवसाय को संस्थागत बनाने के लिए आईपीई को आईपी के रूप में कार्य करने की अनुमति देने के लिए, एक बेहतर शासन ढांचा स्थापित करना, और बड़ी और जटिल प्रक्रियाओं से निपटने के लिए आईपी द्वारा उत्पन्न सीमाओं को संबोधित करना जिसके लिए समवर्ती प्रयासों और कार्यों की आवश्यकता होती है।
अक्टूबर 03, 2022	**आईबीबीआई (आदर्श उप-विधियां और दिवाला व्यावसायिक एजेंसियों का शासी बोर्ड) (संशोधन) विनियम, 2022:** आईबीबीआई की अनुसूची में प्रदान किए गए आईपीए के मॉडल उप-उपविधियों में परिणामी परिवर्तनों के लिए प्रदान किए गए संशोधन (आदर्श उप-विधियां और दिवाला व्यावसायिक एजेंसियों का शासी बोर्ड) विनियम, 2016, आईपीई को बोर्ड के साथ आईपी के रूप में पंजीकृत करने और उसके तहत बनाए गए कोड और विनियमों के तहत आईपी के कार्यों को करने की अनुमति देने की दृष्टि से।	आईपीई को बोर्ड के साथ आईपी के रूप में पंजीकृत करने की अनुमति देने की दृष्टि से मॉडल उप-विधियों विनियमों में परिणामी परिवर्तन कराना।

6. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण

दिनांक	विनियम	औचित्य
जून 28, 2022	**सदस्यता त्यागने पर दलाल डीलरों को सुरक्षा जमा की वापसी**	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए) द्वारा दलाल डीलर के पंजीकरण त्यागने के आवेदन पर अनुमोदन होने पर, स्टॉक एक्सचेंज आईएफ़एससीए द्वारा पंजीकरण त्यागने के आवेदन के अनुमोदन की दिनांक से बारह महीने के बाद दलाल डीलर (ग्राहकों की ओर से व्यापार में लगे हुए) की सुरक्षा जमा राशि जारी करेगा।
जून 28, 2022	**आईएफ़एससी में मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस (एमआईआई) में समितियों पर परिपत्र:** आईएफ़एससीए (बुलियन एक्सचेंज) विनियम, 2020 और आईएफ़एससीए (मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस) विनियम, 2021 में एमआईआई द्वारा विभिन्न वैधानिक समितियों का गठन करने	आईएफ़एससी में वित्तीय उत्पादों, वित्तीय सेवाओं और वित्तीय संस्थानों को विकसित और विनियमित करना।

दिनांक	विनियम	औचित्य
	की आवश्यकता है ताकि कार्यप्रणाली पर प्रभावी निगरानी सुनिश्चित की जा सके। एमआईआई। *पूर्वोक्त* परिपत्र के अनुसार, आईएफ़एससीए ने एमआईआई को 3 कार्यात्मक समितियों और 5 निरीक्षण समितियों का गठन करने के लिए अनिवार्य किया है और सभी वैधानिक समितियों की संरचना और गणपूर्ति के लिए व्यापक सिद्धांतों का प्रावधान किया है।	
जुलाई 01, 2022	**आईएफ़एससीए (फंड मैनेजमेंट) विनियम, 2022 के तहत एंजेल फंड:** एंजेल फंड्स स्टार्ट-अप्स और एंजेल निवेशकों के बीच की खाई को पाटते हैं, जो स्टार्ट-अप्स को सलाह और संसाधन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उसी क्रम में, आईएफ़एससीए ने आईएफ़एससीए (फंड मैनेजमेंट) विनियम, 2022 के तहत एंजेल फंड के लिए एक रूपरेखा जारी की है।	शुरुआती स्तर के वेंचर कैपिटल अंडरटेकिंग (स्टार्ट-अप्स) में निवेश की योजनाओं सहित निधि प्रबंधन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के लिए नियामक ढांचे को सक्षम बनाना।
जुलाई 01, 2022	**आईएफ़एससीए (वित्त कंपनी) (संशोधन) विनियम 2022:** इससे पहले, नियमों में प्रावधान था कि एक वित्त इकाई को मुख्य गतिविधियों के लिए तभी स्थापित किया जा सकता है, जब आवेदक इकाई, अपने घरेलू अधिकार क्षेत्र में एक निगमित इकाई होने के नाते, अपने गृह अधिकार क्षेत्र में एक विनियमित वित्तीय सेवा व्यवसाय कर रही हो। हालांकि संशोधित नियमों के तहत इस शर्त में छूट दी गई है।	वैश्विक/क्षेत्रीय कॉर्पोरेट ट्रेजरी केंद्र स्थापित करने की इच्छुक इकाई और आईएफ़एससी में वित्त इकाई के रूप में केवल गैर-प्रमुख गतिविधियों को चलाने वाली इकाई को सक्षम करने के लिए।
11 जुलाई, 2022	**आईएफ़एससीए (बैंकिंग) (संशोधन) विनियम 2022:** बैंकिंग विनियमों में संशोधन *अन्य बातों के साथ-साथ* वैश्विक प्रशासनिक कार्यालय (जीएओ) की शुरुआत का प्रावधान करता है।	बैंकिंग इकाई खोलने की आवश्यकता के बिना आईएफ़एससी से प्रबंधन, प्रशासन, समन्वय के साथ-साथ सहायक सेवाओं जैसी गतिविधियों को करने के लिए मूल बैंकों को सक्षम करना ।
जुलाई 13, 2022	**आईएफ़एससीए बैंकिंग हैंडबुक कंडक्ट ऑफ़ बिज़नेस डायरेक्शन- वी 4.0 (सीओबी)**	यह सुनिश्चित करने के लिए कि आईएफ़एससी बैंकिंग इकाइयां (आईबीयू) अपेक्षित आचरण के न्यूनतम मानकों को पूरा करती हैं, विशेष रूप से अपने ग्राहकों के साथ व्यवहार, प्रतिपक्षों और अन्य बाजार सहभागियों के साथ उनके व्यवहार के संबंध में।

दिनांक	विनियम	औचित्य
अगस्त 05, 2022	**इंडिया इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज (आईआईबीएक्स) के माध्यम से सोने का आयात करने वाले क्वालिफाइड ज्वैलर्स (क्यूजे) के लिए मानक संचालन प्रक्रिया।**	सीमित उद्देश्य ट्रेडिंग सदस्यों (एलपीटीएम) के रूप में पात्र क्यूजे के लिए आईआईबीएक्स पर केवल 'खरीद' ट्रेडों के लिए भागीदारी के लिए आईआईबीएक्स तक दूरस्थ पहुंच को सक्षम करना। एसओपी सोने के आयात के लिए बुलियन डिपॉजिटरी रसीद (बीडीआर) की खरीद और भारत में आयात के लिए आईएफएससी से सोने की आवाजाही (डीटीए) की प्रक्रिया का विवरण भी प्रदान करता है।
अगस्त 16, 2022	**जहाज पट्टे के लिए फ्रेमवर्क – वित्तीय कंपनी/वित्तीय इकाई :** यह फ्रेमवर्क जहाज परिचालन पट्टे और वित्तीय पटट्टे के तहत पट्टेदार के पंजीकरण, अनुमेय गतिविधियों, अपेक्षित पूंजी और विवेकपूर्ण आवश्यकताओं और अन्य सामान्य शर्तों के लिए पात्रता मानदंड निर्दिष्ट करता है।	आईएफ़एससी में जहाज को पट्टे पर देने के इकोसिस्टम के विकास के लिए एक सक्षम ढांचा प्रदान करना।
अगस्त 18, 2022	**इंडिया इंटरनेशनल बुलियन एक्सचेंज (आईआईबीएक्स) पर बुलियन की आपूर्ति के लिए 'योग्य आपूर्तिकर्ता':** पात्र विदेशी आपूर्तिकर्ता संस्थाओं को अब आईएफ़एससी में कोई संस्थान स्थापित किए बिना, सीमित उद्देश्य के लिए बुलियन की 'बिक्री' हेतु आईआईबीएक्स में भाग लेने की अनुमति है।	आईआईबीएक्स पर बुलियन की आपूर्ति को सुविधाजनक बनाने के लिए, क्यूजे द्वारा आयात को प्रोत्साहित करना और आईआईबीएक्स पर भाग लेने के लिए पात्र विदेशी आपूर्तिकर्ता संस्थाओं को सक्षम करना।
अगस्त 25, 2022	**आईएफएससी बैंकिंग इकाइयों (आईबीयू) द्वारा डेबिट कार्ड जारी करना।**	ऑनलाइन भुगतान, पीओएस टर्मिनल लेनदेन और ऐसे अन्य निर्धारित और अनुमत लेनदेन सहित आईबीयू द्वारा डेबिट कार्ड जारी करने के लिए नियम और शर्तें निर्धारित करना।
11 अक्टूबर, 2022	**आईएफ़एससीए (अंतर्राष्ट्रीय शाखा परिसरों और अपतटीय शिक्षा केंद्रों की स्थापना और संचालन) विनियम, 2022:** विनियम विदेशी विश्वविद्यालयों और विदेशी शैक्षिक संस्थानों को क्रमशः अंतर्राष्ट्रीय शाखा परिसरों और अपतटीय शैक्षिक केंद्रों की स्थापना करने में सक्षम बनाते हैं।	भारत में विश्व स्तरीय विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों तक पहुंच और जीआईएफ़टी आईएफ़एससी में विदेशी छात्रों को आकर्षित करके भारतीय छात्रों के लिए अंतर को कम करना।

दिनांक	विनियम	औचित्य
31 अक्टूबर, 2022	**आईएफ़एससीए (धन शोधन विरोधी/आतंकवाद वित्तपोषण प्रतिषेध और अपने ग्राहक को जानिए) दिशानिर्देश, 2022:** ग्राहकों, उत्पादों *आदि* से उत्पन्न अलग-अलग जोखिमों को ध्यान में रखते हुए, आरई के लिए एक विस्तृत जोखिम-आधारित दृष्टिकोण अनिवार्य है। इन दिशानिर्देशों में वैश्विक प्रक्रिया के अनुरूप, ग्राहक यथोचित कर्मठता और अन्य पहलुओं के लिए एक सिद्धांत-आधारित दृष्टिकोण शामिल किया गया है।	धन शोधन और आतंकवाद वित्तपोषण का मुकाबला करने के लिए, क्योंकि ये ग्राहकों को ऑनबोर्ड करते समय और अन्य परिदृश्यों में आरई द्वारा पालन किए जाने वाले विभिन्न नियंत्रण और संतुलन प्रदान करते हैं।